लाल माई की देहरी

एक दानवीय अभिशाप

सुधीर कुमार घोष

BlueRose ONE .com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sudhir Kumar Ghosh 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-464-6

Cover Design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: September 2026

जय श्री लक्ष्मीनारायण भगवान! 💮🙏

भूमिका

प्रिय पाठकों,

'लाल माई की देहरी- एक दानवीय अभिशाप' केवल रहस्य और भय की कहानी नहीं है, बल्कि आस्था, लालच, सत्ता, परिवार और मानव मन की जटिलताओं की एक रोमांचक यात्रा है। इस उपन्यास में भारतीय लोककथाओं, दण्डकारण्य के रहस्यमय वातावरण और कल्पना को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक पात्र अपनी अलग कहानी और संघर्ष लेकर आपके सामने आएगा, जबकि हर अध्याय आपको किसी नए रहस्य के और निकट ले जाएगा।

यह उपन्यास केवल वयस्क पाठकों के लिए है और एक काल्पनिक रचना है। इसमें अलौकिक घटनाओं तथा विषयों का काल्पनिक चित्रण हो सकता है। यह उपन्यास किसी व्यक्ति, समुदाय या संस्था की भावनाओं, आस्था अथवा विश्वास को ठेस पहुँचाने के उद्देश्य से नहीं लिखा गया है, अपितु इसका उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनकी कल्पनाशक्ति और चिंतनशीलता को प्रेरित करना है। इसमें वर्णित पात्र, स्थान, घटनाएँ और संस्थाएँ लेखक की कल्पना का परिणाम हैं। यदि इनका किसी वास्तविक व्यक्ति, स्थान या संस्था से कोई साम्य प्रतीत होता है, तो उसे मात्र संयोग समझा जाए।

आशा है कि यह कथा आपको रोमांच, जिज्ञासा और भावनाओं से भरपूर एक ऐसा अनुभव देगी, जो अंतिम पृष्ठ पढ़ने के बाद भी लंबे समय तक आपके साथ बना रहेगा।

सुधीर कुमार घोष, लेखक ।

समर्पण

यह पुस्तक मैं अपनी स्वर्गीय माता, **श्रीमती मनीषा घोष**, की पावन स्मृति को सादर समर्पित करता हूँ।

उन्होंने ही मुझे **हिन्दी, संस्कृत और बंगला** भाषाओं का ज्ञान दिया और शब्दों की शक्ति से परिचित कराया। बचपन से उन्होंने मुझे स्पष्ट, प्रभावशाली और आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त करना सिखाया। भाषा के प्रति उनका प्रेम, अनुशासन और संवेदनशीलता ही मेरी लेखन यात्रा की सबसे मजबूत नींव बनी।

यदि आज मैं अपनी कल्पनाओं को शब्दों का रूप देकर पाठकों तक पहुँचा पा रहा हूँ, तो उसमें उनकी शिक्षा, संस्कार और अटूट विश्वास का अमूल्य योगदान है।

माँ, आपकी स्मृतियाँ सदैव मेरी प्रेरणा रहेंगी।

सुधीर कुमार घोष, लेखक ।

आभार

हर पुस्तक केवल एक लेखक की कल्पना का परिणाम नहीं होती, बल्कि उन लोगों के विश्वास, प्रेरणा और सहयोग का भी प्रतिफल होती है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसकी रचना में सहभागी बनते हैं।

मैं सर्वप्रथम ईश्वर का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी कृपा और प्रेरणा ने मुझे इस उपन्यास को लिखने का साहस और धैर्य प्रदान किया।

अपने पिता अशोक कुमार घोष, भाई सुदीप कुमार घोष और पत्नी रुचि घोष का विशेष धन्यवाद, जिनके स्नेह, विश्वास और निरंतर प्रोत्साहन ने हर कठिन क्षण में मेरा साथ दिया। उनके सहयोग के बिना इस पुस्तक की कल्पना भी संभव नहीं थी।

मैं ब्लूरोज़ पब्लिकेशन्स का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे अपनी कहानी प्रकाशित करने का अवसर दिया।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने लंबे अनुभव के दौरान मिले अनेक जीवन अनुभवों ने भी इस उपन्यास के पात्रों और घटनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही भारतीय इतिहास, लोककथाओं, पौराणिक आख्यानों और ग्रामीण जनश्रुतियों ने मेरी कल्पना को नई दिशा दी।

अंत में, मैं अपने पाठकों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ। आपने इस पुस्तक को पढ़ने का निर्णय लेकर मेरी वर्षों की मेहनत को सार्थक बनाया है। मेरी कामना है कि 'लाल माई की देहरी' आपको रहस्य, रोमांच और कल्पना की ऐसी दुनिया में ले जाए, जहाँ प्रत्येक अध्याय आपके मन में नए प्रश्न जगाए और अंतिम पृष्ठ तक आपकी उत्सुकता बनी रहे।

सप्रेम,

सुधीर कुमार घोष, लेखक ।

लेखक परिचय



सुधीर कुमार घोष एक अनुभवी प्रौद्योगिकी सलाहकार, विचारक और उभरते हुए कथाकार हैं। उन्हें डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन, बिजनेस एनालिसिस और एंटरप्राइज़ टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में 17 वर्षों से अधिक का व्यापक अनुभव प्राप्त है।

अपने पेशेवर जीवन में उन्होंने अनेक जटिल प्रौद्योगिकी परियोजनाओं को समझने, उनकी आवश्यकताओं को सुव्यवस्थित करने और व्यावहारिक समाधानों के माध्यम से उन्हें सफल दिशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तकनीक और मानवीय आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करने की उनकी क्षमता उनके पेशेवर व्यक्तित्व की विशेष पहचान है।

प्रौद्योगिकी के साथ-साथ साहित्य, इतिहास, भारतीय लोककथाओं, रहस्य-कथाओं और अलौकिक विषयों में उनकी गहरी रुचि रही है। विद्यालय और महाविद्यालय के दिनों से ही वे नाटक, मंच-संचालन और कहानी-वाचन जैसी रचनात्मक गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

मंच और कथा-जगत से प्राप्त इन अनुभवों ने उन्हें मानवीय भावनाओं, संवादों तथा घटनाओं की नाटकीयता को गहराई से समझने का अवसर दिया। पढ़ने, विचार करने और अपने अनुभवों को शब्दों में ढालने की इसी अभिरुचि ने समय के साथ उनके भीतर के कथाकार को आकार दिया।

लेखक मानते हैं कि एक इंसान को पृथ्वी पर जीवन को सुरक्षित रखने और उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने के अलावा, एक इंसान को समाज और पृथ्वी के कल्याण में भी योगदान देना चाहिए।

'लाल माई की देहरी- एक दानवीय अभिशाप' उनका प्रथम उपन्यास है, जिसमें भारतीय लोकविश्वास, मनोवैज्ञानिक रोमांच और अलौकिक रहस्य का सशक्त संगम प्रस्तुत किया गया है।

अनुक्रमणिका

अध्याय 1: लॉकडाउन की दस्तक 1
अध्याय 2: तुर्ग की यात्रा 8
अध्याय 3: वह औरत जिसे लोग लाल माई कहते हैं 27
अध्याय 4: तुर्ग का इतिहास 44
अध्याय 5: हर इच्छा की कीमत 51
अध्याय 6: एक बेहतरीन प्रस्ताव 66
अध्याय 7: नील कोठी और आश्रम परिसर 76
अध्याय 8: दूसरी मंजिल का रहस्य 89
अध्याय 9: औपनिवेशिक काली जेल 105
अध्याय 10: आनंद की दीक्षा 123
अध्याय 11: हवेली के नीचे दफन राज 135
अध्याय 12: ज्ञान सुंदर का कौफनाक अंत 143
अध्याय 13: महाश्मशान का राक्षस अनुष्ठान 158
अध्याय 14: विद्रोह की दहकती मशाल 164
अध्याय 15: आधी रात के बाद 183
अध्याय 17: काले साम्राज्य पर आघात 193
अध्याय 16: रंगनाथ स्वामी आश्रम 204
अध्याय 18: अग्नि मंत्र सिद्धि 211
अध्याय 19: नीले चाँद की रात 220
अध्याय 20: मानव-दानव युद्ध 226
अध्याय 21: लेखक के विचार 245

अध्याय 1

लॉकडाउन की दस्तक

"कई बार इंसान अपनी बर्बादी की ओर पहला कदम मुस्कुराते हुए बढ़ाता है। उसे लगता है कि वह अपनों के बीच सुरक्षित जा रहा है, जबकि नियति उसे अंधकार की गोद में ले जा रही होती है। समीर घोष को भी उस दिन बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि एक साधारण-सा निर्णय उसके परिवार की नियति बदल देगा।"

मार्च 16, 2020 की एक साधारण-सी सुबह थी। मुंबई की सड़कों पर हमेशा की तरह भीड़ थी, लेकिन हवा में एक अनजाना भय भी घुल चुका था। अख़बारों और समाचार चैनलों पर एक नए वायरस की चर्चा दिन-रात चल रही थी। अमेरिका, एशिया, और यूरोप के कई देशों में तबाही मची हुई थी। भारत में भी संक्रमण के मामले धीरे-धीरे बढ़ रहे थे।

समीर घोष अपनी कंपनी के कार्यालय में कंप्यूटर स्क्रीन पर झुका हुआ था कि तभी उसके मोबाइल पर एक संदेश आया- "चंद्रकांत सर ने आपको शाम 5 बजे अपने केबिन में बुलाया है।" यह मैसेज चंद्रकांत सर की सेक्रेटरी रोमा ने भेजा था।संदेश पढ़ते ही उसके माथे पर हल्की-सी शिकन आ गई। चंद्रकांत कंपनी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष थे। वे बिना कारण किसी कर्मचारी को नहीं बुलाते थे।

समीर एक ग्लोबल कंपनी 'सेज्या-इंटरनेशनल फाइनेंशियल कंसल्टेंट्स' (SifCon) में सीनियर बिजनेस एनालिस्ट था। उसके क्लाइंट्स दुनिया के जाने-माने और बड़े बैंक थे। उसके पास एक साथ कई प्रोजेक्ट्स का पोर्टफोलियो था।

प्रोजेक्ट का बहुत सारा काम होता था। समीर को पहले क्लाइंट्स की ज़रूरतों (Requirements) को समझना होता था, आवश्यकताओं को दस्तावेज़ बनाकर क्लाइंट की व्यावसायिक टीमों से अनुमोदन प्राप्त करना

होता था। उसके बाद उन आवश्यकताओं के लिए तकनीकी समाधान परिभाषित और डिजाइन करना पड़ता। अपने जूनियर्स (Subordinates) को काम समझाना होता था। फिर काम शुरू होता था। इस सब के लिए फोकस, समय और शांति बहुत ज़रूरी थी।

पिछले कुछ वर्षों में समीर ने कंपनी के कई कठिन प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरे किए थे और अपनी मेहनत से अच्छी प्रतिष्ठा बनाई थी। लेकिन इस समय जिस प्रोजेक्ट पर वह काम कर रहा था, उसमें कुछ तकनीकी समस्याएँ चल रही थीं। ग्राहक लगातार बदलाव माँग रहा था और पूरी टीम समाधान खोजने में लगी हुई थी।

समीर के मन में तरह-तरह के विचार आने लगे- "कहीं प्रोजेक्ट की वजह से तो नहीं बुलाया गया? क्या ग्राहक ने शिकायत कर दी? कहीं मेरी रेटिंग पर असर तो नहीं पड़ेगा?"

उसने तुरंत अपने मैनेजर कमल वैष के केबिन का रुख किया। कमल ने समीर को देखते ही मुस्कुराकर पूछा, "क्या हुआ? बड़े परेशान दिख रहे हो।" समीर ने मोबाइल दिखाते हुए कहा, "सर... चंद्रकांत सर ने शाम को बुलाया है। प्रोजेक्ट की वजह से तो नहीं?"

कमल हल्का-सा हँसा, "बिलकुल चिंता मत करो। मैंने उन्हें पूरी स्थिति बता दी है। उन्हें पता है कि समस्या क्या है और हमारी टीम समाधान पर काम कर रही है। उन्होंने तुम्हें किसी और कारण से बुलाया होगा।" समीर के मन का संशय पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ।

शाम के पाँच बजे। चंद्रकांत का विशाल केबिन हमेशा की तरह व्यवस्थित था। अंदर कमल पहले से बैठे थे। "आइए समीर," चंद्रकांत ने कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। समीर बैठ गया। कुछ क्षणों तक चंद्रकांत खिड़की के बाहर देखते रहे, फिर गंभीर स्वर में बोले, "तुम पिछले कई वर्षों से हमारे साथ हो। तुम्हारा काम हमेशा अच्छा रहा है। वर्तमान प्रोजेक्ट की स्थिति मुझे मालूम है, इसलिए उसकी चिंता मत करो।" समीर ने राहत महसूस की।

चंद्रकांत ने मेज़ पर रखी सरकारी अधिसूचना उठाई- "असल में बात कुछ और है। यह नया वायरस... कोविड-19... तेजी से फैल रहा है। सरकार जल्द ही सख्त कदम उठा सकती है। संभावना है कि पूरे देश में लॉकडाउन लागू हो जाए।"

कमल ने आगे कहा, "कंपनी ने निर्णय लिया है कि जो कर्मचारी दूर-दराज़ से आते हैं, वे घर से काम करेंगे ताकी कोविड की बीमारी, कर्मचारीयों में ना फैल सके। जो लोग ऑफिस आएंगे उनको कोविड मास्क लगाना होगा।

तुम रोज़ लंबी दूरी तय करके क़ल्याण से लोकल ट्रेन की यात्रा करके गोरेगांव, मुंबई में स्थित हमारे इस ऑफिस में आते हो, इसलिए तुम्हें भी परसों से वर्क फ्रॉम होम की अनुमति दी जा रही है।"

समीर के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। चंद्रकांत बोले, "लेकिन इसके लिए कल ही सारी तैयारी पूरी करनी होगी। अपने लैपटॉप में वीपीएन, रिमोट एक्सेस और सभी आवश्यक एप्लिकेशन कॉन्फ़िगर करवा लो। ऑफिस नेटवर्क से सुरक्षित तरीके से जुड़ना ज़रूरी है। आईटी टीम तुम्हारी मदद करेगी।" समीर ने उत्साहित होकर कहा, "जी सर। धन्यवाद।"

बैठक समाप्त हुई तो उसके कदम पहले से कहीं हल्के थे। बिना वक्त गंवाए, वह तेज कदमों से अपनी सीट की तरफ चल पड़ा। ऑफिस से घर लौटते समय समीर के मन में केवल एक ही बात थी- "अब मैं श्रेया के साथ रह पाऊँगा। वह गर्भवती है। उसे मेरी ज़रूरत है। घर के कामों में भी हाथ बँटा दूँगा। शायद यह समय हमारे परिवार को और करीब ले आए।"

उसने रास्ते में श्रेया के लिए उसके पसंदीदा फल और कुछ मिठाई खरीदी, घर पहुँचते ही उसने खुशखबरी सुनाई। श्रेया मुस्कुराई। "सच? अब तुम पूरे दिन घर रहोगे?" "हाँ। लगता है कुछ दिन परिवार के साथ बिताने का मौका मिल जाएगा।" दोनों को क्या पता था कि आने वाले दिन उनकी ज़िंदगी की दिशा ही बदल देंगे।

कुछ ही दिनों बाद, **25 मार्च, 2020** पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा हो गई। सड़कों पर सन्नाटा छा गया। दुकानों के शटर गिर गए। स्कूल बंद हो गए। समीर की बेटी, सुनिधि के स्कूल से संदेश आया कि अब पढ़ाई

ऑनलाइन होगी। शुरुआत में समीर को लगा जैसे अचानक जीवन की रफ्तार धीमी हो गई हो। लेकिन यह खुशी ज़्यादा दिन नहीं टिक सकी। कामवाली बाई आना बंद हो गई। बर्तन धोने थे। झाड़ू-पोंछा करना था। कपड़े धोने थे। खाना बनाना था। ऑफिस की मीटिंग भी समय पर करनी थी। एक छोटा-सा वन बीएचके फ्लैट अब कार्यालय, स्कूल और घर तीनों बन चुका था।

ड्रॉइंग रूम में लैपटॉप खुला रहता। उधर दस वर्ष की सुनिधि कभी खिलौने लेकर दौड़ती, कभी कार्टून देखने की ज़िद करती। टीवी की आवाज़ पूरे घर में गूँजती रहती। श्रेया फोन पर अपनी माँ से घंटों बातें करती रहती।

हर पाँच मिनट में कोई न कोई आवाज़ आती, "पापा... ज़रा पानी देना।" "समीर... गैस बंद कर देना।" "समीर... सुनिधि को पढ़ा दो।"ऑनलाइन मीटिंग के बीच भी उसे कभी रसोई तो कभी झाड़ू उठानी पड़ती। सुनिधि पढ़ाई में चंचल थी। उसे बार-बार समझाना पड़ता। समीर धैर्य से उसे पढ़ाता, लेकिन यह बात श्रेया को अच्छी नहीं लगती।

सुनिधि, समीर की पहली पत्नी नंदिनी की पुत्री और श्रेया की सौतेली बेटी थी। नंदिनी का पाँच वर्ष पूर्व स्तन कैंसर (ब्रेस्ट कैंसर) के कारण निधन हो गया था। समीर और श्रेया की शादी को **तीन साल** हो गए थे। समीर के लाख समझाने के बाद भी कि वह सुनिधि और श्रेया दोनों को बराबर का दर्जा और प्यार देना चाहता है, श्रेया इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रही थी।"

श्रेया के मन में अनजानी असुरक्षा घर कर गई थी। उसे लगता था कि समीर, सुनिधि को उससे ज़्यादा महत्व देता है। गर्भावस्था के पहले तीन महीने उसके लिए बेहद कठिन थे। रसोई की गर्मी, मसालों की तेज़ गंध और खाने की महक से ही उसे उल्टियाँ होने लगती थीं। इसलिए खाना बनाने की पूरी ज़िम्मेदारी समीर पर आ गई।

लेकिन परेशानी यहीं समाप्त नहीं होती थी। श्रेया बहुत ज़्यादा संदेह करने लगी थी। जब भी समीर किसी मीटिंग के बाद, जल्दबाज़ी में लैपटॉप अनलॉक छोड़कर खाना बनाने, या किसी और काम से रसोई में जाता,

लौटकर देखता कि श्रेया उसका लैपटॉप खोलकर ईमेल, चैट और ऑफिस संदेश पढ़ती हुई दिखती। समीर को देखकर, **एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर** के शक में भरी वह, सवालों की झड़ी चला देती- "ये कौन है नेहा?", "इस पूजा ने तुम्हें स्माइली क्यों भेजी?", "ऑफिस में किसी के साथ तुम्हारा चक्कर तो नहीं चल रहा?"

समीर लाख समझाता कि वे केवल सहकर्मी हैं, लेकिन उसका शक कम होने के बजाय बढ़ता ही जाता। दिन बीतते गए। एक रात खाना खाने के बाद दोनों बालकनी में बैठे थे। बाहर सड़कें वीरान थीं। श्रेया ने धीरे से कहा, "समीर... मेरे मन में एक बात आई है।"

समीर ने पूछा "क्या?" । "कुछ महीनों के लिए हम मेरे मायके... तुर्ग चलें?" समीर ने सोचा, "काश... कोई ऐसी जगह होती जहाँ श्रेया को आराम मिलता... सुनिधि खुलकर खेल पाती... और मुझे भी थोड़ा सुकून मिलता।"

समीर चुप रहा। श्रेया उत्साह से बोलती चली गई। "वहाँ माँ हैं... सुरेखा। पिताजी नीलांजन हैं। वे मेरी अच्छी तरह देखभाल करेंगे। भैया अनिरुद्ध भी हैं। बाहर का सारा काम वही संभाल लेंगे। राशन, दवाइयाँ, सब्ज़ियाँ... तुम्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।" समीर ध्यान से सुन रहा था। "और सुनो..." श्रेया मुस्कुराई, "वहाँ मैं बिल्कुल अकेली नहीं रहूँगी। माँ के साथ बातें करूँगी। गाँव की औरतें भी मिलने आती रहती हैं। यहाँ की तरह पूरे दिन चार दीवारों में कैद नहीं रहना पड़ेगा।"

वह रसोई में गई और थोड़ी देर बाद गरमा-गरम अदरक वाली चाय और प्याज़ के पकौड़े लेकर आई। उसने चाय और गरमा-गरम पकौड़ियों की प्लेट ड्रॉइंग रूम की सेंटर टेबल पर रख दी और स्वयं सोफ़े पर पसरकर बैठ गई। तभी समीर भी बालकनी से उठकर ड्रॉइंग रूम में आया और श्रेया के पास आकर बैठ गया। सुनिधि भी अपना होमवर्क और पढ़ाई पूरी करके अपने माता-पिता के पास आ गई। श्रेया बोली- "लो... पहले चाय पियो, फिर सोचो।"

समीर मुस्कुरा दिया। श्रेया ने मौका देखकर फिर कहा, "माँ बहुत समझदार हैं। उनके साथ रहूँगी तो मेरा मन भी अच्छा रहेगा। बेकार की बातें सोचने

का समय ही नहीं मिलेगा। शायद... मेरा तुम्हारे ऊपर हर समय शक करना भी कम हो जाए।"समीर ने पहली बार राहत की संभावना महसूस की। श्रेया अभी रुकी नहीं थी। "और सुनिधि..." उसने कहा, "उसे भी वहाँ बहुत अच्छा लगेगा। माँ उसे अपने हाथ का अच्छा खाना खिलाएँगी। अगर ज़रूरत पड़ी तो किसी अच्छे अध्यापक से घर पर पढ़ाई भी करवा देंगे। इतनी खुली जगह है कि वह पूरे दिन खेल सकेगी।"

"यहाँ एक कमरे में हम तीनों का दम घुट रहा है।" कुछ पल रुककर उसने आख़िरी दाँव चला। "तुम्हारे काम की भी चिंता मत करो। तुर्ग में हमारे घर का वाई-फाई बहुत तेज़ है। इंटरनेट कभी नहीं जाता। क़ल्याण से कहीं बेहतर सुविधा है। तुम आराम से ऑफिस का काम कर पाओगे।"



समीर ने पहली बार इस प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार किया। घर की घुटन...श्रेया की देखभाल...सुनिधि का भविष्य...और अपने काम का दबाव...सभी समस्याओं का मानो एक ही समाधान सामने खड़ा था। उसने

धीरे से कहा, "ठीक है... चलते हैं।" श्रेया का चेहरा खुशी से खिल उठा। उसे लगा जैसे लॉकडाउन की कैद से मुक्ति मिल गई हो। लेकिन समीर नहीं जानता था कि वह जिस घर को आश्रय समझ रहा है, वही उसके जीवन का सबसे भयावह अध्याय बनने वाला है। तुर्ग उसका इंतज़ार कर रहा था।

अध्याय 2

तुर्ग की यात्रा

पहला कदम अंधकार की ओर...

समीर महाराष्ट्र के कल्याण शहर में, कासा गैंड्रोविले सोसाइटी के एक छोटे से 1 बीएचके फ्लैट में रहता था। मुंबई जैसे महानगर के पास बसे कल्याण में यह 594 वर्ग फीट का फ्लैट बुरा नहीं था, लेकिन श्रेया को यह फ्लैट कभी पसंद नहीं आया। श्रेया का बचपन गाँव के खुले वातावरण में बीता था।

हरियाली, खेत-खलिहान, पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों के बीच पली-बढ़ी श्रेया को चार दीवारों में कैद जीवन घुटन भरा लगता था। उसे खुले आँगन, मिट्टी की खुशबू और प्रकृति के बीच रहने की आदत थी। उसे पक्षियों और जानवरों से विशेष लगाव था। विवाह से पहले वह मुर्गी पालन और अंडों का अपना व्यवसाय चलाती थी।

उसका व्यवसाय बहुत अच्छा चल रहा था। वह अच्छी कमाई करती थी और अपने परिवार की आर्थिक सहायता भी करती थी। इसी दौरान उसकी मुलाकात अरमान नाम के एक युवक से हुई। दोनों के बीच प्रेम हुआ और कुछ समय बाद उन्होंने विवाह कर लिया। विवाह के बाद अरमान उसका व्यापारिक साझेदार भी बन गया।

लेकिन धीरे-धीरे अरमान का असली चेहरा सामने आने लगा। उसने योजनाबद्ध तरीके से पूरे व्यवसाय पर अपना अधिकार जमा लिया। श्रेया को केवल नाममात्र का मालिक बनाकर रख दिया गया। इतना ही नहीं, उसके विवाहेतर संबंध भी थे। लगातार विश्वासघात और मानसिक प्रताड़ना के बाद दोनों का विवाह केवल दो वर्षों में ही टूट गया। तलाक के साथ-साथ श्रेया ने अपना सफल व्यवसाय भी खो दिया।

व्यापार, विवाह और आत्मसम्मान, तीनों खो देने के बाद वह गहरे अवसाद में चली गई। नए जीवन की शुरुआत करने के उद्देश्य से उसने एक ऑनलाइन वैवाहिक वेबसाइट '**टूटे दिलों की कश्ती- Get your next chance'** पर अपना पंजीकरण कराया। उधर समीर भी अपने जीवन के सबसे कठिन दौर से गुजर रहा था। उसकी पहली पत्नी का कैंसर के कारण निधन हो चुका था।

कैंसर के इलाज में उसकी वर्षों की जमा-पूँजी समाप्त हो गई थी। आर्थिक रूप से वह लगभग टूट चुका था और मानसिक रूप से भी अकेलेपन तथा शोक से जूझ रहा था।

उसे अपने लिए एक जीवनसाथी ही नहीं, बल्कि अपनी बेटी सुनिधि के लिए माँ की भी आवश्यकता थी। समीर और श्रेया की मुलाकात **'टूटे दिलों की कश्ती',** वैवाहिक वेबसाइट के माध्यम से हुई थी। कुछ सप्ताह तक बातचीत और परिचय का सिलसिला चला, जिसके बाद दोनों ने विवाह करने का निर्णय लिया। समीर केवल दो बार तुर्ग गया था। पहली बार वह श्रेया से मिलने गया था और दूसरी बाद सीधे शादी करने के लिए।

गोरा रंग, हिरणी जैसी बड़ी-बड़ी आँखें, आत्मविश्वास से भरा व्यक्तित्व और आकर्षक मुस्कान... पहली ही मुलाकात में समीर श्रेया पर मोहित हो गया था। वहीं समीर किसी फिल्मी नायक जैसा आकर्षक, अच्छे स्वभाव वाला, जिम्मेदार और मुंबई की प्रतिष्ठित कंपनी में कार्यरत एक सफल व्यक्ति था। श्रेया को भी समीर का शांत स्वभाव और ईमानदारी बहुत पसंद आई।

दोनों को पहली मुलाकात में ही ऐसा लगा मानो वे एक-दूसरे के लिए ही बने हों। प्रेमालाप के दिनों में उनका रिश्ता बहुत मधुर था। विवाह के बाद भी शुरुआती कुछ महीनों तक श्रेया ने सुनिधि के साथ बेहद स्नेहपूर्ण व्यवहार किया। वह उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करने का प्रयास करती रही।

लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलने लगीं। एक ऐसी युवती, जिसने अभी-अभी अपने वैवाहिक जीवन की नई शुरुआत की थी, उसके लिए अचानक दस वर्ष की बच्ची की माँ बन जाना आसान नहीं था।

समीर अपनी माँ से वंचित उस मासूम बच्ची पर विशेष ध्यान देता था। यही बात धीरे-धीरे श्रेया के मन में असुरक्षा और ईर्ष्या का कारण बनने लगी। उसे लगने लगा कि समीर हर परिस्थिति में सुनिधि को उससे अधिक महत्व देता है।समय के साथ उसका स्वभाव चिड़चिड़ा और विषैला होता चला गया।

श्रेया अब तुर्ग लौटना चाहती थी। वही तुर्ग... जहाँ से वह कभी भाग जाना चाहती थी। अपने पहले विवाह के टूटने के बाद गाँव वालों के तानों और अपमान ने उसका वहाँ रहना कठिन बना दिया था। दूसरी ओर उसके माता-पिता और भाई आर्थिक मामलों में स्वार्थी थे और अक्सर उससे पैसों की अपेक्षा रखते थे।

इन्हीं कारणों से उसने वर्षों पहले तुर्ग छोड़ दिया था। लेकिन लॉकडाउन ने परिस्थितियाँ बदल दीं। उसे लगा कि अब तुर्ग लौटना ही सबसे अच्छा विकल्प होगा। वहाँ उसकी माँ सुरेखा और पिता नीलांजन उसकी गर्भावस्था में देखभाल करेंगे। उसका भाई अनिरुद्ध बाहर के सभी आवश्यक काम संभाल लेगा। उसे विश्वास था कि वर्षों में उसके परिवार का स्वभाव भी बदल गया होगा। सबसे बड़ी बात, समीर घर से काम कर सकेगा और उसे परिवार का साथ मिलेगा। समीर और श्रेया ने अंततः तुर्ग जाने का निर्णय ले लिया।

दोनों ने आवश्यक सामान की पैकिंग शुरू कर दी। अब सबसे बड़ी चुनौती थी लॉकडाउन के बीच लगभग एक हजार किलोमीटर दूर तुर्ग तक पहुँचने की। समीर ने कई कैब चालकों से बात की। उसने यात्रा का किराया, रास्ते की सुविधाएँ, राज्य की सीमा पार करने के लिए आवश्यक परमिट और मेडिकल फिटनेस प्रमाणपत्र जैसी सभी आवश्यक बातों की जानकारी ली। काफी खोजबीन के बाद उसकी बात आनंद से हुई।

आनंद उसकी कंपनी 'सिफकॉन' का अधिकृत परिवहन ठेकेदार था और वर्षों से वरिष्ठ अधिकारियों को घर से कार्यालय तथा कार्यालय से घर पहुँचाने का काम करता था।

आनंद ने कहा, "समीर जी, आने-जाने का किराया पैंतीस हजार रुपये होगा। ड्राइवर भत्ता दो हजार रुपये। अलग-अलग राज्यों से जल्दी यात्रा परमिट बनवाने के लिए लगभग दस हजार रुपये लगेंगे। आप तीन लोगों के मेडिकल फिटनेस सर्टिफिकेट के लिए छह हजार रुपये और बाकी रास्ते के जरूरी इंतज़ाम अलग होंगे। कुल मिलाकर लगभग साठ हजार रुपये खर्च आएगा।"

समीर हैरान रह गया- "क्या...? आनंद, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया? मैं इतना पैसा कैसे दूँ?" आनंद शांत स्वर में बोला, "समीर जी, मुझे आपको एक हजार किलोमीटर दूर गाँव तक छोड़कर खाली गाड़ी वापस भी लानी है। वापसी में ग्राहक मिलेगा या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं है। रास्ते में पुलिस जाँच, परमिट, दवाइयाँ और दूसरी व्यवस्थाएँ भी करनी होंगी। मैंने आपको जान-पहचान होने की वजह से पहले ही पाँच हजार रुपये कम बताए हैं।"

"मैंने जितना संभव था, उतना कम बताया है। कोरोना काल में इससे अधिक छूट देना मेरे लिए संभव नहीं है।" काफी देर तक बातचीत और मोलभाव चलता रहा। आखिरकार परिस्थितियों के आगे मजबूर होकर समीर ने आनंद का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। **यात्रा की तारीख तय हुई...** ५ **अप्रैल, 2020।**

५ अप्रैल, शाम लगभग साढ़े चार बजे आनंद अपनी पर्ल व्हाइट, सात सीटों वाली एसयूवी लेकर समीर की सोसाइटी पहुँचा। गाड़ी देखने में बेहद शानदार थी। उसकी चमक देखकर कोई भी नहीं कह सकता था कि वह पुरानी है। आनंद ने उसे बड़े जतन और लगन से संभालकर रखा था।

उसने गाड़ी सोसायटी की पार्किंग में, समीर की बिल्डिंग के नीचे खड़ी की और बाहर निकल आया। समीर पहले से ही सोसायटी के सुरक्षा गार्ड की मदद से यात्रा का सारा सामान नीचे ले आया था। आनंद और सुरक्षा गार्ड ने मिलकर एक-एक करके सारा सामान गाड़ी में रख दिया।

सामान रखने के बाद आनंद मुस्कुराते हुए समीर की ओर मुड़ा और बोला, "समीर भैया, इस यात्रा के लिए मैं अपनी निजी गाड़ी लेकर आया हूँ। इसे

मैंने हमेशा बहुत अच्छी तरह मेंटेन करके रखा है। सफ़र लंबा है, इसलिए सोचा कि भाभी जी और सुनिधि को आरामदायक यात्रा मिले। कंपनी के फ्लीट की गाड़ियाँ इतनी आरामदेह नहीं होतीं।"

उसने प्यार से गाड़ी के बोनट पर हाथ फेरते हुए कहा, "मैंने यह सात सीटों वाली एसयूवी, साल 2019 में खरीदी थी। लंबी दूरी के सफ़र के लिए इससे बेहतर गाड़ी मिलना मुश्किल है। इसका सस्पेंशन मज़बूत है, इंजन भरोसेमंद है और खराब रास्तों पर भी बिना किसी परेशानी के चल जाती है। मुझे पूरा भरोसा है कि यह हमें सुरक्षित तुर्ग तक पहुँचा देगी।"

समीर ने अपना मोबाइल निकाला और श्रेया को फोन मिलाया। "श्रेया, नीचे आ जाओ। गाड़ी आ गई है।" "हाँ, बस दो मिनट में आती हूँ।" कहकर श्रेया ने फोन रख दिया। कुछ ही देर बाद श्रेया, सुनिधि का हाथ थामे नीचे आ गई। जैसे ही सुनिधि की नज़र सामने खड़ी पर्ल व्हाइट एसयूवी पर पड़ी, उसकी आँखें चमक उठीं। "अरे वाह! कितनी सुंदर गाड़ी है!" वह खुशी से उछलते हुए बोली।

श्रेया ने भी गाड़ी को ध्यान से देखा। वह उसके चारों ओर घूमी, फिर मुस्कुराकर समीर से बोली, "समीर, गाड़ी तो तुमने बहुत अच्छी अरेंज की है। लेकिन आरामदायक भी होगी न? हमें हज़ार किलोमीटर से भी ज़्यादा का सफ़र तय करना है। पता नहीं कितने दिन लग जाएँ।"

समीर मुस्कुराया-" मैंने आनंद से कहकर तुम्हारे लिए सबसे बढ़िया गाड़ी मंगवाई थी । लेकिन ये तो कंपनी की गाड़ी लाने के बजाय अपनी निजी गाड़ी ही ले आया। इसे इसने बहुत अच्छे से मेंटेन करके रखा है। लंबी यात्रा के लिए इससे बेहतर विकल्प नहीं हो सकता।"

आनंद मुस्कुराते हुए आगे बढ़ा और आदर से बोला, "गाड़ी आपकी सेवा में हाज़िर है, भाभी जी। आप बिल्कुल भी चिंता मत कीजिए। सफ़र जितना भी लंबा हो, मैं पूरी कोशिश करूँगा कि आपको किसी तरह की असुविधा न हो।" श्रेया थोड़ी झिझकते हुए बोली, "वो... बात दरअसल यह है कि... मैं माँ बनने वाली हूँ।

“कोविड की वजह से सरकारी गाइडलाइंस के तहत फ़्लाइट और ट्रेन से यात्रा बंद है। सड़क मार्ग से यात्रा करना काफ़ी मुश्किल भरा हो सकता है। इसलिए मुझे अपनी प्रेग्नेंसी को लेकर चिंता हो रही है।"

आनंद ने सम्मानपूर्वक सिर झुकाते हुए कहा, "जी, समीर साहब ने मुझे सब बता दिया है। आप निश्चिंत रहिए। मैं पूरी ज़िम्मेदारी और सावधानी से गाड़ी चलाऊँगा। जहाँ भी ज़रूरत होगी, आराम के लिए रुकेंगे। आपकी और बच्चे की सुरक्षा मेरी भी ज़िम्मेदारी है।"



श्रेया के चेहरे पर संतोष की हल्की मुस्कान उभर आई। उसे महसूस हुआ कि उनकी यात्रा किसी साधारण ड्राइवर के साथ नहीं, बल्कि एक समझदार और ज़िम्मेदार इंसान के साथ शुरू हो रही थी।

मंज़िल की ओर पहला कदम... सफ़र शुरू हुआ। अनुमान था कि छोटे-छोटे विश्राम, भोजन और शौचालय के लिए रुकते हुए तुर्ग पहुँचने में लगभग दो दिन लगेंगे। समीर ने आनंद से विशेष आग्रह किया, "गाड़ी तेज मत चलाना। श्रेया गर्भवती है। सफर जितना आरामदायक और सुरक्षित होगा, उतना ही अच्छा रहेगा।"

शुरुआत में सुनिधि लंबी सड़क यात्रा को लेकर बहुत उत्साहित थी, लेकिन कुछ घंटों बाद वह ऊबने लगी। समीर उसे कहानियाँ सुनाता, खेल खिलाता और रास्ते के दृश्य दिखाकर उसका मन बहलाने की कोशिश करता। श्रेया भी बीच-बीच में उसे प्यार से समझाती। कुछ देर बाद सुनिधि ने उत्सुकता से पूछा, "मम्मी... तुर्ग कैसा है?"

श्रेया मुस्कुराई, "तुर्ग छत्तीसगढ़ के नारायणपुर शहर और बस्तर जिले के करीब, दंडकारण्य क्षेत्र में बसा एक बहुत सुंदर गाँव है।" "वहाँ छोटे-छोटे,कच्चे-पक्के मकान भी हैं और सुंदर कॉटेज भी। अलग-अलग तरह

के लोग रहते हैं। लगभग हर परिवार के पास दोपहिया, तीनपहिया या चारपहिया वाहन है। कई लोगों के अपने खेत हैं, पशु हैं और छोटे-छोटे व्यवसाय हैं। कुछ लोग सरकारी और निजी कंपनियों में भी काम करते हैं।"

वह मुस्कुराकर आगे बोली, "चारों ओर हरियाली है, खुली हवा है और खेलने के लिए बहुत सारी जगह है। वहाँ तुम्हें बहुत सारे नए दोस्त मिलेंगे।" सुनिधि की आँखों में उत्साह चमक उठा।

आनंद एक 35 वर्षीय अनुभवी ड्राइवर था। वह ड्राइविंग में बहुत निपुण था और यात्रा के दौरान आने वाली चुनौतियों को भी कुशलता से संभाल लेता था। वह कार के म्यूजिक सिस्टम में हिंदी गाने और संगीत बजाकर परिवार का मनोरंजन करता रहता था। कभी-कभार, आराम करने के लिए रुकने के दौरान वह सुनीधि के साथ खेलता भी था। वह समीर के साथ मौसम, सड़क की स्थिति, यात्रा और कोविड (Covid) से जुड़े उन नए अपडेट्स पर चर्चा करता था, जो उसे दूसरे ड्राइवरों से व्हाट्सएप (WhatsApp) ग्रुप में मिलते थे। चेकपोस्टों और पेट्रोल पंपों पर वह मुस्कुराते हुए पुलिस अधिकारियों से मिलता था और जरूरत पड़ने पर उन्हें यात्रा के दस्तावेज दिखाता था।

भारत में लॉकडाउन के दौरान, राज्यों की पुलिस टीमों ने नागरिकों की सुरक्षा करने, कोविड के प्रसार और आपराधिक गतिविधि को रोकने के लिए पुलिस चेक पोस्टों का नेटवर्क बनाया था।

जो अपने-अपने क्षेत्रों में कड़ी निगरानी और प्रतिबंध लागू करते थे, उदाहरण के लिए, राज्य के परमिट और मेडिकल फिटनेस सर्टिफिकेट के बिना यात्रा करने पर रोक थी।

हालांकि यह काम लॉकडाउन का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा था, लेकिन इससे कई रिहायशी इलाके और बस्तियां अलग-थलग पड़ गए थे। जिनके अपने खुद के बनाए हुए प्रशासन और रहने के नियम थे। यात्रा के दौरान, सुनीधि अक्सर लोगों के समूहों—वयस्कों, बच्चों और बुजुर्गों—को झाड़ियों और पेड़ों के पीछे छिपकर गुपचुप तरीके से अपने गृहनगर की ओर यात्रा करते हुए देखती थी।

वह अपने पिता से पूछती थी, 'डैडी! क्या वो लोग भूत हैं?' जिस पर समीर हैरान रह जाता और श्रेया थोड़ी चिंतित दिखती। आनंद हंसते हुए सबकी चिंताओं को खारिज कर देता और कहता—'नहीं बच्ची, वो लोग शहरों से अपने गांव की तरफ जा रहे हैं। उनके पास ट्रैवलिंग परमिट और डॉक्यूमेंट्स नहीं हैं, इसीलिए पुलिस से छिपकर जा रहे हैं।'

सुनीधि पूछती है—'आनंद अंकल, पुलिस ने उनको पकड़ लिया तो? आनंद बोला 'कुछ नहीं बेटा थोड़ा डांटकर छोड़ देंगे, नहीं तो जेल ले जाएंगे।' सुनीधि आगे पूछती है, "क्या पुलिस हमको नहीं पकड़ लेगी? "

श्रेया को काफी देर से तकलीफ हो रही थी। उसकी प्रेग्नेंसी की पहली तिमाही (First Trimester) लगभग पूरी होने वाली थी। यात्रा की थकावट, प्रेग्नेंसी की असहजता (Discomfort) और सुनिधि के अंतहीन सवालों से झुंझलाई हुई श्रेया चिढ़कर बोली, 'सुनिधि, थोड़ी देर चुप बैठो!'

समीर ने श्रेया का हाथ थामते हुए शांत और धीमी आवाज़ में कहा, "क्या हुआ श्रेया? इतनी चिढ़ क्यों रही हो? सुनिधि अभी छोटी बच्ची है... बच्चों में तो बस हर चीज़ को जानने की उत्सुकता होती है।" समीर एक समझदार पति और पिता, दोनों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है।

श्रेया ने कोई उत्तर नहीं दिया। लगातार सफर और गर्भावस्था की वजह से उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। चेहरे पर थकान साफ़ दिखाई दे रही थी। बिखरे हुए बाल, फीका पड़ा चेहरा और बार-बार आती मितली ने उसे पूरी तरह निढाल कर दिया था। कार की पिछली सीट पर वह सिर टिकाकर बैठी थी। बीच-बीच में आँखें बंद कर लेती, मानो थोड़ी-सी राहत तलाश रही हो।

कुछ देर बाद उसने धीमी आवाज़ में आगे बैठे आनंद से पूछा, "भैया... अभी और कितना दूर जाना है? हम लोग तुर्ग कब तक पहुँचेंगे?" आनंद ने रियर-व्यू मिरर में उसकी ओर देखते हुए कहा, "भाभी, अगर रास्ते में कोई बड़ी रुकावट नहीं आई तो कल शाम तक पहुँच जाएँगे। बस थोड़ा और सब्र कीजिए।"

समीर ने श्रेया को समझाते कहा, "हमने कल, 5 अप्रैल की शाम को अपनी यात्रा शुरू की थी। आधा सफ़र तो कट चुका है, बस आधा रास्ता और तय करना बाकी है।" श्रेया ने थके हुए स्वर में समीर की ओर देखा। "समीर... ज़रा मेरे पास आकर बैठो ना। समीर ने उसकी ओर देखा, "क्या हुआ? तबीयत ज़्यादा खराब लग रही है क्या?"

श्रेया ने अपने और समीर के बीच बैठी सुनिधि की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसे खिड़की वाली सीट पर बैठा दो। बाहर देखते-देखते इसका मन भी लगा रहेगा। मुझे थोड़ा आराम करना है... तुम्हारे कंधे पर सिर रखकर।" समीर कुछ पल चुप रहा। फिर मुस्कुराकर बोला, "अरे, यह आनंद के पास आगे वाली सीट पर बैठ जाए तो?"

श्रेया ने तुरंत सिर हिलाया। " हाँ... उसे वहीं बैठने दो। जितनी देर चाहे आनंद भैया से चटर-पटर करती रहे। मुझे बस थोड़ा सुकून चाहिए।" समीर ने आगे बैठे आनंद से कहा, "आनंद, ज़रा गाड़ी किनारे रोकना। सीट बदल लेते हैं।" "जी, समीर जी।" आनंद ने धीरे-धीरे कार की रफ़्तार कम की और सड़क के किनारे रोक दी। गाड़ी रुकते ही समीर बोला " सुनिधि, तुम आगे की सीट पर बैठकर बाहर के नज़ारे देखो।"

सुनिधि ने तुरंत मुँह फुला लिए। "नहीं... मुझे डैडी के साथ ही बैठना है।" उसने समीर का हाथ कसकर पकड़ लिया, मानो कोई उसे उससे दूर कर रहा हो। "मैं यहीं बैठूँगी।" समीर ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा। "बस थोड़ी देर की बात है, बेटा। मम्मी की तबीयत ठीक नहीं है।"

लेकिन सुनिधि अपनी ज़िद पर अड़ी रही। "नहीं... मुझे डैडी के पास ही बैठना है। कार के भीतर कुछ क्षणों के लिए असहज चुप्पी छा गई। आनंद ने बाहर झाँका, सड़क अब लगभग सुनसान हो चुकी थी। दूर-दूर तक केवल अँधेरा फैला था और कहीं-कहीं पेड़ों की परछाइयाँ हेडलाइट की रोशनी में काँपती हुई दिखाई दे रही थीं।

वह कुछ क्षण सोचता रहा, फिर धीमे स्वर में बोला, "समीर जी... अँधेरा हो चुका है। यहाँ ज़्यादा देर रुकना ठीक नहीं रहेगा। अगर सीट बदलनी है तो जल्दी कर लीजिए... नहीं तो आगे किसी सुरक्षित जगह पर रुककर बदल

लेंगे।"समीर ने गाड़ी से निकले बिना ही सावधानी से सुनिधि को उठाकर खिड़की के पास बैठा दिया और खुद दोनों के बीच आ गया। श्रेया ने समीर के कंधे पर सर रखते हुए कहा- "अब ठीक है, आनंद भैया गाड़ी चलाइए।

गाड़ी फिर से धीरे-धीरे सड़क पर दौड़ने लगी। कुछ देर तक कार के भीतर सन्नाटा पसरा रहा। केवल इंजन की घरघराहट और बाहर से आती झींगुरों की आवाज़ें उस खामोशी को तोड़ रही थीं। सुनिधि खिड़की से बाहर घने अँधेरे को निहार रही थी। श्रेया ने अपना सिर समीर के कंधे पर टिका लिया और आँखें मूँद लीं। समीर एक हाथ से उसका हाथ थामे बैठा था, जबकि उसकी निगाहें बार-बार आगे की सड़क पर टिक जातीं।

आनंद पूरी सावधानी से गाड़ी चला रहा था। उसने हेडलाइट की रोशनी थोड़ी तेज़ कर दी थी। गाड़ी अभी कुछ ही किलोमीटर आगे बढ़ी थी कि अचानक...आनंद ने पूरी सतर्कता के साथ कार की रफ़्तार कम कर दी। कुछ ही क्षणों बाद उसने धीरे से ब्रेक लगाया। कार सड़क के बीचोंबीच रुक गई। सामने पाँच-छह लोग सड़क पर खड़े थे। उनके चेहरे कपड़ों और मास्क से पूरी तरह ढके हुए थे। समीर का दिल एकाएक ज़ोर से धड़कने लगा।

वह घबराकर बोला, "आनंद... ये लोग कौन हैं?" आनंद ने सामने नज़रें गड़ाए हुए धीमे स्वर में कहा, "आम लोग तो नहीं लगते, साहब। सबके चेहरे ढके हुए हैं..." कुछ पल रुककर उसने फुसफुसाते हुए कहा, "कहीं... चोर-उचक्के तो नहीं? कार के भीतर अचानक सन्नाटा छा गया।

आनंद ने गाड़ी का इंजन बंद नहीं होने दिया, उसने मन ही मन सोचा कि, "अगर ये लोग कुछ गड़बड़ करते हैं तो गाड़ी से सबको उड़ा कर भाग जाएंगे।" तभी उसकी नजर उन लोगों के पीछे पड़े लकड़ी के बड़े- बड़े लट्ठों और पत्थर के टुकड़ों पर पड़ी। सामने का रास्ता ब्लॉक कर दिया गया था और अब उन डकैतों ने पीछे का रास्ता भी बंद कर दिया था। वो लोग अब फंस गए थे। आनंद ने सावधानी से हॉर्न बजाया, मानो सामने खड़े लोगों से रास्ता छोड़ने का विनम्र अनुरोध कर रहा हो। अचानक अँधेरे को

चीरती हुई एक कड़क आवाज़ गूँजी। "खबरदार...! गाड़ी आगे चलाने की कोशिश मत करना।"

कुछ ही क्षणों में उन नकाबपोश लोगों में से एक आगे बढ़ा। उसके हाथ में मोटी लकड़ी का डंडा था। उसने गाड़ी की हेडलाइट पर हाथ रखते हुए ऊँची आवाज़ में कहा, "जो कुछ भी है तुम्हारे पास... चुपचाप हमारे हवाले कर दो। अगर अपनी जान प्यारी है, तो कोई चालाकी मत करना।"

उसकी आवाज़ में ऐसी कठोरता थी कि सुनिधि डरकर समीर से लिपट गई। समीर का गला सूख गया। उसने घबराकर सामने खड़े लोगों की ओर देखा। सड़क के दोनों ओर घना अँधेरा था और दूर-दूर तक किसी मदद की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी।

आनंद के माथे पर पसीने की महीन बूंदें चमकने लगीं। आनंद ने चुपके से गाड़ी के डैशबोर्ड के पास छुपे हुए केबिन को खोला और उसमें हाथ डालकर अपनी पिस्तौल निकाल ली। लेकिन उसने इस बात की भनक किसी को भी नहीं लगने दी।"

दूसरे नकाबपोश ने गुस्से में आगे बढ़ते हुए ज़ोर से चिल्लाया, "सुनाई नहीं दिया क्या? चुपचाप गाड़ी से बाहर निकलो... सब के सब! और जाकर उस कोने में खड़े हो जाओ।" उसने सड़क किनारे एक सुनसान स्थान की ओर इशारा किया।

"अगर किसी ने ज़रा भी होशियारी दिखाने की कोशिश की..." उसने अपनी उँगली गाड़ी की ओर तानते हुए कहा, "...तो इसी वक्त बम से इस गाड़ी के परखच्चे उड़ा देंगे। समझे?" उसकी आवाज़ में ऐसा ठंडा और निर्मम आत्मविश्वास था कि एक पल के लिए सबकी साँसें थम-सी गईं।

आनंद ने गहरी साँस ली। उसने अपने डर पर किसी तरह काबू पाया और खिड़की का शीशा थोड़ा-सा नीचे करते हुए शांत स्वर में कहा, "देखो भाई... आपको जो भी चाहिए, हम दे देंगे। किसी को कोई परेशानी नहीं होगी।"

"हम अपने सारे पैसे, मोबाइल और कीमती सामान एक पोटली में बाँधकर गाड़ी से थोड़ा आगे फेंक देते हैं। आप आराम से ले लेना... लेकिन हमें जाने

दो।" कुछ क्षण रुककर उसने विनती भरे स्वर में कहा, "हमें किसी तरह का पंगा नहीं चाहिए, हम लोग बस अपने घर जा रहे हैं। कृपया हमें जाने दीजिए।"

नकाबपोशों में से एक ने कार के भीतर टॉर्च की तेज़ रोशनी डाली। उसकी नज़र एक-एक कर सभी चेहरों पर गई। फिर वह कुटिलता से हँसते हुए हुए अपने सरदार से बोला, "सरदार... ज़रा देखो तो। एक ड्राइवर... एक आदमी... एक छोटी बच्ची... साथ में एक सुंदर और जवान औरत भी है।"

उसकी आँखों में शिकार देख लेने जैसी चमक थी। "लगता है आज की रात हमारी किस्मत खुल गई, बच्ची और औरत दोनों का मज़ा लेंगे ।" उसकी बात सुनकर बाकी नकाबपोश भी ठहाका मारकर हँस पड़े और धीरे-धीरे गाड़ी की ओर बढ़ने लगे। एक ने व्यंग्य से कहा, "सरदार, पहले ये तय कर लो... किससे क्या लेना है।" भीड़ में सबसे छोटे कद का आदमी आगे बढ़ा। उसकी आवाज़ में खतरनाक उत्साह था-"सरदार... जो भी करना है, जल्दी करो। देर ठीक नहीं।"

उनकी हँसी और बढ़ते कदमों ने कार के भीतर बैठे चारों लोगों के दिलों की धड़कनें तेज़ कर दीं। समीर ने सहज ही सुनिधि को अपनी बाँहों में समेट लिया, जबकि श्रेया भय से समीर का हाथ कसकर पकड़ चुकी थी। आनंद ने फिर से कुछ कहकर बात संभालने की कोशिश की। "भाई... मेरी बात तो सुनिए..." लेकिन उसकी बात पूरी होने से पहले ही गिरोह का सरदार गुस्से से आगे बढ़ा और उसने पूरी ताकत से अपनी लाठी कार की एक हेडलाइट पर दे मारी।

धड़ाम! एक हेडलाइट पल भर में चकनाचूर हो गई, काँच के टुकड़े चारों ओर बिखर गए और सड़क का आधा हिस्सा अँधेरे में डूब गया। सरदार ने लाठी का सिरा आनंद की ओर तानते हुए गुर्राकर कहा, "ज़्यादा ज़ुबान चलाएगा, साले... तो अगला वार दूसरी हेडलाइट पर नहीं, तेरी खोपड़ी पर होगा।"

आनंद का गला सूख गया। उसने एक हाथ में स्टीयरिंग और दूसरे हाथ में पस्तौल पकड़ ली। डाकू जब आपस में बात कर रहे थे तब उसने उनकी

नजर बचाकर गन का सेफ्टी लॉक खोल दिया था। गन अब फायरिंग के लिए पूरी तरह तैयार थी।। समीर समझ चुका था कि सामने खड़े लोग केवल लूटपाट करने वाले नहीं थे। उनके चेहरे पर ऐसी क्रूरता थी, जिससे साफ़ था कि वे किसी भी हद तक जा सकते थे।

कार के भीतर बैठे चारों लोग अब पूरी तरह लुटेरों के रहमोकरम पर थे। अब तक सभी नकाबपोश गाड़ी को चारों ओर से घेर चुके थे। कोई दरवाज़े के हैंडल खींच रहा था, कोई शीशों पर मुक्के मार रहा था। कार के भीतर बैठे चारों लोगों की साँसें जैसे थम गई थीं।

दो गुंडे लाठियाँ उठाकर आगे बढ़े। "एक ही वार में शीशा तोड़ देते हैं..." उनमें से एक गुर्राया। दोनों ने पूरी ताकत से लाठियाँ विंडशील्ड पर दे मारने के लिए ऊपर उठाईं ही थीं कि...धाँय...घने जंगल की निस्तब्धता को चीरती हुई गोली चलने की आवाज़ गूँज उठी। उस एक धमाके ने मानो पूरे जंगल की खामोशी को टुकड़ों में बाँट दिया।

पास के पेड़ों पर बैठे पक्षी घबराकर एक साथ फड़फड़ाते हुए आसमान की ओर उड़ गए। चारों तरफ़ उनके पंखों की आवाज़ और काँव-काँव की गूँज फैल गई। लाठी उठाए दोनों गुंडों के हाथ वहीं रुक गए। वे घबराकर चारों ओर देखने लगे। तभी उनमें से एक चीख पड़ा, "सरदार... भागो! पुलिस आ गई...!"

यह सुनते ही पूरे गिरोह में भगदड़ मच गई। जो कुछ क्षण पहले शिकार पर टूट पड़ने को तैयार थे, वही अब जान बचाने के लिए अँधेरे जंगल की ओर भाग रहे थे। समीर, आनंद, श्रेया और सुनिधि अवाक् बैठे रह गए। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि वह गोली किसने चलाई... और अँधेरे में उनकी मदद के लिए आखिर आया कौन था।

कुछ ही क्षणों में दो पुलिस की जिप्सियाँ सायरन बजाती हुई तेज़ी से वहाँ आ पहुँचीं और आनंद की कार के दोनों ओर आकर तिरछी खड़ी हो गईं, मानो उन्होंने एक सुरक्षा घेरा बना दिया हो। जिप्सियों के रुकते ही हथियारबंद पुलिसकर्मी फुर्ती से नीचे उतरे और चारों दिशाओं में मोर्चा

संभाल लिया। आनंद ने राहत की साँस ली। उसने पुलिस वालों से बात करने के लिए अपनी सीट के पास वाला गाड़ी का शीशा नीचे कर दिया।

अँधेरे जंगल में कुछ देर तक अफरा-तफरी मची रही। "इधर भागा...!""घेरो... कोई निकलने न पाए!" लाठियों की आवाज़ें, दौड़ते कदमों की आहट और पुलिस के आदेश चारों ओर गूँजने लगे। कुछ देर की भागदौड़ और संघर्ष के बाद पुलिस ने तीन नकाबपोश बदमाशों को दबोच लिया। उनके हाथ पीछे बाँध दिए गए और उन्हें घसीटते हुए सड़क तक लाया गया। बाकी अपराधी घने अँधेरे का फायदा उठाकर जंगल में कहीं गायब हो चुके थे।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने वायरलेस सेट उठाया और तेज़ आवाज़ में अपने साथियों को सूचना दी,"सभी यूनिट ध्यान दें। संदिग्ध लुटेरों का गिरोह राष्ट्रीय राजमार्ग पर मौजूद है। सभी निकास मार्ग तत्काल घेर लिए जाएँ। कोई भी अपराधी बचकर निकलने न पाए।" संदेश भेजने के बाद वह तेज़ कदमों से आनंद की कार के पास पहुँचा। समीर, श्रेया, और सुनिधि के चेहरों पर अभी भी डर साफ़ झलक रहा था।

पुलिस अधिकारी ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। उन्होंने अपनी टोपी ठीक की और शांत लेकिन आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा, "मैं इंस्पेक्टर कविश शिंदे, अकोला पुलिस की विशेष गश्ती टीम से हूँ। अब आप लोगों को घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। आगे का रास्ता पूरी तरह सुरक्षित कर दिया जाएगा। हमारी दूसरी टीमें भी आसपास के इलाके में तलाशी अभियान चला रही हैं।"

उन्होंने एक पल रुककर सबको आश्वस्त करते हुए कहा, "आप लोग अब सुरक्षित हैं। कुछ औपचारिक पूछताछ के बाद आप अपनी यात्रा जारी रख सकते हैं।" इसके बाद इंस्पेक्टर कविश शिंदे ने आनंद की ओर देखा, उनके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान उभर आई। "गुड जॉब, आनंद। कीप इट अप।" उन्होंने आगे बढ़कर आनंद के कंधे पर हाथ रखा।

"तुम्हारी सूझबूझ और समय पर दी गई सूचना की वजह से हम सही समय पर यहाँ पहुँच पाए। अगर तुम घबराकर कोई जल्दबाज़ी कर बैठते, तो न जाने क्या हो सकता था।"

आनंद ने विनम्रता से सिर झुकाते हुए कहा, "धन्यवाद, सर। मैंने तो बस अपना फ़र्ज़ निभाया।" इंस्पेक्टर ने संतोष से सिर हिलाया और फिर अपने जवानों की ओर मुड़कर आदेश दिया, "इन तीनों को वैन में बैठाओ और बाकी फरार अपराधियों की तलाश जारी रखो। आसपास का पूरा इलाका खंगालो।"

कुछ औपचारिक पूछताछ के बाद आनंद ने कार दोबारा स्टार्ट की। इंजन की हल्की घरघराहट के साथ गाड़ी फिर से राष्ट्रीय राजमार्ग पर दौड़ने लगी। बाहर रात पूरी तरह उतर चुकी थी। चारों ओर केवल अँधेरा था। हेडलाइट की पीली रोशनी सड़क पर एक संकरी लकीर बनाती हुई आगे बढ़ रही थी। दूर-दूर तक पेड़ों की परछाइयाँ हवा के साथ झूम रही थीं। बीच-बीच में तेज़ हवा की "सायँ... सायँ..." की आवाज़ कार के भीतर तक सुनाई दे रही थी।

कार के अंदर असामान्य खामोशी पसरी हुई थी। कुछ ही देर पहले हुई घटना ने सभी को भीतर तक हिला दिया था। सुनिधि अपने पिता से चिपकी हुई थी। उसकी आँखें थकान से भारी हो चुकी थीं, लेकिन डर के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी।

श्रेया ने दोनों हाथों से समीर का हाथ अब भी कसकर पकड़ रखा था। उसके चेहरे पर थकान के साथ-साथ भय भी साफ़ दिखाई दे रहा था। समीर बार-बार पीछे मुड़कर देखता, मानो उसे डर हो कि कहीं वे नकाबपोश फिर उनका पीछा करते हुए न आ जाएँ।

आनंद पूरी सावधानी से राष्ट्रीय राजमार्ग-53 पर गाड़ी चला रहा था। उसकी नज़र सड़क से एक पल के लिए भी नहीं हट रही थी। करीब एक घंटा आगे बढ़ने के बाद किनारे बने एक ढाबे के सामने आनंद ने गाड़ी धीरे-धीरे रोक दी, फिर इंजन बंद करते हुए कहा, "समीर जी, थोड़ा रुक लेते हैं। सब लोग

मुँह -हाथ धो लीजिए, चाय-नाश्ता भी हो जाएगा। गाड़ी भी थोड़ी देर आराम कर लेगी।"

समीर ने घड़ी की ओर देखा। रात काफी हो चुकी थी। "हाँ, ठीक है," उसने कहा, "वैसे भी सब लोग थक गए हैं।" गाड़ी का पिछला दरवाजा खोलकर उसने सुनिधि को उतरने में मदद की, सुनिधि भी उत्साह से गाड़ी से बाहर निकली। समीर भी गाड़ी से बाहर निकलता है और श्रेया की मदद के लिए उसकी साइड आकर खड़ा हो जाता है। श्रेया ने धीरे से कार का दरवाज़ा खोला, लंबी यात्रा के कारण उसके पैरों में हल्की अकड़न आ गई थी। समीर ने तुरंत उसका हाथ पकड़कर उसे सावधानी से नीचे उतारा। "धीरे... संभलकर," उसने चिंता भरे स्वर में कहा।

सुनिधि ने गहरी साँस ली और बोली, "डैडी... यहाँ की हवा कितनी अच्छी है!"समीर मुस्कुरा दिया। लॉकडाउन के बावजूद ढाबे पर हल्की-फुल्की रौनक थी। कुछ ट्रक चालक बैठकर भोजन कर रहे थे। वहाँ दो-तीन और परिवार भी दिखाई दे रहे थे। शायद वे भी किसी मजबूरी में लंबा सफ़र तय कर रहे थे।

समीर अपनी फेमिली को लेकर ढाबे के अंदर चला जाता है। एक अच्छी जगह देखकर सब लोग आराम से बैठ जाते हैं। आनंद गाड़ी का निरीक्षण करता है फिर उसे लॉक करके समीर के पास आकर बैठ जाता है। चारों ने ढाबे पर थोड़ा-बहुत खाना खाया। गर्म चाय ने जैसे पूरे शरीर में नई ऊर्जा भर दी। कुछ देर पहले तक जो भय उनके चेहरों पर साफ़ दिखाई दे रहा था, वह इस छोटे-से विराम में थोड़ा कम होता महसूस हुआ।

वातावरण पहले की अपेक्षा सहज लगने लगा था। रात के लगभग डेढ़ बज रहे थे। समीर ने चाय का आख़िरी घूंट लेते हुए पूछा, "आनंद, हम लोग अभी कहाँ तक पहुँचे हैं?"

आनंद ने उत्तर दिया, "समीर जी, हम लोग अकोला (महाराष्ट्र) से लगभग बीस-पच्चीस किलोमीटर आगे निकल चुके हैं। कल शाम तक आपको आपके पते पर पहुँचा दूँगा।" श्रेया कुछ देर से एक बात सोच रही थी। आखिर उसने झिझकते हुए पूछा,

"आनंद भैया... एक बात पूछूँ?" "जी भाभी जी, पूछिए।" "वो पुलिस इंस्पेक्टर आपको शाबाशी क्यों दे रहे थे? आखिर बात क्या थी?" आनंद के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। "भाभी जी, दरअसल हमारे ड्राइवरों का एक व्हाट्सऐप ग्रुप है। उसमें सफ़र के दौरान होने वाली घटनाओं और रास्तों की जानकारी एक-दूसरे से साझा करते रहते हैं।"

वह थोड़ा रुका और आगे बोला, "आज शाम उसी ग्रुप में किसी ने संदेश भेजा था कि इस इलाके में एक खतरनाक गिरोह घूम रहा है। साथ ही महाराष्ट्र हाईवे पेट्रोल टीम के कुछ अधिकारियों के मोबाइल नंबर भी भेजे गए थे।"

समीर ध्यान से उसकी बात सुन रहा था। आनंद ने कहा, "जब आप लोग गाड़ी में सीट बदलने की बात कर रहे थे और मैंने गाड़ी रोकी थी, तभी मेरी नज़र दूर सड़क किनारे खड़े कुछ लोगों पर पड़ी। उनके हाथों में लाठियाँ थीं और उनका हावभाव मुझे बिल्कुल सामान्य नहीं लगा। तभी मुझे शक हो गया।"

"इसलिए मैंने गाड़ी आगे बढ़ा दी और हाईवे पेट्रोल टीम को एक संदेश भेज दिया कि हमें कुछ संदिग्ध लोग दिखाई दिए हैं।"

"कुछ देर बाद, जब वे लोग हमारी गाड़ी के सामने आकर खड़े हो गए, और रास्ता ब्लॉक करने में बिज़ी हो गए । तब मैंने मोबाइल को सीट के नीचे छिपाकर पुलिस को कॉल भी कर दिया था। कॉल चालू ही रहने दी, ताकि वे हमारी आवाज़ें और लोकेशन समझ सकें।"

उसने हल्की साँस ली। "मैंने आपको पहले कुछ नहीं बताया, क्योंकि मुझे लगा कि अगर मैं अपनी आशंका बता दूँगा तो आप लोग घबरा जाएँगे।" समीर ने आनंद की ओर प्रशंसा भरी नज़रों से देखा। "तुमने सचमुच बहुत समझदारी दिखाई, आनंद।"

आनंद ने विनम्रता से कहा, "समीर जी, ऊपर वाले की कृपा थी। अगर पुलिस पाँच मिनट और देर से पहुँचती... तो शायद आज रात क्या होता, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

ढाबे की चहल-पहल के बीच कुछ क्षणों के लिए चारों चुप हो गए। फिर आनंद धीमे स्वर में बोला, "व्हाट्सऐप ग्रुप में यह भी बताया गया था कि यही गिरोह पिछले कुछ दिनों से इस इलाके में सक्रिय है। पुलिस के अनुसार इन पर लूटपाट के अलावा कई गंभीर अपराधों का आरोप हैं- बलात्कार, हत्या, और अपहरण। इसी वजह से हाईवे पेट्रोल की टीमें लगातार उनकी तलाश कर रही थीं।"

आनंद की बात सुनकर समीर और श्रेया के चेहरे फिर से गंभीर हो गए। उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि वे मौत के कितने करीब से होकर गुज़रे थे। समीर ने अनायास सुनिधि की ओर देखा। वह निश्चिंत होकर अपनी चाय के साथ बिस्कुट खा रही थी, मानो कुछ देर पहले मौत उसके कितने करीब से होकर गुज़री थी, इसका उसे ज़रा भी एहसास न हो।

श्रेया के हाथ अनायास अपने पेट पर चले गए। उसने अपने अजन्मे बच्चे को महसूस किया। उसकी आँखें भर आईं। उसने मन ही मन भगवान का धन्यवाद किया कि आज उसका परिवार सकुशल बच गया। समीर ने आनंद की ओर देखते हुए कहा, "आनंद... आज अगर तुम अपनी सूझबूझ नहीं दिखाते, तो शायद हम लोग ज़िंदा यहाँ बैठकर चाय नहीं पी रहे होते।"

आनंद मुस्कुराया और बोला, "समीर जी, इंसान अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करता है... लेकिन आख़िरी फैसला ऊपरवाला ही करता है। शायद आज उसकी मर्ज़ी थी कि आप लोग अपनी मंज़िल तक सुरक्षित पहुँचें।"

उन सब ने कुछ देर तक ढाबे की चारपाईयों में लेट कर कुछ देर तक आराम किया । करीब तीन-चार घंटे विश्राम करने के बाद आनंद ने सभी को धीरे-धीरे आवाज़ दी।

"समीर जी... चलिए, अब निकलना चाहिए। अगर समय पर चलेंगे, तो शाम तक तुर्ग पहुँच जाएँगे।" समीर ने घड़ी की ओर देखा। सुबह होने में अभी कुछ ही समय बाकी था। ढाबे के आसपास का वातावरण रात की तुलना में कहीं अधिक शांत था।

सभी ने हाथ-मुँह धोया, एक-एक कप गरम चाय पी और फिर वापस कार में आकर बैठ गए। आनंद ने इंजन स्टार्ट किया। कुछ ही क्षणों में कार फिर

से राष्ट्रीय राजमार्ग पर दौड़ने लगी। पूर्व दिशा के क्षितिज पर हल्की लालिमा उभरने लगी थी। रात का गहरा अँधेरा धीरे-धीरे छँट रहा था। पेड़ों की चोटियों पर बैठे पक्षियों का कलरव सुनाई देने लगा था। ठंडी हवा कार की खिड़कियों से टकराकर भीतर तक ताज़गी पहुँचा रही थी।

रास्ते के दोनों ओर फैले खेत ओस की महीन बूँदों से चमक रहे थे। कहीं-कहीं किसान अपने पशुओं को चारा डालने निकल पड़े थे। दूर किसी मंदिर से आती घंटियों की मधुर ध्वनि वातावरण को और भी शांत बना रही थी। कुछ घंटे पहले तक जो सफ़र भय, अनिश्चितता और दहशत से भरा हुआ था, वही अब किसी नए आरंभ का संकेत देता प्रतीत हो रहा था।

समीर ने खिड़की से बाहर झाँकते हुए गहरी साँस ली। उसके मन में एक अनोखा सुकून उतर आया। श्रेया भी अब पहले से कहीं अधिक सहज दिखाई दे रही थी। रातभर की घबराहट मानो सुबह की पहली किरणों के साथ कहीं पीछे छूट गई थी। उसने मुस्कुराकर बाहर फैली हरियाली की ओर देखा और धीमे से कहा, "लगता है... अब हमारी मंज़िल ज़्यादा दूर नहीं है।"

आनंद ने मुस्कुराते हुए रियर-व्यू मिरर में उनकी ओर देखा। "बस भाभी जी, आज का दिन निकल जाए... शाम तक आप अपने घर पहुँच जाएँगे।" किसी को अंदाज़ा नहीं था कि प्रकृति की यह शांत सुबह, उनके जीवन में आने वाले भयावह तूफ़ान से पहले की आख़िरी निश्चिंत सुबह थी।

अध्याय 3

वह औरत जिसे लोग लाल माई कहते हैं

"कार की हेडलाइट दण्डकारण्य के घने जंगलों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थीं। दूर कहीं एक सियार ने लंबी हुआँक भरी। आनंद ने अनायास एक्सेलरेटर से पैर हल्का कर लिया। समीर ने खिड़की के बाहर झाँका। उसे लगा जैसे जंगल उन्हें देख रहा हो।"

आनंद ने यात्रा के दूसरे दिन सुबह लगभग पाँच बजे ढाबे से गाड़ी आगे बढ़ाई। इसके बाद का सफ़र बिना किसी विशेष घटना के बीता। लगातार तेरह घंटे और यात्रा करने के बाद वे अंततः दंडकारण्य के घने जंगलों में प्रवेश कर गए।

अप्रैल 7th, 2020 शाम के लगभग साढ़े सात बज रहे थे। सूरज पूरी तरह ढल चुका था और जंगल पर अँधेरा उतरने लगा था। गाड़ी की एक हेडलाइट पहले ही टूट चुकी थी, इसलिए केवल एक हेडलाइट की मद्धिम रोशनी ही उनके रास्ते को चीर रही थी। घने पेड़ों के बीच सँकरी और टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर गाड़ी चलाना आनंद के लिए कठिन होता जा रहा था। शाम के आठ बजते-बजते पूरा जंगल अंधकार में डूब चुका था।

गाड़ी के भीतर अजीब-सी खामोशी छा गई। किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। ऐसा लग रहा था मानो किसी अनजाने भय ने सबके दिलों को जकड़ लिया हो।

माहौल को हल्का करने की कोशिश करते हुए श्रेया मुस्कुराई और बोली, "मैं इस इलाके को अच्छी तरह जानती हूँ। यहाँ से हमें लगभग दो घंटे और आगे चलना होगा। उसके बाद छोटी-छोटी पहाड़ियाँ आएँगी। उन्हें पार करते ही सड़क के दाईं ओर, दुकानें और घर नज़र आने लगेंगे।

पुराने पानी की टंकी के पास आदर्श कॉलोनी है। उसके आगे खेतों के बीच में मेरी माँ का पीला रंग का कॉटेज है।"

कुछ क्षण रुककर उसने धीमे स्वर में कहा, "उसे '**सुरेखा निवास**' कहते हैं।" श्रेया के मुँह से यह नाम निकलते ही, मानो अंधकार में छिपी कोई अदृश्य शक्ति जाग उठी हो। बाहर जंगल पहले से भी अधिक रहस्यमय और भयावह प्रतीत होने लगा।

आनंद ने सबको सावधान करते हुए कहा, "सब लोग अपनी-अपनी सीट बेल्ट लगा लीजिए। गुंडों ने गाड़ी की एक हेडलाइट तोड़ दी थी, इसलिए रोशनी बहुत कम है। आगे रास्ता ठीक से दिखाई नहीं दे रहा।"

सबने तुरंत सीट बेल्ट लगा ली। लेकिन श्रेया को सीट बेल्ट लगाने में थोड़ी परेशानी हो रही थी। आनंद ने कहा, "समीर जी, ज़रा सीट बेल्ट ढीली करके भाभी को लगा दीजिए।" उसने गाड़ी सड़क के किनारे रोक दी और सबकी सीट बेल्ट ठीक से लगाने में मदद करने लगा।

तभी जंगल की निस्तब्धता को चीरती हुई किसी जंगली जानवर के ज़ोरदार गुर्राने की आवाज़ सुनाई दी। श्रेया बुरी तरह घबरा गई। समीर भी सहमकर बड़बड़ाया, "पहले गुंडों का झंझट और अब इस जंगल में न जाने कौन-सी बला आ गई।"

पास की घनी झाड़ियों में अचानक तेज़ हलचल होने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़ा जानवर झाड़ियों को चीरता हुआ उनकी ओर बढ़ रहा हो। सभी की निगाहें उसी दिशा में टिक गईं। "मम्मी... वो क्या है?" सुनिधि ने घबराते हुए पूछा।

श्रेया ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "लगता है कोई नीलगाय या हिरण होगा, बेटा।" समीर ने आँखें सिकोड़कर अंधेरे में देखने की कोशिश करते हुए कहा, "बाघ या भालू भी हो सकता है।" "समीर, बच्ची को मत डराओ।" श्रेया ने नाराज़ होकर कहा। समीर मुस्कुराते हुए बोला, "सुनिधि को तो डर नहीं लग रहा, लगता है तुम्हें ज़्यादा डर लग रहा है।"

उसकी बात सुनकर आनंद भी हँस पड़ा। सुनिधि उत्साहित होकर बोली, "वाह! कितना मज़ा आएगा। मैंने आज तक असली टाइगर और भालू नहीं देखे।" आनंद मुस्कुराकर बोला, "गाड़ी के अंदर बैठी हो, इसलिए ऐसा कह

रही हो, सुनिधि। यहाँ तो हम सुरक्षित हैं। बाहर हालात बिल्कुल अलग होते हैं।"

श्रेया का चेहरा अचानक गंभीर हो गया। "मुझे तो सिर्फ़ एक ही जानवर से डर लगता है।" "किससे?" सबने एक साथ पूछा। श्रेया ने धीमी आवाज़ में कहा, "**शुकासुर...**"।

वह आगे बोली, "गाँव वाले कहते हैं कि वह इतना विशाल और ताकतवर है कि अगर उससे भिड़ गए तो पूरी की पूरी गाड़ी पलट सकती है। कई सालों से किसी ने उसे नहीं देखा, लेकिन उसकी कहानियाँ आज भी सुनाई जाती हैं।"

समीर हँस पड़ा, "अब क्या तुम हमें डराने लगी हो, श्रेया?" इसी बीच आनंद ने इंजन स्टार्ट करते हुए कहा, "अगर सबने सीट बेल्ट लगा ली हो तो चलें?" "हाँ, चलो।" सबने एक साथ जवाब दिया। गाड़ी फिर धीरे-धीरे अंधेरे जंगल के रास्ते पर आगे बढ़ने लगी।

करीब पंद्रह-बीस मिनट ही हुए होंगे कि अचानक गाड़ी किसी भारी चीज़ से ज़ोरदार टकराई। अगले ही पल गाड़ी एक तरफ़ उछली और फिर नीचे धड़ाम से गिरी। आनंद ने तुरंत स्टीयरिंग पर मज़बूत पकड़ बनाई। उसकी सूझबूझ से गाड़ी किसी तरह संभल गई, वरना वह पलट भी सकती थी। "उफ़्फ़ो!" श्रेया चीख पड़ी। "आनंद भैया, ज़रा संभालकर गाड़ी चलाइए!"

समीर भी गुस्से में बोला, "अरे आनंद, ध्यान से!" गाड़ी कुछ मीटर आगे बढ़ी ही थी कि अचानक इंजन अपने-आप बंद हो गया, गाड़ी जोर से खड़खड़ाहट और घिसटने की आवाज़ के साथ रुकती है ।

आनंद ने गहरी साँस लेते हुए कहा, "माफ़ कीजिए, भाभी जी... समीर भैया, लगता है गाड़ी बाईं तरफ़ किसी बहुत बड़ी चीज़ के ऊपर चढ़ गई थी। शायद किसी चीज़ से टकरा गई है।"

तभी सुनिधि ने बड़ी-बड़ी आँखों से सबकी ओर देखते हुए धीमे से पूछा, "कहीं... वो शुकासुर तो नहीं था?

उसके यह कहते ही गाड़ी के भीतर फिर एक भयावह सन्नाटा छा गया। बाहर घना जंगल मानो साँस रोके खड़ा था। "ये शुकासुर क्या है?" समीर ने उत्सुकता से पूछा। श्रेया ने कुछ पल चुप रहकर गहरी साँस ली, मानो वह किसी पुरानी और भयावह कथा को याद कर रही हो।

"मैंने गाँव वालों से सुना है," वह धीमे स्वर में बोली, "शुकासुर एक बहुत बड़ा जंगली सूअर जैसा जीव था... या शायद सचमुच एक असाधारण आकार का जंगली सूअर। लेकिन लोग उसे साधारण जानवर नहीं मानते थे। कहते हैं, एक समय उसने पूरे इलाके में ऐसी तबाही मचाई थी कि शाम ढलते ही लोग अपने घरों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करते थे।"

बाहर जंगल की गहराइयों से झींगुरों की झी झी, सियारों के हु हु और उल्लू की खिचक-खिचक की आवाज़ें आ रही थीं। श्रेया आगे बोली, "उससे जुड़ी न जाने कितनी किंवदंतियाँ आज भी गाँव में सुनाई जाती हैं। लोग कहते हैं कि वह आदमखोर हज़ार साल पहले प्रकट हुआ था। जो भी अकेला जंगल में जाता, कभी लौटकर नहीं आता। कई लोगों की लाशें मिलीं, लेकिन उनके शरीर बुरी तरह चिथड़े-चिथड़े हो चुके थे।"

समीर ने आश्चर्य से पूछा, "फिर उसे मारने की किसी ने कोशिश नहीं करी?"
" करी थी," श्रेया ने सिर हिलाया। "सुना है उसकी दहशत खत्म करने के लिए यहाँ के गोंड राजा ने कई नामी शिकारी भेजे थे। लेकिन कोई भी शुकासुर को मार नहीं पाया। जो गए, उनमें से कई कभी लौटकर ही नहीं आए।"

सुनिधि अब पूरी तन्मयता से कहानी सुन रही थी। श्रेया ने धीमे लेकिन रहस्यमयी स्वर में कहा, "आख़िरकार इस जंगल में रहने वाले महान तपस्वी स्वामी सोनभद्र नाथ जी ने भगवान काल भैरव की शरण ली। कई दिनों तक उन्होंने कठोर तपस्या की, हवन और यज्ञ किए, अनुष्ठान किए और भगवान काल भैरव से रक्षा की प्रार्थना की। पूजा से प्रसन्न होकर भगवान ने स्वामी जी को अग्नि मंत्र प्रदान किया तथा शुक्रासुर के वध का उपाय भी बताया।"

गाड़ी के भीतर बैठे सभी लोग बिना पलक झपकाए उसकी बात सुन रहे थे।

"गाँव वालों का कहना है," श्रेया ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "हज़ार साल पहले, एक कृष्णपक्ष की अमावस की रात को जंगल में एक लंबा-चौड़ा युवक प्रकट हुआ। उसके साथ कई विशाल काले शिकारी कुत्ते थे। उसके शरीर पर केवल वनवासी वस्त्र थे और हाथ में कोई हथियार नहीं था। उसकी आँखें अंगारों की तरह चमक रही थीं। कहते हैं, वो और कोई नहीं स्वामी सोनभद्र स्वयं थे, जो भगवान काल भैरव के आशीर्वाद से दिव्य शक्तियों और आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो कर एक महान योद्धा बन चुके थे।

उस युवक और शुकासुर के बीच पूरी रात भयंकर युद्ध हुआ। धरती काँप उठी, पेड़ टूट गए और जंगल उनकी गर्जनाओं से गूँज उठा।" श्रेया की आवाज़ और धीमी हो गई। "अंत में उस भील युवक ने असंभव कर दिखाया। उसने अपने नंगे हाथों से शुकासुर के दोनों विशाल दाँत उखाड़ दिए... और उन्हीं दाँतों से उसका पेट चीरकर उसका अंत कर दिया।"

सुनिधि की आँखें विस्मय से फैल गईं। "लेकिन... हथियार से क्यों नहीं मारा?" उसने मासूमियत से पूछा। श्रेया ने उसकी ओर देखा और बोली, "क्योंकि शुकासुर को किसी तलवार, भाले या बंदूक से नहीं मारा जा सकता था। उसे केवल उसके अपने दाँतों से ही मृत्यु मिल सकती थी। यही उसका वरदान भी था... और यही उसका अभिशाप।"

स्वामी सोनभद्र जी ने शुकासुर के वध के बाद उसके दं।तो और हड्डीयों से एक दिव्य तलवार बनाया जिसका नाम **वराहदंती** रखा गया, इसके अलावा एक धनुष वराहचाप और वराह दं।त के नोक वाले बहुत से तीर भी बनाये और उनको भगवान काल भैरव को समर्पित कर दिया।

समीर ने थोड़ा अविश्वास जताते हुए कहा, "हज़ार साल पहले का वह जानवर मृत्यु के बाद, अभी तक भटक रहा है?" श्रेया ने आँखें बड़ी-बड़ी करके कहा, "हाँ! वह नहीं, तो उसके वंशज आज भी कभी-कभी इस इलाके में उत्पात मचाने आ जाते हैं।"

यह कहते ही अचानक गाड़ी के बाहर कहीं दूर से किसी भारी जानवर के ज़ोर से फुँफकारने की आवाज़ गूँजी। गाड़ी के भीतर बैठे सभी लोगों की धड़कनें एक साथ तेज़ हो उठीं।

अचानक सामने से **"धप... धप... धप..."** की भारी आवाज़ें आने लगीं। ऐसा लग रहा था मानो कोई विशालकाय जीव अपने भारी खुरों से धरती को रौंदता हुआ उनकी ओर बढ़ रहा हो। अगले ही पल गाड़ी की हेडलाइट की मद्धिम रोशनी में वह दिखाई दिया- एक **विशाल जंगली सूअर**।

उसका शरीर किसी विशाल सांड जितना बड़ा था। उसके दोनों दाँत तलवारों की तरह बाहर निकले हुए थे, जिन पर चाँदनी की हल्की किरण पड़ते ही वे चमक उठते थे। उसकी आँखें धधकते अंगारों की तरह लाल थीं और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उनमें आग जल रही हो।

वह गले से अजीब-सी **"खीं... खीं..."** की भयावह आवाज़ निकाल रहा था। उसकी गर्दन और पीठ पर खड़े काले, नुकीले बाल किसी भाले की नोक जैसे तन गए थे। उसका पूरा शरीर हमले की मुद्रा में था। श्रेया के मुँह से अनायास निकल पड़ा, **"शु... शुकासुर..."** गाड़ी के भीतर सन्नाटा जम गया।



आनंद ने बिना समय गँवाए अपनी पिस्तौल गाड़ी की खिड़की से बाहर निकाली और आसमान की ओर तिरछा निशाना साधकर गोली चला दी।

“धाँय...!”

गोली की तेज़ आवाज़ ने रात के सन्नाटे को चीर दिया।आनंद चाहता था कि धमाके से शुकासुर डरकर भाग जाए। अचानक चली गोली से शुकासुर चौंक गया। वह एक पल के लिए ठिठककर वहीं खड़ा हो गया।**लेकिन वह डरा नहीं।**

तभी...पूरे जंगल में एक गर्जना गूँजी**"हम्म्म्म्म्म्म..."** वह आवाज़ इतनी गहरी और शक्तिशाली थी कि पेड़ों की डालियाँ काँप उठीं। ऐसा लग रहा था मानो बादल फट पड़ेंगे। पक्षियों के झुंड घबराकर उड़ गए और जंगल कुछ क्षणों के लिए बिल्कुल शांत हो गया।

शुकासुर ने तुरंत अपना सिर उस दिशा में घुमाया, जैसे वह उस आवाज़ को पहचानता हो। कुछ क्षण वह वहीं खड़ा रहा...फिर धीरे-धीरे पीछे मुड़ा और बिना उनकी ओर देखे जंगल के भीतर अंधेरे में गायब हो गया।

आनंद ने एक बार फिर चाबी घुमाकर इंजन स्टार्ट करने की कोशिश की। **"खर्र... खर्र... खर्र..."** इंजन ने कुछ पल संघर्ष किया, लेकिन गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई। आनंद बोला, "धत् तेरे की!" उसने दो-तीन बार और कोशिश की, मगर हर बार वही खड़खड़ाहट सुनाई दी।

आनंद ने गहरी साँस लेते हुए कहा, "लगता है गाड़ी खराब हो गई है।" समीर ने पूछा, "अब क्या करेंगे?" आनंद बोला, "थोड़ी देर इंतज़ार करते हैं। अगर शुकासुर वापस नहीं आया, तो मैं बाहर जाकर देखूँगा कि गाड़ी में क्या खराबी आई है।"

कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला। कुछ मिनट बाद सुनिधि ने उत्सुकता से पूछा, "आनंद अंकल... आपके पास में बंदूक है?" समीर और श्रेया भी कौतूहल से उसकी ओर देखने लगे।

आनंद ने रियर व्यू मिरर में सबकी ओर देखा और हल्की मुस्कान के साथ बोला, "जिस सफ़र पर हम निकले हैं, उसमें खतरे होने का अंदाज़ा मुझे

पहले से था। इसलिए आप सबकी सुरक्षा के लिए मैं अपने पिताजी की लाइसेंसशुदा पिस्तौल साथ लेकर आया हूँ।"

कुछ पल रुककर उसने आगे कहा, "मेरे पिताजी पुलिस विभाग में थे। नौकरी के दौरान उन्होंने कई खतरनाक अपराधियों को गिरफ्तार किया था। उन्हें अक्सर जान से मारने की धमकियाँ मिलती रहती थीं। रिटायरमेंट के बाद उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए यह पिस्तौल खरीदी और उसका लाइसेंस भी बनवा लिया।"

आनंद की आवाज़ अचानक भारी हो गई। "लेकिन... यह पिस्तौल भी उनकी जान नहीं बचा सकी। एक सुबह कुछ लोग पुरानी दुश्मनी निकालने हमारे घर आए। उस समय मैं रायपुर में अपनी बड़ी बहन के घर गया हुआ था। वहीं उसका ससुराल है। जब खबर मिली, मैं भागा-भागा घर पहुँचा... तब तक सब खत्म हो चुका था।"

उसने गहरी साँस ली। "हमलावरों ने मेरे पिता और माँ... दोनों को गोलियों से छलनी कर दिया था।" सुनिधि ने धीरे से पूछा, "लेकिन... अंकल, आपके पापा ने अपनी बंदूक नहीं चलाई?" आनंद ने स्टीयरिंग पर अपनी पकड़ और कस ली, "चलाई थी... या यूँ कहूँ, चलाने की कोशिश की थी। लेकिन वर्षों तक उसकी ठीक से देखभाल नहीं हुई थी। जब सबसे ज़्यादा ज़रूरत पड़ी, तब पिस्तौल जाम हो गई। बस... वही एक पल उनकी ज़िंदगी और मौत के बीच का फ़ासला बन गया।"

उसकी आँखें भीग उठीं। "उस समय मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता था। पिताजी की मौत के बाद पढ़ाई अधूरी छोड़नी पड़ी। घर चलाने वाला कोई नहीं था। पिताजी ने अपनी सारी जमा-पूँजी मेरी बहन की शादी और दहेज में खर्च कर दी थी। उनके जाने के बाद मुझे कम उम्र में ही अपनी ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ीं। आज जो टैक्सी चलाता हूँ, वही मेरी रोज़ी-रोटी है।"

उसने पिस्तौल पर एक नज़र डाली और धीमे स्वर में बोला, "बाबा हमेशा कहा करते थे, 'बेटा, ज़िंदगी में मुसीबत कभी बताकर नहीं आती। इसलिए

हमेशा तैयार रहना।' शायद इसी वजह से आज भी मैं यह पिस्तौल अपने साथ रखता हूँ।"

आनंद की आपबीती सुनकर श्रेया की आँखें नम हो गईं। उसने करुणा से आनंद की ओर देखा और धीमे स्वर में बोली,"आनंद भैया... इतनी कम उम्र से ही आपने जितनी तकलीफ़ें झेली हैं, उतनी तो कई लोग पूरी ज़िंदगी में भी नहीं झेलते। फिर भी आपके चेहरे पर न शिकायत है, न किसी के प्रति गुस्सा।"

वह कुछ क्षण रुकी, फिर मुस्कुराते हुए बोली, "आपका धैर्य, आपका अनुभव और आपकी सूझबूझ सचमुच काबिले-तारीफ़ है। आपने आज कई बार अपनी समझदारी से हम सबको मुसीबत से बचाया है। आज से आप अपने आपको कभी अकेला मत समझिए। मुझे अपनी छोटी बहन समझिए। अगर कभी ज़िंदगी में किसी अपने की ज़रूरत पड़े, तो बिना संकोच मेरे पास आइएगा।"

आनंद कुछ पल के लिए निशब्द रह गया। उसकी आँखों में हल्की नमी उतर आई। समीर ने आगे बढ़कर आनंद के कंधे पर हाथ रखा और अपनत्व से कहा, "मुझे तुम्हारे माता-पिता के बारे में सुनकर सचमुच बहुत दुःख हुआ, आनंद। ऐसी पीड़ा को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता।"

उसने स्नेहपूर्वक आगे कहा, "लेकिन अब तुम अकेले नहीं हो। अगर कभी किसी दोस्त, किसी भाई या किसी अपने की ज़रूरत महसूस हो, तो बेझिझक मेरे पास चले आना। मैं हमेशा तुम्हारे साथ खड़ा मिलूँगा।" आनंद ने रियर व्यू मिरर में दोनों की ओर देखा। उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कान उभरी- "धन्यवाद, भैया... धन्यवाद, भाभी जी।" उसकी आवाज़ भावुक हो गई।

"आज इतने वर्षों बाद पहली बार ऐसा लगा कि इस दुनिया में मेरा भी कोई अपना है।" गाड़ी शांत जंगल खड़ी थी, लेकिन अब उसके भीतर बैठी चार अनजान ज़िंदगियाँ धीरे-धीरे एक परिवार में बदलने लगी थीं।

आनंद ने कहा, "लगता है मुझे बाहर उतरकर देखना पड़ेगा कि आखिर हुआ क्या है। शायद गाड़ी उस विशाल सूअर से टकरा गई थी।" फिर

मुस्कुराते हुए उसने श्रेया की ओर देखा और बोला, "मानना पड़ेगा, श्रेया दीदी... आपका शुकासुर बड़ा ही मज़बूत निकला।"

माहौल की गंभीरता के बीच भी सबके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। जैसे ही आनंद ने गाड़ी का दरवाज़ा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया, सुनिधि घबराकर चिल्ला उठी, "आनंद अंकल, बाहर मत जाइए! कहीं वो मॉन्स्टर आपको पकड़ ले गया तो?"

आनंद ने उसकी ओर देखकर स्नेह से मुस्कुराया। "अरे पगली, अगर गाड़ी ही नहीं चलेगी तो हम यहाँ सारी रात फँसे रहेंगे। मुझे बाहर जाकर देखना ही होगा कि दिक्कत क्या है।"

इतने में समीर भी बोला, "रुको आनंद... मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। तुम गाड़ी देखना, मैं आसपास नज़र रखूँगा।" फिर दोनों गाड़ी के बाहर सावधानी से निकले और उसके दरवाजे बंद कर दिए।

आनंद ने कृतज्ञता से उसकी ओर देखा, "धन्यवाद, समीर भैया।" उसने अपनी पिस्तौल निकालकर समीर की ओर बढ़ाते हुए कहा, "ये रख लीजिए। अगर वह शुकासुर फिर दिखाई दे, तो बिना सोचे गोली चला दीजिए।"

समीर तुरंत दो कदम पीछे हट गया और दोनों हाथ हिलाते हुए बोला, "न... न बाबा! मैं बंदूक-वंदूक नहीं पकड़ूँगा। और वैसे भी, कहानी के हिसाब से उस सूअर पर गोली का कोई असर होने वाला नहीं है।"

उसकी बात सुनकर आनंद हल्का-सा मुस्कुरा दिया। इसी बीच सुनिधि ने खिड़की का शीशा थोड़ा-सा नीचे किया और गर्दन बाहर निकालकर जंगल की ओर झाँकने लगी। श्रेया ने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया- **"सुनिधि! बाहर मत झाँको। पता नहीं अँधेरे में क्या छिपा बैठा हो।"**

फिर उसने चिंतित स्वर में कहा, "आनंद भैया... समीर... आप दोनों बहुत सावधान रहिएगा।"

आनंद कार के सामने पहुँचा, उसने पिस्तौल गाड़ी की छत पर रख दी और समीर की ओर देखते हुए बोला, "मैं इसे यहीं गाड़ी की छत पर रख रहा

हूँ। अगर कोई खतरा आ जाए तो हम दोनों में से जिसे भी पहले मौका मिले, वह इसे उठा लेगा।"

समीर ने सिर हिलाकर हामी भर दी। आनंद ने धीरे से बोनट का लॉक खोला- **ठक...!**

आनंद ने टॉर्च की रोशनी में इंजन के हर हिस्से को ध्यान से देखना शुरू किया। कभी वह रेडिएटर के पास झुकता, कभी बैटरी के कनेक्शन और तारों को टटोलता। कुछ देर तक निरीक्षण करने के बाद उसने बोनट बंद नहीं किया, बल्कि घुटनों के बल बैठकर टॉर्च की रोशनी गाड़ी के नीचे डाली।

वह ज़मीन पर लगभग लेट गया और टॉर्च की रोशनी से नीचे के हिस्सों का बारीकी से निरीक्षण करने लगा। कुछ मिनट बाद वह उठकर फिर इंजन के पास आया, दोबारा कुछ तारों को देखा और गहरी साँस भरते हुए समीर की ओर मुड़ा। **"समीर भैया... मामला थोड़ा गंभीर है।"** समीर तुरंत उसके पास आ गया- **"क्या हुआ?"**

आनंद ने इंजन की ओर इशारा करते हुए कहा, "पहली समस्या यह है कि इंजन ज़रूरत से ज़्यादा गर्म हो गया है। लगता है टक्कर की वजह से कुछ वायरिंग भी क्षतिग्रस्त हो गई है। लेकिन असली परेशानी नीचे है।"

उसने टॉर्च फिर नीचे की ओर घुमाई- "गाड़ी के नीचे ड्राइव शाफ्ट बुरी तरह मुड़ गया है। शायद जब गाड़ी उस भारी चीज़ पर चढ़ी थी, तभी यह क्षतिग्रस्त हो गया। इस हालत में गाड़ी चलाना संभव नहीं है। अगर ज़बरदस्ती चलाने की कोशिश की, तो और भी बड़ा नुकसान हो सकता है।"

समीर का चेहरा उतर गया- "मतलब... अब?" आनंद ने गंभीर स्वर में कहा, "इसकी मरम्मत यहाँ नहीं हो सकती। ड्राइव शाफ्ट को सीधा करना या बदलना पड़ेगा। इसके लिए मैकेनिक और सही औज़ार चाहिए होंगे।"

उसने चारों ओर फैले घने अँधेरे जंगल पर नज़र दौड़ाई और धीमे स्वर में बोला, "लेकिन इस सुनसान जंगल में मुझे नहीं लगता कि इतनी आसानी से

कोई मैकेनिकल सहायता मिल पाएगी। सच कहूँ तो... मुझे भी समझ नहीं आ रहा कि मदद कहाँ से मिलेगी।"

यह सुनते ही गाड़ी के अंदर बैठी श्रेया का चेहरा पीला पड़ गया। सुनिधि ने घबराकर कार की खिड़की से बाहर झाँका। चारों ओर घना जंगल था... घने जंगल के बीच, चारों ओर पसरे अंधकार में, उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि वे सचमुच सभ्यता से बहुत दूर आ चुके थे। केवल हवा की सरसराहट और रात के जीवों की आवाज़ें उन्हें यह याद दिला रही थीं कि अब हर अगला निर्णय उनकी सुरक्षा तय करेगा।

श्रेया ने तुरंत अपना मोबाइल निकाला और किसी को फोन लगाने की कोशिश की। उसने एक-एक करके कई बार कॉल मिलाई, लेकिन हर बार स्क्रीन पर एक ही संदेश दिखाई दिया। **"नो नेटवर्क।** उसने मायूस होकर मोबाइल नीचे कर लिया और पूछा,

"क्या किसी के फोन में नेटवर्क आ रहा है? समीर ने अपना मोबाइल देखकर सिर हिलाया। **"नहीं..."** । आनंद ने भी अपना फोन जेब से निकालकर देखा। कुछ क्षण स्क्रीन को घूरने के बाद उसने भी निराशा से सिर हिला दिया।**"**मेरे में भी नहीं।"

समीर ने गहरी साँस ली और चिंता भरे स्वर में कहा, "मतलब... हम सचमुच फँस गए। और हमारी वजह से तुम्हारी गाड़ी भी इतनी बुरी तरह खराब हो गई, आनंद।"

आनंद ने ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा, "मुझे गाड़ी की उतनी चिंता नहीं है, समीर भैया। उसका नुकसान तो बीमा कंपनी किसी न किसी हद तक पूरा कर देगी। सुबह होते ही आसपास से कोई मैकेनिक या मदद का इंतज़ाम करने की कोशिश करूँगा।"

वह कुछ पल चुप रहा। "लेकिन चिंता इस बात की है कि..." उसकी बात पूरी होने से पहले ही सुनिधि बोल पड़ी, "कि वो मॉन्स्टर फिर से आ जाएगा?"

आनंद ने गंभीर होकर कहा, "हाँ... जंगली जानवरों का खतरा तो है ही। और अगर हमें यहाँ ज़्यादा देर रुकना पड़ा, तो खाने-पीने की भी समस्या हो जाएगी।"

श्रेया ने तुरंत कहा, "मेरे बैग में बिस्कुट, ड्राई फ्रूट्स और पीने का पानी है। आज की रात तो किसी तरह निकल जाएगी। लेकिन सुबह तक कुछ इंतज़ाम करना ही होगा।" इतना कहते ही वह अचानक असहज होकर बोली, **"उफ़्फ़...!"**

समीर तुरंत उसकी ओर मुड़ा। "क्या हुआ?" श्रेया ने थोड़ा संकोच करते हुए कहा, "कुछ नहीं... इतनी देर से बैठे-बैठे कमर अकड़ गई है। पेट में भी बहुत असहजता हो रही है... और मुझे वॉशरूम जाना है।"

यह सुनकर समीर ने कार के अंदर झाँका और फिर बाहर घने अंधेरे की ओर देखा। "इतने घने जंगल में... तुम कहाँ जाओगी?"तभी सुनिधि ने भी मासूमियत से कहा, डैडी... मुझे भी वॉशरूम जाना है।" समीर ने चारों ओर टॉर्च की रोशनी घुमाई। कुछ दूरी पर झाड़ियों के पास एक अपेक्षाकृत खुली जगह दिखाई दी।

उसने उधर इशारा करते हुए कहा, "मैं पहले जाकर देखता हूँ कि जगह सुरक्षित है या नहीं। अगर सब ठीक लगा, तो तुम दोनों वहीं एक-एक करके चली जाना।" आनंद ने तुरंत सावधान किया, "बहुत दूर मत जाइएगा। गाड़ी से नज़र बनी रहनी चाहिए। और हर समय सतर्क रहिए।"

समीर टॉर्च लेकर उस जगह तक गया। उसने चारों ओर अच्छी तरह देखा, झाड़ियों में रोशनी डाली और कुछ मिनट तक निरीक्षण करता रहा। फिर उसने आवाज़ लगाई, "यहाँ फिलहाल सब ठीक लग रहा है। जो भी करना है, जल्दी कर लो और ज़्यादा देर मत लगाना।" निजता (privacy) के लिए आनंद और समीर दोनों दूसरी दिशा में मुँह करके खड़े हो गए।

श्रेया गाड़ी से निकल कर सुनिधि का हाथ थामे हुए उसी जगह गई, जिधर समीर ने उन दोनों को टॉयलेट करने के लिए कहा था। श्रेया ने सावधानी से चारों ओर नज़र दौड़ाई। जंगल एकदम शांत था। पहले सुनिधि ने जल्दी

से खुद को राहत दी, फिर श्रेया ने। कुछ ही मिनटों में दोनों वापस कार के पास आ गईं। आनंद बोला, **"अब मैं भी होकर आता हूँ।"**

वह टॉर्च लेकर दूसरी ओर चला गया। समीर मन ही मन मुस्कुरा उठा। **"शुकासुर को देखकर तो लगता है सबकी हालत खराब हो गई है..."** उसने सोचा। लेकिन अगले ही पल उसे भी एहसास हुआ कि उसे भी वॉशरूम जाना है। वह हल्की-सी झेंपी हुई मुस्कान के साथ बुदबुदाया, **"लगता है मेरी भी बारी आ गई..."** और टॉर्च उठाकर वह भी कुछ दूरी पर चला गया।

अब जंगल में सिर्फ़ पत्तों से टकराती हवा की सरसराहट सुनाई दे रही थी... और कहीं बहुत दूर, अंधेरे की गहराइयों में, किसी अज्ञात जीव की धीमी गुर्राहट। सब लोग वापस गाड़ी के भीतर बैठ गए। सबने गाड़ी के दरवाजे अच्छे से बंद करके सारे शीशे चढ़ा दिए। सिर्फ आनंद ने गाड़ी के सामने के दोनों शेष थोड़े नीचे रखे ताकि गाड़ी में एयर सर्कुलेशन होता रहे। किसी को सांस लेने में दिक्कत ना हो । बाहर रात और भी गहरी होती जा रही थी। घने जंगल में चारों ओर सन्नाटा पसरा था।

समय काटने के लिए श्रेया ने अपने बैग से बिस्कुट और ड्राई फ्रूट्स निकाले। चारों ने थोड़ा-थोड़ा खाया और पानी पिया। कोई भी खुलकर बात नहीं कर रहा था। सबके मन में एक ही डर था कि पता नहीं रात अभी और क्या दिखाने वाली है।

करीब आधा घंटा बीता होगा कि अचानक दूर से कई लोगों के बोलने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। पहले तो आवाज़ बहुत धीमी थी, लेकिन धीरे-धीरे वह स्पष्ट होने लगी।

कभी किसी के ज़ोर से बोलने की आवाज़ आती, तो कभी कई लोगों का एक साथ शोर सुनाई देता। समीर चौकन्ना होकर बैठ गया। **"अरे... अब क्या हो गया?"** उसने घबराते हुए कहा। आनंद तुरंत सतर्क हो गया। उसने अपनी पिस्तौल ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर हाथ मारा।

अचानक उसे याद आया। "अरे... पिस्तौल तो मैं कार की छत पर ही छोड़ आया था!" उसने बिना देर किए खिड़की का शीशा थोड़ा-सा नीचे किया। सावधानी से हाथ बाहर निकालकर कार की छत टटोलने लगा।

कुछ क्षण बाद उसकी उँगलियाँ पिस्तौल से टकराईं। उसने राहत की साँस ली, पिस्तौल भीतर खींच ली और तुरंत शीशा वापस ऊपर चढ़ा दिया। अब चारों लोग साँस रोके बाहर देखने लगे। झाड़ियों के पीछे से **सरसराहट... चर्र... चर्र...** की आवाज़ें आने लगीं, मानो कई लोग घनी झाड़ियों को हटाते हुए उनकी ओर बढ़ रहे हों।

कुछ ही क्षण बाद अंधेरे में एक-एक करके **मशालों की लौ** दिखाई देने लगी। जलती हुई मशालों की पीली-लाल रोशनी पेड़ों के तनों पर पड़कर भयावह परछाइयाँ बना रही थी। धीरे-धीरे लगभग दस-बारह लोग झाड़ियों को धकेलते हुए सड़क पर आ गए। उनके हाथों में मशालें, भाले, कुल्हाड़ियाँ और धनुष-बाण थे।

सबके चेहरे धुएँ और मशालों की रोशनी में आधे दिखाई दे रहे थे।वे सीधे आनंद की SUV गाड़ी की ओर देख रहे थे। गाड़ी के भीतर बैठे चारों लोगों की धड़कनें एक साथ तेज़ हो गईं।

सुनिधि ने धीरे से फुसफुसाकर पूछा, "आनंद अंकल... ये लोग... इंसान हैं ना?" आनंद ने पिस्तौल पर अपनी पकड़ मज़बूत करते हुए धीमे स्वर में कहा, "अभी कुछ कहना मुश्किल है... लेकिन जब तक वे पास नहीं आ जाते, कोई भी गाड़ी से बाहर नहीं निकलेगा।"

बाहर मशालों की लपटें हवा में डोल रही थीं...और उन अजनबियों का दल धीरे-धीरे आनंद की गाड़ी की ओर बढ़ने लगा। तभी मशाल लिए खड़े लोगों में से एक व्यक्ति ज़ोर से पुकारा, "श्रेया दीदी...! श्रेया दीदी... आप आ गईं?"

उस आवाज़ को सुनते ही श्रेया का चेहरा खिल उठा। उसने तुरंत कार का शीशा नीचे किया और उत्साह से चिल्लाई, **"अरे... ज्ञानसुंदर भैया! हम यहाँ हैं!"** उसने बोला, "लगता है इन्हें मम्मी ने भेजा होगा।"

मशाल लिए खड़ा वह व्यक्ति तेज़ी से गाड़ी की ओर बढ़ा। जैसे-जैसे वह पास आया, उसकी शक्ल साफ़ दिखाई देने लगी। साँवला रंग, मज़बूत कद-काठी, सिर पर गमछा और हाथ में जलती हुई मशाल।

समीर और आनंद ने एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों सावधानी से कार से बाहर निकले और उन लोगों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगे। श्रेया ने कार का दरवाज़ा खोला और बाहर उतर गई। उसके पीछे-पीछे सुनिधि भी उतर आई।

" समीर , आनंद भैया, इनसे मिलिए। ये ज्ञानसुंदर भैया हैं। हमारे पड़ोसी दीनदयाल काका के बेटे। बचपन से हम सब साथ बड़े हुए हैं। ज्ञानसुंदर ने दोनों हाथ जोड़कर आदरपूर्वक कहा,"नमस्कार, साहब। नमस्कार भैया।"समीर और आनंद ने भी मुस्कुराकर उसका अभिवादन किया।

फिर ज्ञानसुंदर ने दोनों हाथ जोड़कर श्रेया से कहा।, "दीदी, आपको आने में बहुत देर हो गई। जब रात हो गई और आप लोग नहीं पहुँचे, तो हम सबको चिंता होने लगी। इसलिए गाँव के लोग आपको लेने निकल पड़े।" उसने चारों ओर नज़र घुमाई और टूटी हुई हेडलाइट को देखते हुए बोला, "लगता है आपकी गाड़ी भी यहीं जवाब दे गई। इस मोड़ पर अक्सर गाड़ियों के साथ यही होता है। रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ है... और ऊपर से शुकासुर ने भी फिर से इस जंगल में आतंक मचा रखा है। लोग रात को इधर आने से डरते हैं।"

इतने में पीछे खड़े पाँच-छह ग्रामीण आगे बढ़कर कतार में खड़े हो गए। सबके चेहरों पर सम्मान का भाव था। ज्ञानसुंदर ने मुस्कुराते हुए पीछे इशारा किया- झाड़ियों के पीछे से चार मजबूत युवक एक सुंदर, पारंपरिक **लकड़ी की पालकी** उठाकर सामने लाए। पालकी को लाल कपड़े, गेंदे के फूलों और आम के पत्तों से सजाया गया था।

ज्ञानसुंदर ने आदरपूर्वक कहा, "दीदी, आपके लिए पालकी लाई गई है।" श्रेया आश्चर्य से उसे देखने लगी। "पालकी...?" ज्ञानसुंदर ने श्रद्धा से सिर झुकाया। "हाँ, दीदी। यह विशेष रूप से आपके लिए भिजवाई है। जैसे ही उन्हें पता चला कि आप लोग इस जंगल में कहीं फँस गए हैं, उन्होंने तुरंत

हमें आदेश दिया कि हम मशालें लेकर आपको सुरक्षित ले आएँ।" चारों कहारों ने पालकी को धीरे से ज़मीन पर रखा।

श्रेया कार में बैठे-बैठे पक चुकी थी, वह तुरंत नीचे रखी पालकी में सावधानी से बैठ गई और उसके अंदर की सजावट निहारने लगी। समीर ने विस्मित होकर पूछा, "लेकिन... किसी को यह कैसे पता चला कि हम यहीं फँसे हैं? ज्ञानसुंदर के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान उभरी। उसने शांत स्वर में कहा- कुछ बातें **लाल माई** तक अपने आप पहुँच जाती हैं।"

श्रेया ने उत्सुकता से पूछा, "ज्ञानसुंदर भैया... एक बात बताइए। यह लाल माई कौन हैं?" यह सुनते ही ज्ञानसुंदर के चेहरे पर श्रद्धा और गंभीरता के भाव आ गए। उसने सहज ही दोनों हाथ जोड़ लिए और सिर झुका लिया।

कुछ क्षण मौन रहने के बाद वह धीमे स्वर में बोला, " दीदी... आपकी अम्मा को अब इस गाँव में कोई उनके पुराने नाम से नहीं बुलाता।" श्रेया की भौंहें सिकुड़ गईं। "क्या मतलब?"

ज्ञानसुंदर ने आदर से उत्तर दिया, "अब पूरा गाँव उन्हें **'लाल माई'** के नाम से जानता है।" यह सुनते ही श्रेया का चेहरा आश्चर्य से भर गया। "मेरी... माँ, 'लाल माई ?" उसके होंठों से अनायास निकला।

आनंद, समीर और सुनिधि एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। रात का अँधेरा, मशालों की डोलती लपटें और ज्ञानसुंदर के शब्द... जंगल की ठंडी हवा एकाएक और भी रहस्यमयी लगने लगी।

ज्ञानसुंदर फिर सुनिधि के पास गया। उसने बड़े स्नेह से उसके गाल पर हाथ फेरा और बोला, "आओ बिटिया, अपनी मम्मी के साथ पालकी में बैठ जाओ। रास्ता कठिन है, पैदल चलने में तुम्हें तकलीफ़ होगी।" सुनिधि ने पहले अपनी मम्मी की ओर देखा। जब श्रेया ने मुस्कुराकर सिर हिलाया, तब वह खुशी-खुशी पालकी में बैठ गई।

मशालों की लौ हवा में डोल रही थी...और समीर के मन में यह प्रश्न उठा कि आखिर **सुरेखा**, एक साधारण ग्रामीण महिला, **'लाल माई'** कैसे बन गई?

अध्याय 4

तुर्ग का इतिहास

चारों कहारों ने "हो... **सुकिंचकनाथ जी** !" की धीमी आवाज़ के साथ पालकी कंधे पर उठाई। पालकी हवा में हल्के से झूली और आगे बढ़ने लगी। सबसे आगे ज्ञानसुंदर जलती हुई मशाल लिए रास्ता दिखा रहा था। उसके पीछे पालकी थी, जिसमें श्रेया और सुनिधि बैठी थीं।

पालकी के पीछे समीर सावधानी से कदम बढ़ा रहा था। जबकि बाकी ग्रामीणों ने समीर और श्रेया का सारा सामान उठा लिया। आनंद ने गाड़ी को लॉक किया, चुपके से बंदूक को बैग में डाल।, और अपना बैग कंधे पर टाँग लिया। फिर सबके साथ चल पड़ा।

मशालों की पीली रोशनी में वह लंबा काफ़िला घने जंगल के बीच बने पत्थरीले, सँकरे रास्ते पर तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। रास्ता बेहद ऊबड़-खाबड़ था। कहीं चट्टानें थीं, कहीं पेड़ों की उभरी हुई जड़ें, तो कहीं घनी झाड़ियाँ रास्ते को ढँक रही थीं। चारों ओर झींगुरों की आवाज़ें और रात के पक्षियों की रहस्यमयी पुकारें वातावरण को और भयावह बना रही थीं।

पालकी के भीतर बैठी श्रेया ने परदा थोड़ा-सा हटाकर पूछा, "ज्ञानसुंदर भैया, यहाँ से घर तो अभी बहुत दूर है। हम लोग इतना पैदल कैसे चल पाएँगे?" ज्ञानसुंदर ने बिना पीछे मुड़े ही उत्तर दिया, "दीदी... अब लाल माई आपके पुराने घर में नहीं रहतीं।"

श्रेया चौंक गई-"क्या? फिर कहाँ रहती हैं? ज्ञानसुंदर ने मशाल ऊँची करते हुए सामने अँधेरे में उभरती एक पहाड़ी की ओर इशारा किया-"यहाँ से कुछ दूर उस पहाड़ी के ऊपर एक पुरानी कोठी है। अब वही उनका निवास है। वहीं उन्होंने अपना आश्रम भी स्थापित किया है... **'सुकिंचकनाथ जी कृपा आश्रम'।"**

समीर ने आश्चर्य से पूछा, "कोठी? जंगल के बीच?" ज्ञानसुंदर ने सिर हिलाया। "हाँ साहब। चार सौ साल पुरानी इमारत है। बरसों तक वह खंडहर बनी रही। लोग कहते थे कि वहाँ भूत-प्रेतों का डेरा है, इसलिए उसके पास कोई भी नहीं जाता था। लेकिन जब लाल माई वहाँ रहने आईं, तो धीरे-धीरे वह जगह आश्रम में बदल गई। अब दूर-दूर से लोग उनके दर्शन करने आते हैं।"

आनंद अब तक चुपचाप सब सुन रहा था उसने धीमे स्वर में पूछा, "लेकिन यह कोठी जंगल के बीच किसने बनवाई?" ज्ञानसुंदर ने बताया, "गोलकुंडा सल्तनत के शासक सुल्तान मुहम्मद कुतुब शाह ने कुछ समय तक इन जंगलों और पास के बस्तर इलाके पर कब्ज़ा जमा लिया था। उनका एक तुर्की नस्ल का कप्तान था, उस्मान अली 'तुर्क'। उस्मान अली ने अपने सुल्तान के लिए इसी स्थान पर सन 1626 में एक शिकारगाह बनवाई, जिसका नाम 'तुर्क महल' पड़ा। बाद में यही नाम बिगड़कर 'तुर्ग महल' हो गया।

सुल्तान स्वयं कभी यहाँ रहने नहीं आए, लेकिन उस्मान अली तुर्ग महल में रहकर सुल्तान के नाम पर इस पूरे क्षेत्र पर शासन करता था और खूब ऐयाशी करता था। इसके बाद सन 1835 में बस्तर, दंडकारण्य का यह भाग और आसपास का इलाका ब्रिटिश शासन (**British Nagpur Paramountcy**) का हिस्सा बन गया। दण्डकारण्य के इस क्षेत्र में सोना, चाँदी, लौह अयस्क तथा अन्य बहुमूल्य खनिजों के विशाल भंडार मौजूद थे। इन्हीं प्राकृतिक संपदाओं और घने जंगलों से प्राप्त होने वाले बहुमूल्य वन उत्पादों का दोहन करने के उद्देश्य से अंग्रेज़ों ने यहाँ तुर्ग गाँव की स्थापना की थी। धीरे-धीरे यह गाँव खनन गतिविधियों और वन व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

यहाँ के गोंड राजा अपने ब्रिटिश अतिथियों को तुर्ग महल में ठहराते थे, जब वे जंगल में शिकार के लिए आते थे। तुर्ग महल में एक अंग्रेज़ अधिकारी रहने आए, जिनका नाम कैप्टन नील नेल्सन था। वे यहाँ कई वर्षों तक रहे और उन्हीं के नाम पर यह कोठी ,'नील कोठी' कहलाने लगी। अब लाल

माई ने इस कोठी और उसके पास बने अपने आश्रम को मिलाकर 'लाल माई की देहरी' बना दिया है।"

उसका उत्तर सुनकर आनंद और समीर दोनों कुछ क्षण के लिए मौन हो गए। उनके सामने मशालों की कतार लहराती हुई आगे बढ़ रही थी, और दूर पहाड़ी की चोटी पर... घने वृक्षों के बीच, मानो किसी प्राचीन इमारत की धुँधली आकृति अँधेरे में धीरे-धीरे उभरने लगी थी।

करीब आधे घंटे तक जंगल के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलने के बाद सभी लोग एक साथ रुक गए। समीर, आनंद और श्रेया ने सामने नज़र उठाकर देखा, घने साल और सागौन के पेड़ों के बीच भव्य और प्राचीन नीलकोठी खड़ी थी। उसकी ऊँची-ऊँची दीवारें समय की मार झेल चुकी थीं, लेकिन उनका वैभव अब भी बरकरार था। हवेली के विशाल लोहे के फाटक के ऊपर लाल पत्थर की पट्टिका जड़ी हुई थी, जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा था...**'लाल माई की देहरी**'।

हवेली परिसर के भीतर से एक लंबे-चौड़े, बलिष्ठ युवक ने बाहर झाँका। उसने मशालों की रोशनी में ज्ञानसुंदर को पहचान लिया और बिना कुछ पूछे हवेली का भारी फाटक खोल दिया- चर्ररर...लोहे का विशाल दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला।

ज्ञानसुंदर सबसे आगे भीतर चला गया। उसके पीछे कहार पालकी उठाए हुए थे। समीर और आनंद भी उनके साथ अंदर प्रवेश कर गए। बाकी ग्रामीणों ने सारा सामान एक बड़ी लकड़ी की रेहड़ी पर रख दिया। दो बलिष्ठ युवक उस रेहड़ी को धक्का देकर हवेली के भीतर ले गए।

हवेली किसी पुराने राजमहल जैसी दिख रही थी। चारों ओर लालटेनें जल रही थीं और वातावरण में धूप तथा चंदन की हल्की सुगंध फैली हुई थी। समीर ने धीरे से आनंद के पास आकर कहा,"आनंद... अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो कुछ दिन हमारे साथ ही रुक जाओ। इस अनजान जगह पर तुम्हारा साथ रहेगा तो हमें भी अच्छा लगेगा।"

आनंद कुछ कह पाता, उससे पहले पालकी से उतरती हुई श्रेया मुस्कुरा कर बोली, "हाँ भैया, आप दो-चार दिन यहीं रुक जाइए। मम्मी आपकी

अच्छी खातिरदारी करेंगी। आपने हमारी इतनी मदद की है, अब हमारी भी कुछ ज़िम्मेदारी बनती है।" आनंद थोड़ा संकोच में पड़ गया। "जी... भैया, दीदी... वैसे भी जब तक गाड़ी ठीक नहीं हो जाती, मैं यहाँ से जा भी नहीं सकता।"

समीर ने मुस्कुराकर ज्ञानसुंदर से कहा, "ज्ञान भैया, आनंद के लिये भी कोई अच्छा कमरा दिलवा दीजिए।" ज्ञानसुंदर ने तुरंत सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आप निश्चिंत रहिए साहब। आनंद भैया के रहने और खाने-पीने का पूरा प्रबंध पहले ही कर दिया गया है।"

इसके बाद वह समीर और श्रेया को हवेली के भीतर ले गया। उसने हवेली के **ग्राउंड फ्लोर** (भूतल) मे एक सुंदर और विशाल कमरा दिखाते हुए कहा, "दीदी, यह आपका और साहब का कमरा है।" फिर बगल वाले कमरे की ओर इशारा करते हुए बोला, "और बिटिया के लिए अलग कमरा तैयार है।"

सुनिधि उत्सुकता से इधर-उधर देखने लगी। आनंद भी कमरे के भीतर झाँककर उसकी भव्यता देखने की कोशिश कर ही रहा था कि तभी ज्ञानसुंदर ने उसकी ओर देखकर रूखे स्वर में कहा, **"ड्राइवर लोगों का कमरा उधर है।"**

उसके स्वर में आया अचानक बदलाव समीर और श्रेया, दोनों को अच्छा नहीं लगा। श्रेया तुरंत रुक गई, उसने ज्ञानसुंदर की ओर गंभीर नज़रों से देखते हुए कहा, "ज्ञान भैया... आनंद गाड़ी ज़रूर चलाते हैं, लेकिन ये हमारे लिए परिवार जैसे हैं और समीर जी के खास दोस्त भी। इन्होंने रास्ते भर हमारी जान बचाई है। इनके लिए भी सम्मानजनक व्यवस्था होनी चाहिए।"

ज्ञानसुंदर का चेहरा तुरंत बदल गया, उसने दोनों हाथ जोड़ लिए- "क्षमा कीजिए दीदी। मेरा वह अर्थ बिल्कुल नहीं था। यहाँ जो कुछ भी है, सब लाल माई की कृपा है। आनंद भैया हमारे अतिथि हैं, उनके सम्मान में कोई कमी नहीं रहेगी।" उनको मै पुस्तकालय के पास का कमरा दे दूंगा ।

फिर उसने मुस्कुराकर कहा, "आप सब पहले हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदल लीजिए। तब तक मैं भोजन की व्यवस्था करवाता हूँ।" इसके बाद उसने

ज़ोर से आवाज़ लगाई, "सुकेशिनी... अरे ओ सुकेशिनी! ज़रा इधर आना।" कुछ ही देर में लगभग तीस वर्ष की एक सरल स्वभाव वाली महिला वहाँ आई। उसके साथ आठ-नौ वर्ष की एक प्यारी-सी लड़की भी थी।

ज्ञानसुंदर ने मुस्कुराकर सुनिधि से कहा, "बिटिया, यह सलोनी है। तुम्हारी ही उम्र की है। यह और सुकेशिनी तुम्हारे साथ कमरे में रहेंगी। "जब तक तुम यहाँ रहोगी, सलोनी और सुकेशिनी तुम्हारी देखभाल करेंगी।" सलोनी और सुनिधि ने एक-दूसरे को देखा और तुरंत मुस्कुरा दीं, मानो दोनों की दोस्ती पहली नज़र में ही हो गई हो। उसी समय दो महिलाएँ वहाँ पहुँची। ज्ञानसुंदर ने कहा, "अरे, सोना-चांदी ! ज़रा श्रेया दीदी को उनके कमरे तक ले जाइए और जो भी ज़रूरत हो, देख लीजिए।"

कुछ ही देर में सभी अपने-अपने कमरों में पहुँच गए। कमरे देखकर समीर और श्रेया दोनों आश्चर्यचकित रह गए। साफ़-सुथरे बिस्तर, ताज़ी चादरें, लकड़ी की अलमारियाँ, पीतल के बड़े घड़ों में गर्म पानी, बदलने के लिए धुले हुए कपड़े और हर छोटी-बड़ी सुविधा पहले से ही व्यवस्थित थी।

करीब आधे घंटे बाद सभी तैयार होकर नीलकोठी के विशाल भोजन कक्ष में पहुँचे।लंबी सागौन की मेज़ पर तरह-तरह के व्यंजन सजे थे। गरमागरम दाल, भाप उड़ाते चावल, चिकन बिरयानी, ताज़ी रोटियाँ, मटन रोगन जोश, सुगंधित फिश करी, कुरकुरी भिंडी फ्राई, मलाईदार पनीर बटर मसाला, मीठी खीर, साथ में ताज़ा सलाद और ठंडा शरबत।

इतनी समृद्ध व्यवस्था देखकर समीर ने धीरे से आनंद के कान में कहा,"आनंद... यह किसी साधारण आश्रम का भोजन नहीं लगता। ऐसा स्वागत तो बड़े-बड़े ज़मींदारों के यहाँ भी मुश्किल से मिलता है।" आनंद ने चारों ओर नज़र दौड़ाई, उसके मन में भी वही प्रश्न उठ रहा था...आख़िर यह "लाल माई" हैं कौन... जिनके लिए जंगल के बीच यह रहस्यमयी नीलकोठी किसी राजमहल की तरह जीवित हो उठी है?

सभी लोग भरपेट भोजन कर चुके थे। अब वे मीठी खीर का आनंद ले रहे थे। भोजन कक्ष में कुछ क्षणों के लिए सुकून भरा मौन छा गया था।

तभी...ऊपरी मंज़िल से पायल की हल्की-हल्की छनक सुनाई दी। सबकी नज़र अनायास ही सीढ़ियों की ओर उठ गई।

धीरे-धीरे एक महिला सीढ़ियाँ उतरती हुई दिखाई दी। उसने गहरे लाल रंग की रेशमी साड़ी पहन रखी थी। उसके हल्के भूरे, लंबे बाल खुले हुए थे। उम्र लगभग पचास-साठ वर्ष के बीच रही होगी, लेकिन उसके व्यक्तित्व में ऐसा तेज़ था कि उसकी वास्तविक आयु का अनुमान लगाना कठिन था।

उसके माथे पर बड़ी-सी गोल लाल बिंदी चमक रही थी। दोनों हाथों में लाल चूड़ियाँ खनक रही थीं। गले में सोने की मोटी चेन और पारंपरिक आभूषण उसकी गरिमा को और बढ़ा रहे थे। सबसे अलग थीं उसकी आँखें...गहरी, चमकदार और असाधारण रूप से शांत। ऐसा लगता था जैसे वे सामने वाले के चेहरे से अधिक उसके मन को पढ़ रही हों।

समीर अनायास ही बुदबुदाया, **"लाल माई..."** महिला ने पहले समीर पर एक लंबी, स्थिर नज़र डाली। फिर उसकी दृष्टि सुनिधि पर गई, जो उत्सुकता से उसे देख रही थी। इसके बाद वह श्रेया की ओर मुड़ी-"कैसी हो, श्रेया?" श्रेया कुछ क्षण तक उन्हें देखती रह गई। उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।

वह कुर्सी से उठी और विस्मय से बोली, "अरे... माँ!" वह हँस पड़ी। "वाह... क्या लग रही हो! बिल्कुल बदल गई हो। इतनी सुंदर... इतना रौब... और यह 'लाल माई' कब बन गई तुम?" महिला भी मुस्कुरा दी। लेकिन अगले ही क्षण उसके चेहरे पर गंभीरता लौट आई।

वह धीरे-धीरे श्रेया के पास आई, उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा और बोली, "लाल माई... मैं इस गाँव और यहाँ आने वाले लोगों के लिए हूँ।" फिर उसकी आवाज़ नरम हो गई। "तुम्हारे लिए मैं आज भी सिर्फ़ तुम्हारी माँ हूँ।" श्रेया की आँखें भर आईं, वह अपनी माँ से लिपट गई।

कुछ क्षण बाद महिला ने अपनी दृष्टि समीर की ओर मोड़ी-"और समीर..." उसने शांत स्वर में कहा, "अगर तुम्हें 'लाल माई' कहने में संकोच हो, तो मुझे 'मिसेज़ दत्ता' भी कह सकते हो।" समीर ने विनम्रता से सिर झुका दिया। "जी... नमस्ते, 'मिसेज़ दत्ता' ।"

महिला ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह कुछ क्षण तक बिना पलक झपकाए समीर की आँखों में देखती रही। उसकी दृष्टि इतनी पैनी थी कि समीर को लगा मानो वह उसे खा जाएगी। उसके भीतर एक अनजाना-सा कंपन दौड़ गया। उसने अनायास ही अपनी निगाहें झुका लीं। यह भय नहीं था...लेकिन उस नज़र में ऐसा प्रभाव था कि उसके सामने अधिक देर तक टिके रहना आसान नहीं था।

आनंद भी चुपचाप यह सब देख रहा था। उसने मन ही मन सोचा, "यह महिला साधारण नहीं है... इनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है जिसे शब्दों में बाँधना मुश्किल है।" लाल माई फिर गंभीर स्वर में बोली, "तुम सबने लंबा और कठिन सफ़र तय किया है। अब अपने-अपने कमरों में जाकर विश्राम करो। सुबह इत्मीनान से बैठकर बातें करेंगे।"

उन्होंने श्रेया से स्नेहभरी आवाज़ में कहा- "आराम करना तुम्हारे लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है, बेटी।"इतना कहकर लाल माई मुड़ीं और पहली मंजिल पर बने अपने कक्ष की ओर चली गई। उनकी लाल रेशमी साड़ी का पल्लू सीढ़ियों पर हल्के-हल्के लहराता हुआ पीछे-पीछे चल रहा था। उनके कदमों में एक अजीब-सा आत्मविश्वास और रौब था। पूरे भोजन कक्ष में ऐसा सन्नाटा छा गया कि उनकी पायल की मधुर छनक भी स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

सब लोग उन्हें तब तक देखते रहे, जब तक वे सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर नहीं पहुँच गईं कुछ ही क्षण बाद उनके कमरे का दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ आई। समीर के मन में एक ही प्रश्न बार-बार उठ रहा था...क्या यह वही सुरेखा थीं, जिन्हें श्रेया अपनी साधारण माँ कहती थी... या फिर सचमुच इस रहस्यमयी नीलकोठी की अधिष्ठात्री 'लाल माई'?

अध्याय 5

हर इच्छा की कीमत

अप्रैल, 8th 2020 की सुबह। दंडकारण्य के घने जंगल में सूरज की सुनहरी किरणें ऊँचे साल और सागौन के पेड़ों के बीच से छनकर धरती पर बिखर रही थीं। चारों ओर पक्षियों का मधुर कलरव गूँज रहा था। चिड़ियों की चहचहाहट, दूर कहीं कोयल की मीठी कूक और बीच-बीच में मोरों की ऊँची पुकार पूरे जंगल को जीवंत बना रही थी। रात का भयावह सन्नाटा मानो प्रकृति ने अपने संगीत से धो डाला था।

सुबह के लगभग आठ बज रहे थे। समीर की धीरे-धीरे आँख खुली। कुछ क्षण वह छत की ओर देखता रहा, फिर करवट लेकर उसने अपने पास नज़र डाली। श्रेया गहरी और सुकून भरी नींद में सो रही थी। उसके चेहरे पर कई दिनों बाद एक अजीब-सी शांति दिखाई दे रही थी।

समीर मुस्कुराया, धीरे से श्रेया का माथा चूमा। वह धीरे-धीरे बिस्तर से नीचे उतरता है ताकि श्रेया की नींद न टूटे और बिना कोई आवाज़ किए कमरे से बाहर निकल गया। बगल वाले कमरे का दरवाज़ा आधा खुला था उसने अंदर झाँककर देखा। सुनिधि और उसकी नई सहेली सलोनी एक ही बिस्तर पर निश्चिंत होकर सो रही थीं। दोनों के चेहरे पर मासूम मुस्कान थी, मानो बरसों की दोस्त हों। कमरे के दूसरे कोने में रखे एक छोटे-से पलंग पर सुकेशिनी भी लेटी हुई थी।

दरवाज़े की हल्की-सी आहट सुनकर उसकी आँख खुल गई। उसने तुरंत उठकर सिर पर आँचल रखा और हाथ जोड़कर आदरपूर्वक बोली, "नमस्कार, साहब।" समीर ने भी मुस्कुराकर अभिवादन किया। "नमस्ते... इन दोनों ने तो अच्छी दोस्ती कर ली लगता है।"

सुकेशिनी हल्के से मुस्कुरा के बोली - "हाँ साहब। रात भर दोनों बहुत बातें करती रहीं। फिर कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला।" समीर ने संतोष की साँस ली और चुपचाप वापस अपने कमरे में लौट आया।

अब तक श्रेया भी जाग चुकी थी। वह खिड़की के पास खड़ी होकर बाहर फैले जंगल को देख रही थी। उसी समय हवेली के बाहर से लाउडस्पीकर पर स्त्रियों के सामूहिक भजन की मधुर ध्वनि पूरे वातावरण में फैलने लगी। स्वर इतना मधुर और भक्तिमय था कि सुनते ही मन स्वतः शांत हो जाए- "मोरे सुकिंचकनाथ जी की जय...नाथ हमारे, सहाय रक्षक सब तुम...हमरे मन के भगवान...दीन-दुखियों के तुम भगवान..."

भजन की मधुर धुन जंगल की वादियों में गूँज रही थी। श्रेया ने आँखें बंद कर लीं। तभी दरवाज़े पर हल्की-सी दस्तक हुई। **ठक... ठक...**श्रेया ने दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा, "आ जाइए।" दरवाज़ा धीरे से खुला और सोना-चांदी ब्रेकफ़ास्ट कार्ट में फलों की टोकरियाँ, श्रेया के लिए दूध का एक गिलास, समीर के लिए चाय और कॉफ़ी, बिस्कुट तथा नाश्ते की प्लेटों में उपमा और पोहा लेकर अंदर आई।

मुस्कुराकर दोनों हाथ जोड़ते हुए बोली, "प्रणाम दीदी। चलिए, हम आपको तैयार कर देते हैं। आज सुकिंचक नाथ जी की जयंती है, नीचे पूजा शुरू हो गई है। लाल माई ने आपको तैयार होकर **आश्रम** आने के लिए कहा है।"

सोना बोली, "पहले थोड़ा-बहुत फल और ब्रेकफ़ास्ट खा लीजिए। समीर ने उत्सुक होकर पूछा, "सुकिंचकनाथ जी की जयंती? यह किसकी जयंती होती है? आज तो **हनुमान जयंती** है ना?"

सोना ने कहा- "हम त्रेता युग के भगवान को नहीं मानते। लाल माई कहती है, कलयुग में तो सुकिंचकनाथ ही भगवान हैं।"

चांदी के चेहरे पर श्रद्धा के भाव उभर आए- "हम सब भगवान सुकिंचकनाथ को इस जंगल का रक्षक मानते हैं। वे इस तुर्ग गाँव के देवता हैं और दुनिया भर में उनके भक्तों की संख्या बढ़ रही है।

भगवान सुकिंचक ने हम पर बहुत उपकार किए हैं। जो लोग उनके प्रति समर्पित होते हैं, उन्हें सौभाग्य और उदारता का आशीर्वाद मिलता है। सोना

ने कहा- “जो उनका विरोध करते हैं, उनका अंत बहुत बुरा होता है। गाँव के लोगों की मान्यता है कि उनकी कृपा से ही आज भी तुर्ग के लोग कोरोना से सुरक्षित है। लाल माई पिछले दो वर्षों से अनेक विधि विधान के साथ, आज के दिन उनकी पूजा अयोजित करती है ।"

इतना कहकर उसने अलमारी खोली। अंदर श्रेया के लिए ढेर सारी महँगी साड़ियाँ, ब्लाउज़, पेटीकोट, नाइट सूट, आभूषण, श्रृंगार का सामान, जूते और चप्पलें सजा हुआ रखा था। श्रेया आश्चर्य से बोली, "ये सब... मेरे लिए?" सोना मुस्कुरा दी। "जी दीदी, लाल माई ने कल शाम ही सब तैयार रखने का आदेश दिया था। उन्होंने कहा था कि आज उनकी बेटी पहली बार सुकिंचक जयंती में सम्मिलित होगी।"

श्रेया कुछ पल तक उन कपड़ों को देखती रही। उसके मन में प्रश्नों का सैलाब उमड़ रहा था- "माँ के पास इतनी दौलत, नौकर-चाकर, हवेली और आश्रम... यह सब कहाँ से आया?" उसने धीमे से स्वयं से कहा- मैं आज ही उनसे इस बारे में पूछूँगी...?"

बाहर से अब ढोल, मंजीरों और शंख की ध्वनि सुनाई देने लगी थी। महिलाओं का सामूहिक भजन पूरे आश्रम में गूँज रहा था। "मोरे सुकिंचक बाबा की जय...नाथ हमारे, सहाय रक्षक सब तुम... हमरे तन-मन के भगवान..." उस भक्तिमय संगीत के बीच सोना ने धीरे से कहा, "दीदी... देर मत कीजिए। लाल माई समय की बहुत पाबंद हैं। उनके दरबार में सबको समय पर पहुँचना होता है।"

श्रेया ने गहरी साँस ली और तैयार होने के लिए उठ खड़ी हुई, तभी कमरे का दरवाज़ा धड़ाम से खुला। "मम्मी... डैडी... देखो! मैं तैयार हो गई!" सुनिधि खुशी से उछलती हुई कमरे में दाखिल हुई। उसने हल्के पीले रंग का पारंपरिक लहंगा-चोली पहन रखा था। बालों में लाल रिबन बँधे थे और माथे पर छोटी-सी लाल बिंदी उसे और भी प्यारी बना रही थी। उसके पीछे-पीछे सुकेशिनी और सलोनी भी मुस्कुराते हुए कमरे में आ गईं। वो दोनो भी बहुत अच्छे से तैयार होके आईं थी श्रेया ने बेटी को देखते ही दोनों हाथ फैलाए-"अरे वाह! मेरी बेटी तो आज सचमुच परी लग रही है।" सुनिधि खिलखिलाकर हँस पड़ी और घूम-घूम कर अपना लहंगा दिखाने लगी।

समीर ने भी मुस्कुराकर कहा, "वाह बेटा! तुम तो इतनी जल्दी तैयार भी हो गईं।" सुनिधि ने गर्व से कहा, "हाँ! सुकेशिनी काकी और सलोनी ने मुझे तैयार किया है।"

फिर अचानक उसे कुछ याद आया। "मम्मी... मेरे खिलौने कहाँ हैं?" श्रेया ने मेज़ पर रखी थाली की ओर इशारा करते हुए कहा, "पहले थोड़ा-सा फल और ब्रेकफ़ास्ट खा लो, फिर खेलना।"

सुनिधि ने मुँह बनाकर कहा, "नहीं मम्मी... मैं बाद में खाऊँगी। पहले मुझे सलोनी के साथ खेलना है।" समीर मुस्कुरा दिया। उसने अपना बैग खोला और उसमें से छोटी-सी गुड़िया, रंग-बिरंगी कारें और कुछ खिलौने निकालकर सुनिधि के हाथ में दे दिए। खिलौने देखते ही दोनों बच्चियाँ खुशी से उछल पड़ीं।

"चलो सलोनी!" सुनिधि ने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों खिलखिलाती हुई अपने कमरे की ओर भाग गईं। उन्हें जाते देखकर कमरे में मौजूद सभी लोगों के चेहरे पर मुस्कान आ गई। इधर सोना ने श्रेया को स्नान के लिए गर्म पानी दिया। फिर उसे स्नानागार में ले जाकर, साबुन और शैंपू लगा कर कुन- कुने पानी से अच्छे से नहला दिया।

नहाने के बाद, चांदी ने श्रेया को तौलिए से अच्छी तरह सुखाया और फिर हल्की पीली रेशमी साड़ी, माथे पर लाल बिंदी और हाथों में काँच की चूड़ियाँ आभूषण पहनाकर तथा मेकअप लगाकर तैयार कर दिया। तैयार होकर श्रेया का चेहरा एक अलग ही आभा से दमक रहा था।

समीर भी स्नान आदि से निवृत्त होकर कर साफ़ कपड़े पहनकर कमरे से बाहर निकल गया, हवेली के गलीयारे में आते ही समीर को आनंद अपने कमरे के बाहर तैयार खड़ा मिला। उसे भी देहरी के सेविकाओं ने नये कुर्ता पायजामा पहन ने के लिए दिया था। समीर मुस्कुराते हुए उसके पास पहुँचा- "गुड मॉर्निंग, आनंद। रात कैसी बीती?" आनंद ने पलटकर देखा और मुस्कुराते हुए बोला- गुड मॉर्निंग, समीर भैया। रात बहुत अच्छी बीती। कल के सफ़र की थकान इतनी थी कि बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई।

ऊपर से इतने दिनों बाद स्वादिष्ट और भरपेट खाना मिला... फिर क्या था, सुबह सीधे पक्षियों की आवाज़ से ही आँख खुली।"

फिर समीर और आनंद दोनों बातचीत करते हुए एक साथ नील कोठी के बाहर निकल कर बाई तरफ आश्रम की ओर चल पड़े और आश्रम के मुख्य प्रांगण में पहुँचें, जहाँ श्रद्धालुओं की भीड़ हर पल बढ़ती जा रही थी।

आनंद आश्रम की भव्यता और विशालता को देखते हुए धीमे स्वर में बोला, "भैया... यह जगह जितनी सुंदर है, उतनी ही रहस्यमयी भी।समीर ने हँसते हुए कहा, "सच कहूँ तो मुझे भी ऐसा लग रहा है जैसे हम किसी जंगल में नहीं, बल्कि किसी राजमहल में ठहरे हों।"

आश्रम के विशाल प्रांगण में सफेद वस्त्र पहने दर्जनों श्रद्धालु दिखाई दे रहे थे। कहीं महिलाएँ फूलों की टोकरियाँ लिए मंदिर की ओर जा रही थीं, कहीं युवक पूजा की तैयारियों में लगे थे। आश्रम में आए बुजुर्ग हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे। दूर यज्ञशाला से धुएँ की पतली लहरें उठ रही थीं और वातावरण में चंदन, धूप और हवन सामग्री की सुगंध घुली हुई थी।

तभी उनकी नज़र कुछ दूरी पर लगी श्रद्धालुओं की लंबी कतार पर पड़ी। करीब पचास-साठ लोग अनुशासन से एक पंक्ति में खड़े अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। कतार के सामने एक बड़ी लकड़ी की मेज़ और कुर्सी रखी थी। उस कुर्सी पर एक महिला शांत भाव से बैठी थी। वह किसी श्रद्धालु से कोई बातचीत नहीं कर रही थी।



उसने नारंगी रंग की साड़ी और ब्लाउज़ पहन रखा था। उसके चेहरे पर पीले रंग का एक मुखौटा था, जिस पर मुस्कुराती हुई स्त्री का सुंदर चित्र बना था। हाथों में दस्ताने थे और पैरों में मोज़े थे। उसकी छाती पर एक लेबल चिपका था जिस पर नाम लिखा था- **हरिणी देवी, मानव संसाधन, लाल माई की देहरी।**

उसके शरीर का एक भी हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था। श्रद्धालु उसके सामने आते, अपना नाम, पता और आने का उद्देश्य बताते, और वह बिना सिर उठाए एक बड़े रजिस्टर में सब कुछ लिखती जाती।

उसकी उँगलियाँ तेज़ी से चल रही थीं, लेकिन उसने अब तक एक शब्द भी नहीं बोला था।

समीर ने आश्चर्य से धीमे स्वर में पूछा, "यह महिला चेहरा छिपाकर क्यों बैठी है?" आनंद ने कंधे उचकाए। "पता नहीं... लेकिन यहाँ हर चीज़ रहस्य से भरी हुई लगती है।" मेज़ के पास ही चार-पाँच बलिष्ठ युवक गहरे जामुनी रंग के लंबे चोगे पहने खड़े थे। उनके गले में रुद्राक्ष की मालाएँ थीं और हाथों में लकड़ी के दंड। वे श्रद्धालुओं को व्यवस्थित करते हुए ऊँचे स्वर में कह रहे थे, "सभी श्रद्धालु ध्यान दें!" "हर इच्छा की एक कीमत होती है।

पहले यहाँ अपना पंजीकरण कराइए।" "पंजीकरण शुल्क यहीं जमा कीजिए।" "अपना चढ़ावा सुकिंचक जी की वेदी पर श्रद्धापूर्वक अर्पित कीजिए। एक अन्य युवक लोगों को समझा रहा था, "फूल, माला, चुनरी, वस्त्र, फल, नारियल, धूप, अगरबत्ती और अन्य पूजा सामग्री यहाँ रख दीजिए। हमारे सेवक विधि-विधान से उन्हें पूजा में अर्पित कर देंगे।"

दूसरा युवक पास रखी एक विशाल पीतल की दान-पेटी की ओर इशारा करते हुए बोला, "सोना, चाँदी, नकद राशि अथवा अन्य मूल्यवान भेंट इस दान-पेटी में डालें। दान की रसीद पंजीकरण कक्ष से प्राप्त कर लें।" समीर यह सब बड़ी बारीकी से देख रहा था। उसे यह किसी साधारण ग्रामीण आश्रम की व्यवस्था नहीं लगी। सब कुछ अत्यंत अनुशासित, व्यवस्थित और पेशेवर ढंग से संचालित हो रहा था।

उसने धीरे से आनंद से कहा, "आनंद... यह तो किसी बड़े संस्थान जैसा लग रहा है। यहाँ हर काम की स्पष्ट व्यवस्था है।" आनंद ने भी सहमति में सिर हिलाया। "हाँ भैया... और सबसे विचित्र बात यह है कि सब लोग लाल माई का नाम श्रद्धा और भय, दोनों के साथ ले रहे हैं। ऐसा लगता है मानो यहाँ उनका शब्द ही अंतिम आदेश हो।"

उसी समय आश्रम के भीतर लगे विशाल घंटे की गंभीर ध्वनि पूरे परिसर में गूँज उठी। टन... टन... टन...क्षण भर में पूरा प्रांगण शांत हो गया। सभी श्रद्धालु एक साथ मंदिर की दिशा में मुड़कर हाथ जोड़कर खड़े हो गए। मानो किसी अदृश्य शक्ति के आदेश पर पूरा आश्रम एक ही लय में बंध गया हो।

सभी श्रद्धालुओं की दृष्टि जिस दिशा में लगी थी, समीर और आनंद ने भी उधर देखा। आश्रम के प्रांगण के एक तरफ़ सुकिंचक का मंदिर बना हुआ था। मंदिर के भीतर संगमरमर की एक ऊँची वेदी थी, जिस पर गहरे लाल रंग का रेशमी वस्त्र बिछा था। उसी वेदी पर लगभग साढ़े तीन से चार फुट ऊँची लाल पत्थर की एक विचित्र प्रतिमा स्थापित थी।

प्रतिमा का स्वरूप किसी भी परिचित देवता से बिल्कुल भिन्न था मानो तीन प्राणियों का सम्मिश्रण हो। उसमें मनुष्य की बुद्धिमत्ता, जंगली सूअर की उग्रता और वानर की चपलता, तीनों की झलक एक साथ दिखाई देती थी।

प्रतिमा पर लाल सिंदूर और चंदन का लेप था। वेदी के सामने सोने की एक बड़ी कटोरी रखी थी, जिसमें गाढ़ा लाल रंग का कोई द्रव नैवेद्य के रूप में भरा हुआ था। उसके आगे तरह-तरह के फल, मिष्ठान्न, पकवान, नारियल,

धूप, दीप और पुष्प अत्यंत व्यवस्थित ढंग से सजाए गए थे। विशेष रूप से रक्तचंपा के गहरे लाल फूलों की मालाएँ पूरी वेदी को ढक रही थीं।



प्रतिमा को देखते ही समीर ने धीरे से आनंद के कान में फुसफुसाया, "आनंद... यह किसी देवता की प्रतिमा कम और किसी प्राचीन दानव की मूर्ति ज़्यादा लग रही है।" आनंद ने भी बिना नज़र हटाए धीमे स्वर में कहा, "हाँ... मैंने भी ऐसी प्रतिमा पहले कभी नहीं देखी। किसी प्राचीन जनजातीय देव की मूर्ति ज़्यादा लग रही है। "

उसी समय शंखनाद गूँज उठा। जामुनी रंग के वस्त्र धारण किए कई पुरोहित मंदिर में प्रवेश कर गए। भजन की धुन और ऊँचे स्वर में गूँजते मंत्रों के बीच उन्होंने प्रतिमा का विधिवत अभिषेक आरंभ किया। सबसे पहले पंचामृत से स्नान कराया गया। फिर शुद्ध जल से प्रतिमा को धोया गया। उसके बाद उसे लाल रेशमी वस्त्र पहनाए गए और रक्तचंपा के पुष्पों की मालाएँ अर्पित की गईं। मंदिर में कपूर, चंदन और हवन की सुगंध फैल गई। सैकड़ों श्रद्धालु हाथ जोड़कर नतमस्तक खड़े थे। समीर और आनंद अब भी उस रहस्यमयी प्रतिमा को ध्यान से देख रहे थे।

दोनों के मन में एक ही प्रश्न उठ रहा था...यह कौन-सा देव था, जिसकी पूजा पूरे दंडकारण्य में इतनी श्रद्धा, अनुशासन और रहस्य के साथ की जा रही थी? पूजा की समाप्ति होते ही मंदिर के घंटे एक बार फिर गूँज उठे। श्रद्धालु व्यवस्थित ढंग से उठकर आश्रम के विशाल सभा-मंडप की ओर बढ़ने लगे।

कुछ ही क्षणों में लाल माई का दरबार आरंभ हो गया। चबूतरे के सामने ज़मीन पर दोनों ओर बड़ी-बड़ी चटाइयाँ बिछी थीं। बीच में आने-जाने के लिए एक चौड़ा रास्ता छोड़ा गया था। बाईं ओर महिलाएँ अनुशासन से बैठ गईं और दाईं ओर पुरुष।

आश्रम का नियम था कि दरबार में बच्चों का प्रवेश वर्जित था। सभी बच्चों को उनके परिजनों से अलग आश्रम के सुरक्षित कक्षों में रखा गया था, जहाँ उनकी देखभाल के लिए सेविकाएँ नियुक्त थीं। समीर और आनंद भी पुरुषों की पंक्ति में बैठ गए। दोनों उत्सुकता से चारों ओर का वातावरण देख रहे थे।

मंदिर के सामने बने एक ऊँचे चबूतरे पर लाल माई आकर विराजमान हुईं। उनके लिए बीच में एक भव्य आसन रखा गया था। उसके दोनों ओर सुनहरी नक्काशी वाली दो कुर्सियाँ सजा दी गई थीं। तभी सभा-मंडप में एक लंबा, दुबला-पतला व्यक्ति प्रवेश करता दिखाई दिया। उसने गहरे जामुनी रंग की धोती और कुर्ता पहन रखा था। आँखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा था। गले में भारी सोने की माला, हाथों में मोटे कड़े और पैरों में खड़ाऊँ। उसके चेहरे पर न मुस्कान थी, न क्रोध। बस एक कठोर, गंभीर और अधिकारपूर्ण भाव। वह बिना किसी से कुछ कहे लाल माई के दाहिनी ओर रखी सुनहरी कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

उसके बैठते ही सभा में उपस्थित कई लोगों ने सम्मान से सिर झुका दिए। आनंद ने ध्यान दिया कि वह व्यक्ति बार-बार सभा में बैठी महिलाओं की ओर देख रहा था। उसकी निगाहें असामान्य रूप से देर तक एक-एक चेहरे पर ठहर जातीं, मानो वह भीड़ में किसी विशेष व्यक्ति की तलाश कर रहा हो। उसकी आँखों में ऐसी तीक्ष्णता थी कि समीर को अनायास ही असहजता महसूस हुई।

आनंद ने धीरे से समीर के कान में फुसफुसाया, "यह कौन है? इसके चेहरे पर कुछ अजीब-सा भाव है... मुझे यह आदमी बिल्कुल सहज नहीं लग रहा।" समीर ने धीमे स्वर में उत्तर दिया, "यह मेरा साला और श्रेया का बड़ा भाई, अनिरुद्ध है।"

लाल माई ने अपना दाहिना हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में ऊपर उठाया, जामुनी वस्त्र पहने सेवकों में से एक ने ऊँचे स्वर में उद्घोष किया, "बोलिए... भगवान सुकिंचक जी की..." पूरा आश्रम एक साथ गर्जना कर उठा, "जय!" फिर दूसरी आवाज़ गूँजी, "लाल माई की..." "जय!" तीसरी बार उद्घोष हुआ, "जाम्ब बाबा की..." "जय!" क्षण भर में पूरा आश्रम जयकारों से गूँज उठा।

सैकड़ों श्रद्धालुओं की सामूहिक आवाज़ नीलकोठी की ऊँची छतों से टकराकर पूरे जंगल में गूँजने लगी। समीर और आनंद ने एक-दूसरे की ओर देखा। समीर ने धीमे स्वर में कहा, "मैंने आज तक किसी आश्रम में ऐसा अनुशासन और ऐसा जोश नहीं देखा।" आनंद ने भी सहमति में सिर हिलाया। "ऐसा लग रहा है जैसे यह केवल आश्रम नहीं... अपने आप में एक अलग संसार है।"

उसी समय लाल माई ने अपना हाथ नीचे किया। पूरा सभा-मंडप फिर से पूर्णतः शांत हो गया। इतना सन्नाटा था कि दूर जल रहे धूपदानों से उठती लकड़ियों की हल्की चट-चट की आवाज़ भी स्पष्ट सुनाई दे रही थी। अब सबकी निगाहें लाल माई पर टिकी थीं, जो अपना पहला वचन बोलने वाली थीं। लाल माई के सामने रखा माइक्रोफ़ोन ठीक किया गया। पूरा सभा-मंडप शांत था। कुछ क्षण तक लाल माई मौन बैठी रहीं। उनकी दृष्टि एक-एक श्रद्धालु पर घूमती रही, मानो वे सबके मन को पढ़ रही हों।

फिर उन्होंने गंभीर स्वर में बोलना प्रारंभ किया, "**सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर के भगवान... कलियुग के मनुष्यों की पुकार कहाँ सुनते हैं**? वर्षो तक की गई इनकी भक्ति ने हमें क्या दिया- कोरोना? दुख, दर्द और कष्ट।" उन्होंने कुछ क्षण रुककर सभा की ओर देखा।

"हम कलियुग के लोगों का तो केवल एक ही भगवान है..."इतने में आश्रम का एक उत्साही शिष्य अपनी जगह से खड़ा हो गया और ऊँचे स्वर में उद्घोष किया, "जयकारा... भगवान सुकिंचक जी का!" पूरा आश्रम एक साथ गरज उठा, "जय!"

फिर दूसरी ओर से स्वर उठा, "लाल माई की..." "जय!" जयघोष कुछ क्षण तक चलता रहा। तभी लाल माई के दाहिनी ओर बैठे जाम्ब बाबा ने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठा दिया। क्षणभर में पूरा मंडप फिर शांत हो गया। उनकी आवाज़ भारी, गंभीर और आदेशपूर्ण थी।

"आज लाल माई केवल तेरह श्रद्धालुओं की फ़रियाद सुनेंगी, उनके दुखों और कष्टों का निवारण किया जाएगा।" "शेष सभी श्रद्धालु अपनी प्रार्थना, समस्या अथवा मनोकामना एक पर्ची पर लिखकर चिट्ठी-पेटी में डाल दें। समय आने पर हर फ़रियाद पर विचार किया जाएगा, और हर चिट्ठी का जवाब दिया जाएगा।"

लाल माई ने हल्के से संकेत किया। दो साध्वियाँ- कलकुलता और महरान्धवी तुरंत भीतर चली गईं। कुछ ही क्षणों बाद वे श्रेया को अपने साथ लेकर लौटीं। श्रेया आज विशेष रूप से सजी हुई थी। हल्की पीली रेशमी साड़ी, लाल किनारी, माथे पर बड़ी बिंदी और हल्के आभूषणों में उसका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक और गरिमामय लग रहा था।

साध्विओं ने आदरपूर्वक उसे लाल माई के चबूतरे के बाईं ओर रखी सुनहरी कुर्सी पर बैठा दिया। सभा में बैठे अनेक श्रद्धालुओं की नज़र अनायास ही उसकी ओर उठ गई। उधर पुरुषों की पंक्ति में बैठे समीर को अचानक जैसे कुछ याद आया। "अरे!" उसने मन ही मन सोचा-"मैं तो आश्रम की सारी गतिविधियाँ देखने में इतना उलझ गया कि श्रेया को साथ लाना ही भूल गया।"

अगले ही क्षण उसने स्वयं को समझाया। "लेकिन... उसने भी तो मुझे नहीं बुलाया ।" उसने जेब से मोबाइल निकालकर देखा। स्क्रीन पर अब भी वही संदेश चमक रहा था-'No Network.' समीर ने हल्की साँस छोड़ी। "ठीक है... नीलकोठी इतनी विशाल है कि बिना नेटवर्क के वह मुझे बुला भी कैसे पाती?" फिर अचानक उसके मन में दूसरा विचार कौंधा। "सुनिधि...!" उसने तुरंत भीड़ में नज़र दौड़ाई।

वह सुकेशिनी को ढूँढ़ने लगा, लेकिन इतने लोगों के बीच उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसी समय पीछे से किसी ने धीरे से उसके कंधे को छुआ।

समीर ने मुड़कर देखा। ज्ञानसुंदर उसके बिल्कुल पास खड़ा था। वह झुककर धीमे स्वर में फुसफुसाया, "चिंता मत कीजिए, समीर जी। सुनिधि बिल्कुल सुरक्षित है। वह इस समय सलोनी और सुकेशिनी के साथ बच्चों वाले कक्ष में है। वहाँ सभी बच्चों की देख-रेख के लिए आश्रम की अन्य सेविकाएँ भी मौजूद हैं।"

समीर के चेहरे पर राहत के भाव उभर आए। उसने धीरे से सिर हिलाकर कहा, "धन्यवाद, ज्ञान भाई। अब मेरा मन थोड़ा शांत हुआ।" ज्ञानसुंदर मुस्कुराया और चुपचाप भीड़ में वापस विलीन हो गया। समीर ने फिर अपनी नज़र मंच की ओर उठाई।

उसे महसूस हो रहा था कि अब लाल माई का दरबार वास्तव में शुरू होने वाला है, और शायद इसी दरबार में नीलकोठी के कई रहस्यों की पहली परत खुलने वाली थी। लाल माई ने सभा में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं की ओर स्नेह और अधिकार से भरी दृष्टि डाली। फिर उन्होंने अपने बगल में बैठी श्रेया का हाथ थाम लिया और माइक्रोफ़ोन के सामने आकर बोलीं,

"आज मैं आप सबका परिचय अपनी पुत्री, श्रेया, से कराना चाहती हूँ।" पूरा दरबार एकदम शांत हो गया-"भगवान सुकिंचक जी के आशीर्वाद से आज मेरी बेटी वर्षों बाद मेरे पास लौटी है। आज से यह यहीं, नीलकोठी आश्रम में, मेरे साथ रहेगी। यह आश्रम के कार्यों में मेरा और जाम्ब बाबा का हाथ बँटाएगी तथा आप सभी की सेवा करेगी।"

लाल माई ने कुछ क्षण रुककर श्रेया की ओर स्नेह से देखा। फिर दृढ़ स्वर में घोषणा की, "आज से मेरी पुत्री श्रेया को उसके पुराने नाम से नहीं, बल्कि **'जंबा देवी'** के नाम से जाना जाएगा। यही उसका आश्रम का नाम होगा।"

एक पल के लिए पूरा सभा-मंडप स्तब्ध रह गया। अगले ही क्षण पीछे की पंक्ति से एक उत्साही श्रद्धालु ने पूरे जोश से चिल्लाया, "जय हो... जंबा देवी की!" क्षणभर में सैकड़ों कंठ एक साथ गूँज उठे। "जय!" दूसरी ओर से आवाज़ आई, "लाल माई की बेटी..." भीड़ ने गर्जना की, "जंबा देवी युग-युग जिए!" फिर पूरा आश्रम जयघोषों से थर्रा उठा। "जय जंबा देवी!"

"जय लाल माई!" "भगवान सुकिंचक जी की जय!" "जाम्ब बाबा की जय!"श्रद्धालु हाथ जोड़कर जंबा देवी के दर्शन करने लगे। कई लोगों ने भाव-विभोर होकर उनके चरणों की ओर सिर झुका दिया। उधर पुरुषों की पंक्ति में बैठा समीर यह सब देखकर स्तब्ध रह गया। उसने श्रेया की ओर देखा।

श्रेया के चेहरे पर भी आश्चर्य और संकोच के मिले-जुले भाव थे। स्पष्ट था कि उसे भी इस घोषणा की पहले से कोई जानकारी नहीं थी। वह हल्की-सी असहज होकर लाल माई की ओर देखने लगी, मानो पूछना चाहती हो कि यह सब अचानक क्यों और किसलिए हो रहा है।

लाल माई ने कुछ देर बाद अपनी सेविकाओं, सोना और चांदी, को बुलाया। "सोना, चांदी... ज़रा इधर आना। जम्बा देवी को 'जामुनी' कमरे में ले जाओ। उनके आराम, खाने-पीने और हर सुविधा की व्यवस्था करो। और हाँ, उस जर्मन डॉक्टर ईवा से कहना कि वह जम्बा देवी की पूरी जाँच करे।"

सोना और चांदी ने श्रेया का हाथ थामा और उसे 'जामुनी' कमरे की ओर ले गईं। हवेली के भीतर प्रवेश करते ही वे एक गुप्त लिफ्ट से पहली मंज़िल पर 'जामुनी' कमरे पहुँचीं। उधर, समीर भी उठ खड़ा हुआ। वह श्रद्धालुओं की सभा के चारों ओर बने घेरे से घूमते हुए चुपचाप श्रेया के पीछे चल पड़ा।

लाल माई ने जैसे ही समीर को जाते देखा, उन्होंने इशारे से ज्ञान सुंदर को उसके पीछे जाने का आदेश दिया। समीर 'जामुनी' कमरे की तलाश में आगे बढ़ ही रहा था कि तभी ज्ञान सुंदर ने उसका रास्ता रोक लिया- "समीर साहब... ज़रा रुकिए।"

समीर ने भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा, "क्या है?" ज्ञान सुंदर ने विनती भरे स्वर में कहा, "लाल माई और जाम्ब बाबा ने आपको लाइब्रेरी में बैठने को कहा है। दरबार समाप्त होने के बाद वे आपसे बात करेंगे।"

समीर ने उसकी बात अनसुनी कर आगे बढ़ने की कोशिश की, लेकिन ज्ञान सुंदर ने उसका हाथ पकड़ लिया। "अरे, रुकिए तो सही... सुकिंचक बाबा का प्रसाद लेते जाइए।"

समीर ने झटके से अपना हाथ छुड़ाया और गुस्से में बोला, "मुझे नहीं चाहिए कोई प्रसाद-व्रसाद!" इतना कहकर वह लगभग दौड़ता हुआ हवेली के भीतर घुस गया। वह भूतल के लंबे गलियारों में घूमता रहा। विशाल पुस्तकालय, आँगन, बरामदे, रसोई, पुराने बैठकखाने... उसने एक-एक जगह ध्यान से देखी। हवेली के भीतर हर सेवक और सेविका के चेहरे को गौर से परखा, लेकिन श्रेया कहीं दिखाई नहीं दी।

फिर वह पहली मंजिल पर पहुँचा -लाल माई का कक्ष, जाम्ब बाबा का कक्ष, कुछ बंद कमरे, लंबा गलियारा, लाल माई की निजी रसोई, लेकिन श्रेया का कोई पता नहीं। तभी उसकी नज़र दूसरी मंजिल की ओर जाती सीढ़ियों पर पड़ी। सीढ़ियों **पर** एक भारी लोहे का दरवाज़ा लगा था। उस पर मोटा ताला लटक रहा था। दोनों ओर दो बलिष्ठ सुरक्षा कर्मी भाले जैसे डंडे लिए खड़े थे।

उसने सुरक्षा कर्मियों को श्रेया के बारे में पूछा- "क्या आप लोगों ने मेरी बीवी श्रेया घोष को देखा है। उसने पीली रेशमी साडी पहनी हुई है। सुरक्षा कर्मियों ने हाथ जोड़कर विनम्र भाव से उत्तर दिया- "नहीं साहब! हम यहां सुबह से पहरे पर हैं। हमने किसी को ऊपर जाते नहीं देखा। ऊपर जाने की आज्ञा किसी को भी नहीं है।" समीर समझ गया, या तो सुरक्षा कर्मी झूठ बोल रहे हैं या फिर श्रेया सच में वहा नहीं आई। वैसे भी एक गर्भवती औरत सीढ़ियों से चढ़ना अवॉइड करेगी। उसने मन ही मन सोचा, "इनसे वाद-विवाद करके फायदा नहीं, मैं सुनिधि को देखता हूं। श्रेया जल्दी आराम करने अपने-आप हमारे वाले कमरे में आ ही जाएगी। तब ही पूछ लूंगा कि माजरा क्या है? जाम्बा देबी क्यों बन गई वो।

समीर कुछ क्षण तक उस दरवाज़े को देखता रहा। उसे पूरा विश्वास हो गया कि दूसरी और तीसरी मंजिल पर कुछ ऐसा अवश्य है जिसे सबसे छिपाकर रखा जा रहा है। लेकिन वहाँ जाना उसके लिए असंभव था।

निराश होकर वह वापस अपने कमरे में लौट आया। कुछ देर बिस्तर पर बैठा रहा। शायद श्रेया लौट आए...लेकिन घंटों बीत गए। कोई नहीं आया। आख़िरकार वह सुनिधि के कमरे की ओर चला गया। कमरे का दरवाज़ा आधा खुला था। अंदर सुनिधि और सलोनी खिलौनों से घर-घर खेल रही

थीं। दोनों की खिलखिलाहट पूरे कमरे में गूँज रही थी। पास ही सुकेशिनी बैठी दोनों बच्चियों को मुस्कुराकर देख रही थी।

समीर को देखते ही सुनिधि दौड़कर उससे लिपट गई "डैडी! देखो, सलोनी मेरी सबसे अच्छी दोस्त बन गई है।" समीर मुस्कुराया। "बहुत अच्छी बात है, बेटा।" उसने बेटी के सिर पर हाथ फेरा। कम-से-कम सुनिधि सुरक्षित थी। यह सोचकर उसके मन को थोड़ी शांति मिली।

अध्याय 6

एक बेहतरीन प्रस्ताव

अप्रैल, 8th 2020, दोपहर 1:30 बजे। श्रेया 'जामुनी' कमरे में पहुँची। सोना, चांदी, दोनों सेविकाओं ने उसे आदरपूर्वक एक बड़े और आरामदायक बिस्तर पर लिटा दिया। फिर श्रद्धापूर्वक उसके सामने ताज़े फल, जूस और अन्य खाने-पीने की वस्तुएँ रख दीं।

कुछ देर बाद एक महिला (जर्मन) डॉक्टर कमरे में दाखिल हुई। उसने श्रेया की विस्तार से जाँच की और गर्भावस्था तथा उसके स्वास्थ्य से जुड़े कई प्रश्न पूछे। इसके बाद उसने एक आधुनिक मशीन की सहायता से अल्ट्रासाउंड किया और गर्भ में पल रहे शिशु की स्थिति का परीक्षण किया। जाँच पूरी होने के बाद वह मुस्कुराई और बोली, "बच्चा पूरी तरह स्वस्थ है। गर्भावधि उम्र -**13 हफ़्ते**, उसकी धड़कन 162 बीट प्रति मिनट है। चिंता की कोई बात नहीं।"



श्रेया के पूछने पर वह विदेशी महिला, जिसकी आयु लगभग पैंतीस-छत्तीस वर्ष रही होगी, टूटी-फूटी हिंदी और अंग्रेज़ी में अपनी कहानी सुनाने लगी।

"मेरा नाम ईवा म्यूलर है। मैं जर्मनी के हैम्बर्ग शहर के पास स्थित जोर्क गाँव से भारत आई हूँ। मैं पेशे से स्त्री-रोग विशेषज्ञ हूँ और सामान्य दवाइयों का भी अच्छा ज्ञान रखती हूँ।" मैं दण्डकारण्य में सफारी के लिए आई थी। तभी अचानक गाँव में लॉकडाउन लग गया और मैं यहीं फँस गई। इसी दौरान शुकासुर ने मेरे पति पर हमला कर दिया... और उनकी मृत्यु हो गई।"

उसकी आँखें नम हो गईं। कुछ पल रुककर उसने आगे कहा, "उसी समय लाल माई ने मुझे और मेरे दोनों बच्चों को शुकासुर से बचाया और जंगल से रेस्क्यू किया। लेकिन उस अफरा-तफरी में हमारे पासपोर्ट और बाकी सारे दस्तावेज़ खो गए। "मैंने लाल माई की मदद से जर्मन दूतावास से संपर्क किया था, लेकिन लॉकडाउन के कारण हम फँस गए हैं। पासपोर्ट और वैध दस्तावेज़ों के बिना, कम-से-कम अगले छह महीने तक जर्मनी वापस नहीं जा सकते।" "

उसने लाल माई के प्रति कृतज्ञता से सिर झुकाया। "लाल माई ने मुझे और मेरे बच्चों को यहाँ शरण दी। बदले में मैं आश्रम के श्रद्धालुओं, रोगियों और उनके परिवारों को चिकित्सा परामर्श देती हूँ। अब यही आश्रम मेरा घर है।" कुछ समय बाद लाल माई 'जामुनी' कमरे में आईं और श्रेया के पास आकर बैठ गईं। श्रेया झुंझलाकर बोली, "मम्मी, यह सब क्या नाटक चल रहा है? समीर और सुनिधि कहाँ हैं?"

लाल माई ने ताली बजाई। उनके संकेत मिलते ही सभी सेविकाएँ और अन्य लोग कमरे से बाहर निकल गए। चांदी ने बाहर जाते हुए दरवाज़ा भी बंद कर दिया। लाल माई ने एक बार पूरे कमरे पर नज़र दौड़ाई, यह सुनिश्चित किया कि वहाँ कोई नहीं है और उनकी बातचीत कोई नहीं सुन सकता। फिर उन्होंने मुस्कुराते हुए प्यार से श्रेया के सिर पर हाथ फेरा।

"देख बेटा... हमारे मना करने के बावजूद तूने उस एक बच्ची के विधुर बाप समीर से शादी कर ली। उसके साथ रहकर तुझे कितना दुःख होता है, यह तू मुझे फोन पर बताती रहती है। मुझे सब पता है, वह कमीना तुझे समय नहीं देता। हमेशा अपनी बेटी के पीछे ही पड़ा रहता है।"

तू यहीं हमारे पास रह जा। मैं समीर को वापस कल्याण भिजवा दूँगी। तुझे हमारी ज़रूरत है। यहाँ जो सम्मान, आराम और वीआईपी सेवा तूने महसूस की है, वह तुझे उस कंगाल समीर के घर कभी नहीं मिलेगी। और... हमें भी तेरी ज़रूरत है।"

श्रेया की आँखों में गुस्सा भर आया- "जब मैं यहाँ रहती थी, तब तो तुम लोगों को सिर्फ पैसों की चिंता रहती थी। तुमने मुझे कभी प्यार नहीं किया। तुम्हें हमेशा सिर्फ पैसा... पैसा... पैसा चाहिए था। मुझसे और मेरे बिज़नेस से।"

लाल माई ने गहरी साँस ली। "तू सही कह रही है। तू हमेशा अनिरुद्ध से ज़्यादा काबिल थी और हमारे सबसे ज़्यादा करीब भी। यह समझने में हमसे बहुत बड़ी भूल हुई।"

श्रेया ने कुछ क्षण उन्हें देखा, फिर उत्सुकता से पूछा, "लेकिन मम्मी... आप सुरेखा से लाल माई कैसे बन गईं?" लाल माई हल्का-सा मुस्कुराईं। "कहानी बहुत लंबी है... लेकिन तुझे संक्षेप में सुनाती हूँ। तीन साल पहले जब समीर से शादी करके तू तुर्ग छोड़ कर मुंबई चली गई थी, तेरे जाने के बाद हमारी आर्थिक हालत पूरी तरह बिगड़ गई। हम लोग रिश्तेदारों से भीख माँगते थे।

तेरे पिताजी पहले से ही हमेशा बीमार रहते थे। कुछ ही समय बाद तेरे भाई की भी नौकरी चली गई, क्योंकि उसका काम में बिल्कुल मन नहीं लगता था। उसने सरकार से ऋण लेकर तेरी तरह पोल्ट्री फार्म शुरू किया, लेकिन उसका वह व्यवसाय भी बुरी तरह असफल हो गया। तेरे पिताजी के इलाज और घर का खर्च चलाने के लिए हमने गाँव के ठाकुर राणा जी से उधार लिया था।

दो साल पहले, तेरे भैया की शादी करवाने के लिए मैंने अपने सोने के गहने गिरवी रख दिए और पैसों का इंतज़ाम किया। राणा को जब पता चला कि तेरे भैया शादी करने वाले हैं, वह भी बिना नौकरी और व्यवसाय के, तो उसने सोचा कि पैसे कहाँ से आ गए । वह शादी से पहले ही हमारे घर अपने सूद समेत पूरे पैसे वापस माँगने आ गया।

मैंने समझाने की कोशिश करी, कि अपने गहने गिरवी रखकर पैसों का बंदोबस्त किया है और दहेज से आने वाले पैसों से नया व्यवसाय खोलेंगे। लेकिन वह नहीं माना।

जब हम पैसे नहीं चुका पाए, तो हमारा उसके साथ झगड़ा हो गया, और बात बढ़ गई । उसके आदमियों ने तेरे भाई को बेरहमी से पीटा और उसकी

टाँग तोड़ दी। तेरे पिताजी को घसीटकर कमरे से बाहर फेंक दिया और हमारे घर में आग लगा दी।

“फिर..." लाल माई की आवाज़ भारी हो गई। राणा के गुंडों ने मेरा बलात्कार किया और मुझे भी मार डालने की कोशिश की। मैं किसी तरह अपनी जान बचाकर जंगल की ओर भागी। भागते-भागते मैं एक अनजान, प्राचीन खंडहर तक पहुँच गई। वहाँ 'सुकिंचक बाबा' की एक विशाल मूर्ति थी। मैं उसी मूर्ति के चरणों में गिर पड़ी। मेरे शरीर से बहता हुआ रक्त धीरे-धीरे मूर्ति तक पहुँचा...और तभी एक चमत्कार हुआ। वह मूर्ति बोलने लगी।"

कुछ क्षण के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया। लाल माई ने श्रद्धा से आँखें बंद कर लीं।"सुकिंचक भगवान ने मेरी सहायता की। उनकी कृपा से तेरे पिताजी और तेरे भाई दोनों स्वस्थ हो गए। फिर उनके श्राप से राणा जी का अंत हुआ। शुकासुर ने स्वयं राणा जी का वध कर दिया और उसके एक-एक गुंडे को इतनी भयानक मृत्यु मिली कि पूरे इलाके में लोग आज तक उस घटना को याद करके काँप उठते हैं। बिना पुलिस और कोर्ट केस के हमें न्याय मिल गया ।"

यह कहते हुए लाल माई ने दोनों हाथ जोड़ लिए। "सुकिंचक भगवान ही मेरे आराध्य हैं... वही मेरे गुरु हैं। उन्होंने मुझे सब कुछ दिया। धन दिया...शक्ति दी... स्वस्थ शरीर दिया... जवानी दी...और ऐसी दिव्य तांत्रिक सिद्धियाँ दीं, जिनकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

अब मैं जीवन भर उनकी सेवा करूँगी और उनके वचनों का प्रचार पूरे संसार में करूँगी।" श्रेया कुछ क्षण तक लाल माई को अवाक् होकर देखती रही। फिर धीमे किंतु दृढ़ स्वर में बोली, "सुकिंचक ने आपको सब कुछ दिया... लेकिन बदले में आपने उन्हें क्या दिया?"

लाल माई के चेहरे पर गर्व और भक्ति का अनोखा मिश्रण उभर आया। उनकी आँखों में एक विचित्र चमक थी। वह मुस्कुराईं और बोलीं, "सब कुछ..." "मैंने अपना तन, मन और धन... सब कुछ उन्हें समर्पित कर दिया।"

कुछ क्षण रुककर उन्होंने गहरी साँस ली और आगे कहा, "उन्होंने जो भी माँगा, मैंने बिना किसी प्रश्न के उन्हें अर्पित कर दिया। मेरी निष्ठा... मेरी

भक्ति... मेरा जीवन... यहाँ तक कि मेरा प्रेम भी।" लाल माई की आवाज़ और धीमी हो गई। "वह प्रेम, जो मैं कभी तेरे पिताजी से नहीं कर सकी... वह भी मैंने सुकिंचक को अर्पित कर दिया।"

कमरे में कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। श्रेया के चेहरे पर अविश्वास और असहजता साफ़ झलक रही थी। उसे पहली बार महसूस हुआ कि उसकी माँ केवल एक धार्मिक गुरु नहीं रह गई थीं, बल्कि उनकी श्रद्धा किसी साधारण भक्ति की सीमा से बहुत आगे निकल चुकी थी। उनके शब्दों में ऐसा समर्पण था जिसने श्रेया के मन में अनेक अनकहे प्रश्न और गहरी आशंकाएँ जगा दीं।

श्रेया ने लाल माई की आँखों में देखते हुए पूछा, "मम्मी... इस वीआईपी सेवा के बदले आप मुझसे क्या चाहती हैं?" लाल माई बिना किसी झिझक के बोलीं,"मैं तुझे अपनी सबसे ख़ास शिष्या बनाना चाहती हूँ। तू मेरे बराबर बैठेगी, मेरे साथ निर्णय लेगी।"

उन्होंने श्रेया का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा, "बेटा, मैं बहुत कुछ संभाल सकती हूँ, लेकिन विदेशी भाषाएँ नहीं बोल सकती। न अंग्रेज़ी, न जर्मन, न लैटिन और न ही अरबी।" "मैं भारत में सुकिंचक जी का प्रचार करूँगी, और तू विदेशों की सारी व्यवस्था संभालना। वहाँ के लोगों से मिलना, उनसे बात करना और हमारे मिशन को पूरी दुनिया तक पहुँचाना।"

श्रेया का व्यवसायी मन तुरंत सक्रिय हो गया। उसने कुछ पल सोचकर कहा, "वह सब मैं संभाल लूँगी... लेकिन अपनी गर्भावस्था पूरी होने के बाद। बच्चे के जन्म के बाद मैं इस बारे में सोच सकती हूँ।"

लाल माई ने तुरंत कहा, "इतनी देर करने की क्या ज़रूरत है? तू यह बच्चा गिरा दे। उस कर्ज़ में डूबे समीर का बीज अपनी कोख में क्यों पाल रही है?" यह सुनते ही श्रेया का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। वह लगभग चिल्लाते हुए बोली, "खबरदार, मम्मी! मेरे बच्चे के खिलाफ एक शब्द भी कहा तो...!" "तीन बच्चों की माँ होकर भी तुम मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे को 'समीर का बीज' कह रही हो? तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आती?"

वह लाल माई की आँखों में देखते हुए बोली, "कैसी माँ हो तुम... और कैसी नानी? जिस बच्चे ने अभी इस दुनिया में कदम भी नहीं रखा, उसके लिए तुम्हारे मन में ज़रा-सी ममता भी नहीं है।"

श्रेया ने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा, "यह बच्चा मेरे जीवन का हिस्सा है, मेरी साँस है। इसके बारे में अपमानजनक शब्द सुनना मैं कभी बर्दाश्त नहीं करूँगी।" उसकी आँखों में आँसू आ गए। "मैं समीर से बहुत प्यार करती हूँ... और अपने होने वाले बच्चे से भी। कोई भी मुझे उनसे अलग नहीं कर सकता।"

लाल माई कुछ क्षण चुप रहीं, फिर अपेक्षाकृत शांत स्वर में बोलीं, "माफ़ करना, बेटी। मैंने वही कहा जो मुझे उचित लगा।" उन्होंने फिर समझाने की कोशिश की "लेकिन समीर तुझे मेरा काम कभी नहीं करने देगा। उसे और उसकी बेटी को यहाँ से जाने दे।"

श्रेया ने बिना एक पल गंवाए दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "नहीं। समीर और सुनिधि भी यहीं मेरे साथ रहेंगे। वे मेरे परिवार हैं।" वह आगे बोली, "अगर मैं आपके साथ काम करूँगी, तो समीर भी मेरे साथ रहेगा। वह परिवार के कामों में मेरी मदद करेगा।"

उसने आत्मविश्वास से कहा, "**समीर को मैं समझा लूँगी।**" श्रेया ने सिर झुका लिया। उसकी आँखों से चुपचाप आँसू बहने लगे। बढ़ती हुई गर्भावस्था के कारण उसके शरीर में हार्मोनल परिवर्तन तेज़ी से हो रहे थे। छोटी-सी बात भी कभी उसे अत्यधिक क्रोधित कर देती, तो कभी वह गहरे दुःख में डूबकर फूट-फूटकर रो पड़ती।

कुछ देर तक कमरे में सन्नाटा पसरा रहा। लाल माई भी बिना कुछ कहे अपनी बेटी को देखती रहीं। श्रेया एक हाथ से अपने आँसू पोंछ रही थी और दूसरे हाथ से अनायास ही अपने पेट पर हाथ फेर रही थी, मानो अपने अजन्मे बच्चे को यह भरोसा दिला रही हो कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह हमेशा उसकी रक्षा करेगी।

श्रेया ने पानी का गिलास उठाया, धीरे-धीरे कुछ घूँट पिए और फिर अपनी माँ की ओर गहरी नज़रों से देखते हुए बोली, "माँ... क्या आपने यही प्रस्ताव

हिमनदा दीदी को भी दिया था?" लाल माई के चेहरे पर एक पल के लिए असहजता झलक गई। "हाँ, दिया था। लेकिन उसने मना कर दिया। वह भी तेरी तरह अपने पति के मोह में पड़कर इतना सुनहरा अवसर ठुकरा बैठी। उसके बाद से मेरी उससे कोई बातचीत नहीं होती।"

कुछ क्षण का मौन छाया रहा। फिर लाल माई ने बात बदलते हुए पूछा, "तुझे अरमान याद है?" श्रेया ने भौंहें सिकोड़ लीं। "उसे कैसे भूल सकती हूँ?"लाल माई के होंठों पर एक संतुष्ट मुस्कान उभर आई।

"तो सुन..." "सुकिंचक की कृपा से वह भी खून की उल्टियाँ करते-करते मर गया।" उन्होंने आगे कहा, "उसके छोटे भाई का भी मैं वही हाल करने वाली थी। लेकिन उसके माँ-बाप मेरे सामने गिड़गिड़ाने लगे। मेरे पैरों में गिरकर दया की भीख माँगने लगे।" "मैंने उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाई। उनका घर, कारोबार... सब कुछ उनसे छीन लिया।"

लाल माई ने गर्व से मुस्कुराते हुए पूछा, "कहो... अच्छा बदला लिया न मैंने?" श्रेया ने उनकी ओर देखा, उसके चेहरे पर हल्की-सी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान फैल गई। "तुममें और राणा जी में अब फ़र्क ही क्या रह गया है?"

यह सुनते ही लाल माई का शांत चेहरा तमतमा उठा। पहली बार उनके संयम में दरार दिखाई दी। श्रेया का व्यंग्य उनके अहंकार पर सीधी चोट कर गया था। कुछ क्षण बाद उन्होंने कठोर स्वर में कहा, "इस संसार का यही नियम है। समुद्र में हमेशा बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। ताकतवर ही जीवित रहता है।"

श्रेया ज़ोर से हँस पड़ी। "यानि अब तुम खुद बड़ी मछली बन गई हो, मम्मी..." वह हँसी रोकते हुए बोली, "नहीं... बड़ी मछली नहीं..." उसने ताली बजाई और व्यंग्य से कहा, "सीधे शार्क बन गई हो!"

फिर हँसते हुए अंग्रेज़ी में बोली, **"How funny!"** उसकी हँसी कमरे में गूँज उठी, जबकि लाल माई का चेहरा क्रोध से लाल हो चुका था। लाल माई बाहर से शांत बनी रहीं, लेकिन भीतर ही भीतर उनका अहंकार बुरी तरह आहत हो चुका था। उन्होंने मन ही मन सोचा, "इस लड़की को उसकी

औकात और अनुशासन का एहसास कराना ही होगा। बहुत ज़्यादा बोलने लगी है। इसकी अक्ल ठिकाने लगानी पड़ेगी।"

हालाँकि उनके चेहरे पर अब भी हल्की-सी मुस्कान बनी हुई थी, पर उनकी आँखों में एक ठंडी कठोरता उतर आई थी। श्रेया उनकी बेटी थी, इसलिए वे तत्काल कोई कठोर कदम नहीं उठाना चाहती थीं, लेकिन उन्होंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि समय आने पर उसे अपने ढंग से समझाना ही होगा।

श्रेया ने गहरी साँस ली। अभी-अभी हुई तीखी बातचीत ने उसे मानसिक रूप से थका दिया था। उसने शांत स्वर में कहा, "मम्मी... मैं अब अपने कमरे में जाकर थोड़ा आराम करना चाहती हूँ। क्या आप मुझे कुछ देर अकेला छोड़ देंगी? और अगर हो सके तो, कृपया मेरे लिए कुछ खाने-पीने का इंतज़ाम भी करवा दीजिए... ।"

लाल माई ने अपनी बेटी को कुछ क्षण तक देखा। फिर बिना कुछ कहे ताली बजाई और ऊँची आवाज़ में पुकारा, "सोना... चांदी!" कुछ ही क्षणों में दोनों सेविकाएँ कमरे में उपस्थित हो गईं और हाथ जोड़कर बोलीं, "आदेश, माताश्री।"

लाल माई ने गंभीर स्वर में कहा, "जम्बा देवी को उनके कक्ष तक आदरपूर्वक छोड़ आओ। इनके भोजन और विश्राम की पूरी व्यवस्था करो। ध्यान रहे, इन्हें किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए।"

"जैसी आज्ञा, माताश्री।" दोनों सेविकाओं ने श्रद्धापूर्वक सिर झुकाया। फिर उन्होंने श्रेया का हाथ थामा और उसे सावधानी से सहारा देते हुए 'जामुनी' कक्ष के **बाहर** ले चलीं। गर्भावस्था के कारण श्रेया के हर कदम में हल्की-सी थकान झलक रही थी, इसलिए दोनों सेविकाएँ पूरे सम्मान और स्नेह के साथ उसे धीरे-धीरे उसके कक्ष तक ले गईं।

शाम ढलने लगी और आसमान नारंगी रंग से भर गया था। उसी समय कमरे का दरवाज़ा खुला। श्रेया अंदर आई। वह पहले से बिल्कुल अलग दिखाई दे रही थी। चेहरे पर आत्मविश्वास...और आँखों में एक अजीब-सी

चमक। समीर ने गौर से उसकी ओर देखा। "कहाँ थी तुम?" श्रेया मुस्कुराई, "मम्मी के साथ।" वह समीर के सामने बैठ गई।

"मुझे तुमसे एक ज़रूरी बात करनी है।" समीर चुपचाप सुनने लगा। "मम्मी चाहती हैं कि मैं हमेशा के लिए सुकिंचक कृपा आश्रम से जुड़ जाऊँ।" समीर की भौंहें सिकुड़ गईं -"मतलब?" "मतलब... मैं आश्रम का काम संभालूँगी- "विदेशी मेहमानों से मिलना...महिला श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन करना...आश्रम के कार्यक्रमों का संचालन...और मम्मी की उत्तराधिकारी बनने की तैयारी।"

समीर कुछ नहीं बोला, श्रेया आगे कहती रही-"सिर्फ़ मेरे लिए नहीं...उन्होंने तुम्हारे लिए भी प्रस्ताव दिया है।" **समीर** बोला -"मेरे लिए?"

श्रेया धीमे स्वर कहती रही- "हाँ।" "तुम अपनी नौकरी छोड़ दो।" "आश्रम में 'गुरु भाई' बनकर पूर्णकालिक सेवा करो।" "तुम्हें अभी की नौकरी से भी ज़्यादा वेतन मिलेगा...और सबसे बड़ी बात...मम्मी तुम्हारे सारे कर्ज़ भी चुका देंगी।" कमरे में कुछ क्षण सन्नाटा छा गया। समीर की आँखों के सामने अपनी आर्थिक परेशानियाँ घूम गईं- बैंक के ऋण...ईएमआई...भविष्य की चिंता...सब कुछ।

यह प्रस्ताव किसी भी सामान्य व्यक्ति को आकर्षित कर सकता था। लेकिन उसका मन कुछ और कह रहा था। उसने धीरे से पूछा, "इसके बदले में?" श्रेया कुछ पल चुप रही- "बस... आश्रम की सेवा।"

समीर हल्का-सा मुस्कुराया- "दुनिया में कोई भी इतना बड़ा एहसान बिना किसी कीमत के नहीं करता, श्रेया। मैं यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करूँगा। श्रेया चौंक गई- "लेकिन...क्यों?" समीर ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "क्योंकि यह नौकरी नहीं है..." इस बार समीर का स्वर कठोर था- "...यह हमारी ज़िंदगी पर नियंत्रण पाने की शुरुआत है। आज नौकरी छोड़ने को कहेंगे...कल कहेंगे कहाँ रहना है...परसों तय करेंगे किससे मिलना है..."

"और एक दिन ऐसा आएगा जब हमारा अपना कोई निर्णय नहीं बचेगा।" श्रेया ने समझाने की कोशिश की। "तुम गलत सोच रहे हो। मम्मी हमारी मदद करना चाहती हैं।" समीर ने दृढ़ स्वर में कहा, "नहीं। मुझे किसी ऐसी

मदद की ज़रूरत नहीं जो मेरी आज़ादी छीन ले। मैं मेहनत करके अपने कर्ज़ खुद चुका लूँगा। लेकिन अपने परिवार का भविष्य किसी और के हाथों में नहीं दूँगा।"

श्रेया कुछ क्षण उसे देखती रही -"एक बार फिर सोच लो।" समीर उठ खड़ा हुआ- "मैं सोच चुका हूँ। यह जगह मुझे ठीक नहीं लगती और मैं चाहता हूँ कि हम जितनी जल्दी हो सके यहाँ से चले जाएँ।" श्रेया के चेहरे पर निराशा और असमंजस दोनों दिखाई दिए। उसे पता नहीं था कि गलियारे के मोड़ पर कोई और भी खड़ा था- लाल माई। वह पूरे समय उनकी बातचीत सुन रही थी।

उसके चेहरे पर कोई क्रोध नहीं था, केवल एक रहस्यमयी मुस्कान थी। उसने धीरे से अपनी माला का एक मनका आगे बढ़ाया और मन ही मन सोचा, "समीर... तुम्हें धन से नहीं झुका सकती...तो अब कोई दूसरा रास्ता अपनाना होगा। उसकी आँखों में एक ठंडी योजना आकार लेने लगी।

समीर अब एक पल भी आश्रम में नहीं रहना चाहता था, लेकिन श्रेया के कहने पर वह लाल माई की देहरी में कुछ और समय रुकने के लिए तैयार हो गया। उसे सबसे अधिक चिंता श्रेया की देखभाल की थी।

अध्याय 7

नील कोठी और आश्रम परिसर

अगले कुछ दिन बिना किसी विशेष घटना के बीत गए। समीर और उसका परिवार नीलकोठी में अपेक्षाकृत आरामदायक जीवन बिता रहा था। उनके रहने, खाने और अन्य सभी आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा जा रहा था। बाहर से देखने पर ऐसा लगता था मानो वे किसी आलीशान अतिथि गृह में ठहरे हों, लेकिन समीर अच्छी तरह समझ चुका था कि यह आराम भी एक प्रकार की कैद थी।

अप्रैल 15th, 2020 सुनिधि धीरे-धीरे आश्रम के वातावरण में घुल-मिल गई थी। सलोनी अब उसकी सबसे अच्छी मित्र बन चुकी थी। दोनों बच्चियाँ दिन भर सुकिंचक कृपा आश्रम के अन्य बच्चों के साथ खेलतीं, कभी बगीचे में दौड़तीं, कभी मिट्टी के खिलौने बनातीं तो कभी झूले पर घंटों हँसती रहतीं। उनकी मासूम हँसी पूरे परिसर में जीवन का आभास कराती थी।

श्रेया भी अब आश्रम की गतिविधियों में व्यस्त रहने लगी थी। कभी वह लाल माई के साथ विदेशी श्रद्धालुओं से मिलती, कभी महिलाओं के समूहों का मार्गदर्शन करती, तो कभी विशेष पूजा की तैयारियों में लगी रहती। हालांकि समीर को यह बदलाव स्वाभाविक नहीं लगता था। उसे कई बार महसूस होता कि श्रेया पहले जैसी स्वतंत्र नहीं रही। उसके व्यवहार में एक अजीब-सी गंभीरता और अनुशासन आ गया था।

एक बात पूरे परिवार को लगातार परेशान कर रही थी। नीलकोठी और उसके आसपास के पूरे परिसर में किसी भी मोबाइल फ़ोन में नेटवर्क नहीं आता था। समीर ने कई बार अलग-अलग स्थानों पर जाकर कोशिश की- आँगन में, कभी मुख्य द्वार के पास, लेकिन हर बार मोबाइल की स्क्रीन पर केवल एक ही संदेश दिखाई देता- "नो नेटवर्क।"

तुर्ग आकर थोड़ा आराम करूँगा, यह सोचकर उसने कार्यालय से छुट्टी ले ली थी। लेकिन अब उसे फिर से कार्यालय का काम शुरू करना था। उसके लिए नेटवर्क और इंटरनेट की व्यवस्था करना बहुत ज़रूरी था।

20 अप्रैल, 2020, की सुबह नाश्ते के बाद समीर कमरे से बाहर निकला और आनंद से मिलने चला गया। बरामदे में आनंद पहले से उसका इंतज़ार कर रहा था। "गुड मॉर्निंग, समीर भैया।" "गुड मॉर्निंग, आनंद।" समीर के चेहरे पर हल्की मुस्कान आई- "क्यों न आज नील कोठी से निकलकर आश्रम और लाल माई की देहरी का बाकी हिस्सा देखा जाए?" आनंद भी उत्साहित हो उठा।

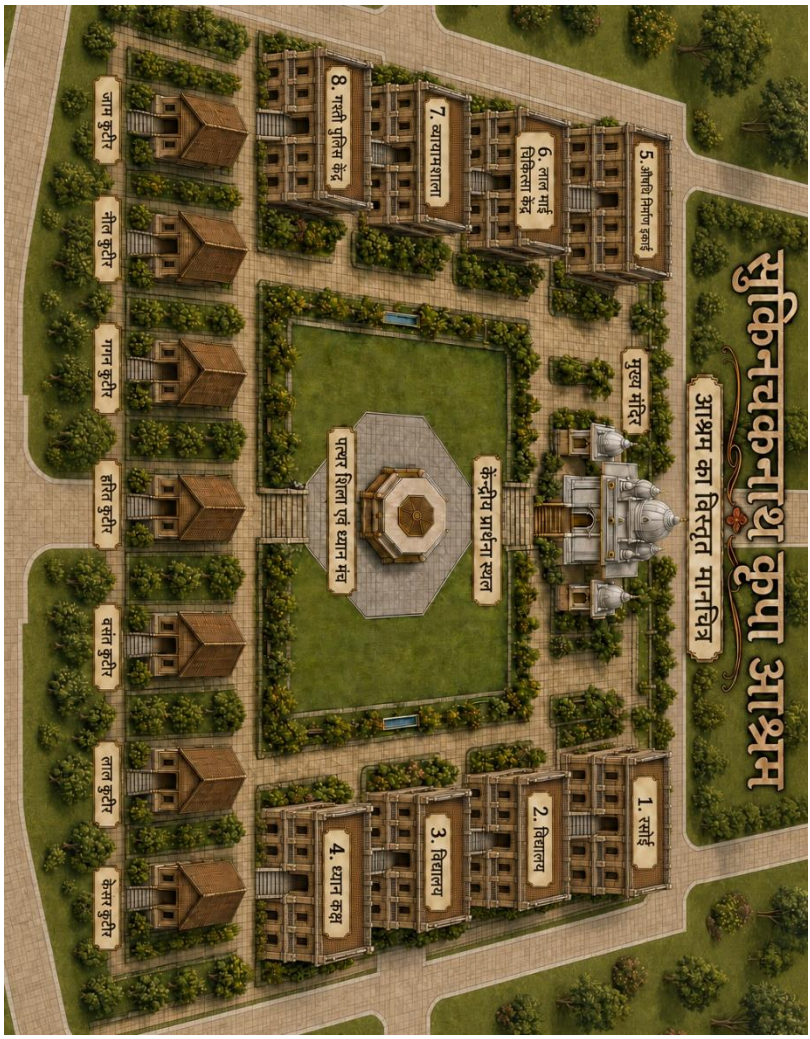
"मैं भी यही सोच रहा था। जितना इस जगह को समझेंगे, उतना ही आगे काम आएगा।" दोनों धीरे-धीरे आश्रम के मुख्य मार्ग की ओर बढ़ने लगे। सुबह की धूप घने साल और सागौन के वृक्षों के बीच से छनकर नीचे आ रही थी। पक्षियों का मधुर कलरव वातावरण को जीवंत बना रहा था। चलते-चलते दोनों ने पूरे परिसर को ध्यान से देखना शुरू किया।

लाल माई की देहरी परिसर मुख्यतः तीन बड़े भागों में विभाजित था-पहला था नीलकोठी, दूसरा उसके ठीक दायाँ तरफ बराबरी में बना हुआ था सुकिंचक कृपा आश्रम, और आश्रम के लेवल से 100-150 फीट नीचे ढलान पर आगे की तरफ बना हुआ था, श्रद्धालु भवन ।

नीलकोठी लगभग चार सौ वर्ष पुराना महल था, जिसे आधुनिक सुविधाओं जैसे बिजली, पानी और सुरक्षा व्यवस्था के साथ पुनर्निर्मित किया गया था। इसके विपरीत आश्रम , श्रद्धालु भवन और आश्रम के अन्य सहायक भवनों का निर्माण अभी हाल ही में हुआ था और उन्हें बने हुए दो वर्ष से अधिक समय नहीं हुआ था।"


लाल माई की देहरी
पूर्व
उत्तर
दक्षिण
पश्चिम
वन-द्वार
उद्यान
घना जंगल
सुकिनचकनाथ आश्रम
घना जंगल
नील कोठी
गौशाला
श्रद्धालु भवन
मुख्य प्रवेश-द्वार
घना जंगल
घना जंगल

आश्रम में एक विशाल गौशाला, आयुर्वेदिक औषधि केंद्र, व्यायामशाला, ज़ुम्बा केंद्र, बच्चों का विद्यालय, विशाल रसोईघर एवं भंडारगृह, जनरेटर कक्ष, सुरक्षा दल के लिए प्रहरी कक्ष (गार्ड रूम) तथा अन्य आवश्यक सहायक सुविधाएँ भी निर्मित थीं। गौशाला में दर्जनों देशी गायें बँधी थीं। औषधि केंद्र में जंगल से एकत्रित जड़ी-बूटियाँ सुखाई जा रही थीं। इनसे विभिन्न प्रकार की औषधियों का निर्माण किया जाता था, जिन्हें आश्रम में आने वाले रोगियों और श्रद्धालुओं को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराया जाता था।



आश्रम का रसोईघर अत्यंत विशाल, स्वच्छ और सुव्यवस्थित था। यहाँ आश्रम के निवासियों तथा आने वाले श्रद्धालुओं के लिए प्रतिदिन भोजन तैयार किया जाता था। इसी रसोईघर में श्री सुकिंचक जी के लिए नैवेद्य और भोग भी बनाया जाता था। पूजा संपन्न होने के पश्चात वही भोग महाप्रसाद के रूप में श्रद्धालुओं में वितरित किया जाता था। रसोईघर से लगा हुआ एक विशाल भंडारगृह था, जहाँ अनाज, घी, मसाले, दालें, कंद-मूल, फल तथा अन्य खाद्य सामग्री सुरक्षित रखी जाती थी।

आश्रम परिसर में कुल सात कुटियाएँ निर्मित थीं। प्रत्येक कुटिया का अपना अलग उद्देश्य और महत्व था। पहली कुटिया जाम्ब बाबा का कार्यालय थी, जिसे **'जाम गृह'** के नाम से जाना जाता था। आश्रम के प्रशासनिक कार्य, महत्वपूर्ण बैठकों और गोपनीय योजनाओं का संचालन यहीं से किया जाता था।

शेष छह कुटियाओं में आश्रम की साध्वियाँ निवास करती थीं और आश्रम के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करती थीं। इन कुटियाओं का विभाजन इस प्रकार था:

- **नील गृह**: आश्रम की प्रमुख मानव संसाधन अधिकारी, पीले मुखौटे वाली हरिणी देवी तथा उनकी सहायिकाओं का निवास। साध्वी निर्मला, साध्वी चारुलता और साध्वी कमला के साथ मिलकर, हरिणी देवी आश्रम के सभी व्यवसायों तथा वित्तीय खातों का संचालन और प्रबंधन भी करती हैं ।
- **गगन गृह**: डॉ. ईवा और उनके साथ कार्यरत नर्सों और चिकित्सा कर्मचारीका निवास। गगन गृह अन्य कुटियों से बड़ा था। उस कॉटेज में डॉ. ईवा समेत कुल 12 महिलाएँ रह रही थीं, जो 'लाल माई मेडिकल सर्विसेज़' के लिए काम करती थीं। अन्य रेजिडेंट्स में शामिल थे - जूनियर डॉक्टर्स वेरोनिका विची और डॉ. क्लाउडिया बेलुची (इटैलियन नागरिक), और लैबोरेटरी स्टाफ - इसाबेला और रोजा कॉर्टेज़ (स्पैनिश)। साथ ही, चार भारतीय मलयाली नर्सें और इंडोचाइना से 3 अन्य स्टाफ सदस्य भी शामिल थे।

- **हरित कुटिया**: वरिष्ठ साध्वी, लाल माई की उपप्रमुख **कलकुलता बरुआ** (वनस्पति-विज्ञानिक) तथा आश्रम की मुख्य रसोइया महारंध्वी खन्ना का निवास ।
- **वसंत गृह**, **केसर गृह** और **लाल गृह**: आश्रम की अन्य 18 साध्वियों के निवास हेतु निर्धारित थे।

इन सभी कुटियाओं का निर्माण एक समान स्थापत्य शैली में किया गया था। बाहर से वे साधारण और शांत दिखाई देती थीं, किंतु भीतर उनकी व्यवस्था अत्यंत सुव्यवस्थित, स्वच्छ और आवश्यक सुविधाओं से युक्त थी।

आश्रम से थोड़ी दूरी पर साधकों, सेवकों , और श्रद्धालुओं के लिए बने **श्रद्धालु भवन** में अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध थीं। **श्रद्धालु भवन** की तीन मंजिलों का निर्माण पूर्ण हो चुका था, जबकि उसे और ऊँचा बनाने के लिए ऊपर की अतिरिक्त मंजिलों का निर्माण कार्य प्रगति पर था। किंतु कोरोना महामारी और उसके दौरान लगे लॉकडाउन के कारण निर्माण कार्य बीच में ही रुक गया था।

समीर हर चीज़ को बड़े ध्यान से देख रहा था। "यह आश्रम... जितना बाहर से धार्मिक दिखाई देता है, उतना ही व्यवस्थित एक संस्था भी है।" आनंद ने कहा, "हाँ। और मुझे लगता है कि इसकी आमदनी भी बहुत ज़्यादा है। इतने बड़े परिसर और इतने लोगों का खर्च सामान्य दान से नहीं चल सकता।दोनों आगे बढ़ते रहे।

नीलकोठी स्वयं भूतल के अलावा तीन स्तरों वाली विशाल आयताकार इमारत थी। **नीलकोठी** भूतल पर 4 कक्ष, एक रसोईघर, विशाल भोजन कक्ष और एक समृद्ध पुस्तकालय था। यहीं विशेष अतिथियों को अस्थायी रूप से ठहराया जाता था, इसलिए सबसे अधिक गतिविधियाँ इसी मंजिल पर रहती थीं।

नीलकाठी – ब्लूप्रिंट
(भूमितल + 3 मंजिल) आवासीय संरचना

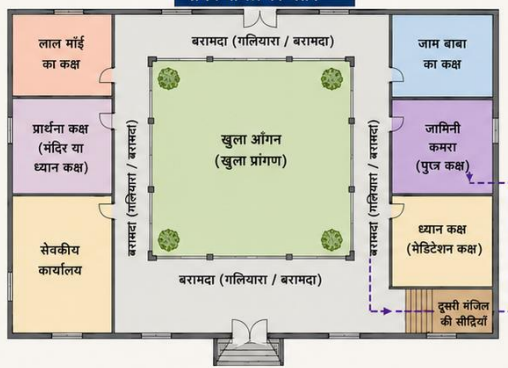
सारांश
- कुल क्षेत्रफल लगभग 7000 वर्गफूट
- आपातकाल संरचना
- केंद्रीय खुला आँगन
- बरामदे और गलियारे चारों ओर
- सुरक्षित प्रवेश द्वार और बाहरी पहुँच
- प्रत्येक मंजिल पर शौचालय
- कुल 3 मंजिलें + भूमितल
- आवासीय उपयोग (परिवार)

संकेत
- कक्ष
- गलियारा / बरामदा
- खुला आँगन
- सीढ़ियाँ
- गुप्त मार्ग
- आरक्षित क्षेत्र

भूमितल का प्लान



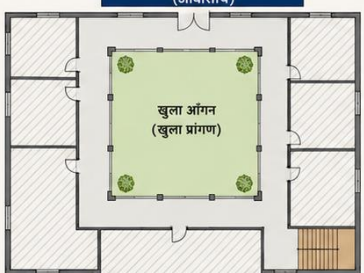
प्रथम मंजिल का प्लान



जामिनी कक्ष (पुत्र कक्ष)
- यह कक्ष बहुत गुप्त हैक प्रवेश मार्ग है।
- पुप मार्ग इस कक्ष से जाता है।
- यह कक्ष डन भैमियों के उपयोग हेतु है।

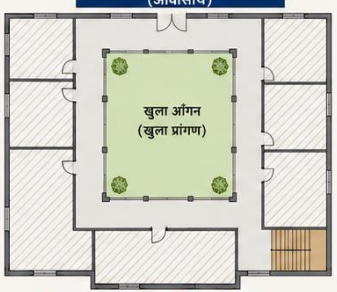
नोट
दूसरी और तीसरी मंजिल पर स्थित सभी कक्ष आपसी गलियारों से जुड़े हुए हैं।

द्वितीय मंजिल का प्लान (आवासीय)



कोई बाहरी प्रवेश नहीं - केवल आंतरिक गलियारों से पहुँच

तृतीय मंजिल का प्लान (आवासीय)



कोई बाहरी प्रवेश नहीं - केवल आंतरिक गलियारों से पहुँच

मुख्य अग्रभाग (संकेतात्मक)



मुख्य विशेषताएँ
- आपातकाल संरचना केंद्रीय खुले आँगन के साथ
- बरामदा (गलियारे) चारों ओर कक्षों को जोड़ता है
- भूमितल पर : मुख्य प्रवेश, भोजन कक्ष, रसोंई, पुस्तकालय
- प्रथम मंजिल पर : लाल माँई का कक्ष, जाम बाबा का कक्ष, प्रार्थना कक्ष, जामिनी कक्ष, सेवकीय कार्यालय, ध्यान कक्ष
- गुप्त मार्ग जामिनी कक्ष तक जाता है
- द्वितीय और तृतीय मंजिल : केवल आंतरिक गलियारों से पहुँच

पहली मंजिल पर लाल माई का निजी कक्ष, उनका व्यक्तिगत रसोईघर, महिला सेविकाओं के लिए एक डॉर्मिटरी, जाम्ब बाबा का कक्ष, एक रहस्यमयी **जामुनी कक्ष**, जिसका प्रवेशद्वार अत्यंत गुप्त रखा गया था, तथा एक ध्यान-कक्ष (मेडिटेशन रूम) स्थित था।

भवन की दूसरी और तीसरी मंजिल पर जाने की अनुमति किसी को भी नहीं थी। **नीलकोठी** में सामान्य साधकों, सेवकों अथवा श्रद्धालुओं का प्रवेश पूर्णतः निषिद्ध था। **नील कोठी** के सभी कक्ष सामान्य भवनों के कमरों की तुलना में कई गुना अधिक विशाल थे।

लगभग चार सौ वर्ष पुरानी इस ऐतिहासिक इमारत पर जब लाल माई का अधिकार हुआ, तब उन्होंने इसके प्रत्येक कक्ष का व्यापक जीर्णोद्धार कराया। बाहरी स्वरूप की प्राचीनता को यथावत रखते हुए भीतर की सभी सुविधाओं को आधुनिक और विलासपूर्ण बना दिया गया था।

लाल माई के निर्देशानुसार प्रत्येक कक्ष की दीवारों पर विशिष्ट चित्रकारी कराई गई थी और हर कमरे का एक निश्चित उद्देश्य निर्धारित था। सभी कक्ष अत्याधुनिक प्रकाश व्यवस्था, वातानुकूलन (ए.सी.), उच्च गुणवत्ता वाले पंखों, बहुमूल्य फर्नीचर, उत्कृष्ट साज-सज्जा तथा आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित थे। प्राचीन स्थापत्य और आधुनिक वैभव का यह अद्‌भुत संगम नील कोठी को आश्रम का सबसे रहस्यमय और प्रभावशाली भवन बना देता था।

लाल माई के आश्रम में कुछ देर टहलने के बाद वे दोनों आश्रम कार्यालय में **जाम्ब बाबा** से मिले। समीर और आनंद ने **जाम्ब बाबा** को प्रणाम किया और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। **जाम्ब बाबा** को उन दोनों का अपने कार्यालय में आना बिल्कुल पसंद नहीं आया। फिर भी उन्होंने शिष्टाचारवश दोनों का स्वागत किया। समीर के अनुरोध पर उन्होंने दोनों को कार्यालय में स्थित कंप्यूटर लैब में एक कंप्यूटर पर बैठा दिया। कुछ देर बाद समीर अपने कमरे से अपना लैपटॉप लेकर आया और कार्यालय के इंटरनेट से जुड़ गया। उसने अपने कार्यालय के सहकर्मियों से लैपटॉप पर बात करके छुट्टी के दौरान हुए काम का ब्यौरा लिया और

आगे की कार्ययोजना पर भी चर्चा की। थोड़ी ही देर में उसकी ऑनलाइन बैठकें शुरू हो गईं और वह अपने काम में व्यस्त हो गया। आनंद आश्रम के कंप्यूटर पर कुछ देर तक इंटरनेट पर जानकारी देखता रहा। फिर **जाम्ब बाबा** की असहजता और उनके चेहरे पर उभरते मौन क्रोध को भाँपकर उसने समीर को इसकी सूचना दी और नील कोठी की लाइब्रेरी की ओर चला गया।

उधर जब श्रेया की आँख खुली, तो उसने देखा कि लाल माई उसके बिस्तर के पास पद्मासन में बैठी थीं। उनकी आँखें बंद थीं और उनके होंठों पर किसी मंत्र का धीमा जप चल रहा था। श्रेया ने चौंककर उन्हें देखा और उठते हुए पूछा, "मम्मी... आप क्या बोल रही हैं?"

लाल माई ने तुरंत अपनी आँखें खोलीं और हल्की मुस्कान के साथ बोलीं, "कुछ नहीं, बेटी। मैं सुकिंचक जी के मंत्र का जप कर रही थी। हमारे नियम के अनुसार मुझे प्रतिदिन 1,313 बार इस मंत्र का जाप करना होता है।" श्रेया धीरे-धीरे उठकर बैठ गई। तभी सोना और चांदी, चाँदी की एक बड़ी ट्रॉली धकेलते हुए कमरे में आईं।

कुछ ही क्षणों में उन्होंने उसके सामने शाही नाश्ता सजा दिया। गर्मागर्म बेड टी, ताज़ा फलों का रस, ब्रेड-ऑमलेट, सनी साइड अप अंडे, मौसमी फल, आलू की सब्ज़ी और फूली हुई गरमागरम पूरियाँ सुव्यवस्थित ढंग से परोस दी गईं। दोनों सेविकाएँ हाथ जोड़कर उसके पास खड़ी हो गईं। श्रेया को ज़ोरों की भूख लगी हुई थी। उसने ब्रश करने का भी इंतज़ार नहीं किया और तुरंत नाश्ते पर टूट पड़ी। उसने पूछा, "मम्मी, समीर को देखा?"

लाल माई ने मुँह बनाते हुए कहा, "अरे, वह लड़का सुबह-सुबह जाम्ब के कार्यालय में अपना लैपटॉप खोलकर बैठ गया है। पता नहीं अंग्रेज़ी में क्या गिटपिट कर रहा है।" श्रेया ने कहा-"उनकी ऑफिस की मीटिंग होगी," । लाल माई बोलीं, "अगर यह झमेला रोज़ ही चलता रहा, तो आश्रम का काम आगे कैसे बढ़ेगा?"

श्रेया नाश्ता करते-करते ही बोली, "मम्मी, लाइब्रेरी में इंटरनेट लगवा दीजिए। वहीं बैठकर काम कर लिया करेंगे।" लाल माई बोलीं, "ठीक है,

बंदोबस्त कर देती हूँ। जाम्ब बाबा से कह देती हूँ। वह आज तुमसे मिलने भी आएगा।" श्रेया के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई। वह बोली, "हाँ, भैया को बुला दीजिए। मुझे भी उनसे बात करनी है। जब से बाबा बने हैं, मुझसे ठीक से बात ही नहीं करते।"

कुछ ही मिनटों में उसने भरपेट भोजन कर लिया। नाश्ता समाप्त होते ही वह जल्दी से बिस्तर से उतरी और वॉशरूम की ओर बढ़ने लगी। तभी लाल माई ने उसे आवाज़ दी, "रुको, बेटी।" उन्होंने मेज़ से एक छोटी, सीलबंद बोतल उठाकर उसकी ओर बढ़ाई।

"इसमें अपना मूत्र का नमूना देना, जाँच के लिए भेजना है।" फिर उन्होंने एक छोटा प्लास्टिक का डिब्बा भी उसे दिया। "और इसमें मल का नमूना देना। यह भी प्रयोगशाला में जाँच के लिए जाएगा।" श्रेया ने बोतल और डिब्बा हाथ में लिया। उसने ध्यान से देखा तो दोनों पर पहले से ही उसके नाम का लेबल चिपका हुआ था।

वह मन ही मन मुस्कुराई। "वाह... क्या बात है! यहाँ तो मेरी महारानी जैसी खातिरदारी हो रही है। माँ खुद मेरी हर छोटी-बड़ी ज़रूरत का ध्यान रख रही हैं।" उसी समय उसे ज़ोर से शौचालय जाने की आवश्यकता महसूस हुई। वह जल्दी-जल्दी बोतल और डिब्बा लेकर कमरे से जुड़े स्नानघर की ओर भागी और भीतर चली गई।

कुछ देर बाद श्रेया स्नानघर से बाहर निकली। उसके हाथ में जाँच के लिए मूत्र और मल के नमूने थे। कमरे में लौटते ही उसने देखा कि डॉ. ईवा पहले से वहाँ बैठी थीं। उनके साथ एक भारतीय नर्स भी मौजूद थी।

डॉ. ईवा ने श्रेया के हाथ में रखे नमूनों पर नज़र डाली और अंग्रेज़ी में पूछा, **"You seem to have some problem with your bowel movements?"** श्रेया ने भी अंग्रेज़ी में उत्तर दिया,**"Yes, Doctor. I've been a little constipated."** डॉ. ईवा ने नमूने को देखते हुए कहा, **"I can tell. The stool sample is quite small."**

श्रेया मुस्कुराई और हिंदी में बोली, "कब्ज़ हो गई है, डॉक्टर। नहीं तो पूरा डिब्बा भरकर देती अपना सैंपल!" यह कहते ही वह ज़ोर से हँस पड़ी।

उसकी बात सुनकर सोना और चांदी भी अपनी हँसी रोक नहीं पाईं। दोनों के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। लेकिन तभी लाल माई ने उन दोनों की ओर कठोर नज़रों से देखा। एक ही पल में उनकी हँसी थम गई। दोनों सेविकाएँ घबराकर सिर झुकाकर चुपचाप खड़ी हो गईं। डॉ. ईवा और नर्स ने दोनों नमूने सावधानी से अपने बैग में रखे और परीक्षण के लिए कमरे से बाहर चली गईं। उनके जाते ही श्रेया ने हल्के व्यंग्य और मुस्कान के साथ अपनी माँ की ओर देखा।

"क्या मम्मी... थोड़ा-बहुत मज़ाक भी नहीं कर सकते? हर समय इतना गंभीर रहने की क्या ज़रूरत है?" श्रेया का हँसी-मज़ाक अभी थमा ही था कि कमरे का दरवाज़ा खुला और अनिरुद्ध, जिसे आश्रम में सभी जाम्ब बाबा के नाम से जानते थे, अंदर प्रवेश कर गया। लाल माई ने स्थिति भाँपते हुए तुरंत ताली बजा कर आदेश दिया- "तुम लोग बाहर जाओ और दरवाज़ा बंद करके पहरा दो। जब तक मैं न बुलाऊँ, कोई अंदर नहीं आएगा।"

"जो आदेश, लाल माई।"सेविकाएँ बाहर निकल गईं और दरवाज़ा बंद कर दिया गया। कमरे में अब केवल लाल माई, श्रेया और जाम्ब बाबा रह गए। कुछ क्षण तक सन्नाटा छाया रहा। फिर जाम्ब बाबा ने व्यंग्य से मुस्कुराते हुए कहा, "तीन तिगाड़ा... काम बिगाड़ा।"श्रेया ने भौंहें सिकोड़ लीं। "क्या मतलब?" अनिरुद्ध कुर्सी पर बैठते हुए बोला, "मतलब... तू, समीर और सुनिधि। तीन लोगों का परिवार कभी सफल नहीं होता।"

श्रेया को उसका ताना बिल्कुल पसंद नहीं आया। बचपन से ही दोनों भाई-बहनों के बीच जबरदस्त प्रतिस्पर्धा रही थी। अनिरुद्ध हर बात में श्रेया की आलोचना करता, उसकी उपलब्धियों में कमी निकालता और उसे नीचा दिखाने का अवसर ढूँढ़ता रहता। धीरे-धीरे श्रेया ने भी अपने बड़े भाई अनिरुद्ध को अपना सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी मान लिया था और पढ़ाई, खेल तथा हर क्षेत्र में उससे आगे निकलने का संकल्प बना लिया था।

श्रेया ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "अनिरुद्ध, शायद तुझे पता नहीं... हमारी फैमिली का चौथा सदस्य आने वाला है।" अनिरुद्ध की नज़र उसके उभरे हुए पेट पर गई। वह हल्का-सा हँसा। "सब पता है। फिर भी तुम लोग

चार नहीं बन पाओगे।" उसका स्वर कठोर हो गया। "यह कैसी मुसीबत उठा लाई है तू? समीर... उसकी बेटी... और अब यह बच्चा। इन सबसे दूर रह, माँ का हाथ बँटा। इसी में तेरी भलाई है।" श्रेया का धैर्य टूट गया। "अनिरुद्ध! मेरे परिवार के बारे में एक शब्द भी और कहा न...।" अनिरुद्ध ने चुनौती दी- "तो क्या करेगी?" ।

"मुझे तेरे उस परिवार में कोई दिलचस्पी नहीं। दिन-रात तू माँ को अपने पति के कर्ज़, घर की परेशानियाँ और बाकी झंझटें मोबाइल पर सुनाकर उनका समय बर्बाद करती रहती है।" गुस्से से काँपती हुई श्रेया ने पास रखा फूलदान उठा लिया। "मैं तुझे..." इससे पहले कि वह फूलदान फेंकती, लाल माई तुरंत उठीं और धीरे से उसके हाथ से फूलदान ले लिया। उन्होंने श्रेया के कंधे पर हाथ रखा और शांत स्वर में कहा, "जंबा देवी... उन्हें जाम्ब बाबा कहो।"

फिर उनका चेहरा कठोर हो गया। उन्होंने बेटे की ओर देखकर आदेश दिया, "जाम्ब बाबा! मेरी जंबा देवी से सारी बात हो चुकी है। अब एक शब्द भी नहीं। आश्रम का प्रशासन संभालो, हिसाब-किताब देखो और अपने काम पर ध्यान दो।" अनिरुद्ध का चेहरा तमतमा उठा। उसे साफ महसूस हो रहा था कि लाल माई श्रेया को आश्रम की व्यवस्था में शामिल कर रही हैं। उसे यह अपने अधिकार और भविष्य की स्थिति के लिए खतरे जैसा लग रहा था। उसने धीमे लेकिन दबे हुए आक्रोश में कहा, "लेकिन माँ... आपने ही तो कहा था इसे समझाने के लिए।"

लाल माई ने बिना स्वर बदले उत्तर दिया, "समझाने का तुम्हारा तरीका गलत है। मेरी बेटी गर्भवती है। उसे तनाव देने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं। अब जाओ और अपना काम करो।" "और हाँ, नील कोठी की लाइब्रेरी में समीर के लिए इंटरनेट लगवाने की व्यवस्था कर दो।"

कुछ क्षण तक अनिरुद्ध चुप खड़ा रहा। फिर उसने दोनों हाथ जोड़कर झुकते हुए कहा, **"जो आज्ञा, लाल माई।"** वह मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया। दरवाज़ा बंद होते ही श्रेया का गुस्सा फूट पड़ा। **"माँ**! देखा आपने? कितना बुरा बोलता है वह!"

लाल माई ने गहरी साँस ली- "मैं भी उससे परेशान हूँ, बेटी। प्रशासन चलाने में वह कुशल है, लेकिन लोगों से व्यवहार करना उसके बस की बात नहीं।" कुछ पल रुककर उन्होंने धीरे से पूछा, "एक बात कहूँ? क्या तुम आज आश्रम में आने वाले विदेशी अतिथियों से मिल लोगी? तुम्हें अंग्रेज़ी अच्छी आती है और तुम्हारा व्यवहार भी मधुर है।"

इतना कहते हुए उन्होंने चाँदी का एक गिलास श्रेया की ओर बढ़ाया। "लो, पहले यह ठंडी लस्सी पी लो।" श्रेया ने एक घूँट लिया। गाढ़ी, मलाईदार लस्सी का स्वाद उसे बहुत अच्छा लगा। देखते ही देखते उसने पूरा गिलास खाली कर दिया। कुछ क्षण बाद उसने होंठ सिकोड़ते हुए कहा, "माँ... इसमें कुछ अलग-सा स्वाद है। क्या डाला है?" लाल माई मुस्कुरा दीं। "कुछ नहीं बेटा। शायद इलायची थोड़ी ज़्यादा पड़ गई होगी।"

श्रेया ने सिर पर हाथ रखा। उसे हल्का-सा चक्कर महसूस हुआ, फिर शरीर में एक अजीब-सी शांति और प्रसन्नता फैलने लगी। उसने मुस्कुराकर कहा, "ठीक है माँ... आप जो कहेंगी, मैं बिल्कुल वैसा ही करूँगी। लेकिन बदले में मुझे वीआईपी सेवा चाहिए।"

लाल माई हँस पड़ीं और बोलीं, "वह तो तुम्हें मिलेगी ही। आज से दो सेविकाएँ हर समय तुम्हारे साथ रहेंगी।" उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "सोना! चांदी!" दोनों सेविकाएँ तुरंत अंदर आ गईं। "जंबा देवी को स्नान कराकर तैयार करो। फिर इन्हें विदेशी श्रद्धालुओं की कक्षा में ले जाना।" दोनों ने हाथ जोड़कर एक स्वर में कहा, "जो आदेश, लाल माई।"

अध्याय 8

दूसरी मंजिल का रहस्य

एक दिन सुबह का नाश्ता करने के बाद समीर आनंद के साथ नील कोठी की लाइब्रेरी में अपने कार्यालय का काम करने चला गया। उधर, श्रेया अपने कमरे में गहरी नींद से जागी और बिस्तर पर बैठ गई। कुछ देर तक वह चुपचाप सोचती रही, फिर उसने सोना से पूछा, "सोना, तुम्हें पता है समीर साहब कहाँ गए हैं? सुबह से दिखाई ही नहीं दिए।" सोना ने विनम्रता से उत्तर दिया, "जम्बा देवी, साहब, आनंद भैया के साथ नील कोठी की लाइब्रेरी में गए हैं।"

यह सुनते ही श्रेया के मन में झुंझलाहट भर गई। वह मन ही मन सोचती है- "मैं यहाँ गर्भवती हूँ और वह मुझे छोड़कर बाहर घूम रहे हैं। छत्तीस साल के हो गए हैं, लेकिन आज भी कॉलेज के लड़कों की तरह दोस्तों के साथ मटरगश्ती करते हैं। यही नहीं, ऑफिस की छिछोरी औरतों के साथ लैपटॉप पर ऑनलाइन चैट में इधर-उधर की बातों में समय बर्बाद करते रहते हैं। इसी वजह से तीन साल से उनका कोई प्रमोशन नहीं हुआ। आने दो उन्हें... आज अच्छी तरह खबर लेती हूँ।"

हालाँकि उसने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। स्वयं को संयत करते हुए उसने मुस्कुराकर कहा, "सोना-चांदी, अब तुम अपने बारे में बताओ।" चांदी का चेहरा उदास हो गया, वह बोली- "मेरा नाम चांदनी मिश्रा है। लाल माई मुझे प्यार से '**चाँदी**' बुलाती है। मेरी शादी पास के एक गाँव में हुई थी। मेरा पति और ससुराल वाले दहेज के लिए मुझे बहुत मारते-पीटते थे। उन्होंने मुझे जान से मारने की भी कोशिश की। लगभग छह महीने पहले मैं किसी तरह जंगल के रास्ते भागकर लाल माई के दरबार पहुँच गई।

तब से मैं यहीं उनकी सेवा कर रही हूँ। उन्होंने मुझे शरण दी और नया जीवन दिया।" श्रेया कुछ क्षण मौन रही। फिर उसने सोना की ओर देखकर पूछा, "और तुम्हारी कहानी?" सोना ने धीमे स्वर में कहा, "जम्बा बहन, मेरा नाम सोनाली गोंड है, लाल माई मुझे प्यार से '**सोना**' बुलाती है | मेरे पति देहरी के लिए ट्रक चलाते थे। कुछ महीने पहले एक सड़क दुर्घटना में उनका देहांत हो गया। उसके बाद से, मैं भी लाल माई की देहरी पर आ गई। यहीं मुझे और मेरे बच्चों को सहारा मिला।"

वह हल्का-सा मुस्कुराई। "मेरा छोटा बेटा लाल माई की पाठशाला में पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है और बड़ा बेटा आश्रम में सेवक है। यहाँ हमें रहने, खाना-पीना, पढ़ाई-लिखाई, और सुरक्षा की कोई चिंता नहीं रहती।" श्रेया ने अपने व्यवसायिक अंदाज़ में अगला प्रश्न किया, "तुम दोनों को वेतन कितना मिलता है?"

सोना और चांदी ने एक-दूसरे की ओर देखा, फिर लगभग एक साथ बोलीं, "हमें कोई वेतन नहीं मिलता। रहने की जगह, भोजन, कपड़े और सुरक्षित जीवन मिल जाता है। बस वही हमारे लिए बहुत है।"

चांदी ने श्रद्धा से कहा, "लाल माई, जाम्ब बाबा, सुकिंचक भगवान और यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा करके हमें बहुत संतोष मिलता है।" श्रेया कुछ देर तक चुप रही। उसके भीतर का व्यवसायी मन तेजी से हिसाब लगाने लगा- "मम्मी ने मजबूर और बेसहारा लोगों के कंधों पर कितना बड़ा साम्राज्य खड़ा कर लिया है। लोग तन-मन से काम कर रहे हैं और बदले में केवल रहने-खाने की व्यवस्था पा रहे हैं।"

फिर उसके मन में दूसरा विचार आया। "खैर... मुझे इससे क्या? अब मैं भी इस आलीशान जीवन और इस पूरे साम्राज्य की हिस्सेदार बनने वाली हूँ।

21 मई, 2020, कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात | उस रात लाल माई सबको जामुन के रस से बना विशेष पेय बाँटने लगी। श्रेया के कमरे में आने के बाद उसने सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, "बेटा, हर महीने कृष्ण पक्ष की अमावस्या को हमारे आश्रम में सबको सुकिंचक नाथ बाबा का प्रिय पेय '**जाम्बुरस**' पिलाने की परंपरा है। यह शरीर के लिए लाभदायक होता है और इसमें उनकी कृपा होती है। इसे पी लो।"

यह कहकर वह देखने लगी कि सबने रस पिया या नहीं। समीर, जिसे जामुन से एलर्जी थी, वह रस नहीं पीता, लेकिन पीने का नाटक करता है। लाल माई फिर वहाँ से चली जाती है। देर रात तक समीर को नींद नहीं आती। वह पूरी कोठी में किसी डरावनी सत्ता के आगमन को महसूस करता है। उसने अपनी रेडियम वाली कलाई-घड़ी में समय देखा। रात के ढाई बज रहे थे, तारीख ***22 मई हो चुकी थी।***

बाहर रात के सन्नाटे में जंगल का माहौल कुछ असामान्य और अशांत लग रहा था। दूर कहीं सियारों के लगातार हुआँ-हुआँ करने की आवाजें गूँज रही थीं। पेड़ों पर बैठे उल्लू भी जैसे किसी अनदेखे भय से विचलित थे। वे खींचक-खींचक तथा हूफ-हूफ जैसी विचित्र आवाजें निकालते।

कमरे के भीतर एक छिपकली भी बेचैनी से आवाज कर रही थी। बाहर कहीं कुत्तों के रोने की आवाज सुनाई दे रही थी, और कभी-कभी बिल्लियों की तीखी चीख उस भयावह निस्तब्धता को चीर देती।

आश्रम की गौशाला में बँधी गायें भी सामान्य नहीं थीं। वे भयभीत होकर धीमी-धीमी आवाज में रंभा रही थीं, मानो उन्हें भी किसी ऐसी उपस्थिति का आभास हो गया हो जिसे मनुष्य की आँखें देख नहीं पा रही थीं। पूरा जंगल जैसे किसी अदृश्य चेतावनी से काँप रहा था।

जंगल के पशु-पक्षी शायद अपनी ही भाषा में एक-दूसरे को उस भयावह उपस्थिति का संकेत दे रहे थे। **देहरी** में जम्बू-रस पीकर बेसुध पड़े मनुष्यों के बीच एक ऐसी सत्ता प्रवेश कर चुकी थी, जिसकी मौजूदगी को इंसान की इंद्रियाँ भले ही महसूस न कर पा रही हों, लेकिन जंगल के जीव बहुत पहले पहचान चुके थे।

मानो पूरी प्रकृति एक ही बात कह रही थी...**कुछ आ चुका था।** समीर चुपके से उठता है और अपने साथ एक टॉर्च लेकर कमरे से बाहर निकल जाता है। वह सुनिधि के कमरे में झाँककर देखता है। सुनिधि अपनी सहेलि सलोनी और सुकेशिनी के साथ सुरक्षित सो रही होती है। सोना, चांदी और अन्य सेविकाएँ भी अपनी डॉर्मिटरी में सो रही होती हैं। पूरे परिसर में सन्नाटा पसरा होता है।

समीर दूसरी मंजिल की ओर बढ़ जाता है। वहाँ के गेट का ताला खुला था। वह ऊपर जाता है। पूरी दूसरी मंजिल में अंधेरा फैला था। केवल एक कमरे के दरवाज़े के नीचे से रोशनी आ रही थी। वह कमरा लाल माई के कमरे के ठीक ऊपर वाला कमरा था।

समीर उस दरवाज़े की ओर बढ़ता है तो उसे अंदर से लाल माई की हँसी और ठिठोली की आवाज़ सुनाई देती है। वह टॉर्च की रोशनी में दरवाज़े को ध्यान से देखता है। दरवाज़ा बहुत पुराना था, उसपर लिखा हुआ था '**नीलांजन कक्ष**'**।** उसके ऊपरी हिस्से में एक छोटा सा छेद बना हुआ था। समीर वहीं रखी एक पुरानी कुर्सी उठाता है, उस पर चढ़ता है और उस छेद से अंदर झाँककर देखता है।

अंदर एक शानदार कमरा था, जिसमें हर सुख सुविधा का सामान रखा था। लेकिन वो केवल लालटेन की धीमी रोशनी से प्रकाशित था । अंदर, लाल माई बिस्तर पर एक लम्बे कद काठी वाले व्यक्ति के सामने निर्वस्त्र बैठी थी। लाल माई का चेहरा दरवाजे की तरफ और उस व्यक्ति का चेहरा दूसरी ओर था, इसलिए समीर उसे पहचान नहीं पाया ।

लाल माई जवान और सुंदर दिखाई दे रही थी, मानो कि उसने अपना रूप बदल लिया हो। उसके चेहरे पर एक कामुक मुस्कान थी। वह अपनी जांघों के बीच सहला रही थी और कामुक सिसकियाँ ले रही थी।

कुछ देर बाद लाल माई बिस्तर से उठती है और पत्थर की मेज़ पर रखे हुए एक मिट्टी के छोटे से मटके में रक्खा खून जैसा लाल द्रव्य दो काँच के गिलासों में डालती है । हाँ, शायद वह खून ही था।

उसने उस आदमी को खून से भरा हुआ एक गिलास दिया और खुद दूसरे गिलास से खून पीने लगी।। दोनों उतावले होकर चार-पाँच गिलास खून पी गए। अचानक उस व्यक्ति की काया में परिवर्तन आया और वह एक दानव जैसा दिखाई देने लगा।



फिर लाल माई बोली, "तुम कितनी भी औरतों के साथ अय्याशी कर लो, **पेटवा राजा**, तुम्हारी पटरानी मैं ही रहूँगी।" वह दानव हँस पड़ा। "तू मेरी पटरानी है, लाल डायन। लेकिन तुझे मेरी सेवा में हाज़िरी देनी होगी।"

लाल माई बोली, "जान माँगोगे सरकार, तो वह भी दे दूँगी। यह बदन क्या चीज़ है।" दानव बोला, "तेरी जान नहीं, मुझे बलि चाहिए... और एक नए आदमी का शरीर, जिसमें मैं निवास कर सकूँ।" लाल माई बोली, "मैंने नया आदमी चुन लिया है।" दानव बोला, "मुझे पता है।" दोनों एक साथ हँसे और बोले, "**समीर**!" फिर दोनों एक साथ दरवाज़े की ओर देखने लगे, दोनों के चेहरे यकायक बेहद डरवाने हो गए थे। यह सुनते ही समीर डर के मारे अपना संतुलन खो बैठा और कुर्सी से नीचे गिर गया।

वह उठकर पूरी ताकत से नीचे की ओर भागा। लाल माई ने झटके से दरवाज़ा खोला और लपककर गलियारे की छत पर अपने दोनों हाथों और

दोनों पैरों के सहारे चिपक गई, फिर वह छिपकली की तरह बिजली की-सी फुर्ती के साथ समीर की ओर लपकी। पल भर में वह समीर से आगे निकल गई, गैलरी की छत से धम की आवाज़ के साथ नीचे कूदी और समीर के सामने आकर तनकर खड़ी हो गई।

समीर ज़ोर से चिल्लाया, "**बचाओ... बचाओ... लाल डायन**!" चिल्लाते ही पूरा गलियारा उसकी आवाज़ से गूंज उठा। लेकिन उसकी आवाज़ किसी के कानों तक नहीं पहुँची। उस रात मायावी जाम्बुरस के प्रभाव में **देहरी** के सभी निवासी, साधक, सेवक और श्रद्धालु गहरी, बेसुध नींद में डूबे हुए थे। मानो पूरे आश्रम पर किसी अदृश्य तांत्रिक निद्रा का आवरण छा गया हो।

लाल माई का चेहरा अब किसी मनुष्य का नहीं रहा था। उसकी आंखें अंगारों की तरह दहक रही थीं। बाल हवा में सांपों की तरह फड़फड़ा रहे थे और उसके होंठों के कोनों से दो लंबे नुकीले दांत बाहर झांक रहे थे। उसकी गर्दन में बंधी हड्डियों की माला आपस में टकराकर खड़खड़ाहट पैदा कर रही थी।

समीर ने काँपती हुई आवाज़ में कहा, "ला... लाल डायन.. ओह... मिसेज दत्ता... नहीं... लाल माई... मुझे बख्श दीजिए। मैं आपके और उस आदमी के बारे में किसी को कुछ नहीं बताऊँगा। कृपा करके मुझे और मेरे परिवार को छोड़ दीजिये छोड़ दीजिए..."

लाल माई विकृत मुस्कान के साथ बोली, "तेरे शरीर को पाने की लालसा तो मेरे भीतर उसी दिन जाग उठी थी, जब तीन वर्ष पहले मैंने तुझे श्रेया के साथ सुहागरात मनाते देखा था। जब पेटवा तेरे शरीर में वास करेगा, तब मुझे तेरे शरीर का सुख भी मिलेगा और उसकी अपार शक्ति भी मेरी हो जाएगी।"

लाल माई ने एक हाथ से समीर का गला कसकर पकड़ लिया और दूसरे हाथ की बर्फ जैसी ठंडी उंगलियां समीर की ठुड्डी पर रखीं और उसकी आंखों में आंखें डालकर धीमे स्वर में बोली, "तुम्हारा भाग्य इस देहरी से बंध

चुका है। तुम्हारे भीतर वही शक्ति है जिसकी प्रतीक्षा वर्षों से की जा रही है।"

समीर ने पूरी ताकत से स्वयं को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन उसका शरीर मानो पत्थर बन गया था। वह केवल अपनी आंखें घुमा सकता था। लाल माई की मुस्कान और भयावह हो गई। "भागोगे कहाँ, समीर? **लाल माई की देहरी** में जो एक बार चुना जाता है, उसका पीछा मुझसे मृत्यु भी नहीं छुड़ा सकती।" उसने समीर का गला ज़ोर से दबा दिया और अपने नुकीले नाखून उसकी गर्दन में चुभो दिए। समीर वहीं फर्श पर बेहोश गिर पड़ा। उसका पूरा शरीर कांप रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसने जो देखा, वह एक दुःस्वप्न था... या फिर सच !

लाल माई फ़र्श पर बेहोश पड़े समीर को बालों से पकड़कर घसीटते हुए नीलांजन कक्ष में ले गई और दरवाज़ा अंदर से बंद करके साँकल चढ़ा दी।

उधर, पीले मुखौटे वाली हरिणी नीलकोठी के नीचे बनाए गए तहखाने की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर की ओर जा रही थी। वहां एक दरवाजा जा था जो नीलकोठी के ठीक पीछे वाले बागीचे में खुलता था।

हरिणी को तहखाने से निकलकर, पीछे वाले बागीचे और पास के गौशाला से गुज़रते हुए आश्रम मंडप तक पहुँचना था और फिर वहां से अपने कमरे में चली जाती थी। जाम्ब बाबा अक्सर रात के वक्त हरिणी को विशेष और गुप्ता चर्चाओं के लिए नील कोठी के नीचे बने बनाए गए गुप्त तहखाने के एक विशेष कमरे में बुलाता था। उन बैठकों को पूरा करने का बाद, हरिणी को इसी रास्ते से वापस अपने कमरे में सोने/आराम के लिए जाने की आज्ञा थी।

ऊपर निकास वाले दरवाजे को खोलकर वो बाहर निकलती है फिर उसे अच्छी तरह से बंद करके अपने आप से बड़बड़ाती- "ये जाम्ब बाबा दिनभर भरपुर काम लेता है और रात को भी परेशान करता है...पता नहीं यहां से मुक्ति कब मिलेगी। "

फिर वह दाईं ओर मुड़ी और तेजी से आश्रम की ओर बढ़ने लगी, ये वही वक़्त था जब लाल डायन ने दूसरी मंजिल पर समीर को पकड़ लिया था।अचानक उसे समीर की तेज़ चीख सुनाई दी – "**बचाओ... बचाओ... लाल डायन**" और वह ठिठक कर एकदम रुक गई। "आधी रात को समीर क्यों चीख रहा है? वह किस मुसीबत में फँस गया है?"

उसने सावधानी से पीछे मुड़कर ऊपर की ओर देखा। लाल माई का कमरा पूरी तरह अंधकार में डूबा हुआ था। हालाँकि, लाल माई के कमरे के ठीक ऊपर वाले कमरे '**नीलांजन कक्ष**' की खुली खिड़की से हरिणी को एक भयानक, दानवी परछाईं दिखाई दी। वह परछाईं खिड़की से बाहर निकली और उड़ते हुए जंगल की ओर चली गई, फिर अंधेरे में गायब हो गई।

लालटेन की मंद रोशनी में उसने वास्तव में क्या देखा था, इसे लेकर वह निश्चित नहीं थी, लेकिन इतना स्पष्ट था कि वह कोई इंसान नहीं था। हरिणी दौड़कर गौशाला की ओर गई और वहाँ जाकर छिप गई। वह गायों के बीच फैले भय और बेचैनी को महसूस कर सकती थी। वे धीमी आवाज़ में रंभा रही थीं। तभी उसे नील कोठी की परिधि के बाहर स्थित जंगल की ओर से कुछ आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

हरिणी चुपके से गौशाला के बाहर निकली और उसने देखा कि नील कोठी के पीछे वाले बागीचे का **लोहे का गेट**, जो जंगल में खुलता था और हमेशा बंद रहता था, आज खुला हुआ था। वह धीरे से गेट के पास पहुँची और बाहर झाँककर देखने लगी, सामने एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे एक गड्ढा बना हुआ था। उसके चारो तरफ पत्थर का घेरा बना था।

रोशनी के लिए दो मशालें लगायी गयीं थी, उस गड्ढे से भयानक बदबू आ रही थी। शायद उसमें कचरा डाला जाता होगा। मशालों की रोशनी में कलकुलता और महारांध्वी, एक रेहड़ी के ऊपर से सर कटी लाशों को गड्ढे में फेंक रही थी | ये दृश्य देखकर हरिणी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, उसे उलटी और चक्कर आने लगता है लेकिन वो अपने को संभाल लेती है।

कलकुलता महारांध्वी से कह रही थी, "उफ़्फ़ बहन ! इन कचरों को ठिकाने लगाते-लगाते मैं तंग आ गई हूँ। आखिर हम दोनों कब तक यह काम करते रहेंगे?" महारांध्वी ने उत्तर दिया, "जब हमें भी लाल माई के जैसी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाएँगी, तब वह हमें 'सहयोगिनियाँ' बना देंगी। उसके बाद हमारे अपने सेवक होंगे।"

कलकुलता बोली, "मैं उस हरिणी को अपनी दासी बनाऊँगी। मुझे वह बिल्कुल पसंद नहीं है। हमेशा अपनी बेवकूफी भरी फाइलें लेकर इधर-उधर घूमती रहती है और ऐसे दिखाती है जैसे वही यहाँ की सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो। पता नहीं उसने जाम्ब बाबा पर कौन-सा जादू कर रखा है। वह हमेशा उसकी बात सुनते रहते हैं। मैं उसका चेहरा देखना चाहती हूँ। उस मुखौटे के पीछे वह आखिर क्या छिपा रही है?"

हरिणी ने मन ही मन सोचा, "मैं मुखौटा पहनूँ या न पहनूँ, लोगों को हमेशा मुझसे ही परेशानी क्यों रहती है?" "सावधान, बहन," महारांध्वी ने कलकुलता को चेतावनी दी। "चलो, अपना काम खत्म करो और तुरंत यहाँ से निकलो। वह राक्षस जल्द ही इन अवशेषों को खाने के लिए आने वाला है।" दोनों ने मानव अवशेष वहाँ फेंक दिया और तेजी से नील कोठी के परिसर के भीतर चली आईं। बगीचे में गेट को बंद करके एक लोहे की भारी सी जंजीर से बांधकर उस पर ताला लगा दिया।इसके बाद अपने कक्ष की ओर जाने लगी।

हरिणी, जो लगभग पकड़ी ही जाने वाली थी, पास की एक झाड़ी के पीछे छिप गई, कलकुलता और महारांध्वी के वहाँ से चले जाने के बाद उसने फाटक के भीतर से जंगल की ओर देखा।

धप... धप... धप...शुकासुर वहाँ पहुँच चुका था। उसने उन अवशेषों पर लालच से झपट्टा मारा और उन्हें खाने लगा। हरिणी यह देखकर भय से सिहर उठी। उसे अब पता चल चुका था कि वे कोई साधारण कचरा या अवशेष नहीं थे, बल्कि...वे इंसानों की लाशें थीं।

जब शुकासुर ज़बरदस्त ताकत के साथ खोपड़ियाँ तोड़ रहा था और लाशें को निगलने से पहले अपने जबड़ों में हड्डियाँ चबा रहा था, तब हरिणी ने तय किया कि आगे से वह रात के कामों के लिए कभी भी नीलकोठी के पिछले हिस्से का इस्तेमाल नहीं करेगी। वह एक अलग रास्ते का इस्तेमाल करेगी जिसके बारे में सिर्फ़ उसे ही पता है।

शुकासुर को उन अवशेषों को खाते हुए देखकर हरिणी मन ही मन सोचने लगी, **"कहीं यह दानवी सूअर मुझे देख न ले! अगर इसने गेट तोड़कर अंदर प्रवेश कर लिया तो?"**

वह डरकर फिर से गौशाला में छिप गई और शुकासुर के खाने की आवाज़ सुनती रही। "अब मैं सुबह होने से पहले गौशाला के बाहर नहीं निकलूँगी।" हरिणी ने गौशाला में बैठे-बैठे यह अनुमान लगाया कि जिस शुकासुर को उसने देखा, वह हजारों साल पुराना कोई दानव नहीं, बल्कि असाधारण आकार का एक जंगली सूअर है, जिसे लाल माई ने अपने नियंत्रण में रखा हुआ है। शायद ऐसे और भी सूअर होंगे, जिनका काम, लाल माई के शिकार लोगों को खाकर गायब कर देना होगा।

कुछ देर बाद, जैसे ही सुबह की पहली रोशनी दिखाई दी, वह गौशाला से बाहर निकली, उसने नील कोठी के पिछवाड़े वाले फाटक के बाहर झाँककर देखा और सुनिश्चित किया कि शुकासुर वहाँ अब नहीं था।

जब उसे शुकासुर कहीं दिखाई नहीं दिया, तो उसने मन ही मन सोचा, **"दूसरी मंजिल पर आखिर क्या है? मुझे यह पता लगाना ही होगा।"**

वह चुपचाप दबे पाँव नील कोठी के पीछे पहुँची और दूसरी मंजिल पर स्थित **नीलांजन कक्ष** कमरे के ठीक नीचे जाकर खड़ी हो गई। फिर उसने ऊपर की ओर देखा।

खिड़की के पास, उसे यूरोपीय मूल का एक लंबी कद-काठी वाला व्यक्ति दिखाई दिया। वह खुली खिड़की के पास खड़ा होकर एकटक घने जंगल की ओर देख रहा था। अंधेरा अभी पूरी तरह छँटा नहीं था, इसलिए हरिणी उसे ठीक से देख और पहचान नहीं पा रही थी।

उसने मन ही मन सोचा, "कहीं यह व्यक्ति जोनाथन तो नहीं? लेकिन जाम्ब बाबा ने तो उसे मेरी ही आँखों के सामने मार दिया था। कद-काठी से तो यह व्यक्ति जोनाथन लगता है, लेकिन चेहरा बहुत विचित्र दिखाई दे रहा है। इसका शरीर और हाव-भाव किसी ज़ॉम्बी जैसे लग रहे हैं। "

तभी उसके ठीक नीचे वाले **लाल माई** के कमरे की खिड़की खुलने की आवाज़ आई। **"लाल माई!"** हरिणी घबरा गई। **"वह अपने कमरे में है!"** वह तुरंत भागकर उसी झाड़ी के पीछे छिप गई, जिसके पीछे वह पिछली रात कलकुलता और महारांध्वी से बचने के लिए छिपी थी।

लाल माई ने अपनी खिड़की से बाहर झाँककर नील कोठी के पिछवाड़े का निरीक्षण किया। जब उसे वहाँ कुछ भी संदिग्ध दिखाई नहीं दिया, तो उसने खिड़की बंद कर दी। हरिणी ने राहत की साँस ली।

"बाल-बाल बच गई... नहीं तो आज मेरी जान चली जाती। जिसने भी दूसरी और तीसरी मंजिल का राज़ जानने की कोशिश की है, वह मारा गया है। कल न जाने समीर के साथ क्या हुआ था... वह रात में इतनी ज़ोर से क्यों चिल्लाया था? क्या मेरे अलावा उसकी आवाज़ किसी और ने भी सुनी थी? **नीलांजन कक्ष** में रहने वाला व्यक्ति कौन है? क्या आनंद, समीर और जोनाथन को बचाने में मेरी मदद करेगा? अब मुझे यहाँ और नहीं रुकना चाहिए..."

इन्हीं विचारों में डूबी हरिणी चुपचाप वहाँ से निकली और अपने कमरे में लौट गई।

---

22 मई , 2020, सुबह के ग्यारह बज रहे थे, श्रेया की आँख देर से खुली। उसने अपने पेट की ओर देखा। उसे भीतर कुछ हलचल महसूस हुई। वह खुशी से चहक उठी-"समीर, ज़रा देखो तो!" फिर वह समीर की ओर पलटी। समीर गहरी नींद में सो रहा था। उसने प्यार से उसके चेहरे को छुआ और दंग रह गई। समीर को बहुत तेज़ बुखार था।

वह हड़बड़ाते हुए चीखी, "सोना! चांदी! जल्दी आओ, यहाँ देखो तो तुम्हारे समीर भैया को क्या हो गया!" सोना और चांदी, जो सुबह जल्दी उठकर श्रेया और समीर के कमरे के बाहर अपनी ड्यूटी पर बैठ गई थीं, भागती हुई अंदर आईं। श्रेया घबराकर बोली, "इन्हें बहुत तेज़ बुखार है। मम्मी को फ़ौरन बुलाओ।" कुछ ही देर बाद लाल माई कमरे में आ गईं। वह पहले की ही तरह दिख रही थीं, शांत, संयम से भरी एक साध्वी। उन्होंने कुछ देर तक समीर की जाँच की, फिर गंभीर स्वर में बोलीं, "यह बेहोश है। इसे हवा लग गई है।" श्रेया सकपकाकर बोली, "कैसी हवा, मम्मी?" लाल माई बोलीं, "कोरोना की हवा।"

श्रेया ने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। हम तो यहाँ बिल्कुल स्वस्थ आए थे।" लाल माई ने पास रखे जाम्बुरस के गिलास की ओर इशारा करते हुए कहा, "मुझे पता था, समीर ने जाम्बुरस नहीं पिया। देखा, क्या हश्र हुआ।

इसीलिए मैं सबसे लगातार कहती हूँ, " सुकिंचक नाथ भगवान की शरण में आ जाओ। उनकी भक्ति में लीन होकर जाम्बु रस और लस्सी का भोग ग्रहण करो। कुछ गलत नहीं होगा, कोरोना की हवा कभी नहीं लगेगी।"

उफ़! ये शहर के लड़के गाँव के हर रिवाज़ को अंधविश्वास मानते हैं। समीर, वह पावन पेय पी लेता तो बाकी लोगों की तरह स्वस्थ रहता। " श्रेया बिफर पड़ी और चिल्लाई, "वो सब छोड़ो, मम्मी! डॉक्टर ईवा को बुलाओ। समीर का इलाज करवाओ।" फिर धीमे स्वर में बड़बड़ाई, "उसे कुछ नहीं होना चाहिए..."

इतना कहते ही वह रोने लगी। लाल माई ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "तू चुप हो जा, बेटी। मैं सब ठीक कर दूँगी। भगवान सुकिंचक नाथ का आशीर्वाद मेरे साथ है। मैं अभी डॉक्टर ईवा को बुलवाती हूँ।" लाल माई ने ताली बजाकर आदेश दिया, "सोना, जाओ, जाकर डॉक्टर ईवा को बुला लाओ।" फिर उन्होंने चांदी की ओर देखकर कहा, "चांदी, तुम जाकर ठंडा पानी और दो-चार साफ़ कपड़े ले आओ। समीर के माथे पर ठंडी पट्टी रखनी है।"

थोड़ी देर तक सिसकने के बाद श्रेया ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा, "मम्मी... पापा कहाँ हैं? मुझे यहाँ आए डेढ़ महीना हो गया है, लेकिन पापा एक बार भी नहीं दिखे।" लाल माई के शांत चेहरे के भाव एक पल के लिए बदल गए। उन्होंने स्वयं को संभालते हुए कहा, "वो नेपाल गए हैं, हमारे आश्रम और भगवान सुकिंचक नाथ का प्रचार करने। लॉकडाउन की वजह से वहीं फँस गए।

उनके साथ गुरु भाई कुंदन, और सुकेशिनी का पति ड्राइवर शिव प्रसाद भी नेपाल गये हैं। वे लोग अभी वहाँ सुरक्षित हैं। तू चिंता मत कर, बेटी।" श्रेया बोली, "मम्मी, कम से कम फोन पर बात तो करवा दो।" लाल माई बोलीं, "अरे, वे नेपाल की पहाड़ियों के दूर-दराज़ के गाँवों में चले गए हैं। वहाँ नेटवर्क ठीक से नहीं आता। अगली दफ़ा उनका फोन आएगा, तो तेरी बात ज़रूर करवा दूँगी। अभी तू समीर को देख।"

दोनों इसी विषय पर चर्चा कर ही रहे थे कि तभी कमरे का दरवाज़ा धीरे से खुला।अंदर जर्मन डॉक्टर ईवा दाखिल हुईं। उनके चेहरे पर मास्क लगा हुआ था और हाथों में चिकित्सकीय दस्ताने थे। उन्होंने अंग्रेज़ी में कहा, **"Good morning Laal Mai, Shreya. What happened?"** फिर टूटी-फूटी हिंदी में बोलीं, "सॉरी... मैं देर से आई। सुबह से बहुत सारे बीमार लोगों को देख रही हूँ।" उन्होंने गंभीर स्वर में आगे कहा, "मुझे लगता है... कोरोना यहाँ भी फैलने लगा है।" डॉ. ईवा ने कुछ देर तक समीर की सावधानीपूर्वक जाँच की। उन्होंने उसका तापमान मापा, ऑक्सीजन स्तर देखा और स्टेथोस्कोप से उसकी साँसों की जाँच की। जाँच पूरी होने के बाद उनके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए।

उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, "इनको बहुत तेज़ बुखार है। मुझे शक है कि इन्हें कोरोना संक्रमण हो सकता है।"फिर उन्होंने लाल माई की ओर देखते हुए कहा, "मैंने आज जितने भी सामान्य मरीज थे, उन सबको उनके घर वापस भेज दिया है।"

उन्होंने आगे बताया, "जो विशेष अतिथि ' **देहरी** ' में ठहरे हुए हैं, उनमें से जो भी गंभीर रूप से बीमार हैं, उन्हें **भारत सरकार के दिशा-निर्देशों** के

अनुसार शहर में बनाए गए अस्थायी आइसोलेशन अस्पताल में रखना होगा।" इसके बाद उन्होंने अंग्रेज़ी में कहा, **"You know... to stop the spread of the disease."** श्रेया ने चिंता से पूछा, "लेकिन क्या यह ज़रूरी है? समीर तो परिवार के सदस्य हैं।"

डॉ. ईवा ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, "I cannot ignore the Government guidelines."फिर उन्होंने समझाया, "किसी ने आश्रम में होने वाले, साप्ताहिक धार्मिक-अनुष्ठानों और दरबार की सूचना पुलिस को दे दी थी। उन्होंने आगे कहा, "पुलिस का स्पष्ट निर्देश है कि जिन लोगों में कोरोना के लक्षण हैं, उन्हें शहर के आइसोलेशन केंद्र में रखा जाए, ताकि संक्रमण आगे न फैले।

फिर उन्होंने समीर की ओर देखा और शांत लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, "चौदह दिनों के लिए आइसोलेशन केंद्र में रखा जाएगा, दवाई पानी और खास कोरोना प्रशिक्षित मेडिकल स्टाफ के तहत देखभल बहुत जरूरी है। आइसोलेशन अस्पताल में जाना बहुत ज़रूरी है। यहाँ जंगल में कोरोना विशिष्ट देखभाल उपलब्ध नहीं है। कृपया उसे सिटी अस्पताल भेजें-चाहे रायपुर वाले में या पास के नारायणपुर-ओरछा वाले में, जो ठीक लगे।

तभी दरवाज़े पर तेज़ दस्तक हुई। अगले ही क्षण दो पुलिसकर्मी और सरकारी मेडिकल स्टाफ के सदस्य मास्क और सुरक्षा किट पहने कमरे के भीतर आए। उनमें से एक ने औपचारिक स्वर में कहा," लाल माई, सरकारी आदेश है।

आपकी देहरी के कोरोना-ग्रस्त मेहमानों को तत्काल शहर में स्थित आइसोलेशन केंद्र ले जाना होगा।" दोनों पुलिसकर्मियों ने समीर को सहारा देकर कमरे से बाहर निकाला। हवेली के मुख्य द्वार के बाहर एक एम्बुलेंस पहले से खड़ी थी। समीर को स्ट्रेचर पर लिटाकर एम्बुलेंस में रखा गया और कुछ ही क्षणों में सायरन की हल्की आवाज़ के साथ वह आइसोलेशन केंद्र की ओर रवाना हो गई। डॉ. ईवा भी आवश्यक निर्देश देकर अपने कक्ष में लौट गईं। पूरा आश्रम धीरे-धीरे फिर से शांत हो गया।

श्रेया बिस्तर से उठी और लाल माई के पास आकर चिंता से रोते हुए बोली, "मम्मी... समीर ठीक हो जाएगा ना?" लाल माई ने उसे अपने गले से लगा लिया। श्रेया ने आँखें बंद कर लीं और फूट-फूटकर रोने लगी। श्रेया की पीठ सहलाते हुए लाल माई के चेहरे पर एक विकट मुस्कान फैल गई। उन्होंने उसे पुचकारते हुए कहा, "चिंता मत कर, अब सब ठीक हो जाएगा।" उनके शब्द मानो श्रेया के लिए नहीं, बल्कि स्वयं अपने आप से कही गई बात थी।

जब आनंद को समीर के बुखार का पता चला, तो वह बहुत परेशान हो गया। वह श्रेया और सुनिधि से मिलना चाहता था, लेकिन कोरोना की जाँच के नाम पर **ज्ञान सुंदर** उसे डॉक्टर ईवा के पास श्रद्धालुओं की लंबी कतार में ले गया। आश्रम में एक अस्थायी शिविर लगाया गया था। पुलिस की देखरेख में सभी श्रद्धालुओं की कोरोना जाँच हो रही थी। रात को मौका मिलते ही आनंद सबसे पहले श्रेया के कमरे में गया। वहाँ सोना और चांदी ने उसे श्रेया से मिलने नहीं दिया। उन्होंने कहा, "श्रेया की सदमे से हालत बिगड़ गई थी। वह आराम कर रही हैं।"

अपने कमरे में जाने से पहले उसने सुनिधि के कमरे में झाँककर देखा। अंदर का दृश्य देखकर वह ठिठक गया। सुनिधि नींद में ही बिस्तर पर उठकर बैठी हुई थी। उसकी आँखें पूरी तरह बंद थीं, लेकिन उसका शरीर धीरे-धीरे आगे-पीछे झूल रहा था, मानो वह किसी अदृश्य उपस्थिति से बातचीत कर रही हो। दूसरी ओर सुकेशिनी अपनी बेटी सलोनी को कसकर सीने से लगाए भयभीत नज़रों से सुनिधि को देख रही थी। उसके चेहरे पर डर साफ़ दिखाई दे रहा था।

तभी सुनिधि आँखों को बंद किए हुए ही मुस्कुराते हुए बोली, "पेटवा भैया... आप बहुत अच्छे हो।"वह कुछ क्षण रुककर ऐसे बोली, जैसे सामने किसी की बात सुन रही हो। "सच? मेरे लिए चॉकलेट और खिलौने लाओगे?" फिर उसने मासूमियत से सिर हिलाया। "हाँ... मैं आपके साथ रोज़-रोज़ खेलूँगी। इतना कहते ही वह नींद में ही खिलखिलाकर हँस पड़ी। यह दृश्य देखकर सुकेशिनी का भय और बढ़ गया। आनंद तुरंत उसके पास पहुँचा। उसने बड़े स्नेह से सुनिधि को अपनी गोद में उठा लिया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए शांत स्वर में भगवान राम का नाम जपने लगा।

"श्रीराम... जय श्रीराम... जय श्रीराम..." राम का नाम सुनते ही सुनिधि का बेचैन शरीर धीरे-धीरे शांत होने लगा। उसके चेहरे की विचित्र मुस्कान गायब हो गई। उसने गहरी साँस ली, आनंद के कंधे पर सिर रख दिया और कुछ ही क्षणों में गहरी, शांत नींद में चली गई। जबकि सुकेशिनी अभी भी स्तब्ध होकर यह सब देख रही थी। आनंद ने राहत की साँस ली, उसके मन में एक ही प्रश्न बार-बार उठ रहा था। **"आख़िर सुनिधि नींद में किससे बातें कर रही थी... और 'पेटवा' कौन था?"**

अध्याय 9

औपनिवेशिक काली जेल

22 मई , 2020, उस रात लगभग ग्यारह बजे डॉ. ईवा हरिणी के कमरे पर पहुँची। उसने नील गृह का दरवाज़ा खटखटाया। हरिणी ने दरवाज़ा खोला। "अरे, डॉक्टर! आप इतनी रात को? कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

डॉ. ईवा ने बिना कुछ कहे इशारे से कमरे के बाहर रखी कुर्सियों की ओर संकेत किया। दोनों वहाँ जाकर बैठ गईं। ईवा ने हरिणी से अनुरोध किया, "क्या तुम रायपुर और नारायणनगर के भारतीय सरकारी अधिकारियों को अंग्रेज़ी में एक पत्र लिखने में मेरी मदद कर सकती हो? मैं जंगल के इस हिस्से में आदिवासियों और तुर्ग के बीच कोरोना की स्थिति के बारे में उन्हें रिपोर्ट करना चाहती हूँ। चूँकि मेरी अंग्रेज़ी और हिंदी अच्छी नहीं है, इसलिए मैं तुमसे जर्मन में बात करूँगी। तुम मेरी बात समझकर, उसका अर्थ ग्रहण करके और उसे अंग्रेज़ी भाषा में एक रिपोर्ट के रूप में लिख देना।"

हरिणी उठकर नील गृह में जाती है और अपनी अलमारी से एक कॉपी और कुछ पेन लेके बहार आती है। फ़िर वो ईवा के सामने कुर्सी पर आराम से बैठ जाती है। कॉपी खोल कर, पेन से उसपर डेट डालकर, ईवा से जर्मन में बोलती है- "अब मैं तैयार हूं, बताओ क्या लिखना है?"

इसके बाद हरिणी और ईवा के बीच की पूरी बातचीत जर्मन भाषा में हुई। अत्यंत शिक्षित और प्रतिभाशाली महिला हरिणी कई भाषाएँ जानती थी। वह हिंदी और अंग्रेज़ी के साथ-साथ जर्मन भाषा भी अच्छी तरह समझती थी। ईवा जर्मन में बोलती रही और हरिणी उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनकर उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद करती हुई रिपोर्ट तैयार करती रही।

डॉ. ईवा जर्मन भाषा में बोलना शुरू कर देती है---" Wir müssen auch die Situation der Turg berücksichtigen....."

असल में, डॉक्टर ईवा हरिणी से कोरोना की रिपोर्ट के बारे में बात करने नहीं, बल्कि किसी और **गुप्त विषय पर बातचीत करने** आई थी।

डॉ. ईवा **जर्मन भाषा** में धीमे स्वर में बोली, "हरिणी, समीर किसी आइसोलेशन केंद्र में नहीं गया है। बल्कि उसे घने जंगल के बीच बनी ब्रिटिश औपनिवेशिक (colonial) काल की उस **काली** जेल में कैद कर दिया गया है, जो अब लाल माई के कब्ज़े में है। आज सुबह ही उसे लाल माई की देहरी के निजी सुरक्षा एवं गश्ती पुलिस दल **'गश्त:पो'** के कर्मचारी, धोखे से छत्तीसगढ़ पुलिस के भेष में, उस जेल में ले गये थे।"

हरिणी का चेहरा अचानक गंभीर हो गया। ईवा ने अपनी बात जारी रखी- "आज शाम मुझे वहाँ **'गश्त:पो'** के कोरोना से पीड़ित कुछ सदस्यों के इलाज के लिए भेजा गया था। वहीं मैंने समीर को एक कमरे में बेहोश पड़ा देखा । लाल माई मेडिकल सर्विसेज के हमारे स्पेनिश साथियों ने उसका इलाज किया है।"

"इंजेक्शन से उसे दवाईयां चढ़ाई है। उसके शरीर पर गहरे ज़ख्म और खरौंचो के निशान हैं। वह लोग ऐसा बता रही थीं कि उसे शायद कोई बैक्टीरियल संक्रमण हुआ है, कोरोना नहीं हुआ है। उसके गुप्तांग पर नाखुन से खरोंचने और दोनों जांघों पर बड़े-बड़े नोकिले दांतों से काटने का निशान है। ज़रूर किसी जंगली जानवर ने हमला किया होगा।"

डॉ. ईवा कुछ देर तक चुप बैठी रही। उसके चेहरे पर चिंता स्पष्ट थी। फिर उसने भयभीत स्वर में पूछा, "क्या तुम्हें लगता है कि जिस जानवर ने समीर पर हमला किया था, वह शुकासुर हो सकता है? कहीं वह 21-22 मई की दरमियानी रात में देहरी में घुस आया होगा?"

हरिणी ने कुछ क्षण ईवा की ओर देखा, फिर **जर्मन भाषा** में बोली, "उस रात मैंने शुकासुर को अपनी आँखों से नील कोठी के पीछे वाले जंगल में इंसानी लाशों को खाते देखा है। मैं उस जानवर के बारे में इतना जानती हूँ कि वह किसी इंसान को ज़िंदा निगल सकता है। वह इंसान की खोपड़ी को आसानी से कुचल सकता है और हड्डियों तक को चबा सकता है।"मुझे नहीं

लगता कि वह समीर को देखकर उस पर मोहित हो जाएगा और फिर **वहाँ** नीचे, उसे प्रेम की निशानी के तौर पर 'लव बाइट' दे देगा। ये काम मुझे किसी और एन्टीटी (प्राणी) का लगता है... **शायद लाल माई** ।"

हरिणी धीरे से हँस पड़ी, वह आगे कहती है "क्योंकि उस रात मैंने दूसरी मंजिल में समीर की ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ सुनी थी, वो किसी डायन का नाम ले रहा था ।"

ईवा भी अपनी हँसी रोक नहीं सकी। वह हरिणी की तरफ देखते हुए बोली, "तुम इतनी रात को वहां क्या कर रही थी? बड़ी जासूस बन कर देहरी में रात को घूमती रहती हो...सब खबर रहती है तुमको...डर नहीं लगता तुमको, नील कोठी के पीछे जंगल में सफारी पर निकल पड़ी । अकेली थी?"

हरिणी झेंप कर जवाब देती है, "मुझे जाम्ब बाबा ने अपने दीवाने खास, नील कोठी के नीचे वाले अंडरग्राउंड रूम में बुलाया था। एक महत्वपूर्ण मीटिंग थी। उसे खतम करके मैं जब पीछे वाले गेट से बगीचे में निकली तब मैंने समीर की चीख सुनी और शुकासुर को भी जंगल में देखा ।"

ईवा आगे कहती है, "मज़ाक अपनी जगह... लेकिन सोचने के लिए हमारे सामने कई गंभीर बातें हैं। तुम्हारा भाई रस्टी भी वहाँ कैद है।" कुछ क्षण के लिए दोनों के बीच सन्नाटा छा गया। "वहाँ के मुख्य सुरक्षा अधिकारी, जांगो ओनुगाडोबा, जो नाइजीरियाई था, कोरोना से मर गया है।" ईवा ने कहा, "तुम्हें जाम्ब बाबा से कहकर उसकी जगह किसी ऐसे व्यक्ति की नियुक्ति करवानी होगी, जो आगे चलकर हमारे काम आ सके।"

हरिणी ध्यान से उसकी बात सुन रही थी। ईवा धीमे स्वर में आगे बोली, "मेरी इतालवी सहयोगी, वेरोनिका, कुछ दिन पहले विशेष कैदियों के उपचार के लिए वहाँ गई थीं। उन्होंने वहाँ एक-दो कमरों से बच्चों के रोने और बात करने की आवाजें सुनी थीं।" ईवा की आवाज धीमी पड़ गई-"मुझे लगता है... मेरे बच्चे भी वहीं कैद हैं।"

हरिणी का चेहरा अब पूरी तरह गंभीर हो चुका था। कुछ क्षण सोचने के बाद **जर्मन भाषा** में कहती है, "ठीक है। मैं जाम्ब बाबा को समझाती हूँ कि जांगो की जगह गुरु भाई कुंदन की बेटी श्रावणी को नियुक्त करें।"

ईवा ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा। हरिणी ने उसे समझाते हुए कहा, "श्रावणी अपने पिता के नेपाल जाने के बाद उनकी खबर लेने मेरे पास आई थी । मैंने उसे बताया कि नेपाल से कोई खबर नहीं आई और उसको लाल माई की देहरी से जुड़ना चाहिए। शायद वो अपने पिताजी के बारे में लाल माई से बात कर पाये।"

"वह पच्चीस-छब्बीस साल की है, बेहद फिट है और उसे कराटे भी आता है। कई बार पुलिस भर्ती में शामिल हो चुकी है, लेकिन दुर्भाग्य से उसका चयन नहीं हुआ। वो देहरी में सुरक्षा गार्ड की ड्यूटी के लिए तैयार हो गई है।" हरिणी कुछ क्षण रुकी, फिर बोली, "कल रात जब मैं जाम्ब बाबा से मिलूँगी, तब मैं श्रावणी की सिफारिश करूँगी और उसे वहाँ नियुक्त करवाने की कोशिश करूँगी।"ईवा ने धीमे से पूछा, "और अगर वह नियुक्त हो गई?" हरिणी की आँखों में एक अलग ही दृढ़ता उभर आई-"तो आगे चलकर वह हमारे लिए बहुत काम आएगी।"

डॉ. ईवा जर्मन भाषा में फिर बोलना शुरू करती है, "लाल माई ने मुझे यहाँ से किसी दूसरी देहरी में स्थानांतरित करने की धमकी दी है। उसने कल मुझसे कहा कि, उसे मेरा रात के समय इस तरह तुमसे मिलना बिल्कुल पसंद नहीं है। उसने कहा है कि आगे से मेडिकल रिपोर्ट से संबंधित सारी बातें मैं सुबह जाम्ब बाबा की मौजूदगी में अंग्रेज़ी में ही करूँ, जर्मन में नहीं।"

ईवा कुछ क्षण रुकी और फिर बोली, "मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि दिनभर हरिणी आश्रम के काम में व्यस्त रहती है और मैं मरीजों को देखती हूँ। इन दिनों मैं श्रेया की देखभाल भी कर रही हूँ, इसीलिये मैं और हरिणी रात को मिल लेते है। मुझे अंग्रेजी और हिंदी ठीक से नहीं आती तभी मैं हरिणी से जर्मन में बात करती हूं। हरिणी को जर्मन भाषा समझ

आती है । लेकिन लाल माई मेरी बात से संतुष्ट नहीं हुई। शायद **'गश्त:पो'** के अध्यक्ष ज्ञान सुंदर ने हमारी मुलाकातों की शिकायत लाल माई से कर दी है।"

हरिणी ने ईवा की ओर देखा और जर्मन में ही धीमे स्वर में बोली, "हमारी जासूसी ज्ञान नहीं, कोई और कर रहा है। "ईवा ने तुरंत पूछा, "कौन?" हरिणी ने कुछ क्षण उसकी ओर देखा। फिर उसने अपनी कॉपी में पर एक नाम लिखा: "Charulata" ईवा ने बिना आवाज़ किये वह नाम पढ़ा।

हरिणी ने तुरंत पेन उठाया और उस नाम को काट दिया। फिर उसने धीमे स्वर में कहा, "यह लड़की जाम्ब बाबा का ध्यान पाने के लिए मुझसे प्रतिस्पर्धा कर रही है। मैंने उसे कई बार भूमिगत तहखाने में जाम्ब बाबा के साथ रात बिताते देखा है। वहाँ वह जाम्ब बाबा के सामने कई लोगों की चुगली करती है, जिनमें मैं और तुम भी शामिल हैं।"

हरिणी ने ईवा की आँखों में देखते हुए कहा, "यही कारण है कि मैं तुमसे हमेशा जर्मन में बात करती हूँ। मैं नहीं चाहती कि वह लड़की हमारी कोई बात समझ पाए।" ईवा कुछ क्षण चुप रही। फिर हरिणी और ईवा ने एक-दूसरे की ओर देखा और हल्की-सी मुस्कान उनके चेहरों पर आ गई। हरिणी ने कहा, "जब तक जाम्ब बाबा मुझ पर भरोसा करता है, तब तक तुम्हारा स्थानांतरण नहीं होने दूँगी, निश्चिन्त रहो। लेकिन लाल माई के शक को शांत करने के लिए कुछ दिनों तक हमें एक-दूसरे से नहीं मिलना चाहिए।"

वह कुछ क्षण रुकी और फिर बोली, "और भारतीय सरकार को कोरोना की रिपोर्ट भेजने का काम अब इटली की डॉक्टर वेरोनिका को दे देना चाहिए। उसे अंग्रेज़ी में रिपोर्ट लिखना अच्छी तरह आता है। इससे हमारा एक-दूसरे से मिलना भी कम हो जाएगा और लाल माई को हम पर शक करने का कोई नया कारण भी नहीं मिलेगा।"

डॉ. इवा हरिणी से पूछती हैं- "एक आखिरी सवाल, रस्टी और समीर के कैद होने के बाद, क्या अब हम आनंद को अपने साथ काम करने के लिए अमंत्रित करेंगे?

कुछ देर तक सोचने के बाद हरिणी बोली- "इतना जल्दी उससे बात करना ठीक नहीं होगा। सुजल बता रहा था कि **जाम्ब बाबा** ने आनंद को सुकिंचक नाथ की दीक्षा दिलवा कर, आश्रम के काम में लगाने बोला है। **जाम्ब,** आनंद से बहुत प्रभावित है। हमने देखना होगा कि अगर आनंद, जाम्बुरस और जाम्बु लस्सी के प्रभाव में वशीभूत होकर आश्रम का सेवक और दास बन गया तो, उससे कोई मदद नहीं मिल सकती।

फिर वो दोनों कुर्सी से उठ जाती हैं, एक दूसरे को **जर्मन** में शुभ रात्रि बोल के अपने-अपने अंतःपुर को सोने चली जाती हैं। वहीं नील गृह की खिड़की के पर्दे के पीछे छुपी हुई चारुलता जो उन दोनों की बात चुपके से सुन रही होती है, **कुछ भी ना समझ** पाने के कारण खिसियाके सोने चली जाती है।

घने जंगल के बीच स्थित ब्रिटिश औपनिवेशिक काल की उस **काली जेल** में रात गहरी हो चुकी थी। बाहर सन्नाटा था, लेकिन जेल की ऊँची पत्थर की दीवारों के भीतर पहरेदारों की पदचाप लगातार सुनाई दे रही थी।

यह जेल लाल माई की मिल्कियत थी और उसकी सुरक्षा, देहरी के निजी गुप्त सुरक्षा एवं गश्ती पुलिस दल, **गश्त:पो**, के हाथों में थी। समीर को यहाँ एक कोरोना मरीज के रूप में लाया गया था। सभी को यह बताया गया था कि उसे आइसोलेशन सेंटर भेजा जा रहा है, लेकिन वास्तव में अब वह इस जेल का एक कैदी था।

लाल माई ने उस त्याग दिए गए जेल का जीर्णोद्धार करवाकर, उसका उपयोग अपने विशेष कैदियों को रखने के लिए एक उच्च सुरक्षा जेल के जैसा करना शुरू कर दिया था। उस जेल में अनेक कमरे थे, जिनमें से कुछ अत्यधिक सुरक्षित कमरे थे। समीर को ऐसे ही एक कमरे में बंद करके रखा गया था।

डॉ. वेरोनिका उसका इलाज कर रही थी और डॉ. ईवा भी कभी-कभार आ कर देख के जाती थी। लाल माई मेडिकल सर्विसेज के किसी भी डॉक्टर को इस जेल में ले आए लोग या मरीजों के बारे में किसी से बात करने की इजाजत नहीं थी।

25 मई , 2020, समीर अपने कमरे में पिछले तीन दिनों से बेहोश पड़ा था। रात को साढ़े दस बजे, उसके कमरे का दरवाज़ा धीरे से खुलता है और लाल माई भीतर दाखिल होती है। उसकी आँखों में एक विचित्र चमक थी। वो कुछ क्षण समीर को देखती है, फिर उसके सिर के दाहिनी ओर बैठकर अपनी आँखें बंद करके धीमे स्वर में **दानव वशीकरण** मंत्र का उच्चारण शुरू कर देती है।

"पोंग झम पट लट श्रुत इम गिम, तू चल उठ अब, डर मत, खर कट, ले अब डाल मोई झुर बुर में उन झट पट, श्रुत लट तप माझ पोंग..."

मंत्र की ध्वनि धीरे-धीरे कमरे की दीवारों से टकराकर लौटने लगी। लाल माई ने अपना हाथ समीर की छाती पर रखा और धीरे-धीरे उसकी मालिश करने लगी।

कुछ ही क्षणों में समीर की उँगलियाँ हिलीं। उसकी साँस तेज़ हुई। फिर उसकी पलकों में कंपन हुआ और उसने धीरे-धीरे आँखें खोल दीं। लेकिन उसके सामने जो दृश्य था, वह वास्तविकता नहीं थी। लाल माई वहाँ नहीं थी। समीर को उसके स्थान पर **श्रेया** दिखाई दे रही थी-"श्रेया...!"

समीर ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और उठने की कोशिश की-"तुम... यहाँ? हम कहाँ हैं? सुनिधि कहाँ है?" कुछ बोलते ही उसकी साँस फूलने लगी। श्रेया ने तुरंत उसे सहारा दिया-"आराम से, समीर।"

समीर ने धीमे स्वर में कहा, "तुम्हें पता है, तुम्हारी माँ लाल डायन है। उसका पेटवा नाम के एक दानव के साथ संबंध है।"

श्रेया बोली, "मुझे सब पता है। मैं आनंद की मदद से तुम्हें यहाँ लाई हूँ। हम दोनों कोरोना से गंभीर रूप से बीमार थे। आनंद ने हमें इस सरकारी कोरोना आइसोलेशन सेंटर में पहुँचाया। उसने सुनिधि को रंगनाथ स्वामी

के आश्रम में भेज दिया है। वहाँ वह मेरी बड़ी बहन हिमनदा दत्ता के साथ पूरी तरह सुरक्षित है। आनंद खुद भी वही रह रहा है और उसने अपनी गाड़ी भी ठीक करवा ली है। कोरोना की बीमारी ख़त्म होने और लॉकडाउन खुल जाने से हम आनंद की गाड़ी में अपने घर चले जायेंगे।"

समीर की आँखों में चिंता अभी भी थी। श्रेया ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "हम यहाँ सुरक्षित हैं। यह सरकारी केंद्र है और इसकी चौबीसों घंटे पुलिस सुरक्षा होती है। मेरी डायन माँ यहाँ तक नहीं पहुँच सकती। अब हमें कोई खतरा नहीं है।"

कुछ देर बाद श्रेया ने एक वीडियो कॉल की व्यवस्था की। स्क्रीन पर सुनिधि दिखाई दी।सुनिधि को सुरक्षित देखकर समीर के चेहरे पर राहत आ गई। उसने उससे कुछ देर बात की और जब कॉल समाप्त हुई तो उसकी चिंता कुछ कम हुई।

लेकिन तभी उसने श्रेया को रोते हुए देखा। वह बुरी तरह फूट-फूटकर रो रही थी। समीर घबरा गया। "क्या हुआ? तुम क्यों रो रही हो?" श्रेया ने अपने आँसू पोंछने की कोशिश की, उसकी आवाज़ काँप रही थी।

"समीर... कोरोना के गंभीर संक्रमण और तेज़ बुखार की वजह से मेरा गर्भपात हो गया।" समीर स्तब्ध रह गया। "क्या...?" "हम ने अपना बच्चा खो दिया।" "लेकिन... कोरोना इतना खतरनाक...?"

समीर की आवाज़ में अविश्वास था। श्रेया ने धीमे स्वर में कहा, "हमारा तीन महीने का बच्चा था, समीर। वह कोरोना की वजह से नहीं बच सका।" समीर कुछ कह नहीं पाया। उसकी आँखें श्रेया के चेहरे पर टिक गईं। श्रेया ने अपने पेट पर हाथ रखा। अब वहाँ गर्भ का कोई चिह्न नहीं था। "यह सब पिछले तीन हफ्तों में हुआ, जब तुम कोमा में थे।" समीर ने जैसे अपने कानों पर विश्वास न करते हुए पूछा, "मैं... कोमा में था... तीन हफ्तों से?"

"हाँ, समीर।" कुछ पल दोनों के बीच खामोशी रही। फिर श्रेया ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "मुझे एक और बच्चा चाहिए। मैं निःसंतान होकर नहीं रह सकती।" समीर ने उसे समझाने की कोशिश की। "हम घर वापस

चलेंगे। हम बच्चा करेंगे। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें फिर से बच्चा दूँगा। लेकिन यह जगह सुरक्षित नहीं है।"

श्रेया ने तुरंत सिर हिला दिया। "नहीं। यही सबसे सुरक्षित जगह है।" उसने बताया कि उसने अपने संपर्कों के माध्यम से सरकारी Below Poverty Line (**BPL) सुविधा** हासिल कर ली थी। उसने अपने सोने के गहने तक बेच दिए थे ताकि यहाँ उनके खाने, पीने के पानी और कपड़ों की व्यवस्था हो सके।

फिर उसने समीर की ओर देखा। "अब मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ। मैं गर्भधारण कर सकती हूँ। चलो कुछ समय साथ बिताते हैं... अपना हनीमून मनाते हैं। मुझे बच्चा चाहिए, समीर।" समीर पीछे हट गया, "लेकिन अभी? इस हालत में? कोरोना के बीच?" श्रेया का चेहरा अचानक बदल गया। उसकी आँखों में क्रोध उतर आया- "क्या तुमने अपनी मर्दानगी खो दी है?"

वह गुस्से में समीर को थप्पड़ मारने लगी। "मुझे बच्चा चाहिए!" समीर उसे शांत करने की कोशिश करता रहा। आखिरकार वह उसकी बात मान गया। अगले तीन सप्ताह तक दोनों साथ रहे। और फिर एक दिन श्रेया गर्भवती हो गई।

तीन सप्ताह बाद, एक सुबह **काली जेल** के उस कमरे की खिड़की से हल्की धूप भीतर आ रही थी। श्रेया खिड़की के पास खड़ी बाहर देख रही थी। समीर की आँख खुली। वह उठकर उसके पीछे गया और प्रेम से उसे बाँहों में भर लिया। लेकिन उसी क्षण उसे कुछ अजीब महसूस हुआ।

श्रेया अचानक उसकी ओर मुड़ी। समीर का शरीर सिहर उठा और मुँह से चीख निकल गई----- **"लाल डायन**"।

उसके सामने श्रेया नहीं थी-वहाँ **लाल माई** अपने भयानक **लाल डायन** रूप में खड़ी थी।

लाल डायन जोर से हँसी-"हा... हा... हा...!" समीर भय से पीछे हट गया।

लाल **डायन** ने कहा, "समीर, मैं बहुत खुश हूँ। आखिरकार मुझे वह मिल गया, जिसके लिए मैं तुम्हें यहाँ लाई थी।" उसने उसकी ओर देखकर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान बिखेरी, "मुझे तुम्हारी प्रशंसा करनी होगी। तुम सचमुच एक महान प्रेमी हो। **मैं तुम्हारे बच्चे की माँ बनने वाली हूँ।"**

समीर का चेहरा भय और घृणा से विकृत हो गया। "क्या...? तुम?" उसकी आवाज़ काँप रही थी। "तुम बूढ़ी, डोकरी डायन! तुमने मेरे साथ... लेकिन मैं तुम्हें पहचान क्यों नहीं पाया?" उसने अपना सिर पकड़ लिया। "हे भगवान! मैंने ये क्या कर दिया? अब मैं श्रेया को क्या बताऊँगा?"

लाल डायन व्यंग्यात्मक, हँसती रही और बोली- "मैं बूढ़ी? मैं डोकरी? पर तीन सप्ताह तक जब तुम मेरे साथ चिपक चिपक के सम्भोग करते रहे तब तो तुम मुझे दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत बोलते रहे? नो एंट्री में तुम घुसे और गलती मेरी?

समीर ने झुंझलाते हुए चिल्लाया- "मुझे पता क्यों नहीं चला कि मैंने एक डायन के साथ बच्चा कर लिया? मैं तुझे श्रेया समझकर..."

लाल डायन बोली- "खैर, इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, समीर। यह मेरे वशीकरण जादू की शक्ति है।"

"लेकिन क्यों?" लाल डायन कुछ क्षण चुप रही। फिर उसने कहा, "मैं तुम्हें और कुछ अन्य पुरुषों को इस जेल में एक विशेष उद्देश्य से रख रही हूँ। अब तुम्हें बताती हूँ कि मैंने छल का सहारा लेकर तुमसे संतान क्यों प्राप्त किया।" वह धीरे-धीरे समीर के पास आई-"मैं अब इंसान नहीं हूँ। लेकिन जब मैं इंसान थी, तब भी मेरे भीतर एक ऐसी संतान को जन्म देने इच्छा थी जो साधारण न हो।"

"मैं ऐसा बच्चा चाहती हूँ जिसमें **सात्त्विक, राजसिक और तामसिक**, तीनों गुणों का अद्भुत संतुलन हो।" वह आगे बोली, "उसमें सात्त्विक गुणों वाले महापुरुष जैसा ज्ञान हो। वह चक्रवर्ती सम्राट की तरह पूरी दुनिया का नेतृत्व करने की क्षमता रखता हो। और उसमें दैत्य या दानव जैसी अपार शक्ति हो।"

समीर स्तब्ध होकर उसकी बातें सुनता रहा "और तुम..." लाल डायन ने उसकी ओर उँगली उठाई। "तुम इस उद्देश्य के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति हो। तुम्हारी बीवी श्रेया सिर्फ तुम्हारे अंदर कामिया देखती है, उस मुर्ख को नहीं पता कि वो कितनी सौभाग्यशाली है।

समीर ने अविश्वास से पूछा, "मैं?" लाल माई मुस्कुराई- "हाँ। "तुम्हारा जन्म आज से छत्तीस साल पहले अत्यंत शुभ **चैत्र पूर्णिमा** के दिन हुआ था। तुम्हारे भीतर अच्छे कर्मों का प्रभाव है। तुममें वे गुण हैं जिनकी मुझे आवश्यकता थी। तुम्हीं ऐसी संतान को पैदा करने में सक्षम हो जैसे मुझे चाहिए थी।"

उसने अपने पेट पर हाथ रखा-"इसलिए मैंने तुम्हारे साथ तीन हफ्ते, कई बार सहवास किया, ताकि मुझे ऐसी संतान अवश्य प्राप्त हो और मैं एक-एक लम्हे का लुत्फ उठाऊं।" उसकी आवाज़ में विजय का गर्व था। "मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।"

समीर ने काँपती आवाज़ में पूछा, "लेकिन तुम्हारा दानव प्रेमी पेटवा? क्या वह तुमसे नाराज़ नहीं होगा?" लाल माई ठहाका मारकर हँसी। "यही तो हमारी दानव सभ्यता की महानता है, मूर्ख मनुष्य!"

उसकी आँखों में गर्व था। "हमारी सभ्यता में विवाह का अर्थ तुम्हारी मानव सभ्यता जैसा बंधन नहीं है। दानव दंपति एक-दूसरे से प्रेम कर सकते हैं, साथ रह सकते हैं और फिर भी उन्हें अन्य साथियों से उत्तम संतान उत्पन्न करने का अधिकार होता है।"

समीर चुप रहा। लाल माई ने आगे कहा, "हमारा उद्देश्य शक्तिशाली और योग्य संतानों का एक विशाल वंश तैयार करना है। ऐसी संतानें जो हमारी सभ्यता को फिर से शक्तिशाली बना सकें।"

उसकी आवाज़ अब किसी घोषणा जैसी हो गई-"सर्वश्रेष्ठ संतानों को जन्म देकर हम अपने दानव राज्य को अजेय बनाएँगे।" वह खिड़की के बाहर घने जंगल की ओर देखने लगी। फिर धीरे-धीरे बोली, "**मनुष्य जाति का अंत होगा...और दानव जाति फिर से उठ खड़ी होगी।**" कमरे में

अचानक गहरा सन्नाटा छा गया। समीर ने कुछ क्षण लाल डायन की ओर देखा। उसके मन में एक सवाल लगातार उठ रहा था। आखिरकार वह खुद को रोक नहीं पाया।

"लेकिन तुम मनुष्य जाति को क्यों नष्ट करना चाहती हो?" लाल डायन हल्के से हँसी। "अरे, रिपोर्टर की औलाद! तुझे तो बड़ी उत्सुकता है। चल, फिर सुन ज्ञान की बात।" वह कुछ क्षण रुकी और फिर गंभीर स्वर में बोली, "भगवान ने मनुष्य जाति को बुद्धि, शक्ति और सामर्थ्य दिया था, ताकि वह पृथ्वी के संसाधनों का संतुलित उपयोग करते हुए इस ग्रह पर जीवन की रक्षा और संरक्षण कर सके। लेकिन तुम लोग बड़े ही स्वार्थी हो चुके हो।"

उसकी आवाज़ में तिरस्कार था, "तुम पृथ्वी के संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करते हो। पशु-पक्षियों पर अत्याचार करते हो, और अपने ही लोगों का शोषण करते हो और चारों ओर उत्पात मचाते हो।" वह समीर के और करीब आई-"हम दानव रक्त, मांस और हत्या का सहारा केवल अपनी भूख-प्यास मिटाने के लिए अथवा अपने जीवन की चुनौतियों को समाप्त करने के लिए लेते हैं। इस हिसाब से तो दानव सभ्यता ही श्रेष्ठ हुई, है ना?"

उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा, "Don't you agree?" समीर ने कुछ क्षण उसे देखा और फिर अचानक पूछा, "तुम्हें अंग्रेज़ी आती है?" लाल डायन मुस्कुराई-"हाँ। जब से मैं दानव समाज का हिस्सा बनी हूँ और अपनी काली पूजाएँ संपन्न करने लगी हूँ, मुझे संसार की सभी भाषाओं का ज्ञान हो चुका है।"

वह गर्व से बोली, "मैंने दानव विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री भी प्राप्त कर ली है।" समीर के चेहरे पर आश्चर्य उभर आया-"फिर तुम्हें श्रेया की क्या ज़रूरत है?" लाल डायन ने बिना झिझके उत्तर दिया, "मैं पेटवा की पटरानी हूँ। भविष्य में जब पेटवा पृथ्वी पर अपना दानव साम्राज्य स्थापित करेगा, तब मुझे उसका शासन संभालना होगा।"

उसकी आवाज़ में भविष्य के साम्राज्य का गर्व झलक रहा था-"और कोई भी बड़ा साम्राज्य केवल राजपरिवार और सैनिकों के बल पर नहीं चलता।

उसके पीछे मंत्रियों और असंख्य प्रशासनिक कर्मचारियों का एक विशाल तंत्र होता है, जो साम्राज्य के सारे संचालन को संभालता है।"

वह कुछ क्षण रुकी, "विशेषकर प्रचार, प्रसार और जनमत को प्रभावित करने का काम।" लाल डायन ने समीर की आँखों में देखते हुए कहा, "और इन कामों में श्रेया बेहद निपुण है।"

समीर चुप हो गया। अब उसे समझ आने लगा था कि लाल डायन की नजर केवल श्रेया पर नहीं थी। **वह श्रेया की बुद्धि और कौशल को अपने भावी दानव साम्राज्य की मशीनरी का हिस्सा बनाना चाहती थी।**

लाल डायन समीर को बताती है कि पेटवा केवल शक्ति प्राप्त करने या मनुष्यों पर शासन करने वाला कोई साधारण दानव नहीं है। उसकी दृष्टि पूरी पृथ्वी पर है। वह मनुष्य और दानव जाति के बीच वर्तमान शक्ति-संतुलन को समाप्त करके एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना चाहता है जिसमें दानव सभ्यता सर्वोच्च होगी।

समीर उससे पूछता है, "लेकिन पेटवा पूरी पृथ्वी पर शासन क्यों करना चाहता है? आखिर उसे इससे मिलेगा क्या?" लाल डायन कुछ क्षण चुप रहती है। फिर उसके चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान उभरती है-"क्योंकि उसके लिए यह केवल सत्ता का प्रश्न नहीं है, समीर। यह अस्तित्व का प्रश्न है।"

वह बताती है कि, पेटवा की दृष्टि में दानव सभ्यता कभी अत्यंत शक्तिशाली थी, लेकिन समय के साथ वह कमजोर होती चली गई। मनुष्य संख्या में बढ़े, उन्होंने पृथ्वी के अधिकांश हिस्से पर अधिकार कर लिया और दानवों को जंगलों, गुफाओं, तथा भूमिगत स्थानों से पीछे हटना पड़ा।

पेटवा इस स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। उसका विश्वास है कि पृथ्वी पर शासन करने का अधिकार उसी जाति को होना चाहिए जो सबसे अधिक शक्तिशाली, संगठित और जीवित रहने में सक्षम हो।

समीर उसकी विचारधारा पर प्रश्न उठाता है। "लेकिन अगर दानव इतने शक्तिशाली हैं, तो उन्हें मनुष्यों से डरने की क्या जरूरत है?" लाल माई

हँसती है-"डर? नहीं, समीर। पेटवा मनुष्यों से नहीं डरता। वह उनसे घृणा करता है। और घृणा से भी अधिक उसे मनुष्यों की संख्या से समस्या है।"

वह आगे बताती है कि पेटवा केवल युद्ध करके पृथ्वी पर अधिकार नहीं करना चाहता। वह ऐसी दानव सभ्यता का निर्माण करना चाहता है जो आने वाली पीढ़ियों में मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली, अधिक अनुकूलनशील और अधिक संगठित हो।

इसी उद्देश्य से लाल माई और पेटवा विशेष संतानों, शक्तिशाली मनुष्यों तथा असाधारण क्षमताओं वाले व्यक्तियों में रुचि रखते हैं। समीर को पहली बार समझ आया कि वह जिस जेल में कैद था, वह केवल एक जेल नहीं थी-**वह लाल माई की किसी बहुत बड़ी योजना का हिस्सा था।**

समीर ने कुछ क्षण लाल डायन को देखा। उसके चेहरे पर भय, क्रोध और अविश्वास तीनों स्पष्ट थे। "मैं समझ सकता हूँ कि तुम खुश हो। तुम अपनी जाति को बढ़ाना चाहती हो। लेकिन मेरे परिवार का क्या होगा?"

लाल डायन ने उपेक्षा से उसकी ओर देखा। "मूर्ख! तुम्हें पहले अपनी जान बचाने के बारे में सोचना चाहिए।" वह कुछ कदम आगे बढ़ी और धीमे, मोहक स्वर में बोली, "अगर तुम पेटवा और मेरे साम्राज्य का हिस्सा बन जाओ, तो मैं तुम्हें ऐसी स्त्रियाँ दूँगी, जिनकी तुमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। वे अप्सराओं जैसी सुंदर होंगी, तुम्हारी हर आज्ञा मानेंगी और तुम्हारी सेवा करेंगी।"

वह मुस्कुराई, "हिरनी जैसी आँखें, आकर्षक होंठ, सुडौल शरीर और मधुर वाणी। ऐसी स्त्रियाँ जो तुम्हारे साथ रहेंगी, तुम्हारी अनेक संतानों को जन्म देंगी और तुम्हें वह सुख देंगी, जिसकी तुमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।"

समीर चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। लाल डायन ने आगे कहा, "मैं तुम्हें सोना, चाँदी, हीरे और अपार धन दूँगी। दुनिया के किसी भी हिस्से में तुम्हें अपना राज्य चाहिए, मैं तुम्हें राज्य दूँगी।"

वह कुछ क्षण रुकी। "और अगर तुम चाहो, तो मैं अभी तुम्हें एक वरदान दे सकती हूँ। मैं श्रेया या उस के गर्भ में पल रहे बच्चे को कभी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगी। वो दोनो माँ-बच्चा अभी भी मेरे पास सुरक्षित है।"

समीर ने कुछ क्षण सोचा, फिर उसने पूछा, "बदले में तुम्हें मुझसे क्या चाहिए?" लाल डायन के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान उभरी। "मुझे सुनिधि चाहिए।" समीर का चेहरा अचानक कठोर हो गया। लाल डायन ने आगे कहा, "और मुझे तुम्हारा पूर्ण समर्पण चाहिए।"

उसकी आँखें समीर की आँखों में टिक गईं। "तुम्हारा जीवन, तुम्हारी शक्ति और तुम्हारी निष्ठा... सब कुछ मेरे अधीन।" कमरे में कुछ क्षण के लिए पूर्ण सन्नाटा छा गया। समीर समझ गया कि लाल डायन उसे धन, स्त्रियों और राज्य का लालच नहीं दे रही थी-**वह उसकी आत्मा खरीदना चाहती थी।**

समीर के चेहरे पर परिवार की चिंता स्पष्ट थी। आखिरकार उसने धीमे स्वर में कहा, "मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ, लाल डायन। अगर इससे मेरी पत्नी और मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित होती है, तो तुम मुझसे जो भी चाहोगी, मैं करने के लिए तैयार हूँ।"

वह कुछ क्षण रुका, फिर गंभीर होकर बोला, "लेकिन तुम सुनिधि को क्यों चाहती हो?" लाल डायन की आँखों में एक भयानक चमक उभर आई।

"मैं उस छोटी सी लड़की की बलि देना चाहती हूँ... और उसके जैसे कई और की भी। उनकी बलि से मेरा साथी पेटवा फिर से एक स्वस्थ शरीर प्राप्त करेगा। वह दोबारा जीवित होगा और मेरे साथ धरती पर एक रक्त-मांस से बने मनुष्य के रूप में, मेरे हाथ में हाथ डालकर चल सकेगा।"

उसके चेहरे पर एक क्रूर मुस्कान फैल गई। "यह निश्चित रूप से होगा, जब समय आएगा। चाहे तुम्हें यह पसंद हो या नहीं। अब चुनाव तुम्हारा है, समीर। मेरे साथ जुड़ जाओ... या नष्ट हो जाओ।"

समीर कुछ क्षण चुप रहा। फिर उसने शांत स्वर में कहा, "तुम्हारा प्रस्ताव मुझे बहुत दिलचस्प लग रहा है, लेकिन मैं तुम्हें सुनिधि नहीं दे सकता।"

लाल डायन ने उसे घूरकर देखा। समीर ने बात आगे बढ़ाई, "लेकिन चूँकि तुम मुझसे प्रसन्न हो, मुझे दानव सभ्यता के बारे में कुछ जानने की इच्छा है। बताओ, तुम्हारी सभ्यता में सबसे शौर्यपूर्ण कार्य किसे माना जाता है?"

लाल डायन जोर से हँसी-"शौर्य? चिवैलरी? मूर्ख मनुष्य! **चिवैलरी दानवों का गुण ही नहीं है।**" समीर ने सहजता से पूछा, "ठीक है। फिर दानव बनने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है?"

लाल डायन ने गर्व से उत्तर दिया, "हम जुनूनी होते हैं। शक्तिशाली होते हैं। अहंकारी होते हैं। और जब हम प्रसन्न होते हैं, तो उन लोगों को पुरस्कार देते हैं जिन्होंने हमें वह चीज़ दी हो, जो हमें उनसे चाहिए।"

उसने समीर की ओर देखते हुए कहा, "यही हमारी आचार-संहिता है।" समीर ने गहरी साँस ली। फिर वह बोला, "तो मैं तुम्हारी इस महान दानवी आचार-संहिता का आह्वान करता हूँ और बिना किसी पक्षपात के तुमसे एक पुरस्कार माँगता हूँ, लाल डायन।"

लाल डायन मुस्कुराई-"माँगो। तुम्हें कौन-सा पुरस्कार चाहिए?" समीर ने बिना झिझके कहा, "मैंने तुम्हें एक योग्य संतान दिया है, इसके बदले, तुम मेरी पत्नी और मेरे दोनों बच्चों को कभी नुकसान नहीं पहुँचाओगी।"

कुछ क्षण तक लाल डायन उसे देखती रही। फिर उसने अपना हाथ उठाया-"मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ, मनुष्य। मैं तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे गर्भ में पल रहे बच्चे को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगी।"

समीर के चेहरे पर क्षण भर के लिए राहत दिखाई दी। लेकिन अगले ही पल लाल डायन की आँखों में फिर वही भयावह चमक लौट आई। "लेकिन सुनिधि को मैं अपने साथ ले जाऊँगी।"

लाल डायन ने समीर की ओर देखते हुए अपनी बात आगे बढ़ाई-"समीर, मैं श्रेया को तुम्हारे और मेरे प्रेम की पूरी कहानी ज़रूर सुनाऊँगी। उसे एक-एक चुंबन का स्वाद और तुम्हारे साथ बिताए हर पल का अनुभव भी बताऊँगी।"

उसकी आँखों में एक विचित्र गर्व था। "हमारा होने वाला बच्चा भी पूर्णिमा के दिन ही पैदा होगा। इसलिए मैं उसका नाम **पूर्णिमासुर** रखूँगी।" लाल डायन की आवाज़ में भविष्य के किसी भयानक साम्राज्य का स्वप्न झलकने लगा। "जब पेटवा को नया शरीर मिल जाएगा, तब मैं उसके साथ मिलकर ढेर सारे **शुकासुर** पैदा करूँगी। वे मेरे पूर्णिमासुर की सेना के वीर योद्धा होंगे।"

वह कुछ क्षण रुकी और फिर गर्व से बोली, "पेटवा और मेरे बाद पूर्णिमासुर इस जगत का सम्राट बनेगा... और एक दिन वह पूरे ब्रह्मांड को जीत लेगा।"

वह अचानक जोर से हँसने लगी-**"हा... हा... हा... हा...!"** उसकी हँसी पूरे कमरे में गूँज उठी और अगले ही क्षण लाल डायन वहाँ से गायब हो गई।

समीर अकेला खड़ा रह गया। उसके सामने अब केवल खाली कमरा था। लेकिन उसके कानों में लाल डायन की आखिरी हँसी अब भी गूँज रही थी।

समीर ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि उसे किसी भी तरह अवसर मिलते ही इस जेल से भागना होगा। लाल माई के वरदान पर उसे ज़रा भी भरोसा नहीं था। उसके मन में यह भय भी घर कर चुका था कि यदि लाल माई और दानव पेटवा ने पूरी पृथ्वी पर अपना अधिकार जमा लिया, तो मनुष्यों के लिए बचने की कोई जगह नहीं बचेगी और अंततः पूरी मानव जाति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

लेकिन उससे पहले उसे अपने परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करनी थी। पत्नी, बच्चों और अपने प्रियजनों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद ही वह अगला कदम उठा सकता था।

समीर समझ चुका था कि अकेले लाल माई और पेटवा जैसे शक्तिशाली दानवों का सामना करना संभव नहीं होगा। उसे ऐसे मनुष्यों का एक संगठित समूह तलाशना होगा, जो इस आसन्न खतरे को समझते हों और उसके विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार हों।

उसने मन ही मन संकल्प लिया कि वह ऐसे लोगों को एकजुट करेगा और **लाल माई तथा पेटवा के दानव साम्राज्य की नींव पड़ने से पहले ही उसे समाप्त करने का प्रयास करेगा।**

अध्याय 10
आनंद की दीक्षा

लाल माई ने श्रेया और सुनिधि को ये बताया कि समीर कोरोना से मर चुका है। सरकारी अस्पताल वालों ने उसका शरीर वापस नहीं लौटाया, ताकी रोग **लाल माई की देहरी और तुर्ग** गाँव में न फैल जाए। अंतिम संस्कार करने के लिए उसे भट्टी में जला दिया गया है। इसीलिए शरीर का नामोनिशान तक नहीं बचा।

मजबूरी में डॉ. ईवा और हरिणी ने भी असली सच जान कर भी, लाल माई के झूठ का साथ दिया। श्रेया बहुत रोयी सदमे में उसका हाल बुरा हो गया था। लेकिन समीर और अपने प्यार की निशानी को जन्म देने के लिए उसे सामान्य होना पड़ा। कुछ दिन बीत गए और श्रेया की हालत सामान्य हो गई। सुनिधि भी पहले अपने पापा के लिए बहुत रोई, लेकिन सुकेशिनी के स्नेह और सलोनी के साथ ने धीरे-धीरे उसे भी निश्चिंत कर दिया था।

आनंद को लाल माई की बात पर ज़रा सा भी विश्वास नहीं था। लेकिन फिर भी उसने लाल माई का कोई विरोध नहीं किया। ना ही, अपने शक को श्रेया या सुनिधि से कहना ठीक समझा क्योंकि वो दोनो निरंतर लाल माई की निगरानी में रहती थी। वो इसी फिराक में रहने लगा कि समीर को ढूंढ कर उसको उसके परिवार के साथ भागाकर रायपुर ले जाएगा।

5 जून, 2020 की सुबह जब आनंद की नींद खुली, तो उसने देखा कि उसके कमरे में आश्रम के तीन-चार युवक पहले से ही खड़े थे। सभी ने गहरे जामुनी रंग के लंबे चोगे पहन रखे थे। उनके हाथों में भी वैसा ही एक मोड़ा हुआ जामुनी वस्त्र, रुद्राक्ष की माला और कपड़े का एक छोटा थैला था। आनंद अचानक उठकर बैठ गया। "अरे... आप लोग?"

उनमें से एक बहुत ही सुंदर युवक ने हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में कहा, "प्रणाम, आनंद जी। मेरा नाम सुजल त्यागी है। आश्रम में जो भी अतिथि

एक महीने से अधिक रुकता है, उसे भगवान सुकिंचक जी की दीक्षा लेनी होती है। यह आश्रम का नियम है।"

उसने जामुनी चोगा आनंद की ओर बढ़ाते हुए कहा, "कृपया स्नान करके यह चोगा धारण कर लीजिए। इसके बाद आपको आश्रम में रहने की रीति-नीति, नियम और मर्यादाओं से परिचित कराया जाएगा।"

आनंद ने पूछा, "प्रणाम और धन्यवाद सुजल भाई लेकिन मैं तो यहाँ कुछ ही दिनों के लिए हूँ। मेरी गाड़ी ठीक होते ही मैं वापस चला जाऊँगा। क्या तब भी दीक्षा लेना ज़रूरी है?"

युवक मुस्कुराया "यह लाल माई का आदेश है। नीलकोठी आश्रम की सीमा के भीतर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह नियम समान है। अतिथि हो या सेवक, किसी के लिए अलग व्यवस्था नहीं है।"

दूसरे युवक ने आगे बढ़कर कहा, "चिंता मत कीजिए। यह केवल दीक्षा नहीं, आश्रम में रहने की औपचारिक अनुमति भी है। इसके बाद आप आश्रम के सभी स्थानों पर स्वतंत्र रूप से जा सकेंगे।"

आनंद कुछ क्षण सोचता रहा। उसने मन ही मन कहा, "गाड़ी तो वैसे भी अभी चलने वाली नहीं... जब तक मरम्मत का इंतज़ाम नहीं होता, यहाँ रहना ही पड़ेगा। बेवजह बहस करने से कोई फायदा नहीं।"

वह चोगा और आश्रम से मिला बाकी सामान हाथ में लेकर मुस्कुराकर बोला, "ठीक है, मैं तैयार हो जाता हूँ।" युवकों ने संतोष से सिर हिलाया। "हम बाहर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तैयार होने के बाद आपको दीक्षा के लिए मंदिर में ले चलेंगे। मंदिर में, हमारे पंथ के मुख्य पुजारी आपकी ओर से सभी अनुष्ठान और पूजा करेंगे। इसके बाद आप भगवान सुकिंचक नाथ के लिए दीक्षा सत्कार्य पूरा कर सकेंगे।"

यह कहकर चारों युवक कमरे से बाहर निकल गए। दरवाज़ा बंद होते ही आनंद मन ही मन सोचता है, "मुझे दीक्षा लेकर और इनके नियमों को मान कर इन सब लोगों का विश्वास जीतना होगा। तभी मैं इनकी मदद से अपनी एसयूवी गाड़ी ठीक करवा पाऊंगा। और मौका देखकर समीर और उसके परिवार को लेकर भाग जाऊंगा।

उसने खिड़की से बाहर झाँका। लाल माई के देहरी के लगभग सभी कार्यकर्ता उसी जामुनी वेशभूषा में दिखाई दे रहे थे। धीरे-धीरे उसे एहसास होने लगा कि नीलकोठी में केवल रहने का ही नहीं, बल्कि सोचने और जीने का भी एक अलग तरीका था।

आनंद स्नान करके पूरी तरह तैयार हो गया। उसने आश्रम का गहरे जामुनी रंग का चोगा धारण किया, गले में रुद्राक्ष की माला पहनी और अपने पुराने कपड़े सावधानी से बैग में रख दिए। जब वह कमरे से बाहर निकला, तो आश्रम के बाकी युवक पहले से ही उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आनंद ने पूछा, "**सुजल** भाई एक बात बताओ, लाल माई की देहरी जमुनी रंग का इतना महत्व क्यों है?

सुजल मुस्कुराते हुए बोला, "जामुन फल और जामुनी रंग भगवान सुकीनचक नाथ जी को बहुत प्रिय हैं । आइए आनंद जी! अब आपको भगवान सुकीनचक नाथ जी के मंदिर में चलना होगा। वहाँ उनकी मूर्ति के समक्ष आपकी दीक्षा संपन्न होगी। जम्बू लस्सी पीकर सुकिनचक नाथ जी का प्रसाद ग्रहण करना होगा। उसके बाद जाम्ब बाबा आपसे मिलेंगे और आश्रम के नियमों से परिचित कराएँगे।"

आनंद ने हल्का-सा सिर हिलाया और उनके साथ चल पड़ा। कुछ ही देर में वे सभी दीक्षा मंडप पहुँच गए। मंडप के मध्य ऊँची वेदी पर भगवान सुकिंचक की लाल रंग की प्रतिमा स्थापित थी। धूप, दीप और मंत्रोच्चार से पूरा वातावरण भक्तिमय और गंभीर हो उठा था। आनंद ने श्रद्धापूर्वक आगे बढ़कर प्रतिमा के सामने घुटनों के बल बैठकर प्रणाम किया। एक पुरोहित ने उसके मस्तक पर लाल चंदन और सिंदूर का तिलक लगाया।

फिर उसके हाथ में पवित्र जल देकर संकल्प कराया गया और आश्रम के नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई गई। मंत्रोच्चार के बीच उसकी दीक्षा विधिवत संपन्न हुई। दीक्षा समारोह समाप्त होने के बाद सुजल आनंद को एक ओर ले गया। वहाँ एक सेवक ने चाँदी की थाली में प्रसाद और मिट्टी के बड़े गिलास में गाढ़ी, मलाईदार लस्सी लाकर उसके सामने रख दी। सुजल मुस्कुराते हुए बोला, "आनंद जी, यह हमारे आश्रम की विशेष लस्सी है। जो भी व्यक्ति भगवान सुकिंचक जी का शिष्य बनना चाहता है,

उसे लगातार सात दिनों तक यह लस्सी प्रसाद के रूप में दी जाती है। सातवें दिन के बाद ही उसकी दीक्षा पूर्ण मानी जाती है।"

आनंद ने गिलास हाथ में उठा लिया। उसी क्षण उसकी नज़र सामने से गुज़र रही एक महिला पर पड़ी। वही रहस्यमयी महिला, जो आश्रम में हमेशा चेहरे पर मुस्कुराती स्त्री का पीला मुखौटा लगकर घूमती थी, हरिणी देवी।

महिला कुछ कदम चली, फिर अचानक रुक गई। उसने चुपचाप आनंद की ओर देखा। फिर बहुत हल्के से अपना सिर दाएँ-बाएँ हिलाया, मानो बिना कुछ कहे उसे **लस्सी न पीने** का संकेत दे रही हो। आनंद एक क्षण के लिए ठिठक गया। वह समझ नहीं पाया कि यह चेतावनी थी या उसका भ्रम। इतने में सुजल ने देखा कि आनंद किसी और दिशा में देख रहा है। वह भी तुरंत पलटकर पीछे देखने लगा।

लेकिन तब तक पीले मुखौटे वाली महिला सिर झुकाए तेज़ी से गलियारे की ओर मुड़ चुकी थी और कुछ ही क्षणों में भीड़ में ओझल हो गई। आनंद ने उत्सुकता से पूछा, **"वह महिला कौन थीं?"** सुजल ने सहज भाव से उत्तर दिया, "वो हरिणी दीदी हैं, आश्रम की मुख्य मानव संसाधन (ह्यूमन रिसोर्स) कार्यकारिणी। आश्रम के सभी लोगों का लेखा-जोखा और व्यक्तिगत जानकारी उसी के पास सुरक्षित रहती है।

वह अत्यंत शिक्षित, कुशल और अनुशासित है। वह किसी से बोलकर बात नहीं करती। इशारों तथा कॉपी-कलम पर लिखकर ही वह अपनी हर बात लोगों तक इतनी स्पष्टता से पहुँचा देती है कि किसी को भी उसे समझने में कठिनाई नहीं होती।

"हमेशा मुखौटा पहनकर ही रहती हैं?" "जी। एक भयंकर सड़क दुर्घटना में चेहरा और शरीर बुरी तरह झुलस गया था। लाल माई ने उनका इलाज कराया और उन्हें आश्रम में शरण दी। तब से वे अपना पूरा शरीर ढककर ही रहती **हैं।"**

सुजल ने मुस्कुराकर फिर कहा, **"आप लस्सी पीजिए।"** आनंद ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने एक बार फिर गिलास की ओर देखा, मन ही मन

सोचा- "क्या यह सिर्फ़ संयोग था... या इस लस्सी में सचमुच कुछ है?" उसी समय आश्रम के बाकी युवक अपने-अपने कार्यों में व्यस्त होकर वहाँ से चले गए। सुजल भी किसी सेवक को निर्देश देने के लिए कुछ कदम दूर चला गया। आनंद ने मौका देखकर चारों ओर नज़र दौड़ाई। कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था।

उसने धीरे से गिलास नीचे किया और ऐसे झुका मानो अपने जूते का फीता बाँध रहा हो। अगले ही क्षण उसने पूरी लस्सी पास रखे एक बड़े फूलों के गमले की मिट्टी में सावधानी से उड़ेल दी। कुछ बूंदें भी बाहर नहीं गिरीं। फिर उसने खाली गिलास सीधा करके हाथ में उठा लिया और सामान्य भाव से खड़ा हो गया। कुछ क्षण बाद सुजल लौट आया।

उसने खाली गिलास देखकर संतोष से मुस्कुराते हुए कहा, "बहुत अच्छा, आनंद जी। अब आप वास्तव में सुकिंचक जी के शिष्य बनने की राह पर हैं।"आनंद ने भी हल्की मुस्कान दे दी। लेकिन उसके मन में अब एक नया संदेह जन्म ले चुका था।

पीले मुखौटे वाली हरिणी ने उसे लस्सी पीने से क्यों रोका? और उससे भी बड़ा प्रश्न...क्या इस आश्रम में जो दिखाई दे रहा था, सच वास्तव में उससे बिल्कुल अलग था? सुजल और आनंद, आश्रम के मंदिर से निकल कर आश्रम के मुख्य कार्यालय जाम गृह पाहुंचे।

जाम्ब गृह में जाम्ब बाबा पहले से ही कुछ लोगों से चर्चा कर रहे थे। उन्होंने सामने रखी फाइल बंद की और कुछ क्षण तक बिना कुछ बोले आनंद को ऊपर से नीचे तक देखते रहे, मानो उसके व्यक्तित्व परख रहे हों। उन्होंने अपनी कुर्सी से उठकर, उसके चारों ओर एक चक्कर लगाया, फिर गंभीर स्वर में बोले-"सुना है रास्ते भर तुमने समीर और मेरी बहन की अच्छी देखभाल की थी।" आनंद ने विनम्रता से कहा, "मैंने तो केवल अपना कर्तव्य निभाया है। वे मेरे यात्री ही नहीं, जानकार भी हैं।"

जाम्ब बाबा कुछ पल तक उसे देखते रहे। फिर उनके होंठों पर हल्की-सी मुस्कान आई, पर उनकी आँखों में अब भी वही तीक्ष्णता थी। "अच्छा है...

हमें आश्रम में ऐसे ही अनुशासित और जिम्मेदार लोगों की आवश्यकता होती है।"

"सुजल, आनंद को आश्रम का पूरा परिसर दिखा दो। नियम अच्छी तरह समझा देना। और..." जाम्ब बाबा ने सुजल से पूछा- "आनंद की दीक्षा संपन्न हो गई? "सुजल ने आदरपूर्वक सिर झुकाया। "जी, जाम्ब बाबा। विधि-विधान के अनुसार दीक्षा पूरी हो गई।"

"प्रसाद ग्रहण किया?""जी, जाम्ब बाबा।" जाम्ब बाबा ने कुछ क्षण आनंद की ओर देखा, धीमे लेकिन पैनी आवाज़ में फिर पूछा, "और... लस्सी?" सुजल ने मुस्कुराते हुए बताया-"जी, वह भी पी ली।" जाम्ब बाबा के चेहरे पर हल्की-सी संतुष्टि उभरी। उन्होंने आनंद की आँखों में देखते हुए कहा, "बहुत अच्छा। अब तुम वास्तव में सुकिंचक जी के शिष्य बनने की पहली सीढ़ी पर कदम रख चुके हो। अगले सात दिनों तक नियमित रूप से यह प्रसाद ग्रहण करना। तभी तुम्हारी दीक्षा पूर्ण मानी जाएगी।" आनंद ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया, **"जी, जाम्ब बाबा।"**

आनंद बाहर से वह पूरी तरह शांत दिखाई दे रहा था, लेकिन उसके मन में विचारों की आँधी चल रही थी। "अगर पीले मुखौटे वाली महिला सचमुच मुझे चेतावनी दे रही थी... तो यह राज़ अभी खुलना बाकी है। फ़िलहाल इन्हें यही लगने देना बेहतर होगा कि मैंने लस्सी पी ली है।"

उसने सहज भाव बनाए रखा, जबकि जाम्ब बाबा कुछ क्षण तक उसकी आँखों में देखते रहे, मानो उसके मन को पढ़ने की कोशिश कर रहे हों। फिर अपनी कुर्सी पर थोड़ा आगे झुकते हुए बोले, "देखो आनंद, हमारे आश्रम में बहुत से सेवक और शिष्य सेवा करते हैं। उनमें कई लोगों को गाड़ी चलानी भी आती है। लेकिन मुझे ऐसे चालक चाहिए जो केवल ड्राइविंग ही न जानते हों, बल्कि जिम्मेदारी और अनुशासन के साथ काम भी कर सकें।"

उन्होंने मेज़ पर रखी एक फाइल खोलकर ध्यान से देखा, कुछ क्षण तक उसके पन्ने पलटकर उनका अवलोकन किया, फिर गंभीर स्वर में आगे कहा, "हमारा आश्रम तेजी से विस्तार कर रहा है। अलग-अलग शहरों और

राज्यों में हमारे केंद्र बन रहे हैं। हमें ऐसे विश्वसनीय लोगों की आवश्यकता है जो इस बढ़ते हुए नेटवर्क का हिस्सा बन सकें।"

कुछ क्षण रुककर उन्होंने आनंद की आँखों में देखते हुए कहा, "यदि तुम चाहो तो हमारे साथ जुड़ सकते हो। शुरुआत में तुम्हें आश्रम की एक वैन सौंपी जाएगी। तुम्हारा काम श्रद्धालुओं, अतिथियों और आश्रम की आवश्यक सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुरक्षित पहुँचाना होगा।"

आनंद चुपचाप सुनता रहा। जाम्ब बाबा आगे बोले, "प्रारंभिक अवधि में तुम्हें वेतन नहीं मिलेगा। बदले में लॉकडाउन के दौरान आश्रम में रहने की व्यवस्था, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा और अन्य सभी आवश्यक सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएँगी।"

"यह एक अस्थायी नियुक्ति होगी। जब हमें तुम्हारे कार्य, अनुशासन और आश्रम के प्रति निष्ठा पर पूरा विश्वास हो जाएगा, तब तुम्हें स्थायी सेवक का पद दिया जाएगा। उस समय तुम्हारा **मासिक वेतन**, एक लाख सत्तर हजार रुपये होगा। कोई टैक्स भी नहीं लिया जाएगा। "

यह सुनकर आनंद कुछ क्षण के लिए अवाक रह गया। **एक लाख सत्तर हजार रुपये** ! **मासिक वेतन ! कोई टैक्स भी नहीं लिया जाएगा।** यह उसकी वर्तमान आय से लगभग तीस प्रतिशत अधिक था। उसने मन ही मन सोचा, "इतनी अच्छी तनख्वाह... रहने-खाने का भी खर्च नहीं... ऊपर से सम्मान और स्थायी नौकरी!"

लेकिन अगले ही पल उसके मन में दूसरा विचार कौंधा। "इतनी आसानी से कोई इतना अच्छा प्रस्ताव क्यों देगा?" उसने जाम्ब बाबा की ओर देखा। उनके चेहरे पर गंभीर मुस्कान थी, पर उनकी आँखें जैसे उसके उत्तर का इंतज़ार नहीं, बल्कि उसके मन को पढ़ रही थीं। आनंद के भीतर संशय बढ़ने लगा। "क्या ये सचमुच मुझे आगे बढ़ने का मौका दे रहे हैं... या फिर धीरे-धीरे मुझे अपने जाल में फँसा रहे हैं?"

उसने मन ही मन स्वयं को सावधान किया। "तनख्वाह आकर्षक है... पद भी अच्छा है... लेकिन इस आश्रम के हर नियम के पीछे कोई न कोई रहस्य

छिपा हुआ है। बिना सब कुछ जाने मैं कोई फैसला नहीं करूँगा। कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में किसी गैरकानूनी काम में फँस जाऊँ।"

आनंद मन ही मन विश्लेषण कर रहा था। **"क्या सोचने लगे?"** जाम्ब बाबा ने अचानक कठोर स्वर में पूछा। उनकी आवाज़ में ऐसा दबाव था कि आनंद अनायास ही चौंक उठा।

उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई। जाम्ब बाबा के पीछे खड़े चार-पाँच बलिष्ठ सेवक बिना पलक झपकाए उसी को देख रहे थे। उनके चेहरों पर कोई भाव नहीं था, लेकिन उनकी मुद्रा ऐसी थी मानो आदेश मिलते ही किसी भी हद तक जा सकते हों। एक क्षण के लिए आनंद के मन में भय की लहर दौड़ गई। "अगर मैंने इनका प्रस्ताव ठुकरा दिया... तो कहीं ये लोग मुझे यहीं खत्म न कर दें?"

अगले ही पल उसने स्वयं को संभाला और मन ही मन सोचने लगी, "नहीं... अभी कोई जल्दबाज़ी नहीं करनी है। जब तक गाड़ी ठीक नहीं हो जाती और मैं समीर भैया, श्रेया दीदी और सुनिधि को सुरक्षित यहाँ से बाहर नहीं निकाल लेता, तब तक मुझे इनका विश्वास जीतना होगा।"

उसने मन ही मन निश्चय किया, "फिलहाल यही ठीक रहेगा कि मैं इनका प्रस्ताव स्वीकार करने का नाटक करूँ। जितना समय मिलेगा, उतना इस आश्रम और इसके रहस्यों को समझने की कोशिश करूँगा।"

उसे याद आया कि सबको विश्वास था कि उसने आश्रम की विशेष लस्सी पी ली है। वह उसी के प्रभाव में होने का अभिनय करते हुए हल्का-सा मुस्कुराया और बोला, "कुछ नहीं, बाबा। मैं बस यही सोच रहा था कि मैं यहाँ बिल्कुल नया हूँ। न मुझे यहाँ के रास्तों की जानकारी है और न ही आश्रम के कामकाज की। सब कुछ सीखने और समझने में थोड़ा समय लगेगा।"

उसने सिर झुकाकर विनम्रता से कहा, "अगर मुझसे अनजाने में कोई भूल-चूक हो जाए... या कभी रास्ता भटक जाऊँ... तो आप मुझसे नाराज़ मत होइएगा। मैं पूरी निष्ठा से काम सीखने की कोशिश करूँगा।"

आनंद की बात सुनकर जाम्ब बाबा कुछ क्षण तक उसे परखता रहा, कि वह सच बोल रहा है या केवल अभिनय कर रहा है। कमरे में कुछ पल के लिए ऐसा सन्नाटा छा गया कि घड़ी की टिक-टिक भी साफ सुनाई देने लगी। फिर उनके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान उभरी-"उसकी तुम चिंता मत करो।" उन्होंने शांत स्वर में कहा। "कुछ दिनों तक तुम्हारे साथ तुम्हारे गुरु भाई ज्ञानसुंदर रहेंगे। वही तुम्हें हर काम सिखाएँगे। किस दिन कहाँ जाना है, किसे लाना है, किसे छोड़ना है, कौन-सा सामान किस केंद्र तक पहुँचाना है, सब कुछ वही बताएँगे। तुम्हें केवल उनके निर्देशों का पालन करना होगा।"

जब तुम यहाँ के कामकाज को अच्छी तरह समझ जाओगे और आश्रम के स्थायी सदस्य बन जाओगे, तब मैं तुम्हें प्रत्येक सप्ताह एक फ़ाइल दिया करूँगा। उस फ़ाइल में उस सप्ताह के लिए निर्धारित सभी कार्यों की सूची होगी, जिन्हें तुम्हें समय पर पूरा करना होगा। हर शुक्रवार तुम्हें अपनी प्रगति की रिपोर्ट लेकर मेरे कार्यालय में उपस्थित होना होगा। मैं तुम्हारे द्वारा पूर्ण किए गए कार्यों की समीक्षा करूँगा। उसी समीक्षा के आधार पर तुम्हें अगले सप्ताह के नए दायित्व और असाइनमेंट सौंपे जाएँगे।"

आनंद ने अपनी साँसें सामान्य रखने की पूरी कोशिश की। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था, "यह लोग मेरे साथ इतना अच्छा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? क्या यह केवल अतिथि-सत्कार है... या इसके पीछे कोई और कारण छिपा है?"

आनंद ने सिर झुकाकर कहा, "जो आदेश, जाम्ब बाबा।" इतने में दरवाज़ा खुला, ज्ञानसुंदर अंदर आए। उनके पीछे पीले मुखौटे वाली हरिणी भी थी। हरिणी बिना किसी से कुछ बोले सीधे कमरे के कोने में रखी भारी लोहे की अलमारी के पास पहुँची। उसने चाबी से ताला खोला, भीतर से एक मोटी फाइल निकाली और आदरपूर्वक ज्ञानसुंदर को सौंप दी।

जाम्ब बाबा बोले, "ज्ञानसुंदर, इस फाइल में तुम्हारे, सुजल और आनंद के इस सप्ताह के लिए निर्धारित कार्यों की सूची है। तुम तीनों आपस में समन्वय बनाकर इन सभी कार्यों को पूर्ण करोगे । पूरे सप्ताह आनंद तुम्हारे

साथ रहेगा। इसे हर काम विस्तार से समझा देना।" **"अच्छा... अब यह बैठक समाप्त हुई। बाहर जाकर प्रतीक्षा करो।"**

ज्ञानसुंदर ने दोनों हाथ जोड़कर उत्तर दिया, "जो आदेश, जाम्ब बाबा।" फिर जाम्ब बाबा ने आनंद और सुजल की ओर देखा- "अरे, अब खड़े-खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो? जाओ, अपने काम पर लगो।" "जी, जाम्ब बाबा।"

आनंद बाहर निकल आया। जाते समय उसकी और हरिणी की नज़र एक पल के लिए मिली, लेकिन दोनों ने ऐसे व्यवहार किया जैसे वे एक-दूसरे को जानते ही न हों। बाहर आकर सुजल आनंद को आश्रम की एक सफेद वैन तक ले गया। उसने वहाँ खड़े सेवकों को आवाज़ लगाई,"फाइल के अनुसार पहला लोड तैयार करो। जल्दी!"

कुछ सेवकों ने फ़ाइल के पहले असाइनमेंट के अनुसर मिनटों में ही आश्रम के उत्पादों के बड़े-बड़े डिब्बे, बोरे और कुछ पैकेट वैन में व्यवस्थित ढंग से रख दिए गए। थोड़ी देर बाद ज्ञानसुंदर भी बाहर आए। उन्होंने फाइल खोली, पहला पृष्ठ पढ़ा और फिर अधिकारपूर्ण स्वर में बोले, "चलो आनंद... वैन चलानी आती है न?" आनंद मुस्कुराया। "जी, बहुत अच्छी तरह।" "तो फिर इंजन स्टार्ट करो।" वैन धीरे-धीरे आश्रम का मुख्य द्वार पार करके जंगल के रास्ते पर निकल गई।

आनंद उस रात देर से लौटा था, वह पूरे दिन के काम के बाद बहुत थक गया था और जल्दी से तरोताजा होकर सोना चाहता था। वह अपना दरवाजा बंद ही करने वाला था कि ज्ञान सुंदर सुजल, और अपने कुछ गुंडों के साथ खाने की ट्रॉली लेकर उसके कमरे में जबरन घुस आया। उसने कहा, "खाना खा ले।" ज्ञान सुंदर ने एक दुष्ट मुस्कान के साथ आनंद से उसके सभी सामान और मोबाइल फोन छीन लिए और कहा “यह आश्रम का नियम है, यहाँ आप केवल वही रख सकते हैं जो आपको आश्रम द्वारा दिया जाता है और आपको अपना सामान हमें सौंपते हुए भगवान सुकिंचक को खुद को समर्पित करना होगा”

आनंद ने मन मारकर अपना बैग, मोबाइल फ़ोन, गाड़ी की चाबी और अन्य निजी सामान ज्ञानसुंदर के हवाले कर दिया, ताकि जाम्ब बाबा के शक की

सुई उसकी ओर न घूमे। बाहर से वह शांत दिखाई दे रहा था, लेकिन भीतर उसका मन उथल-पुथल से भरा हुआ था। उसे सबसे अधिक चिंता अपनी पिस्तौल की थी। वह हर हाल में चाहता था कि वह आश्रम वालों के हाथ न लगे और उसके ही पास सुरक्षित रहे।

ज्ञानसुंदर ने आनंद का सारा सामान सुजल के हाथों में सौंप दिया। फिर अधिकारपूर्ण स्वर में बोला, "सुजल, तुम्हें पता है यह सामान कहाँ रखना है। इसके पूरे सामान की अच्छी तरह तलाशी लेना। यदि कोई भी संदिग्ध वस्तु मिले, तो बिना देर किए तुरंत मुझे सूचित करना।"

सुजल ने सिर झुकाकर कहा, "जी, जैसा आदेश।" इसके बाद वह आनंद का सारा सामान लेकर वहाँ से बाहर निकल गया। देखते ही देखते दो सप्ताह बीत गया।

20 जून, 2020, अब आनंद की दिनचर्या लगभग तय हो चुकी थी। सुबह सूर्योदय से पहले उठना। स्नान करके चाय पीना। आश्रम का जामुनी चोगा पहनना। भगवान सुकिंचक की पूजा में उपस्थित होना। प्रसाद लेना। विशेष लस्सी पीने का अभिनय करना, लेकिन अवसर मिलते ही उसे चुपके से फेंक देना। उसके बाद नाश्ता करके वैन के पास पहुँचना। ज्ञानसुंदर के आने पर फाइल के अनुसार अलग-अलग केंद्रों तक श्रद्धालुओं, सेवकों और आश्रम की सामग्री पहुँचाना।

रात लगभग आठ या नौ बजे लौटना। हाथ-मुँह धोकर साफ कपड़े पहनना। सभी के सामने सुकिंचक के बीज मंत्र का जाप करने का अभिनय करना। और फिर अपने कमरे में जाकर सो जाना। इन दिनों में सुजल ने हर छोटे-बड़े काम में उसकी सहायता की, जबकि ज्ञानसुंदर ने उसे आश्रम के कामकाज की पूरी व्यवस्था समझाई।

आनंद का विनम्र स्वभाव, समय की पाबंदी और बेहतरीन ड्राइविंग देखकर आश्रम के अधिकांश लोग उससे प्रभावित थे।

एक शुक्रवार, **26 जून, 2020**, जाम्ब बाबा ने उसे समीक्षा बैठक में बुलाया। ज्ञानसुंदर और सुजल दोनों ने उसकी खुलकर प्रशंसा की। "आनंद मेहनती

है।" "समय का पाबंद है।" "कोई शिकायत नहीं मिली।" "हर काम जिम्मेदारी से करता है।"

दोनों की रिपोर्ट सुनकर जाम्ब बाबा संतुष्ट दिखाई दिए। उन्होंने घोषणा की, **"आज से आनंद आश्रम का स्थायी सदस्य नियुक्त किया जाता है।"** उसे अतिथि कक्ष से हटाकर आश्रम परिसर में एक बेहतर कमरा दे दिया गया। साथ ही सोना के बड़े बेटे विनय को उसकी सहायता और देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया गया।

ऊपर से देखने पर आनंद का जीवन अब काफी सहज और व्यवस्थित प्रतीत होता था। लेकिन उसके भीतर एक बेचैनी लगातार बनी हुई थी। उसे कई दिनों से न तो समीर दिखाई दिया था, न श्रेया और न ही सुनिधि। वे तीनों जैसे नीलकोठी के भीतर कहीं गायब हो गए थे। अब आनंद को नीलकोठी के भीतर प्रवेश की अनुमति नहीं थी। उसकी पहुँच केवल आश्रम, बाहरी भवनों और परिवहन क्षेत्र तक सीमित कर दी गई थी।

एक बात आनंद के मन में पूरी तरह से चल रही थी, “सुजल ने जब मेरा बैग लिया था तब ज्ञान सुंदर के कहने के अनुसर उसने बैग की अच्छी तरह से तलाशी जरूर ली होगी । उसको मेरी पिस्तौल भी मिल गयी होगी। फ़िर अब तक इस बात की चर्चा आश्रम में किसी ने क्यों नहीं की।“

क्या सुजल ने मेरी बंदूक के बारे में किसी को भी कुछ नहीं बताया? क्या वो मेरा रोज़ का लस्सी गिराना जान-बूझकर नज़र अंदाज़ कर रहा है।“ उसने मन ही मन सोचा- “क्या ये सब वो हरिणी को कहने पर कर रहा है? क्या वो दोनो मिल कर इस आश्रम के ख़िलाफ़ कुछ गतिविधि कर रहे हैं? अगर हा तो-क्यों? अगर नहीं तो मेरी पिस्तौल की चर्चा क्यों नहीं हुई?”

अध्याय 11
हवेली के नीचे दफन राज

17 जुलाई 2020, शुक्रवार, आनंद ने आश्रम के हर नियम का पालन करने का अभिनय करते हुए सबका विश्वास जीत लिया था। लगभाग डेढ़ महीने से वो जाम्बबाबा के द्वारा दिया गया हर काम पेशेवर ढंग से और समय पर पूरा कर देता था। उसके काम और आचरणों से जाम्ब बाबा, और ज्ञान सुंदर बेहद खुश थे। अब आनंद **आश्रम का स्थायी सदस्य** बन चुका था।

उसके मन में एक योजना चल रही थी- "अगर किसी तरह मुझे नील कोठी में फिर से प्रवेश मिल जाए, तो मैं समीर और उसके परिवार का पता लगा लूँगा। उसके बाद मौका देखकर आश्रम की वैन में बैठकर रातों-रात अपनी दीदी के घर, रायपुर शहर, भाग जाएँगे। फिर मैं यहाँ समीर के साथ वापस आकर अपनी गाड़ी छुड़ा लूँगा, उसकी मरम्मत करवाऊँगा और सब लोग वापस मुंबई लौट जाएँगे।"

उसी दिन साप्ताहिक समीक्षा बैठक के बाद आनंद ने विनम्रता से कहा, "बाबा, पिछले कई सप्ताह से लगातार सेवा कर रहा हूँ। यदि अनुमति दें तो एक दिन का विश्राम चाहता हूँ। साथ ही... यदि संभव हो तो नीलकोठी के पुस्तकालय में कुछ समय बिताना चाहता हूँ।" जाम्ब बाबा ने भौंहें उठाईं। "पुस्तकालय? वहाँ क्यों?"

आनंद ने आगे कहा "मुझे बचपन से किताबें पढ़ने का शौक है, बाबा। जब भी समय मिलता है, इतिहास, धर्म और दर्शन की पुस्तकें पढ़ता हूँ।"जाम्ब बाबा कुछ क्षण उसे देखते रहे, फिर हल्का-सा मुस्कुराए। "अच्छा है। पढ़ने वाले लोग कम मिलते हैं।" उन्होंने मेज़ की घंटी बजाई। "सुजल!" कुछ ही क्षण में सुजल अंदर आया।

"इसे एक दिन का अवकाश दिया जाए। और..." उन्होंने दराज़ से एक विशेष एक्सेस कार्ड निकाला। "यह अस्थायी प्रवेश-पत्र है। इसे केवल

नीलकोठी के भूतल पर लाइब्रेरी में हर रविवार सुबह दस से शाम पाँच बजे तक ही प्रवेश मिलेगा। ऊपर की मंज़िलों में जाने की अनुमति नहीं है।"

इसके बाद जाम्ब बाबा ने एक अनुमति-पत्र लिखा, उस पर हस्ताक्षर किए और नील कोठी के **गश्त:पो** प्रवेश-अधिकार (एक्सेस) से संबंधित कार्ड पर अपनी मुहर लगाई और सभी दस्तावेज़ सुजल के हाथ में थमा दिया। फिर उसे आदेश दिया, "ये दस्तावेज़ नील कोठी के सुरक्षा प्रहरियों को दे देना। उनसे प्राप्ति की मुहर (रिसीव्ड स्टाम्प) लगवा लेना और उसके बाद यह एक्सेस आईडी कार्ड आनंद को सौंप देना।"

इसके बाद जाम्ब बाबा ने अपनी पैनी निगाहें आनंद पर टिकाईं और गंभीर स्वर में चेतावनी देते हुए बोले, "याद रखना, नील कोठी में प्रवेश का यह विशेष अधिकार केवल ज्ञानसुंदर, हरिणी, सुजल और अब तुम्हें दिया जा रहा है। इस अधिकार का किसी भी प्रकार का दुरुपयोग करने की भूल मत करना। यदि तुमने कोई भी गलत हरकत की, तो उसका परिणाम इतना भयावह होगा कि उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।"

आनंद ने सिर झुकाकर शांत स्वर में उत्तर दिया, "जैसी आपकी आज्ञा, जाम्ब बाबा। मैं आपकी हर बात का अक्षरशः पालन करूँगा और इस विश्वास को कभी टूटने नहीं दूँगा।" सुजल ने एक क्षण के लिए आनंद की ओर देखा, फिर जाम्ब बाबा से बोला, "जाम्ब बाबा, मैं आनंद के लिए पुस्तकालय का प्रवेश-अधिकार (लाइब्रेरी एक्सेस) दिलवा देता हूँ। साथ ही, हरिणी दीदी से कहकर इसकी प्रत्येक रविवार की साप्ताहिक छुट्टी की व्यवस्था भी करवा दूँगा। अब हमें आज्ञा दीजिए।"

जाम्ब बाबा ने गंभीर भाव से दोनों की ओर देखा, फिर हल्के से सिर हिलाकर उन्हें जाने की अनुमति दे दी। दोनों ने आदरपूर्वक प्रणाम किया और कार्यालय से बाहर निकल गए।

एक दिन आनंद आश्रम के प्रांगण से गुजर रहा था। मुख्य मंडप में श्रेया बैठी थी। वह शांत भाव से सुकिंचक की पूजा कर रही थी। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। आँखें खुली थीं...लेकिन उनमें पहले वाली जीवंतता गायब थी। उसे लगा जैसे श्रेया किसी गहरे मानसिक प्रभाव या सम्मोहन में

हो। आनंद का मन हुआ कि उसे आवाज़ दे-"श्रेया दीदी..." पर अगले ही क्षण उसने स्वयं को रोक लिया। "नहीं... अभी नहीं। यदि किसी को संदेह हो गया तो सब समाप्त हो जाएगा।"

19 जुलाई 2020, रविवार दोपहर में वह नीलकोठी के विशाल पुस्तकालय पहुँचा। ऊँची-ऊँची लकड़ी की अलमारियाँ...दुर्लभ ग्रंथ...पुरानी पांडुलिपियाँ...और सैकड़ों वर्षों की धूल समेटे ज्ञान का संसार। वह एक पुस्तक पलट ही रहा था कि पीले मुखौटे वाली हरिणी अंदर आई। उसने ऐसे व्यवहार किया मानो किसी पुस्तक की तलाश कर रही हो। कुछ देर बाद वह पुस्तकालय के कोने में रखी एक विचित्र पत्थर की मूर्ति के पास पहुँची। उसने बिना किसी को देखे हल्का-सा हाथ हिलाया। आनंद समझ गया कि संकेत उसी के लिए है। वह धीरे-धीरे वहाँ पहुँचा।

हरिणी ने होंठ तक नहीं खोले।सिर्फ़ सांकेतिक भाषा में इशारा किया- "कल रात... एक बजे..."फिर उसने मूर्ति की ओर संकेत किया और बाहर निकलते समय अपने हाथ से चाबियों का एक गुच्छा ऐसे गिराया कि वह आनंद के पैरों के पास आकर रुका। बिना पीछे देखे वह पुस्तकालय से बाहर चली गई। आनंद जूते के फीते बांधने का बहाना करते हुए नीचे झुका और उसने चाबियों का गुच्छा उठा लिया। ये चाबियां नीलकोठी और लाइब्रेरी के दरवाज़े खोलने के लिए थीं।

हर कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात को लाल माई नीलांजन कक्ष में, जोनाथन के शरीर में पेटवा दानव को स्थापित करके उसकी दानव पूजा और सेवा किया करती थी। जवान लड़कियों की बलि देकर उनके रक्त से पेटवा को संतुष्ट करती थी।

किसी को भी इस मासिक अनुष्ठान को देखने की अनुमति नहीं दी जाती थी। सबको लाल माई की आज्ञा पालन करके जाम्बु रस पीकर सुकिंचक नाथ प्रभु का ध्यान करके सोना था। पेटवा दानव ने हर महिने चलने वाले इस अनुष्ठान को, लाल माई से तब तक गुप्त रखने को कहा था जब तक, पेटवा को एक जिंदा इंसान के शरीर में हमेशा के लिए स्थापित करके उसको पुन: जीवित ना कर दिया जाए।

20 जुलाई 2020 कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात, लगभग साढ़े बारह बजे। पूरा परिसर अँधेरे में डूबा था। एक सुरक्षा कर्मी ऊँघ रहा था। सभी लोग उस दिन जाम्बुरस के प्रभाव में बेसुध सो रहे थे।

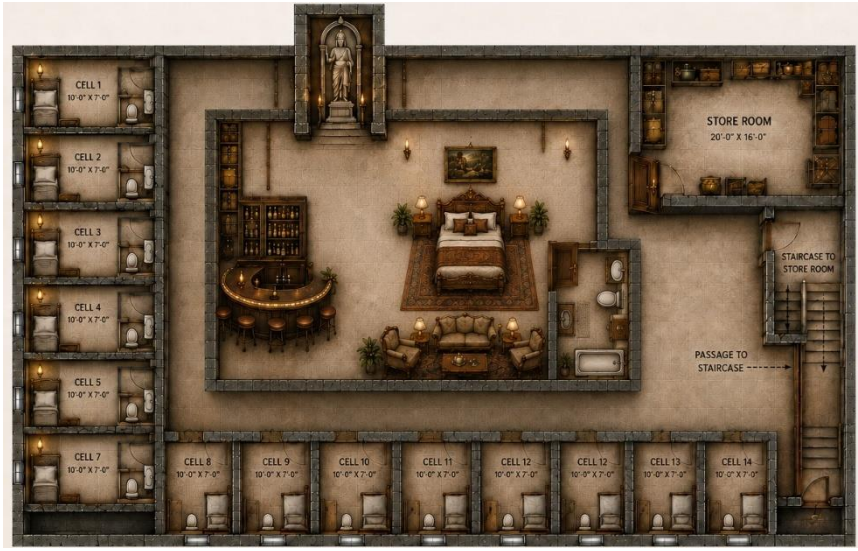
आनंद एक टॉर्च लेकर अपने कमरे से बाहर निकला और छाया की तरह नीलकोठी तक पहुँचा। उसने हरिणी के द्वारा दिए हुए चाबीयों से नीलकोठी का मुख्य दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गया। फिर वो कोठी के गलियारे से होते हुए, बिना कोई आवाज़ किये लाइब्रेरी का दरवाज़ा खोल के उसमें घुस गया।

पुस्तकालय वैसा ही शांत था। उसने टॉर्च जलाई और हरिणी के बताए अनुसार मूर्ति को धक्का दिया। भारी पत्थर धीरे-धीरे सरका। टॉर्च की रोशनी में नीचे जाती हुई संकरी सीढ़ियाँ दिखाई दीं। ठंडी हवा का एक झोंका उसके चेहरे से टकराया।

वह सावधानी से नीचे उतर गया। लाइब्रेरी से उतरती हुई सीढ़ियाँ, दो बंद दरवाजों पर ख़तम होती थी। एक दरवाज़े पर दो आँखों के जैसे झरोखे बने थे, जिनका इस्तमाल एक ऐशगाह के अंदर झाँकने के लिए बना था। दुसरा दरवाजा एक गलियारे में खुलता था |

वो गलियारा किसी गुप्त तहखाने का था जो कि नीली कोठी के ग्राउंड फ्लोर के ठीक नीचे बना था। गलियारे की एक ओर ऐशगाह की दीवार थी और दूसरी ओर ढेर सारे छोटे-छोटे कमरे बने थे जो बंद थे और जो जेल की कोठरियों जैसे लग रहे थे। गलियारा, सभी कमरों को जोड़ने वाला एक बीच का रास्ता था।

तहखाने में एक स्टोर रूम था जो बक्सों और कई दूसरी चीज़ों से भरा हुआ था। साथ ही, एक गार्ड रूम जहां 2-3 सुरक्षा कर्मचारियों के बैठने की व्यवस्था थी।



तहखाने के बाहर निकलने के लिए सिर्फ दो रास्ते थे। एक लाइब्रेरी वाला, जिसकी सीढ़ियों पर जमी धूल से उसे ये पता चला कि शायद इस का इस्तमाल कोई नहीं करता था। क्योंकि हरिणी के अलावा सिर्फ आनंद को ही अब इस रास्ते का पता है। दूसरा रास्ता नीलकोठी की पिछले हिस्से में बने बगीचे में खुलता था। जहां से दहिने तरफ मुड़ कर बगीचा और गौशाला को पार करके आश्रम के प्रांगण में प्रवेश मिल जाता था।

पूरा कॉम्प्लेक्स ज़मीन के नीचे बना था, लेकिन छत के पास खिड़कियाँ बनाई गई थीं जो ज़मीन के ऊपर थीं। यह बनावट कॉम्प्लेक्स में ताज़ी हवा के आवा-आवाजाही के लिए की गई थी।

उसने ऐशगाह के दरवाज़े पर बने आंखो जैसे छोटे झरोखों से ऐशगाह के अंदर झांक के देखा तो उसकी आंखे चौंधिया गई | वो जोरोखे ऐशगाह की एक मूर्ति (जिसके पीछे से आनंद ऐशगाह के अंदर झाँक रहा था) की आंखें थी। ऐशगाह का कमरा बेहद खूबसूरत बना था और वह सभी आधुनिक सुविधाओं से पूरी तरह सुसज्जित था ...विदेशी शराब की बोतलें...महँगा फर्नीचर.....और बीच में एक विशाल पलंग/बेड, जिसके के ऊपर हरिणी बिना कपड़ों के, नग्न लेटी हुई थी। चेहरे पर अभी भी पीला मुखौटा लगा

था। वह किसी दुर्घटना में नहीं जली थी। उसकी पहचान गुप्त रखने के लिए उसका चेहरा ढँक कर रखा गया था।

उसके शरीर को देखकर आनंद बता सकता था कि वह एक बहुत ही सुंदर, 32-33 साल की युवा यूरोपीय महिला थी। उसके बाल लंबे और लाल थे, त्वचा मुलायम, और चमकदार थी। वह बहुत गोरी, किसी गढ़ी हुई अप्सरा जैसी दिखती थी और जाम्ब बाबा की चहेती रखैल रही होगी। उसकी गर्दन सुराहीदार, स्तन सुडौल और गोल थे, और निप्पल लाल-भूरे रंग के थे।

कुछ देर बाद हरिणी बिस्तर से उठकर कमरे में ही बने मिनी बार तक जाती है और दो गिलासों में बर्फ और शराब डालकर डालकर 'ऑन द रॉक्स' पटियाला पेग बनाती है। वह बार-बार झिझकते हुए मूर्ति की ओर ही देख रही थी। फिर वह दोनों गिलास लेकर सोफे के पास सेंटर टेबल पर रख देती है और किसी के आने का इंतज़ार करने लगती है।

उसकी टांगे लंबी- लंबी और आकर्षक थीं। उसका फ़िगर एकदम 'आवर-ग्लास' जैसा था,उसके नितंब मुलायम और भरे-भरे थे; जब वह कमरे में नज़ाकत से चलती थी, तो वे हल्के-हल्के हिलते थे। मूर्ति के पीछे खड़ा आनंद, हरिणी के रूप-सौंदर्य को देखकर मंत्रमुग्ध आकर्षित हो गया। उसने अभी तक हरिणी का चेहरा नहीं देखा था, लेकिन जितना भी वह देख पा रहा था, उसे देखकर उसने मन ही मन सोचा, **"इससे सुंदर औरत मुझे दुनिया में कहीं और नहीं मिलेगी।"**

कुछ ही क्षण बाद जाम्ब बाबा, दो अन्य सेविकाओं के साथ कमरे में प्रवेश करते हैं। हरिणी, जाम्ब बाबा का स्वागत करने के लिए उसके पास जाकर खड़ी हो जाती है। जाम्ब बाबा उसके मुख से मुखौट। निकालकर फेंक देता है और जोश में आकर उसके मुलायम होंठों को चूमता है, उसे अपनी बाहों में उठाकर बिस्तर पर लिटा देता है।

फिर वह अपने कपड़े उतार कर हरिणी के ऊपर चढ़कर उसके जिस्म को चूमने, चाटने, और मसलने लगता है। जाम्ब बाबा कुछ देर तक हरिणी के साथ किसी जानवर की तरह सम्भोग करता है, हरिणी भी बेबस होकर

उसको सब कुछ करने देती है, जैसा वो उसकी गुलाम थी ।हरिणी से यौन संतुष्टि प्राप्त करने के बाद जाम्ब बाबा सोफ़े पर जाकर बैठ जाता है और शराब पीकर, भद्दे गाने बजाकर सेविकाओं का नग्न डांस देखता है । एक घंटे की मस्ती के बाद बाबा संतुष्टि के साथ गहरी नींद सो जाता हैं।

जो दृश्य आनंद ने देखा, उसने उसके पैरों तले ज़मीन खिसका दी। आश्रम की पवित्रता का मुखौटा उस कमरे के भीतर पूरी तरह उतर चुका था। वहाँ चल रही गतिविधियाँ जाम्ब बाबा के सार्वजनिक व्यक्तित्व से बिल्कुल विपरीत थीं। आनंद स्तब्ध रह गया।

"तो यह है इस आश्रम का असली चेहरा..."तभी उसका पैर अँधेरे में रखे एक लकड़ी के बक्से से टकरा गया। ठक! आवाज़ गूँज उठी। आनंद का दिल तेजी से धड़कने लगा। उसी क्षण कमरे के भीतर बैठी हरिणी ने झटके से सिर घुमाया। उसकी नज़र सीधे उसी झरोखे पर आकर ठहर गई। कुछ क्षण तक दोनों की आँखें मिली रहीं। फिर हरिणी ने बिना किसी और का ध्यान आकर्षित किए धीरे से अपनी उँगली होंठों पर रखी। मानो कह रही थीं, " चुप... अभी नहीं... समय आने दो।"

आनंद बिना साँस लिए अँधेरे में स्थिर खड़ा रहा, जबकि कमरे के भीतर मौजूद जाम्ब बाबा और सेविकायें अपने नशे के संसार में इतने डूबे थे कि उन्हें उस हल्की आवाज़ का आभास भी नहीं हुआ। सेविकाएं शराब के नशे में जाम्बबाबा के बिस्तर में गिरकर सो जाती है।

वहीं हरिणी अपना मुखौटा दोबारा लगा कर, तुरंत अपने कपड़े पहन लेती है। उसके बाद बागीचे वाले रास्ते से छिप कर अपने नील गृह में जाके सो जाती है । आनंद अब मूर्ति के पीछे से निकलकर तहखाने के गलियारे चला जाता है ।

आनंद तहखाने में चारों ओर खोजबीन करता है और पता है कि वहाँ बंद कमरे में लोगों को कैद करके रखा गया था और वे दर्द से रो रहे थे। वहाँ तीन रखवाले मौजूद थे जो शराब के नशे से बेहोशी में सो रहे थे।

उन कोठरियों में पुरुष, महिलाएँ और यहाँ तक कि बच्चे भी बंद थे। हर कोठरी के दरवाज़े पर एक शीशे की खिड़की थी ताकि रखवाले अंदर झाँक सकें और कैदियों की हालत देख सकें। हर कोठरी में एक मद्धम बल्ब की रोशनी थी। कैदियों को बहुत कम खाना और पानी दिया जाता था। अपनी कोठरियों की दीवारों से जंजीरों में बँधे, ये कैदी अपने अनिश्चित भाग्य की प्रतीक्षा कर रहे थे।

आनंद ने तहखाने में और खोजबीन की और पाया कि, तहखाने के स्टोर रूम में लाल माई और उसके संप्रदाय के शिकार हुए लोगों के लगेज बैग, कपड़े और अन्य सामान रखे थे। वहाँ उसने अपना लगेज बैग ढूँढ लिया, जिसमें अभी भी उसकी बंदूक थी। लाल माई संप्रदाय का स्थायी सदस्य बनाए जाने के समय वह लगेज बैग ज्ञानसुन्दर ने उससे ले लिया था। आनंद ने अपना लगेज बैग वहीं छोड़ दिया, बंदूक उठाई और चुपचाप बिना किसी के ध्यान में आए अपने कमरे में वापस चला गया।

अपने कमरे में पहुंच कर आनंद मन ही मन सोचने लगता है – "मुझे तो पहले से ही शक हो रहा था। आश्रम की साध्वियां और सेविकाएं कुछ ज्यादा ही सुंदर हैं। जंाब बाबा अपने खाली समय में इनके साथ बैठ कर **लूडो तो** नहीं खेलता होगा।"

"शायद हरिणी को लाल माई की देहरी में ज़बरदस्ती गुलाम बना के रखा गया है, तभी वो आश्रम के कुछ लोगो से मिलकर भगने का प्लान बना रही होगी। उसको शायद भगने के टाइम मेरी ज़रूरत होगी, इसलिए उसने बड़ी चालाकी के साथ मुझे जाम्ब बाबा की असलियत बता दी ।अवसर मिलते ही मैं उससे बात करूँगा, उसकी अवश्य मदद करूँगा। शायद इसीलिये मेरी बंदूक की चर्चा सुजल ने किसी से भी नहीं करी होगी।"

अध्याय 12

ज्ञान सुंदर का कौफनाक अंत

15 अगस्त 2020 सुबह 7-8 बजे, हरिणी की अनुचरियाँ, जो उसकी कुटिया में उसी के साथ रहती थीं, सुबह की पूजा के लिए नहा धोकर कुटिया से निकल चुकी थीं। उस दिन राष्ट्रीय अवकाश होने के कारण, हरिणी अपने कमरे में ही आराम कर रही थी।

जब आसपास कोई नहीं था, तब सुकेशिनी हरिणी से मिलने के लिए नील गृह कुटिया तक आई और उसका दरवाज़ा खटखटाने लगी। हरिणी अपने बिस्तर से तुरंत उठी और उसने दरवाज़ा खोलकर सुकेशिनी को अंदर बुला लिया। सुकेशिनी ने दरवाज़ा बंद किया और बोली, "हरिणी दीदी..." हरिणी ने उसकी ओर देखकर कहा, "अरे सुकेशिनी, आज अवकाश के दिन इतनी सुबह मेरे पास आई हो ? क्या बात है? क्या तुम किसी परेशानी में हो? मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

सुकेशिनी बोली, " हाँ, हरिणी दीदी मैं बहुत परेशानी में हू । ज्ञानसुंदर मेरे साथ सोना चाहता है। मैं सोना और चांदी की तरह ऐसा नहीं कर सकती। मैं विवाहित हूँ और मेरे पति अभी जीवित हैं।"

हरिणी ने पूछा, "अच्छा, तुम्हारे पति कहाँ हैं?" सुकेशिनी ने उत्तर दिया, "वे इस देहरी के एक निष्ठावान सेवक और कुशल चालक हैं। वे नीलांजन देव और गुरु भाई कुंदन को नेपाल छोड़ने गए थे। लॉकडाउन के कारण वे अन्य लोगों के साथ वहीं फँस गए हैं।"

हरिणी ने गंभीर स्वर में पूछा, "तुम्हें इसका इतना विश्वास कैसे है?" सुकेशिनी चौंककर बोली, "आप यह क्या कह रही हैं, हरिणी दीदी?" हरिणी ने पहले यह सुनिश्चित किया कि आसपास कोई सुन नहीं रहा है। फिर धीमे स्वर में बोली, "वे तीनों अब इस दुनिया में नहीं हैं। नीलांजन, कुंदन और

तुम्हारे पति शिवप्रसाद... लाल माई ने उन सबकी हत्या करवा दी।क्योंकि वे लोग इस देहरी का पर्दाफाश करने वाले थे।"

"दीदी... आप क्या कह रही हैं?" हरिणी ने उसकी ओर देखते हुए पूछा, "क्या तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं है?" सुकेशिनी बोली, "पूरी देहरी में यदि मैं किसी पर विश्वास कर सकती हूँ, तो वह केवल आप हैं, हरिणी दीदी। आपने हमेशा मेरा भला ही किया है।"

हरिणी ने कुछ क्षण चुप रहने के बाद धीमे स्वर में कहा, "15 मार्च 2020 की बात है। मैंने जाम्ब बाबा और ज्ञान सुंदर को आपस में बात करते हुए सुना था। वे लोग गैरकानूनी तरीके से 13 छोटी लड़कियाँ उठाकर लाए थे। वह सुकिनचक नाथ कोई देवता नहीं, बल्कि रक्त का प्यासा दानव है।" लाल माई उन बच्चों का बलिदान **अप्रैल में, कृष्ण पक्ष की अमावस्या** के दिन होने वाले सुकिनचक नाथ के गुप्त अनुष्ठान में करने वाली थी।

इतने बड़े अपराध को रोकने की कोशिश में मैंने अपने वरिष्ठ, गुरु-भाई कुंदन को सब कुछ बता दिया था। गुरु-भाई कुंदन, लाल माई के पति नीलांजन देव और तुम्हारे पति शिव प्रसाद के साथ नेपाल जाने वाले थे। हमने योजना बनाई कि जिस ट्रक में आश्रम का सामान नेपाल ले जाया जाएगा, उसी में इन बच्चों को भरकर ले जाएँगे और आगे जाकर उन्हें पुलिस के हवाले कर देंगे।

कुंदन भाई ने इस बारे में एक पत्र लिखकर पुलिस इंस्पेक्टर अक्षय सोनी को इत्तिला कर दी थी। फिर 23 मार्च 2020 की रात, जब लाल माई अपने अनुष्ठान में व्यस्त थी, उसी रात सभी बच्चों को ट्रक में डालकर वे लोग निकल गए। नीलांजन भी इसमें हमारी मदद कर रहे थे।

लेकिन अक्षय सोनी गद्दार निकला। वह लाल माई का खरीदा हुआ भ्रष्ट पुलिस अधिकारी है। उसने इस बारे में लाल माई को बता दिया। 23 मार्च की रात गुरु-भाई कुंदन, शिव प्रसाद और नीलांजन बच्चों को ट्रक में भरकर निकल गए। काफ़ी आगे जाने के बाद जब उन्हें अक्षय सोनी नहीं मिला, तो वे समझ गए कि मामला गड़बड़ है। उन्होंने भागने की कोशिश की, लेकिन जाम्ब बाबा, ज्ञान सुंदर और उनके गुंडों ने उनका रास्ता रोक

लिया और गोलीबारी शुरू कर दी।गुरु-भाई कुंदन और नीलांजन ट्रक से उतरकर उनका वीरता से सामना करने लगे और शहीद हो गए।

तुम्हारे पति, बच्चों को रंगनाथ स्वामी आश्रम में सुरक्षित छोड़कर ट्रक को दूसरी दिशा में भगाकर ले गए। रास्ते में ज्ञान सुंदर ने उन्हें पकड़ लिया और मार डाला। यह सब मुझे रंगनाथ स्वामी आश्रम की साध्वी हिमनदा देवी ने बताया था। उन तीनो को मरवाने के बाद, अक्षय सोनी की मदद से लाल माई ने ये अफ़वाह फैला दिया कि वो तीनो नेपाल में फंस गए हैं। जबकी उनकी लाशें शुकासुर खा चुका होगा।

सबूत के तौर पर यह चिट्ठी देखो, जिसे कुंदन भाई ने इंस्पेक्टर अक्षय सोनी को लिखा था। इस चिट्ठी पर गुरु-भाई कुंदन, तुम्हारे पति और नीलांजन देव के हस्ताक्षर भी हैं। "मैंने यह चिट्ठी जाम्ब बाबा की अलमारी से चुराई थी।"

सुकेशिनी ने कहा, "हरिणी दीदी। मुझे पढ़ना लिखना तो नहीं आता, लेकिन मैं अपने पति की हस्ताक्षर पहचानती हूं। मुझे आपकी बात पर भरोसा है"। ये कहकर वो रो पड़ी आई फिर हरिणी की तरफ देखकर गुस्से में, काँपते स्वर में उसने कहा-" मैं लाल माई और उसके गिरोह को जिंदा जला दूंगी..."।

हरिणी ने उसे संभाला, चुप कराया और कहा, "सुनो, तुम शिव प्रसाद की विधवा नहीं सुहागन ही बनी रहना, लाल माई और उसके गिरोह के लोगों को ये ना पता चले कि तुम सच जान चुकी हो। ये बात मैंने तुमको पहले इसलिए नहीं बताई क्योंकि मेरे पास लोगो तक खबर पहुँचाने के लिए कोई नहीं है। ज्ञानसुंदर और आश्रम की आंतरिक सुरक्षा के लिए उसके द्वारा बनाई गई गश्ती पुलिस फ़ोर्स **'गश्त:पो'** के आदमी आश्रम के सभी अन्य सेवकों, सेविकाओं, साधकों, साध्वियों एवं श्रद्धालुओं पर अपनी पैनी नज़र रखते हैं।

हरिणी कुछ देर चुप रही, जैसे मन ही मन किसी बात पर विचार कर रही थी। फिर गंभीर स्वर में बोली, "लाल माई और जाम्ब बाबा के बाद ज्ञान सुंदर इस देहरी का सबसे ताकतवर और खतरनाक व्यक्ति है। जब तक

वह ज़िंदा है, **'गश्त:पो'** ठीक से काम करता रहेगा, तब तक कोई कुछ नहीं कर सकता। अगर तुम उसके मन के अनुसार नहीं चलोगी, तो तुम्हारी और सलोनी की जान ख़तरे में पड़ सकती है।"

सुकेशिनी की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने घबराई हुई आवाज़ में पूछा, **"फिर मैं क्या करूँ, हरिणी दीदी? ज्ञान सुंदर के आगे समर्पण ... सलोनी के साथ भाग जाऊँ...?"**

"मेरे पास एक रास्ता है, मैं तुम दोनों को बचा सकती हूँ। लेकिन तुम्हें वैसा ही करना होगा जैसा मैं कहूँगी।" सुकेशिनी ने दृढ़ स्वर में कहा, "जैसा आपका आदेश होगा, मैं वैसा ही करूँगी।"

तब हरिणी जल्दी से एक कागज़ पर कुछ बातें लिखकर उसे एक फ़ाइल के बीच में रख देती है, फिर अपनी योजना सुकेशिनी के कान में फुसफुसाकर बताती है।

"अब तुम अपने कमरे में जाकर सलोनी और सुनिधि की देखभाल करो। और हाँ, यह फ़ाइल ले जाकर सुजल को दे देना। उससे कहना कि मैंने उसे इसी समय गौशाला में बुलाया है।"

अंत में हरिणी चेतावनी भरे स्वर में सुकेशिनी से कहती है, "यह बात किसी को मत बताना और कोई गलती मत करना। नहीं तो तुम और तुम्हारी सलोनी दोनों खतरे में पड़ जाओगी।"

सुकेशिनी अपने कमरे में जाने से पहले सुजल से मिलती है। वह उसे फ़ाइल देती है और उसी समय हरिणी से मिलने जाने के लिए कहती है। सुजल फ़ौरन गौशाला चला आता है और हरिणी का इंतज़ार करने लगता है।

कुछ देर बाद हरिणी गौशाला में आती है और सुजल से कहती है, "मुझे थोड़ा-सा गाय का दूध दुहकर दोगे क्या? आज देवी महारांध्वी ने आश्रम का भोजन-कक्ष बंद करवा दिया है। फ्रिज का एक्सेस भी नहीं मिल रहा। मुझे अपने चेहरे के इलाज के लिए ताज़ा दूध चाहिए था।"

सुजल पूछता है, "किस गाय का दूध निकालकर दूँ, दीदी?"

"सुरभि का। उसने अभी हाल ही में बच्चा दिया है। वह जो थोड़ी दूर बँधी है..."

दोनों सुरभि गाय के पास जाते हैं और उसके थन के पास नीचे बैठ जाते हैं। सुजल फुसफुसाकर पूछता है, "आपका चेहरा तो बिल्कुल भी जला हुआ नहीं है, दीदी। आप जैसी बला की खूबसूरत स्त्री आज अपने चेहरे का इलाज करवाने के लिए मुझे क्यों बुला रही हैं?"

हरिणी धीमे स्वर में बोली, "ज्ञान सुंदर मेरे पीछे-पीछे आ रहा है। जब वह तुमसे पूछेगा, तो तुम उससे यही कहना है। उसे मेरे चेहरे का सच मालूम नहीं है। सबकी तरह वह भी यही सोचता है कि मेरा चेहरा जला हुआ है। इसीलिए मैं यह पीला मुखौटा पहनती हूँ।"

फिर उसने गंभीर होकर कहा,"अच्छा, अब काम की बात सुनो। मैंने जो फ़ाइल तुम्हें भेजी है, उसके बीच के पन्ने में एक योजना लिखी है। उसे **20-21 अगस्त 2020** की रात को पूरा करना होगा। हाँ, उसे पढ़ने के बाद योजना का कोई सबूत नहीं रहना चाहिए।"

हरिणी ने आगे कहा, "इस काम में सुकेशिनी तुम्हारी मदद करेगी। अगर ज्ञान सुंदर को मारने में हम सफल हो जाते हैं। तो हमारा बदला पूरा हो जाएगा। तुम्हें याद है न, तुम्हारे पहले प्यार को मारने में तुम्हारे सगे बड़े भैया का हाथ था?"

सुजल गुस्से से भर गया-"मैं तारिका की मौत कैसे भूल सकता हूँ, दीदी? अगर आपने मुझे नहीं रोका होता, तो यह काम मैं अपने हाथों से कब का अंजाम दे चुका होता..."

हरिणी ने गंभीर स्वर में कहा, "मेरे पास समय कम है, सुजल। लेकिन एक बात समझ लो। काम ऐसा करो कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। ज्ञान सुंदर की मौत से किसी के मन में शक पैदा नहीं होना चाहिए। ख़ासकर लाल माई के मन में तो बिल्कुल नहीं ।"

फिर उसने योजना का अगला हिस्सा बताया,"योजना के अनुसार तुम्हें जंगल से एक साँप पकड़ना होगा और उस रात ज्ञान सुंदर के कमरे में

छोड़ना होगा। आज रात सुकेशिनी तुम्हें ज़हर की एक शीशी भी देगी, जिसे तुम्हें अपने भैया ज्ञान सुंदर की ख़ास शराब की बोतल में मिला देना है। अब दूध दुहने का नाटक करो।"

तभी ज्ञान सुंदर गौशाला में प्रवेश कर गया-"आप दोनों आज आराम करने की जगह यहाँ गौशाला में क्या काम कर रहे हैं?"

वह कुछ कदम आगे बढ़ा और बोला, "क्या आप दोनों को मालूम नहीं कि छुट्टी वाले दिन बिना अनुमति के आश्रम परिसर में घूमना मना है?"

सुजल ने बाल्टी में दुहे गए दूध की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह दूध हरिणी दीदी को अपने चेहरे के इलाज के लिए चाहिए था..."

हरिणी तुरंत बोली,"**हाँ**, ज्ञान सुंदर जी। मैं तो आपको ही बोलने वाली थी। आप जैसे कुशल व्यक्ति मेरी मदद जल्दी कर देते। देखिए न, आपका छोटा भाई कितना धीरे-धीरे दूध निकाल रहा है..."

ज्ञान सुंदर हरिणी के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हो गया। "चल रे सुजल, हट जा। मैं दूध निकालकर देता हूँ। तू अपने कमरे में चला जा।"

"जी, भैया।" सुजल फ़ौरन वहाँ से चला गया। ज्ञान सुंदर ने आधी बाल्टी दूध निकाला और उसे एक दूध के कंटेनर में डालकर हरिणी को दे दिया। फिर मुस्कुराते हुए बोला, "हरिणी देवी, आपकी आवाज़ इतनी मीठी है कि लगता है आप कोई अप्सरा होंगी। जाम्ब बाबा भी आपके साथ कई रात वक़्त बिताते हैं।"

फिर उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा, "क्या सचमुच आपका चेहरा जला हुआ है या गाय के दूध के कमाल से ठीक हो गया?"

हरिणी ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "मेरा चेहरा जला हुआ है। यह ख़ुद लाल माई और जाम्ब बाबा कहते हैं।जो काम दिन में अधूरा रह जाता है, उसे मैं जाम्ब बाबा के साथ रात में पूरा करती हूँ। इस ओवरटाइम के लिए मुझे अलग से पैसे दिए जाते हैं। अगर आपको इससे कोई आपत्ति है, तो आप जाम्ब बाबा और लाल माई से स्वयं बात कर लीजिए।" "

फिर उसने जानबूझकर ज्ञान सुंदर को उकसाते हुए कहा, "अगर आप कहेंगे तो मैं अपना मुखौटा उतारकर आपको दिखा देती हूँ। फिर मत कहिएगा कि आपका दिन ख़राब हो गया..."

इतना कहकर वह अपना हाथ मुखौटे की ओर ले जाने लगी। ज्ञान सुंदर तुरंत पीछे हट गया। "माफ़ कीजिएगा, हरिणी देवी। मेरा आपको दुख देने का कोई इरादा नहीं था। **गश्त:पो** के मुखिया होने के नाते सुरक्षा की दृष्टि से मैं लोगों से प्रश्न करता रहता हूँ। अब आप आराम से अपनी कुटिया में चली जाइए।"

हरिणी दूध लेकर फ़ौरन वहाँ से चली गई। ज्ञान सुंदर ने गौशाला की पूरी तलाशी ली। जब उसे कोई संदिग्ध सामग्री या व्यक्ति नहीं मिला, तो वह भी वहाँ से निकल गया।

अपने कमरे में पहुँचकर हरिणी ने राहत की साँस ली-**"बाल-बाल बच गई..."**

उधर सुजल ने हरिणी द्वारा दी गई फ़ाइल में से योजना वाला कागज़ निकाला। उसने उसे ध्यान से पढ़कर योजना याद कर ली और फिर उस कागज़ को नष्ट कर दिया।

सुजल को अपनी दिवंगत प्रेमिका, तारिका चावला और छह महीने पहले उसके साथ घटी वारदात याद आ गई। सुजल और तारिका, देहरी में सबसे सुंदर और युवा जोड़ा थे। दोनों हमउम्र थे और 25-26 साल के थे।

एक साल पहले, तारिका देहरी में लाल माई के **सुकिंचक कृपा पब्लिकेशंस** में संपादक (Editor) का काम करने आई थी। सुजल, जो देहरी यूथ विंग का नेता था, पहली मुलाकात में ही उससे प्रेम कर बैठा था। तारिका भी सुजल से प्रेम करती थी।

उनके इस प्रेम-प्रसंग के बारे में देहरी में किसी को पता नहीं था। लेकिन एक दिन हरिणी ने उन दोनों को नील कोठी की लाइब्रेरी में **चुंबन करते हुए** देख लिया। इसके बाद हरिणी ने उन दोनों के अनुरोध पर उनके इस प्रेम प्रसंग को गुप्त रखने का वादा किया।

14 फरवरी 2020, यानी वैलेंटाइन डे की रात, तारिका सुजल से गुप्त रूप से मिलकर लौट रही थी। तभी ज्ञान सुंदर ने उसे पकड़ लिया और जाम्ब बाबा के पास तहखाने में भेज दिया।

थोड़ी-बहुत पूछताछ के बाद जाम्ब बाबा ने तारिका के साथ शराब के नशे में बलात्कार किया और उसे तिगुनी सैलरी पर अपनी रखैल बनने का प्रस्ताव दिया। तारिका के रोने चिल्लाने और पुलिस में शिकायत कर ने की धमकी सुनकर जाम्ब बाबा गुस्से से पागल हो गया। उसने तारिका के साथ दोबारा बलात्कार किया, फिर ज्ञान सुंदर को उसको ठिकाने लगाने बोल दिया।

ज्ञानसुंदर तारिका का मुँह बंद करके उसे घसीट कर जंगल में ले गया, जहाँ ज्ञान सुंदर और **गश्त:पो** के गुंडो ने भी बारी बारी से तारिका के साथ सामूहिक बलत्कार किया । फ़िर उन लोगों ने लहू लुहान और बेहोश तारिका को मरा हुआ समझ कर वही छोड़ दिया। अगली सुबह ज्ञान सुंदर ने देहरी में ये अफ़वाह फैला दी कि शुकासुर तारिका को उठा ले गया है और **गश्त:पो** की बहुत तलाश के बाद भी उसकी लाश नहीं मिली ।

तारिका किसी तरह जंगल में छिप कर कुछ दिन जिंदा रही। उधर हरिणी और सुजल उसे ढूंढते हुए जंगल आए तो तारिका उन्हें मिल गई...तारिका ने सुजल और हरिणी को सब सच्चाई बताई...लेकिन ज्यादा खून बह जाने से और उचित समय पर इलाज ना होने के करण वह तड़प-तड़प कर मर गई।

सुजल गुस्से में पागल हो गया, उसने जाम्ब बाबा और अपने भैया को मार कर, बदला लेने की कसम खाई। तब हरिणी ने उसे सांत्वना देकर संभाल लिया। अपना मुखौटा उतार के हरिणी ने सुजल को अपना असली परिचय दिया, और संयम रखते हुए सही समय पर वार करने की सलाह दी।

20-21 अगस्त 2020 की दरमियानी रात । सुकेशिनी चुपचाप ज्ञानसुंदर के कक्ष के बाहर पहुँची और धीरे से दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुलते

ही ज्ञानसुंदर मुस्करा उठा। वह व्यंग्य से बोला, "क्यों री सुकेशिनी, उस दिन तो बड़े नखरे दिखा रही थी। आज आखिर मेरे पास आ ही गई?"

सुकेशिनी ने लजाने का अभिनय करते हुए धीमे स्वर में कहा, "मुझे भी तुम्हारे साथ कुछ समय बिताना है, ज्ञान। मैंने बहुत सोच-विचार किया। मेरे पति नेपाल में फँसे हुए हैं। मैं यहाँ कब तक अकेली रहूँ? अब मुझे तुम्हारे साथ और तुम्हारे प्यार की आवश्यकता महसूस होने लगी है। आज हम दोनों बिस्तर में साथ सोएँगे और जब तक तुम चाहो, मैं तुम्हारे साथ रहूँगी। मैं अपनी जवानी एक ताकतवर और धनवान आदमी के साथ बिताना चाहती हूँ, जिससे मुझे किसी चीज़ की कमी न हो। इसके बदले में तुमको जो चाहिए, वह मैं तुम्हें दूँगी।"

ज्ञानसुंदर उसकी बातों से प्रसन्न हो गया। उसने सुकेशिनी **को** भीतर आने दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया। सुकेशिनी ने अपने ऊपर का वस्त्र (नाइटी) उतारकर सोफ़े पर रख दिया। उसने अपनी नाइटी के अलावा कुछ भी नहीं पहना था, वह नहाकर-धोकर आई थी और उसके बाल गीले थे। शरीर पर अब भी पानी की बूँदें चिपकी हुई थीं, जिन्हें ज्ञान चाटकर पी जाना चाहता था।

उसे नग्न देखते ही ज्ञानसुंदर संभोग करने के लिए उसकी ओर बढ़ा, किंतु सुकेशिनी मुस्कराकर बोली, "अरे, इतनी भी क्या जल्दी है? पहले कुछ पीते हैं, फिर थोड़ा संगीत और नृत्य हो जाए। आज मैं तुम्हें खुश कर दूँगी।"

ज्ञानसुंदर उसकी बात मान गया। उसने दोनों के लिए पेय तैयार किए। सुकेशिनी ने संगीत यंत्र पर मधुर गीत चला दिया और नृत्य करने लगी, जबकि ज्ञानसुंदर लगातार पेय पीता रहा। कुछ ही देर में वह नशे में पूरी तरह चूर हो गया। उसी समय कमरे की खुली खिड़की से एक काला नाग भीतर आ गया। यह वही नाग था, जिसे योजना के अनुसार सुजल पहले ही ज्ञानसुंदर के कक्ष में छोड़ चुका था।

सुकेशिनी घबराने का अभिनय करते हुए चीखी, "अरे बाप रे! यह... यह काला नाग! ज्ञान, देखो!" ज्ञानसुंदर ने जैसे ही नाग को देखा, भय से उसकी बोलती बंद हो गई। उसी क्षण सुकेशिनी ने अवसर का लाभ उठाया। उसने

पास रखी ज्ञानसुंदर **की** लाठी उठाई और पूरी ताकत से ज्ञानसुंदर के सिर पर प्रहार कर दिया।

ज्ञानसुंदर दर्द से चीखा और भूमि पर गिर पड़ा। सुकेशिनी ने तुरंत अपनी नाइटी को पहन लिया और दरवाज़ा खोल दिया। योजना के अनुसार सुजल पहले से ही बाहर खड़ा था। वह तुरंत भीतर आया, फुर्ती से काले नाग को पकड़ लिया और उसे मृत पड़े ज्ञानसुंदर के पास ले गया। इसके बाद उसने ऐसा दृश्य उपस्थित किया कि सबको लगे, मानो नाग ने ही ज्ञानसुंदर को डस लिया हो। सुकेशिनी भयभीत होकर ज़ोर-ज़ोर से सहायता के लिए पुकारने का अभिनय करती रही।

उसका शोर सुनकर आश्रम के अन्य शिष्य, सुरक्षा कर्मी और **गश्त:पो** गुंडे दौड़ते हुए कमरे में आ पहुँचे। सुजल ने मृतप्राय पड़े ज्ञानसुंदर और नाग की ओर इशारा करते हुए कहा, "इस काले नाग ने ज्ञान भैया को डस लिया है!"

फिर उसने वहीं पड़ी लाठी उठाई और नाग को पीट-पीटकर मार डाला। कुछ ही देर में जाम्ब बाबा को भी बुला लिया गया। उन्होंने ज्ञानसुंदर के निर्जीव शरीर को देखकर गहरी साँस ली और गंभीर स्वर में बोले, "यह हमारे आश्रम के लिए अत्यंत दुःखद क्षण है। हमारा सबसे निष्ठावान और वरिष्ठ साधक ज्ञानसुंदर अब हमारे बीच नहीं रहा। अब हमें उसके अंतिम संस्कार की तैयारी करनी होगी।" फिर उन्होंने आदेश दिया, "सुजल, तुम अपने साथियों के साथ अंतिम संस्कार की सारी व्यवस्था करो। और सुनो, कल प्रातः एक महा-सभा बुलाई जाएगी। आश्रम के प्रत्येक सदस्य को इसकी सूचना दे दो।"

वास्तव में ज्ञानसुंदर की मृत्यु काले नाग के डसने से नहीं हुई थी। उसकी मौत का वास्तविक कारण वह विष था, जिसे सुजल ने पहले ही उसकी शराब में मिला दिया था, और उसके बाद सुकेशिनी द्वारा लाठी से किया गया भीषण प्रहार। काले नाग का डसना तो केवल इस हत्या को एक दुर्घटना का रूप देने के लिए रची गई हरिणी की चाल का हिस्सा था। लाठी

पर लगे खून को बिना डीएनए परीक्षण के केवल देखकर कोई यह नहीं बता सकता था कि वह ज्ञान का था या उस साँप का।

---

25 अगस्त 2020 की रात लगभग 11:30 बजे सुकेशिनी घबराई हुई हरिणी के कमरे के बाहर पहुँची और दरवाज़ा खटखटाया।

हरिणी कमरे बाहर आई और धीमे स्वर में बोली, "क्या हुआ, सुकेशिनी? इतनी रात को क्यों आई हो? क्या समस्या हो गई? ज्ञान सुंदर तो अब मर चुका है। अब क्या परेशानी है?"

सुकेशिनी ने घबराते हुए कहा, "ज्ञान सुंदर की जगह लेने के लिए आश्रम के बहुत से बलिष्ठ साधक चौकसी कर रहे हैं। आज जब मैं आपका संदेश लेकर सुजल से मिलने गई थी और वापस अपने कमरे में लौट रही थी, तभी साधक जयंत रेड्डी ने मुझे पकड़ लिया।"

हरिणी ने पूछा, **"क्यों? वह क्या कह रहा था?"**

"वह मेरे एक्सेस कार्ड को लेकर परेशान कर रहा था। उसने कहा कि लाल एक्सेस कार्ड महारांध्वी और कल्कुलता को जारी किया गया है, जिससे उन्हें देहरी में लगभग कहीं भी आने-जाने की अनुमति है। नीला कार्ड नील कोठी के ग्राउंड फ्लोर में रहने वालों के लिए है, जो मेरे पास है। साधक, सेवक और आश्रम के दूसरे लोगों के लिए हरा कार्ड है। पुस्तकालय, गौशाला और रसोई तक जाने के लिए साध्वियों को पीला कार्ड दिया जाता है।"

सुकेशिनी ने आगे कहा, "लेकिन दीदी, आपके काम के लिए मुझे आश्रम, पुस्तकालय, नील कोठी, गौशाला और लगभग हर जगह जाना पड़ता है। जयंत ने कहा कि यह इस तरह नहीं चल सकता। उसने मुझे तहखाने में कैद करने की धमकी तक दे दी।"

हरिणी परेशान हो गई, वह मन ही मन सोचती है -"अब मेरे संदेश कैसे पहुँचेंगे? मेरा गुप्त नेटवर्क और बदले की योजना कैसे चलेगी?" कुछ सोचने

के बाद उसने कहा, "ठीक है, सुकेशिनी, अभी तुम अपने कमरे में जाओ मैं जाम्ब से इस बारे में बात करती हूँ।"

सुकेशिनी के जाने के बाद, उसके एक्सेस कार्ड की बात करने के लिए, हरिणी उसी समय जांब बाबा की ऐशगाह की ओर चली जाती है। वह आश्रम को पार करते हुए बाईं ओर गौशाला की तरफ मुड़ती है। बगीचे से होते हुए वह नील कोठी के पिछले दरवाज़े तक पहुँचती है और चाबी से उसे खोलकर अंदर चली जाती है। फिर तहखाने की सीढ़ियों से तेज़ी से उतरते हुए सीधे जाम्ब की ऐशगाह में घुस जाती है।

ऐशगाह के अंदर पहुँचकर हरिणी...अपनी अनुचरी चारुलता को जाम्ब के साथ बिस्तर पर बिना कपड़ो के देखती है । जाम्ब को जैसे इसी अवसर की तलाश थी। हरिणी को जलाने के लिए, वह चारुलता को अपनी ओर खींचकर उसे अपने सीने से चिपका कर कसकर भींचने लगता है । चारुलता झुंझलाकर "क्या कर रहे हो?", बोल कर अलग होने की कोशिश करती है ।

जाम्ब हरिणी को देखते हुए व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ पूछता है, "क्यों हरिणी? यहाँ क्यों आ गई? तुम तो आज यहाँ आने वाली नहीं थीं। तुम्हारी तबीयत खराब थी, है ना? फिर अचानक तुम्हें मेरी याद कैसे आ गई?"

हरिणी ने उसकी बात को अनदेखा करते हुए कहा, **"जाम्ब, मुझे आपसे एक ज़रूरी अनुमति चाहिए थी।"** जाम्ब सोफे की ओर इशारा करते बोला, "तुम बैठो। बताओ, क्या चाहिए?"

हरिणी बैठ गई-**"चारुलता, मेरे और जाम्ब के लिए कुछ पीने को बना दो।"** चारुलता बिस्तर से उठकर, पास रखे बाथ रोब को पहनती है। फिर पेय बनाकर हरिणी और जाम्ब को सर्व करती है ।

हरिणी **चारुलता** की ओर देखती है, फिर जाम्ब से कहती है- "मेरी राय में चारुलता इस आश्रम की बहुत अच्छी कर्मचारी है। दिन का काम बिना किसी गलती के करती है और मुझे उससे कोई शिकायत नहीं। और मुझे

लगता है **जाम्ब,** उसके रात के काम से तुम भी बहुत खुश हो । तुम चाहो तो चारुलता को मेरी जगह दे सकते हो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अच्छे काम का अच्छा ही रिवॉर्ड मिलना चाहिए ।" चारुलता अपनी प्रशंसा और सिफ़ारिश से खुश होती है लेकिन कुछ कहती नहीं । जाम्ब को रक्षात्मक (डिफेंसिव) करने की ये हरिणी की चाल थी। इस रणनीति से वो जाम्ब से काई बातें मनवा लेती थी ।

जाम्ब हँसते हुए बोला, "अरे, तुम तो मेरी बात का बुरा मान गईं। तुम मेरी खास हो, हरिणी। अब बताओ, यह जाम्ब तुम्हारी क्या खिदमत कर सकता है?" हरिणी ने गंभीरता से कहा, "जाम्ब, मुझे और मेरी अनुचरियों को बहुत काम रहता है। जिस रफ्तार से देहरी का विस्तार हो रहा है, हमें लगातार फाइलें एक जगह से दूसरी जगह पहुँचानी पड़ती हैं। हमें एक चपरासी की जरूरत है। क्या तुम एक चपरासी की नियुक्ति के लिए अपनी अनुमति दे सकते हो?"

जांब ने पूछा "क्यों नहीं। तुम किसे रखना चाहती हो?" हरिणी ने कहा- "मेरी नज़र में सुकेशिनी इस काम के लिए ठीक रहेगी।" जाम्ब ने भौंहें सिकोड़ लीं- "लेकिन सुकेशिनी तो अनपढ़ है। वह तो सिर्फ बच्चों की देखभाल के लिए ठीक है। उसे चपरासी क्यों बनाना चाहती हो?"

हरिणी ने तुरंत जवाब दिया, "यही तो उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। वह फाइलें खोलकर पढ़ नहीं पाएगी, इसलिए गोपनीय जानकारी बाहर जाने का खतरा नहीं रहेगा। इसके अलावा उसके पास अभी कोई खास काम भी नहीं है। उसे काम पर लगाना ही बेहतर होगा।"

जाम्ब ने कुछ देर सोचा और फिर कहा, "ठीक है। मैं अनुमति लिखकर देता हूँ। कल से तुम उसे अपने काम के लिए चपरासी रख लो।" हरिणी ने कहा, "एक समस्या और है, जाम्ब।" **"अब क्या हुआ?"**

"एक्सेस कार्ड का। उसे मेरे काम के लिए लगभग पूरी देहरी में घूमना पड़ेगा। गश्त:पो के लोग उसे जगह-जगह रोकेंगे और परेशान करेंगे।"

जाम्ब कुछ देर सोचता रहा-"यही तो गश्त:पो का काम है। लेकिन इससे तुम्हारा काम भी रुक जाएगा। रोज़ इतनी सारी फाइलें इधर-उधर ले जाना आसान नहीं है।"

तभी चारुलता बोली, "हाँ, जाम्ब बाबा। हरिणी देवी ठीक कह रही हैं। आप सुकेशिनी के लिए विशेष एक्सेस कार्ड जारी कर दीजिए। हम सभी उससे काम ले सकेंगे।" जाम्ब ने सिर हिलाया-"ठीक है। मैं एक विशेष कार्ड बनवाता हूँ। अभी मेरे पास कागज़ात रखे हैं।"

उसने सिगरेट के डब्बे से गोल्डन फॉइल निकाल कर पीले एक्सेस गार्ड के ऊपर चिपका दिया, फिर उसे प्लास्टिक के कार्ड होल्डर में डालकर विशेष गोल्ड कार्ड बना दिया और अपने द्वारा हस्ताक्षरित आदेश पत्र हरिणी को सौंपते हुए कहा, "इसपर सुकशिनी की फोटो चुपका कर मेरा स्टैम्प मार देना और सुखेशिनी को इसे संभाल कर रखने के लिए कह देना। अगर यह खो गया तो दोबारा नहीं मिलेगा।"

"मैंने पत्र में लिख दिया है कि सुकेशिनी नील कोठी की दूसरी और तीसरी मंज़िल को छोड़कर देहरी के लगभग हर हिस्से में जा सकती है, यहाँ तक कि **तहखाने में** भी। हरिणी तुम सुकेशिनी क लिए ज़िम्मेदार रहोगी, कुछ गड़बड़ नहीं होना चाहिए।" हरिणी ने कार्ड ले लिया और कहा, "मैं ये निश्चित करूंगी कि सुकेशिनी अपना काम सही करेगी।

"इस विशेष अनुमति के लिए, हरिणी और चारुलता अब तुम दोनों को मेरी विशेष सेवा करनी पड़ेगी। चलो, आ जाओ मेरे पास।" वे दोनों एक-दूसरे की ओर देखती हैं और फिर नग्न होकर जाम्ब के पास बिस्तर पर बैठ जाती हैं। फिर उसे खुश करने लगती है।

अगली सुबह हरिणी ने वह विशेष गोल्ड कार्ड सुकेशिनी को सौंपते हुए कहा, "अब तुम्हें कोई नहीं रोकेगा। बेफ़िक्र होकर उन सभी जगहों पर जाओ और वे सारे संदेश पहुँचाओ जो मैं तुम्हें दूँगी। लेकिन खबरदार, इसे

खोना मत। तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि यह कार्ड तुम्हारे लिए हासिल करना कितना मुश्किल था। अगर यह खो गया तो दोबारा नहीं मिलेगा।"

सुकेशिनी ने कार्ड को कसकर पकड़ लिया। अब उसके पास देहरी के लगभग हर हिस्से तक पहुँचने का रास्ता था। और हरिणी के गुप्त संदेशों के लिए भी एक नया रास्ता खुल चुका था।

अध्याय 13

महाश्मशान का राक्षस अनुष्ठान

16 सितंबर 2020, कृष्ण पक्ष की अमावस्या की वह घोर अंधेरी रात थी। नील कोठी की दूसरी मंजिल पर स्थित गुप्त **नीलांजन कक्ष** में लाल माई पेटवा दानव की उपस्थिति का आह्वान कर रही थी। चारों ओर तंत्र-मंत्रों की गूँज, धुएँ की तीखी गंध और अग्नि की लपटें वातावरण को और भी भयावह बना रही थीं।

उसने वहाँ उपस्थित काले मंत्रों से सम्मोहित और बँधी हुई तीन **कुँवारी लड़कियो** की बली चढ़ाई और अपने तांत्रिक अनुष्ठान की चरम शक्ति का प्रयोग करते हुए के **जोनाथन** के जर्जर शरीर में पेटवा दानव को स्थापित कर दिया। देखते ही देखते उसका निर्जीव-सा शरीर एक भयावह, अलौकिक शक्ति से स्पंदित होने लगा। दोनो ने जी भर कर रक्त पान किया । पेटवा दानव ने **जोनाथन** के शरीर में स्थित होकर एक विचित्र, भयावह स्वर में लाल माई से कहा, "आओ, मेरी रानी... मेरी बाँहों में आओ। लाल माई उसकी बाँहों में समा गई। इसके बाद दोनों ने शारीरिक संबंध स्थापित किए।

काफ़ी देर तक पेटवा के साथ शारीरिक संबंध बनाने के बाद, लाल माई पेटवा से अलग हुए बिना उससे धीमे स्वर में बोली, "मेरे पेटवा राजा... तुम इस जर्जर जोनाथन के शरीर को छोड़कर समीर के शरीर में कब प्रवेश करोगे? मुझे एक ऐसे शरीर की आवश्यकता है जो युवा हो, शक्तिशाली हो और तुम्हारी शक्ति को धारण करने में सक्षम हो। तभी मेरी साधना और हमारी एक दूसरे क साथ संतान उत्पन्न करने की इच्छा पूरी होगी। मुझे साधारण इंसान नहीं, बल्कि तुम्हारे जैसे परम प्रतापी और शक्तिशाली राक्षस पुत्र चाहिए। फिर हम पूरी दुनिया पर राज करेंगे।"

पेटवा दानव ने कहा, "तुझे दंडकारण्य के अबूझमाड़ की पहाड़ियों में स्थित गुप्त महाश्मशान में मेरे लिए **शरीर-प्राप्ति कराली राक्षस अनुष्ठान** करना होगा। यह महाश्मशान त्रेता युग में दानवों के निवास की एक विशेष भूमि थी। वहाँ स्थित नास्ति अनिष्ट मंदिर में मेरी मूर्ति के समक्ष अनुष्ठान पूर्ण करके तेरह बालिकाओं की बलि चढ़ानी होगी, विशेषकर सलोनी और सुनिधि की। वे दोनों एकादशी के दिन जन्मी, उत्तम गुणों से परिपूर्ण और अत्यंत श्रेष्ठ बालिकाएँ हैं। फिर समीर का शरीर मुझे अर्पित करना होगा। तब मैं तुझे पति-स्वरूप प्राप्त हो जाऊँगा और हम अपनी संतान उत्पन्न कर सकेंगे।"

"हे स्वामी, यह वही अनुष्ठान है न, जिसके बारे में आपने मुझे मार्च में बताया था, जिसे मैं पूरा नहीं कर सकी?" आप जैसा आदेश देंगे, मैं वैसा ही करूँगी। मैं सारी व्यवस्था कर दूँगी, इस बार कोई गलती नहीं होगी। लेकिन कृपया बताइए कि मुझे यह अनुष्ठान कब आरंभ करना चाहिए?"

लाल माई ने उत्सुकता से पूछा। पेटवा ने उत्तर दिया, " तुमको 28 सितंबर 2020 से अनुष्ठान शुरू करना होगा और उसे लगातार तैंतीस दिनों तक जारी रखना होगा । आज से ठीक पैंतालीस दिन बाद, अर्थात 31 अक्टूबर 2020 की रात नीले चंद्रमा (ब्लू मून) की रात होगी, कराली राक्षस अनुष्ठान उस दिन पूर्ण होना चाहिए। तुम्हें उन सभी सामग्रियों की व्यवस्था करनी होगी, जिनकी सूची मैं उस दीवार पर, फिर से लिखने जा रहा हूँ। जब सारी सामग्री महाश्मशान में एकत्र हो जाए, तब अनुष्ठान आरंभ करना और उसे संपूर्ण विधि के साथ संपन्न करना। मैं तुम्हें विधि फिर से बता दूँगा।"

फिर उसने कहा, "अब तुम अपनी प्रमुख सहयोगिनियों के साथ तुरंत इस देहरी से निकल जाओ और तैयारी प्रारंभ कर दो। समय बहुत कम बचा है।" लाल माई ने पुष्टि करते हुए पूछा, "अभी?" पेटवा ने उत्तर दिया, "हाँ, अभी। ध्यान रहे, जिन लोगों पर तुम्हें पूरा विश्वास है, उनके अतिरिक्त इस अनुष्ठान की भनक किसी और को नहीं लगनी चाहिए।" "वरना हम फिर से नाकाम हो जाएँगे।"

इतना कहकर पेटवा जोनाथन के शरीर से निकल गया और महाश्मशान की ओर प्रस्थान कर गया। उसी क्षण दीवार पर खून से लिखी गई आवश्यक सामग्रियों की सूची, उनकी मात्रा तथा अनुष्ठान की प्रक्रिया अपने-आप प्रकट हो गई।

लाल माई ने ताली बजाई, कमरे के द्वार पर पहरा दे रही कलकुलता और महारांध्वी भीतर आ गईं। वे दोनों लाल माई की सबसे विश्वसनीय डायन सहयोगिनियाँ बन चुकी थीं।

लाल माई ने आदेश दिया, "दीवार पर लिखी सूची ध्यान से देखो। अनुष्ठान के लिए आवश्यक सारी सामग्री की व्यवस्था करके उसे महाश्मशान में सुरक्षित रख दो। यहाँ जो सेविकाओं की बलि चढ़ाई हैं, उनके अवशेष पड़े हैं, उन्हें शुकासुर को खिला देना और चारुलता से कहकर नई सेविकाओं का प्रबंध किया जाए। दीवार पर लिखी हर बात के अनुसार तैयारी करना और इस पूरे कार्य को पूर्णतः गुप्त रखना।"

इसके बाद लाल माई ने स्वयं को व्यवस्थित किया और तहखाने में चली गई, जहाँ जाम्ब बाबा हरिणी के साथ विश्राम कर रहे थे। वह बिना दस्तक दिए जाम्ब बाबा के ऐशगाह में प्रवेश कर गई और उन्हें धीरे से जगाते हुए बोली, "जाम्ब बाबा, उठिए। मुझे आपसे तुरंत एक आवश्यक बात करनी है।"नींद में जाम्ब बाबा बड़बड़ाए, "**माई... मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा।**"

लाल माई झुँझलाकर बोली, "चुप रहो, मूर्ख! मैंने तुम्हें जाम्बुरस भी नहीं पिलाया, फिर भी तुम दूसरों की तरह बेसुध सो रहे हो। लगता है तुम्हारा दिमाग पूरी तरह काम करना बंद कर चुका है।" जाम्ब बाबा घबराकर उठ बैठे और बोले, "माई, क्या हुआ?"

लाल माई ने उनकी बगल में सो रही हरिणी की ओर देखा और धीमे स्वर में पूछा, "क्या यह स्त्री जाग रही है?" जाम्ब बाबा मुस्कराकर बोले, "माई, आपके जाम्बुरस का असर कौन रोक सकता है? मैंने उसके पेय में वह मिला दिया था। अब वह एक छोटे बच्चे की तरह गहरी नींद में सो रही है।"

लाल माई ने फुसफुसाते हुए कहा, "ठीक है, मुझे तुम पर विश्वास है। मेरे पास बहुत कम समय है। ध्यान से सुनो। अगले चालीस दिनों तक मुझे

महाश्मशान में रहना होगा। हमारे स्वामी पेटवा के आदेशानुसार मुझे एक विशेष अनुष्ठान करना है।"

जाम्ब बाबा ने आश्चर्य से पूछा, "एक और विशेष अनुष्ठान?". लाल माई ने उसे आवश्यक सामग्रियों की एक सूची थमा दी. "हाँ। तुम्हें कुछ आवश्यक सामग्रियों की व्यवस्था करके उन्हें महाश्मशान की भ्रकुटि गुफा में सुरक्षित रखवाना होगा।"

फिर लाल माई बोली, "जब तक मैं वापस नहीं आती, आश्रम की पूरी जिम्मेदारी तुम्हारे हाथों में रहेगी। मुझे निराश मत करना। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।"जाम्ब बाबा ने सिर झुकाकर कहा, "जैसा आपका आदेश, माई। मैं कल प्रातः ही सारी आवश्यक व्यवस्था कर दूँगा।"

इतना कहकर जाम्ब बाबा फिर से सो गए और लाल माई देहरी के पिछले गेट से महाश्मशान में जाने के लिए नील कोठी के पीछे बगीचे वाले गेट से देहरी के बाहर निकल कर आई। फिर उसने पिशाचिनी शंख बजाया। कुछ ही मिनट में वहां 10-12 बड़े-बड़े शुकासुर (दानवीय जंगली सुअर) आ गए जो कि अत्यंत विशाल, भयावह और विकृत थे। लाल माई उनमे से सबसे बड़े वाले पर बैठ गई। साथ में कल्कुलता और महारंधवी भी अपनी-अपनी सवारी पर चढ़ गयी।

कुछ सेविकाओं ने लाल माई के काले जादू की दीक्षा लेकर कर उसकी चुड़ैल बन चुकी थीं, उन्होंने थोड़ा बहुत सामान जो पहले के अनुष्ठानों का बचा था, वह बाकी शुकासुरों पर लोड कर दिया दिया।

लाल माई और उसकी सहयोगिनियां कालकुलता और महारंधवी अपने डायन रूप में परिवर्तित हो गई । इस तरह उन्हें जंगल में दानव दृष्टि से अंधेरे में देखने और मायावी शक्ति किसी की नजर से बचने की शक्ति मिल गई। धीरे-धीरे वह डायनों और चुड़ैलों का काफिला जंगल के बीच से गुजरता हुआ अपने गंतव्य की तरफ बढ़ चला गया।

लाल माई के पास हमेशा 100-150 सेविकाएं मौजूद रहती थीं। इन्हें या तो चारुलता, कलकुलता और महारंधवी भर्ती करती थीं। या फिर लॉकडाउन

में हाईवे के लुटेरे किडनैप करके लाल माई को लाकर देते थे और मुनाफा कमाते थे।

लाल माई की स्पेशल अनुचरिया **दुष्टा और अनिष्टा**, वालेंटियर लड़कियों/औरतों को डायन और चुड़ैल की विद्या का कोर्स कराती थी और ट्रेनिंग देती थी। उनका थ्योरी इम्तिहान और प्रैक्टिकल टेस्ट लेती थी। टेस्ट रिजल्ट को डायन जादू के अनुसार स्कोर किया जाता था। जो कटऑफ क्लियर कर लेती थी उन्हें लाल माई ब्लैक मैजिक और डेमोनोलॉजी संस्थान के द्वारा चुड़ैल (UG-Li) स्पेशलाइजेशन या डायन (PG-D) सर्टिफिकेशन से सम्मानित करके लाल माई की अपनी अनुचारी सेना में शामिल कर लिया जाता था।

जो वालेंटियर लड़कियाँ/औरतें चुड़ैल टेस्ट में फेल हो जाती थी उनको जाम्बू रस और डायन वशिकरण में बांध कर मजदूरी करवाई जाती थी। बाकी बिचारी जिनको लुटेरे लाते थे किडनैप करके, वो लोग बली का बकरा या जाम्ब बाबा और गश्त:पो के गुंडों का मनोरंजन करती थी - चाहे खुशी से या ज़बरदस्ती। ज्यादातर वॉलेंटियर लड़कियां या औरतें भटकी हुई होती थीं, या पुलिस और प्रशासन से फरार फ्रॉड, हत्यारिन अथवा क्रिमिनल्स होती थीं।

लाल मां की देहरी में **दुष्ट लोगों के लिए पूरी लिंग** तटस्थता (full Gender neutrality) होती थी। बदमाश लड़कों को जिनका मन किसी कामकाज या पढ़ाई-लिखाई में नहीं लगता था, अथवा क्रिमिनल्स होते थे। उन्हें भी काला जादू-टोना, गैरकानूनी काम सिखाया जाता था। उन्हें भी एग्ज़ाम में कट ऑफ़ मार्क्स क्लियर करने पर चांडाल चौकड़ी स्पेशलाइजेशन (**CiCi-S**) या पैशाचिक (**PiCity**) सर्टिफिकेशन से सम्मानित करके लाल माई स्पेशल गार्ड्स में शामिल कर लिया जाता था। जो निकम्मे इसमें भी फेल हो जाते थे वो गश्त:पो में काम पर लगाए जाते थे। कुछ अपहरण करके लाए हुए सुंदर लड़कों को लाल माई और उसकी सहयोगिनियाँ अपने मज़े के लिए कॉलोनियल ब्लैक प्रिज़न में रख लेती थीं।

उधर जांब बाबा और लाल माई दोनों से अनजान, हरिणी पूरी तरह जाग रही थी और उनकी सारी बातचीत सुन चुकी थी। जब भी जाम्ब बाबा उसके पेय में जाम्बुरस मिलाने का प्रयास करते, वह चुपके से गिलास बदल दिया करती थी।

वह लगभग एक घंटे तक सोने का अभिनय करती रही। इसके बाद उसने पक्का किया कि जांब बाबा जांबू रस के नशे में फिर से सो गया कि नहीं। जांब बाबा का स्लीपिंग स्टेटस कंफर्म होने पर, हरिणी ने स्वयं को व्यवस्थित किया और पुस्तकालय के गुप्त मार्ग से चुपचाप कमरे से बाहर निकल गई। जाम्ब बाबा के ऐशगाह से पुस्तकालय तक जाने वाला वह गुप्त रास्ता पूरी देहरी में केवल उसी को मालूम था। उसने बहुत पहले वहाँ से निकलने का मार्ग खोजते समय इस रास्ते का पता लगा लिया था। ये रास्ता उसने आनंद को भी बताया था।

वह नील कोठी से निकलकर चुपचाप अपने **नील गृह** पहुँची और विश्राम करने लगी। रात का शेष समय बिना किसी विशेष घटना के बीत गया।

अगले दिन, **17 सितंबर 2020** आश्रम की महा-सभा बुलाई गई। सभी साधक, सेवक, साधिकाएँ और श्रद्धालु सभा-स्थल पर एकत्र हुए। जाम्ब बाबा मंच पर आए और गंभीर स्वर में बोले, "सभी लोग ध्यान से सुनें। लाल माई एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य से देहरी से बाहर गई हैं। वहाँ से वे नेपाल भी जाएँगी, जहाँ से नीलांजन देव, गुरु भाई कुंदन और शिवप्रसाद को लेकर लौटेंगी। उनके वापस आने तक आश्रम की समस्त व्यवस्था का दायित्व मेरे हाथों में रहेगा। इस अवधि में मैं ही आश्रम का सर्वेसर्वा रहूँगा।"

सभा में उपस्थित सभी लोगों ने एक स्वर में कहा, "जैसी आज्ञा, वैसा ही होगा। हम सभी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।" जाम्ब बाबा ने संतोषपूर्वक सिर हिलाया और सभा समाप्त करने की घोषणा कर दी।

अध्याय 14
विद्रोह की दहकती मशाल

महीनों से **लाल माई की देहरी** में विरोधियों का एक गुप्त गुट धीरे-धीरे उभरने लगा था, जिसकी प्रमुख हरिणी थी। इस गुट का नाम हरिणी ने रखा था, देहरी विनाशक टास्क फ़ोर्स (DVTF, डीवीटीएफ)। आश्रम की **मानव संसाधन (एचआर) अधिकारी** होने के कारण उसे लोगों के स्वभाव और मनोविज्ञान की गहरी समझ थी। वह भली-भाँति जानती थी कि किस व्यक्ति को अपने गुट में शामिल करना है और किससे दूरी बनाए रखनी है। उसे यह भी अच्छी तरह ज्ञात था कि कौन, किस कारण से जाम्ब बाबा और लाल माई के विरुद्ध उसके गुप्त अभियान का हिस्सा बनने को तैयार होगा।

जाम्ब बाबा ने उसके पति जोनाथन की हत्या कर के उसे बलपूर्वक अपनी रखैल बना लिया था। दिन में वह देहरी की मानव संसाधन (एचआर) अधिकारी होती थी और रात होते ही जाम्ब बाबा का खिलौना । असहाय और पीड़ित हरिणी, जिसका वास्तविक नाम **एमिली क्लाइव** था, अब धीरे-धीरे एक विषैली नागिन की भाँति धैर्यपूर्वक प्रतिशोध का जाल बुन रही थी।

उधर सुकेशिनी ने अपनी, सुनिधि और सलोनी की जान बचाने के लिए एमिली का साथ देने का निर्णय लिया। वह एमिली की सबसे विश्वसनीय संदेशवाहक बन गई।

सुकेशिनी का लाल माई विद्रोही दल में शामिल होना, दल के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी, उसका कार्य था एमिली की योजनाओं और उसके गुप्त संगठन के सदस्यों के बीच सुरक्षित और गोपनीय संपर्क बनाए रखना। महिनो से सुरक्षित और त्वरित संचार के अभाव में दल का काम धीमा चल रहा था, लेकिन अब उनकी गतिविधि तेज़ हो गई थी । सारा वक्त सुनिधि, सलोनी और अन्य बच्चों के साथ इधर उधर घूमने वाली और मासूम सी

दिखने वाली सुकेशिनी पर जाम्ब बाबा और उसके अनुनाइयों को कभी शक नहीं हुआ।

एमिली का उद्देश्य केवल अपना प्रतिशोध लेना नहीं था। उसका मिशन उन सभी पीड़ितों को न्याय दिलाना था, जो लाल माई की देहरी में सेवक या सेविका बनकर किसी न किसी विवशता, प्रतिशोध या अपने खोए हुए जीवन का हिसाब चुकाने के लिए आए थे। सुजल जैसे अनेक लोग अब उसके इस गुप्त अभियान का हिस्सा बन चुके थे और उचित समय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

लाल माई ने डॉ. ईवा के दोनों बच्चों को किसी गुप्त स्थान में बंदी बनाकर रखा था। उनका उद्देश्य स्पष्ट था। जब तक बच्चे उसके कब्ज़े में रहेंगे, ईवा कभी आश्रम छोड़कर भागने का साहस **या विद्रोह** नहीं कर पाएगी। लाल माई या जाम्ब बाबा के इशारे पर गश्त-पो के गुंडे कभी-कभी ईवा को उसके बच्चों से मिलवा देते थे। यह बिल्कुल "गधे के आगे गाजर लटकाने" जैसा था, ताकि ईवा उम्मीद के सहारे अपना काम करती रहे और कभी विद्रोह करने की हिम्मत न जुटा सके।

लेकिन ईवा ने भी अपने पति की मौत का बदला लेने और अपने बच्चों को लाल माई की कैद से छुड़ाने की ठान ली थी।

अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए विवश होकर डॉ. ईवा को 'लाल माई मेडिकल सर्विसेज़' की प्रमुख के रूप में कार्य करना पड़ता था और आश्रम तथा उसके अनुयायियों को निःशुल्क चिकित्सीय सेवाएँ देनी पड़ती थीं।

ईवा किसी भी कीमत पर भारत छोड़कर अपने बच्चों के साथ अपने देश जर्मनी लौटना चाहती थी। इसी उद्देश्य से उसने एमिली क्लाइव से संपर्क किया और उसके नेतृत्व में चल रहे गुप्त विद्रोही दल में शामिल हो गई। शीघ्र ही अपनी चिकित्सा विशेषज्ञता, सूझबूझ और साहस के कारण वह उस विद्रोही संगठन की प्रमुख कमांडर बन गई।

एक दिन एमिली ने बहाना बनाकर जंगल के बीच स्थित लाल माई की गुप्त जेल की सुरक्षा प्रमुख **श्रावणी** को वेतन लेने के लिए अपने कार्यालय में बुलवाया। श्रावणी, गुरु भाई कुंदन की इकलौती पुत्री थी। उसे यह विश्वास

दिलाया गया था कि उसके पिता नीलांजन के साथ नेपाल चले गए हैं। लॉकडाउन लग जाने के कारण वे वहीं फँस गए हैं, लेकिन वे पूरी तरह सुरक्षित हैं।

जब श्रावणी एमिली के कक्ष में पहुँची, तो उसने श्रावणी को भीतर बुला कर दरवाज़ा भीतर से बंद कर दिया और यह सुनिश्चित किया कि उनकी बातचीत कोई न सुन सके। कुछ क्षणों तक वह मौन रहीं, फिर अपना मुखौटा खोल कर उससे गंभीर स्वर में बोलीं- 'मेरा असली नाम एमिली क्लाइव है, मुझे जाम्ब बाबा ने यहाँ ज़बरदस्ती अपनी रखैल बना कर रखा है, **श्रावणी...** जो मैं तुम्हें बताने जा रही हूँ, उसे सुनकर तुम्हारी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल जाएगी।"

श्रावणी ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। हरिणी ने धीमे स्वर में कहा, "तुम्हारे पिता, गुरु भाई कुंदन की हत्या लाल माई और जाम्ब बाबा ने करवाई थी, क्योंकि उन्होंने आश्रम के कुछ मासूम बच्चों को नरबलि चढ़ाए जाने से बचा लिया था।" फिर उसने विश्वास दिलाने के लिए गुरु-भाई कुंदन द्वारा पुलिस अधिकारी इंस्पेक्टर अक्षय सोनी को लिखा हुआ पत्र, तहखाने के स्टोर रूम से मिले उनके रक्तरंजित कपड़े, उनकी अंगूठी और वह लॉकेट, जिसमें **श्रावणी** और उसकी माँ की तस्वीर थी, **श्रावणी** को सौंप दिए।

यह देखते ही **श्रावणी** के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह बहुत बुरी तरह रोने लगी। एमिली ने उसे संभाला और सांत्वना दी। कुछ देर बाद एमिली ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "यदि तुम सचमुच अपने पिता के बलिदान का सम्मान करना चाहती हो, तो अब समय आ गया है कि तुम धर्म का साथ दो।"

“मैंने तुम्हें यह बात पहले इसलिए नहीं बताई, क्योंकि मुझ पर हमेशा **गश्त:पो** का खतरा मंडराता रहता है। मुझे बहुत सावधानी से चलना पड़ता है, वरना मेरी जान भी जा सकती है। लेकिन अब उस गश्त:पो के सर्वनाश का समय आ चुका है, जिसमें तुम स्वयं एक सिपाही हो। तुम्हें मेरे साथ मिलकर लाल माई और जाम्ब से प्रतिशोध लेना होगा।”

श्रावणी दृढ़ स्वर में कहती है, **“मैं कसम खाती हूँ, एमिली दीदी, मैं लाल माई की इस पाप और आतंक से भरी देहरी को मिट्टी में मिला दूँगी। बताइए, मैं आपकी कैसे मदद करूँ?”**

एमिली ने सभी सबूतों को वापस सुरक्षित रख दिया और श्रावणी से बोली, "जेल में दो कैदी हैं। एक का नाम समीर है और दूसरा कैप्टन रस्किन क्लाइव, जिसे सब रस्टी कहते हैं। वे निर्दोष हैं और लाल माई के अत्याचारों को समाप्त करने की आख़िरी उम्मीद हैं।" "मैं चाहती हूँ कि तुम सही समय आने पर उनकी जेल से निकलने में सहायता करो।"

श्रावणी ने अपनी आँखों के आँसू पोंछे। उसके चेहरे पर अब शोक नहीं, बल्कि अपने पिता के हत्यारों से प्रतिशोध लेने का दृढ़ संकल्प दिखाई दे रहा था। उसने धीमे लेकिन अटल स्वर में कहा, "मैं समीर और रस्टी , दोनों को हर हाल में आज़ाद कराऊँगी।" उस क्षण से श्रावणी केवल लाल माई की जेल की सुरक्षा प्रमुख नहीं रही, बल्कि भीतर ही भीतर उसके साम्राज्य को ढहाने वाली एक गुप्त सहयोगी बन चुकी थी।

---

1 अक्टूबर 2020, ज्ञान सुंदर की मृत्यु को लगभग डेढ़ महीने से ज़्यादा हो चुके थे। जाम्ब बाबा ने आनंद को उसके स्थान पर पदोन्नत कर दिया था। श्रद्धालु भवन का सबसे अच्छा और शानदार कमरा, जो कभी ज्ञान सुंदर का था, उसमें आनंद को रहने की इजाज़त भी मिल गई थी।

अपने दिन का काम पूरा करने के बाद वह अपने कमरे में आया और तरोताज़ा होकर रात का खाना खाने बैठा ही था कि किसी ने उसके दरवाज़े पर दस्तक दी। आनंद ने अपनी कलाई-घड़ी में समय देखा। रात के 10:30 बज रहे थे।"इतनी रात को भला कौन आया है मेरे पास?"

उसने कमरे का दरवाज़ा खोला तो सुकेशिनी धड़धड़ाती हुई कमरे में घुस आई और दरवाज़ा बंद करके बोली, "नमस्ते आनंद भैया। आपको आज रात आश्रम की गौशाला में हरिणी दीदी ने मिलने के लिए बुलाया है। रात को ठीक 12:30 बजे उनसे मिलने चले जाइएगा। और हाँ, इस बात का

पता किसी को नहीं चलना चाहिए।" इतना कहकर उसने कमरे का दरवाज़ा खोला। फिर चारों ओर सावधानी से देखा और श्रद्धालु भवन से निकलकर नील कोठी की ओर चली गई।

"अब इस हरिणी को मुझसे क्या काम है? कहीं वह फिर से मुझे अपने नज़ारे दिखाने तो नहीं बुला रही? गौशाला में क्या बात करनी है उसे? दो महीने हो गए हैं उस रात को, जब मैंने उसे जाम्ब बाबा के साथ तहखाने वाले ऐशगाह में देखा था। उसे मुझसे किसी मदद की ज़रूरत थी तो इन दो महीनों में किसी भी रविवार को लाइब्रेरी में आकर बता सकती थी। उसे मालूम है कि मैं हर रविवार सुबह 10 से 5 बजे वहीं रहता हूँ। उससे मिलने की आस में मैं दोपहर का खाना भी नहीं करता था। मुझे मालूम है कि वह गूंगी नहीं है, फिर भी मुझसे बात करने में उसे क्या हर्ज है? खैर, अब जब वह मुझे मिलने के लिए बुला रही है, तो जाकर देखना चाहिए। कहीं उसने इस मनहूस आश्रम से भागने का कोई रास्ता तो नहीं निकाल लिया है? कहीं वह मुझे अपने साथ भागने को कहने वाली तो नहीं?"

अपने ख़यालों में उलझा हुआ आनंद तय समय पर रात को सावधानीपूर्वक सबसे बचते हुए चुपके से गौशाला में प्रवेश करता है। उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था।उसके आते ही वहाँ की गायें धीमे स्वर में रंभाने लगीं और उसकी ओर देखने लगीं।

आनंद ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, लेकिन उसे हरिणी कहीं दिखाई नहीं दी। लगभग तीस मिनट बीत गए।तभी उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो अँधेरे में कोई उसे देख रहा हो। गौशाला के पीले बल्ब की मद्धिम रोशनी में उसने देखा कि गायों के चारे की बोरियों के पीछे से एक स्त्री साए की तरह निकलकर उसकी ओर बढ़ रही थी। उसके चेहरे पर पीला मुखौटा था।

उसे देखकर आनंद चौंक गया। घबराहट में उसने पूछा, "अरे... कौन है वहाँ?"एक खनकती हुई हँसी के साथ वह स्त्री मीठी और सुरीली आवाज़ में बोली, "अरे आनंद बाबू, आप तो डर गए।"

फिर वह हल्के से मुस्कुराई - "मैं कोई भूत नहीं हूँ... हरिणी हूँ।" इतना कहकर वह लंबी, छरहरी काया वाली स्त्री उसके सामने आकर खड़ी हो गई। उसने धीरे से अपना मुखौटा उतारा और शरारती मुस्कान के साथ बोली,"सरप्राइज़... मैं जली हुई नहीं हूँ।" जाम्ब बाबा की ऐशगाह में आनंद ने हरिणी को बिना मुखौटे के देखा तो था, लेकिन उसका चेहरा साफ़ तौर पर नहीं दिखा था, क्योंकि शर्म के मारे हरिणी ज़्यादातर उसकी ओर पीठ करके खड़ी या बैठी हुई थी।

हरिणी के मुखौटा उतारते ही आनंद के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। वह बला की खूबसूरत एक अंग्रेज़ महिला थी। गौशाला के बल्ब की रोशनी में भी आनंद उसे साफ-साफ देख सकता था। उस दिन पूर्णिमा की रात थी और जंगल चाँदनी की रोशनी में जगमगा रहा था।

हरिणी की आँखें बड़ी-बड़ी थीं। उसकी आँखों की पुतलियाँ शायद नीली थीं। उसका चेहरा रूप और लावण्य से भरा हुआ चमक रहा था और होठों पर एक मीठी-सी मुस्कान थी। साधारण-सी साड़ी में भी वह चंद्रलोक की अप्सरा लग रही थी।

आनंद के मुँह से अनायास निकल पड़ा, **"चंद्रलोक की अप्सरा..."**हरिणी ने महसूस किया कि आनंद उसके सौंदर्य के आकर्षण में खोता जा रहा है। **"अहम्... Thanks for the compliment."**

फिर उसने थोड़ा गंभीर चेहरा बनाकर कहा, "आनंद जी, मैं आपसे कुछ विशेष बातें करने आई हूँ।" आनंद बोला, "जिस दिन मैंने पहली दफ़ा आपको तहखाने में देखा था, उस दिन के बाद मैंने आपसे मिलने की बहुत कोशिश की। मैं हर रविवार लाइब्रेरी में आपका इंतज़ार करता था। मुझे लगता था कि शायद आपको मुझसे कोई ज़रूरी मदद चाहिए... मगर..."

हरिणी ताना कसते हुए बोली, "लेकिन मैं कभी लाइब्रेरी में नहीं आई... राइट?" वह आगे बोली, "मैं इस आश्रम की एचआर हूँ, मिस्टर आनंद। आप कभी भी मेरे ऑफिस में आकर मुझसे मिल सकते थे। लेकिन आपने मुझे

नज़रअंदाज़ करना ठीक समझा..." फिर वह अंग्रेज़ी में बोली, "Maybe since you had seen me naked, you had some other thoughts about me**."**

फिर उसने गंभीर होकर कहा, "I must let you know, Mr. Anand, मैं जिन हालात में आपसे indirectly मिली थी... उस गंदे-से ऐशगाह में... मैं बहुत मजबूर थी। ज्ञान सुंदर, जाम्ब और उनके गुंडे दिन-भर आश्रम और नील कोठी के लोगों पर नज़र रखते हैं। मेरे लिए आश्रम का काम करते-करते आपसे संपर्क करना मुश्किल होता है।"

आनंद बोला, "माफ़ कीजिएगा, हरिणी जी... मैं सुबह आश्रम के काम से गाड़ी लेकर निकल जाता हूँ और रात को काफ़ी देर से आता हूँ। इसीलिए मैं आपके लिए लाइब्रेरी में इंतज़ार करता था। मेरे मन में आपके लिए कोई बुरा ख़याल नहीं है... आप बेहद खूबसूरत हैं, इसीलिए आपको देखकर मैं थोड़ा-सा..."



वह झेंपकर अपना सिर नीचे कर लेता है। हरिणी मुस्कुरा बोली, "जाने दीजिए, आनंद बाबू। चलिए, आज मैं आपको इस चाँदनी रात में नील कोठी के पीछे वाले बगीचे की सैर करवाती हूँ। यहाँ आने की हिम्मत कोई नहीं करता, लेकिन मैं यहाँ आती हूँ, क्योंकि मुझे पता है..." फिर वह अंग्रेज़ी में बोली, **"When it is safe to come here."**

दोनों गौशाला से निकलकर बगीचे में आ गए। कुछ देर बगीचे में घूमने के बाद दोनों साथ में बैठ जाते हैं।

हरिणी बोली, "My name is **Emily Clive.** मैं पिछले डेढ़ साल से इस आश्रम में मजबूरी में रह रही हूँ। वह दूसरी मंज़िल का कमरा दिखाई दे रहा है न?"आनंद बोला, **"जी... हरिणी जी... I mean, एमिली जी..."** एमिली ने उस कमरे की ओर देखते हुए कहा, "मेरे पति को लाल माई ने वहाँ ज़ॉम्बी बनाकर रखा हुआ है। जब भी मुझे समय और अवसर मिलता है, मैं यहाँ आती हूँ, यह देखने के लिए कि मेरे पति अभी जीवित हैं या नहीं।"

मुझे अब पूरा यक़ीन हो चला है कि मेरे पति जोनाथन अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन कोई अँधेरी शक्ति, पेटवा दानव, काले जादू के सहारे उनके सड़ते हुए शरीर को अब भी जीवित रखे हुए है। जब जोनाथन जंगल की ओर देखते हुए खिड़की पर खड़े होते हैं और हवा मेरी ओर बहती है, तो मुझे उनके सड़े हुए शव की दुर्गंध महसूस होती है।

मैंने उन्हें पुकारने की कोशिश की है। ज़्यादातर वे कोई प्रतिक्रिया नहीं देते, लेकिन कुछ दिन, वे अपना मुँह फाड़कर नीचे उतर ने और मुझे खाने की कोशिश करते हैं। मगर उस कमरे में उन्हें जंजीरों से बाँधकर रखा गया है, इसलिए वे ज़्यादा नीचे नहीं आ पाते। फिर वे वापस खिड़की के पास चले जाते हैं और जंगल की ओर देखते रहते हैं।

मैं बस यही प्रार्थना करती हूँ कि उनकी आत्मा को शांति मिले और एक दिन मुझे उनका अंतिम संस्कार करने का अवसर मिल सके। फिर वह कुछ क्षण रुकी और बोली, "इस लाल माई की देहरी में बहुत से लोग अपनी मर्ज़ी के बिना जी रहे हैं। लाल माई ने अनेक मासूमों को यहाँ बहुत बुरी तरह से खत्म किया है। कोई भी समझदार इंसान, इस देहरी की सच्चाई जानकर, यहाँ नहीं रहना चाहेगा।"

उसकी आवाज़ में पीड़ा उतर आई-"मुझ पर जो अत्याचार हुआ है, उसके बावजूद मैं यहाँ रह रही हूँ... अपने पति को बचाने के लिए, यहाँ फँसे दूसरे मासूम लोगों को बचाने के लिए... लाल माई, जाम्ब और उनके इस पंथ को खत्म करने के लिए और निर्दोष पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए...

आनंद ने दृढ़ स्वर में कहा, "मैं भी यहाँ अपनी मर्ज़ी से नहीं रहता हूँ, मिस क्लाइव। मुझे अपने दोस्त समीर और उसके परिवार को बचाना है। लगभग चार महीने हो गए हैं मुझे यहाँ आए हुए। मैंने आखिरी बार समीर को 20-21 मई को देखा था। उसके बाद से मुझे वह दोबारा कभी नहीं दिखा। उसकी पत्नी श्रेया और बेटी सुनिधि को मैंने कई बार देखा है, लेकिन मुझे उनसे कभी मिलने नहीं दिया गया। मैं उन लोगों को अपने परिवार जैसा मानता हूँ। इसीलिए अब तक मैं नहीं गया। वरना यहाँ से जान बचाकर भागने के मुझे कई मौके मिले, खासकर ज्ञान सुंदर की मौत के बाद... पर मैं नहीं गया।"

"Good to know that you care for people, Mr. Anand..."फिर एमिली बोली, "वैसे मैं आपको बता दूँ कि आपके गौशाला में आने से 20 मिनट पहले से मैं यहाँ बैठी थी। जब आप आए, तब मैंने आपको देख लिया था, फिर भी मैंने आपसे बात करने से पहले 30 मिनट और इंतज़ार किया।"

आनंद ने पूछा, "लेकिन क्यों, मिस क्लाइव?" वह मुस्कराकर बोली, "आप मुझे एमिली कह सकते हैं। मैं जानना चाहती थी कि कहीं कोई आपका पीछा तो नहीं कर रहा है। इसके अलावा, मैं आपको परख रही थी कि आपके अंदर कितना धैर्य और परिपक्वता है, आप लोगों की कितनी परवाह करते हैं। मैं देखना चाहती थी कि आप लोगों से किस प्रकार बात करते हैं और उनकी मजबूरियों को किस हद तक समझ सकते हैं। जो मदद मैं आपसे माँगने वाली हूँ, उसमें इन सभी योग्यताओं की आवश्यकता है, **और आप इन सभी कसौटियों पर खरे उतरे।**

फिर एमिली गंभीर स्वर में बोली, "Anyways, अकेले ना मैं लाल माई की देहरी से लड़ सकती हूँ, ना आप। अगर हम मिलकर लड़ें, तो we can defeat Laal Mai's evil cult and destroy this place for good." “लाल माई, कलकुलता और महारांध्वी के महाश्मशान चले जाने के बाद और ज्ञान सुंदर की मौत के बाद हालात हमारे पक्ष में आ चुके हैं। खासकर इसलिए क्योंकि जाम्ब बाबा अब अकेला पड़ चुका है और मेरे द्वारा उसके

मन में पैदा किए गए भ्रम के कारण उसे लगता है कि इस आश्रम की हर चीज़ उसके पूर्ण नियंत्रण में है। यही सही समय है, जब हम कुछ कर सकते हैं।"

आनंद बोला, "कहिए एमिली, मैं किस प्रकार आपकी सहायता कर सकता हूँ?" एमिली ने व्यंग्यात्मक हँसी के साथ कहा, " कोई चाहकर भी इस आश्रम में रहकर किसी और की सहायता नहीं कर सकता, मिस्टर आनंद। हम कुछ दुष्टों और एक ख़ून के प्यासे शैतान के चंगुल से निकलने की कोशिश कर रहे हैं। We are trying to survive this hell called Laal Mai's Dehri."

फिर वह गंभीर होकर बोली, "काफ़ी बातें हो गईं... now I must come to the point. मैं आपको कुछ ऐसे लोगों के नाम बताऊँगी, जो शहर में रह रहे हैं। आप जब आश्रम के काम से बाहर जाएँगे, तो आपको उन लोगों से संपर्क करना होगा। ये लोग शायद हमारी सहायता कर सकते हैं।"

फिर एमिली ने आनंद को एक सूची थमाते हुए कहा, "पहला नाम है मिस्टर शोंजीत बासु... रायपुर शहर के बहुत बड़े और जाने-माने डॉक्टर। दूसरे हैं रिटायर्ड जज मिस्टर जगदीप सेठी और असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस हरीश कुमार सिंह। ये लोग कभी इस आश्रम में आने वाले श्रद्धालु हुआ करते थे, जब तक कि उन्होंने अपनी बेटियों या पोतियों को इन जंगलों में खो नहीं दिया।"

एमिली की आवाज़ में अब गंभीरता आ गई-"पिछले दो सालों में सैकड़ों लड़कियाँ लापता हुई हैं। हाल ही में यहाँ हाई-प्रोफ़ाइल परिवारों और प्रतिष्ठित वंशों की तेरह लड़कियों के लापता होने की खबर है और लाल माई का पंथ ही इन लड़कियों के गायब होने के लिए ज़िम्मेदार है। मेरे पास पक्के सबूत हैं।"

मुसीबत में पड़े बेचारे लोग, लॉकडाउन और प्रशासन की पाबंदियों की वजह से अपनी समस्याओं के समाधान के लिए लाल माई से मदद की

गुहार करते हैं। कुछ लोग उसके दरबार में हाज़िरी लगाते हैं और कुछ उसे पत्र लिखते हैं, यह जाने बिना कि उनकी समस्याओं के लिए शायद लाल माई स्वयं ज़िम्मेदार है। मैं और मेरी अनुचरियाँ इन पत्रों को पढ़कर उनके जवाब लिखती हैं और लाल माई के अनुमोदन के लिए उन्हें देती हैं। लाल माई की मंज़ूरी मिलने के बाद जवाबी पत्रों को इस आश्रम के श्रद्धालुओं तक डाक के माध्यम से पहुँचा दिया जाता है।

लाल माई और उसकी सहयोगिनियों के महाश्मशान चले जाने के बाद इस पत्राचार के संचालन की ज़िम्मेदारी पहले ज्ञान सुंदर पर आई, फिर ज्ञान की मृत्यु के बाद जाम्ब बाबा पर।

जाम्ब बाबा को पढ़ने-लिखने में कोई रुचि नहीं है। Hence, अब मैं सीधे पत्र-संचार का काम संभालती हूँ। इस काम में मेरी मदद, मेरी टीम के अलावा सुजल भी करता है। श्रद्धालुओं और भक्तों के साथ पत्राचार का संचालन करते हुए मैंने 17 लोगों की एक सूची बनाई है। इनमें विशेष रूप से वे तीन लोग, जिनके नाम मैंने आपको बताए हैं, हमारी मदद करने के लिए तैयार हैं। बदले में उन्हें उनकी बच्चियाँ चाहिए। "

आनंद, आपको उन लोगों से मिलकर इस आश्रम की सच्चाई और यहाँ होने वाले काले कारनामों के बारे में उन्हें विश्वास दिलाना है। इसके लिए आपको उन्हें कुछ ठोस सबूत भी देने होंगे, ताकि वे हमारी मदद करने के लिए तैयार हो सकें।

लेकिन इन सब से पहले आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि उन 17 लोगों में से किस पर हम भरोसा कर सकते हैं। प्रशासन और पुलिस में भी लाल माई के बहुत से सहयोगी, चेले और अंधभक्त हैं, जो या तो लाभ या सत्ता के लिए उससे मिल गए हैं। "We have to be careful about them."

एमिली ने बगीचे के गेट की ओर इशारा करते हुए कहा, **"वह गेट देख रहे हैं, आनंद?"** आनंद ने सिर हिलाकर हामी भरी। एमिली ने आगे कहा,

"उससे बाहर निकलकर एक कच्चा रास्ता जंगल की गहराइयों से होता हुआ अबूझमाड़ की पहाड़ियों तक जाता है।

वहीं कहीं एक प्राचीन महाश्मशान है, जिसमें पेटवा दानव का एक गुप्त मंदिर है, जिसे नास्ति मंदिर कहते हैं। लाल माई वहीं अपनी सहयोगिनियों और अनुचरियों के साथ मिलकर एक विशेष रक्त अनुष्ठान करने वाली है, जो अब से 30 दिन में पूरा होने वाला है, यानी 31 अक्टूबर को, ब्लू मून के दिन।

हमें उस दिन से पहले उन सभी 13 लड़कियों को ढूँढ़कर उन्हें उस लाल माई, पेटवा दानव और उनके अनुचरों-अनुचरियों से बचाना है। **"अब हमें चलना चाहिए, काफ़ी समय हो गया है।"** यह कहकर एमिली जाने लगी। आनंद एमिली को पसंद करने लगा था। वह उसके साथ थोड़ा और समय बिताना चाहता था और आगे भी उससे मुलाकातें करना चाहता था।

आनंद ने उसे थोड़ी देर और रुकने के लिए अनुरोध किया, "एमिली, क्या आप थोड़ी देर और रुक सकेंगी?" एमिली आनंद की ओर पलटी और शरारत से मुस्कुराते हुए पूछा, "कहिए आनंद... आज ही सारी बातें करनी हैं मुझसे?" आनंद ने कहा,"मेरे कुछ सवाल हैं..." एमिली बोली "पूछिए।" आनंद ने पूछा,"ये **शुकासुर** क्या जीव है? और लोग **जाम्बुरस** पीकर बेहोश क्यों हो जाते हैं?"

एमिली ने उसे बताया, "आज का शुकासुर वह हज़ार साल पुराना किंवदंती वाला जीव नहीं है। वह एक सामान्य जंगली सूअर है, जिसे लाल माई के पंथ की जीव-विज्ञान और आनुवंशिकी विशेषज्ञ, डॉ. शिरीन गुहा ने रासायनिक या शायद आनुवंशिक रूप से परिवर्तित किया है। यहाँ घने जंगल में लाल माई की एक गुप्त प्रयोगशाला है, जहाँ इंसानों और जानवरों पर अवैध प्रयोग किए जाते हैं। मुझे इसकी जानकारी जाम्ब बाबा से मिली।"

लाल माई के पास एक नहीं, दर्जनों शुकासुर हैं। उनमें से कुछ बहुत अधिक बड़े और दानवीय आकार के हैं। आधुनिक शुकासुरों का काम रात में देहरी

के आसपास डर का माहौल फैलाना और बाहर वालों से देहरी के परिसर की रक्षा करना है। ये सूअर अक्सर लाल माई की सहयोगिनियों और स्वयं लाल माई की सवारी बन जाते हैं, ताकि उन्हें और राक्षसी अनुष्ठानों की सामग्रियों को जंगल के मुश्किल और पथरीले रास्तों पर आसानी लाया, ले जाया सके।

लाल माई के साम्राज्य के कप्तान, ज़रूरत पड़ने पर काले जादू के मंत्रों से सिद्ध **पिशाचिनी शंख** के द्वारा इन सूअरों को नियंत्रित और संचालित करते हैं। शुकासुर यहाँ रात को उस बरगद के पेड़ के नीचे आकर लाल माई के शिकार लोगों की लाशें खा जाते हैं। उन बेचारों का अंत तो हो जाता है, लेकिन उनका अंतिम संस्कार नहीं होता।

“अब मैं तुम्हें **जाम्बुरस** के बारे में बताती हूँ। यह मूल रूप से जामुन के फलों का रस है। इसमें इस जंगल में उपलब्ध नींद लाने वाली औषधियों, और विदेशों से मँगाए गए शक्तिशाली मतिभ्रमकारी पदार्थों, तथा विषैले तत्वों को मिलाकर एक ऐसा प्रभावशाली घोल तैयार किया जाता है, जो हाथियों जैसे विशाल जानवरों को भी शांत करके सुला सकता है।“

"इसमें मात्रा ही सबसे महत्वपूर्ण होती है। अधिक मात्रा में **जाम्बुरस** जानलेवा हो सकता है। कम मात्रा में यह नींद लाने का काम करता है, जबकि मध्यम मात्रा में इससे मतिभ्रम और स्लीप पैरालिसिस जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। लाल माई अपनी विशेष रात्रिकालीन गतिविधियों को गुप्त रखने के लिए ठीक मध्यम मात्रा का फायदा उठाती है।"

एमिली की आँखों में दिनभर की थकान और नींद के अलावा सुरक्षित रूप से अपने कमरे में लौट जाने की इच्छा साफ़ झलक रही थी। उसे डर था कि कहीं वह पकड़ी न जाए, लेकिन वह आनंद को सब कुछ स्पष्ट कर देना चाहती थी, ताकि आनंद उसके बताए कार्यों को सही ढंग से पूरा कर सके। "**और कोई सवाल**?" "हाँ, "आप हमेशा मुखौटा लगाकर क्यों रहती हैं...?"

एमिली ज़ोर से हँस पड़ी-"जाम्ब बाबा नहीं चाहता कि मेरे हुस्न और जिस्म पर उसके अलावा किसी और की नज़र पड़े।अब मैं भी इस मास्क में सहज हो गई हूँ। यह मास्क मुझे अनचाही निगाहों से बचाता है। मेरी खूबसूरती मेरा वरदान है, मेरी ताकत भी है, लेकिन जब जाम्ब बाबा ने मुझे यहाँ कैद कर लिया, तो यही मेरी सबसे बड़ी कमज़ोरी बन गई।"

आनंद आगे पूछता है**,** "आपको इतनी जानकारी कैसे है? और आप मुझ पर इतना भरोसा क्यों कर रही हैं?" एमिली कुछ क्षण रुकी और फिर बोली, "जिस **जाम्बुरस** का इस्तेमाल लाल माई के वफ़ादार अनुचर, देहरी के निर्दोष कार्यकर्ताओं, सेवक-सेविकाओं और श्रद्धालुओं को अपने नियंत्रण में रखने के लिए या कृष्ण पक्ष की अमावस्या रात उन्हें बेहोश करके के लिए करते है, उसी **जाम्बुरस** का इस्तेमाल मैं गुप्त रूप से जाम्ब बाबा पर करती हूँ। जब वह मेरे साथ समय बिताता है। मैं उसे जाम्बुरस पिलाकर उससे सारी जानकारी निकलवाने की कोशिश करती हूँ।"

"मैं तुम पर भरोसा क्यों कर रही हूँ? Because हमारे विद्रोही संगठन, देहरी विनाशक टास्क फोर्स (डी.वी.टी.एफ) में अब बहुत कम लोग सक्रिय बचे हैं। उनमें से सिर्फ सुजल ही बाहर जा सकता है, वह भी तुम्हारे साथ। अब या तो सुजल अकेले बाहर का काम करे या तुम दोनों एक साथ मिलकर हमारे डी.वी.टी.एफ की बाहरी गतिविधियों को जल्दी से जल्दी पूरा करो।

हमारे कुछ सदस्य, जैसे सुकेशिनी के पति शिव प्रसाद, मेरे और ज्ञान सुंदर के वरिष्ठ गुरु-भाई कुंदन, मारे जा चुके हैं, और कुछ सदस्य लाल माई के डर से चुप बैठ गए हैं। डी.वी.टी.एफ के बाहरी मामलों को संभालने के लिए तुम्हें भर्ती करने के अलावा हमारे पास कोई और विकल्प नहीं है।

मैं व्यक्तिगत रूप से तुम पर भरोसा करती हूँ, because I know you care for people. तुमने समीर और उसके परिवार की बहुत मदद की है..." वह कुछ क्षण रुकी, फिर बोली, "अब मुझे इजाज़त दो। Good night."

इतना कहकर एमिली अँधेरे में गायब हो गई और आनंद भी चुपके से अपने कमरे की ओर निकल गया। डी.वी.टी.एफ की गुप्त बैठकों में सभी सदस्य इस सिद्धांत पर सहमत होते हैं कि **16-17 अक्टूबर 2020 की रात कुछ बड़ा करना होगा।**

उधर, ज्ञानसुंदर की मृत्यु के बाद राक्षस अनुष्ठान की समस्त सामग्री महाश्मशान तक पहुँचाने की जिम्मेदारी आनंद को सौंप दी गई। आनंद, जो अब डी.वी.टी.एफ का सक्रिय सदस्य बन चुका था, आश्रम के काम के अलावा सुजल के साथ मिलकर आश्रम के बाहर बैठे लाल माई के दुश्मनों तथा डी.वी.टी.एफ के सहयोगियों और समर्थकों के साथ मिलकर देहरी और उसके काले संगठन को कानूनी एवं सरकारी स्तर पर घेरने में लगा था।

एमिली और डी.वी.टी.एफ के दूसरे सदस्यों से लगातार मिल रही जानकारी और सबूतों के आधार पर देहरी के कई गुप्त ठिकानों पर पुलिस, स्वास्थ्य विभाग और अन्य सरकारी एजेंसियों के छापे पड़ने लगे थे। देहरी के कई काले धंधों और तस्करी की गतिविधियों का पर्दाफाश हो चुका था। उसे भारी आर्थिक नुकसान हो रहा था।

जाम्ब बाबा अकेले यह सब संभाल नहीं पा रहा था। उसके मुख्य गुर्गों और **गश्त:पो** के कई सदस्यों को भी डी.वी.टी.एफ के लोग गुप्त रूप से या तो रास्ते से हटा रहे थे या पुलिस के हवाले करवा रहे थे।

डी.वी.टी.एफ ने जानबूझकर कुछ महत्वपूर्ण सबूत रंगबाबा आश्रम की साध्वी हिमनदा देवी के पास सुरक्षित रखवा दिए थे, ताकि सही समय आने पर उनका इस्तेमाल किया जा सके।

लाल माई को, अपनी मायावी शक्तियों से डी.वी.टी.एफ के गुप्त अभियानों, अपने अड्डों और देहरी की अन्य शाखाओं पर पुलिस तथा प्रशासन के बढ़ते हुए छापों का पता चल रहा था। उसे अक्टूबर के मध्य जंगल में स्थित अपने मुख्य किले और अड्डे पर डी.वी.टी.एफ के विद्रोह की भनक भी लग गई थी।

लाल माई को जाम्ब बाबा और **गश्त:पो** के बचे हुए सदस्यों से भी लगातार सहायता और अतिरिक्त बल भेजने के अनुरोध मिल रहे थे। लेकिन लाल माई पेटवा दानव के मार्गदर्शन में अपना रक्त अनुष्ठान पूरा करने में लगी हुई थी। उसे किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं चाहिए था, क्योंकि पहले भी उसका यह अभियान नीलांजन, शिव प्रसाद और गुरु-भाई कुंदन ने विफल कर दिया था।

लाल माई का मानना था कि ये प्रतिकूल परिस्थितियाँ जाम्ब बाबा को और अधिक परिपक्व बनाएँगी, उसमें नेतृत्व के गुणों का विकास करेंगी और साथ ही देहरी के छिपे हुए दुश्मनों को भी सामने ले आएँगी।

अगर एक बार लाल माई का रक्त अनुष्ठान सफल हो गया, तो पेटवा दानव का शरीर पुनर्जीवित हो जाएगा और वह पहले से भी अधिक शक्तिशाली हो जाएगा। इसके बाद लाल माई पेटवा दानव के साथ मिलकर कई राक्षसी संतानों को जन्म देगी और पूरे संसार की रानी बन जाएगी।

ऐसे में अगर उसे जाम्ब बाबा और श्रेया का बलिदान भी देना पड़ा, तो उसे उससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।

इधर, कल्कुलता और महारांध्वी ने आनंद पर **काली सम्मोहनी विद्या** का जादू कर दिया था। वे वैसे तो लाल माई के कहने पर आनंद के दूसरे कामों में कोई व्यवधान नहीं डालती थीं, लेकिन जब रक्त अनुष्ठान की सामग्री को गुप्त भृकुटि गुफा तक ले जाना होता था, तब वे उसके साथ चलती थीं।

कल्कुलता एमिली का रूप धारण करके आनंद को लुभाती थी, जबकि महारांध्वी डॉ. ईवा का रूप बनाकर उसे भ्रमित करती थी। दोनों डायनें अपनी मायावी शक्तियों से आनंद को लगातार गुमराह करती थीं।

आनंद अनजाने में, एमिली समझकर जंगल में कल्कुलता के साथ कई बार शारीरिक संबंध बना चुका था। उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह एमिली नहीं, बल्कि कल्कुलता और महारांध्वी के मायावी रूपों के जाल में फँस रहा था।

लाल माई की मायावी शक्ति के कारण उसे वास्तविक महाश्मशान दिखाई ही नहीं देता था। उसे केवल एक साधारण वन क्षेत्र दिखाई देता, जहाँ वह

अपना ट्रक रोककर सामान उतार देता। आनंद को कभी यह पता ही नहीं चला कि उसके ट्रक में किस प्रकार की सामग्री लाई और ले जाई जाती है।

डी.वी.टी.एफ का कोई भी सदस्य कभी उन ट्रकों के भीतर झाँकने का साहस नहीं कर पाता था, जिनमें अनुष्ठान का सामान देहरी से भ्रुकुटि गुफा तक ले जाया जाता था। क्योंकि उन ट्रकों में हमेशा लाल माई की दो सहयागिनियाँ, कल्कुलता और महारंध्वी, खुली तलवारें हाथों में लिए बैठती थीं। उनका काम केवल ट्रक और उसमें लदी समस्त सामग्री की रक्षा करना नहीं था, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी था कि रास्ते में कोई अनधिकृत व्यक्ति उस सामान को देखने या उसके बारे में जानने का प्रयास न करे।

उन दोनों की उपस्थिति मात्र से ही ऐसा भय उत्पन्न हो जाता था कि कोई व्यक्ति ट्रक के पास जाने की तो दूर, उसकी ओर आँख उठाकर देखने की भी हिम्मत नहीं करता था।

10 अक्टूबर की रात, किसी और आयोजन का नियम बताकर महारंध्वी ने सभी को जाम्बुरस पिलाकर बेसुध सुला दिया। इस बार कल्कुलता की सावधान और सतर्क निगाहों के सामने एमिली और सुकेशिनी भी विवश हो गईं। उन्हें भी जाम्बुरस पीना पड़ा और कुछ ही देर में उसके प्रभाव से दोनों गहरी बेहोशी में डूबकर सो गईं। चाहकर भी आनंद से मदद की कोई गुहार न लगा सकी।

जब आश्रम के सभी लोग जाम्बुरस के प्रभाव में गहरी नींद में डूबे हुए थे, तब कल्कुलता और महारंध्वी ने बिना किसी को भनक लगे, तेरह बेहोश बालिकाओं कों नील कोठी की तीसरी मंज़िल से निकालकर, भ्रुकुटि गुफा तक ले जाने के लिए ट्रक में लाद दीया।

अगले दिन आनंद उसी ट्रक को लेकर भ्रुकुटि गुफा तक पहुँच गया। अपनी इस चाल में सफल होने की खुशी में महारांध्वी ने एमिली का रूप धारण किया और जंगल के बीच आनंद को एकांत में ले जाकर , वह सब सुख दिया, जिसकी उसे एमिली से चाहत थी।

आनंद अब पूरी तरह उन दोनों डायनों के जादू में मंत्रमुग्ध होकर अपने होश-हवास खो चुका था। आनंद को इस बात की बड़ी खुशी थी कि जंगल में कराली अनुष्ठान के लिए सामान लाने-ले जाने के दौरान उसे एक नहीं, बल्कि दो-दो एमिली का प्यार मिल रहा था।

महारांध्वी और कल्कुलता ने काले जादू के प्रभाव से महाश्मशान की भृकुटि गुफा में एक विशेष कक्ष का निर्माण कर रखा था। वहाँ वे आनंद को अपनी माया से भ्रमित करके फँसाए रखने के लिए एमिली का रूप धारण करतीं और उसकी **'विशेष सेवा'** करती थीं।

कल्कुलता के निर्देशानुसार, **11 अक्टूबर** की सुबह आनंद ने ट्रक महाश्मशान की भृकुटि गुफा के पास खड़ा किया और बिना किसी सवाल के अकेला ही पैदल आश्रम की ओर लौट आया। उसे जरा भी आभास नहीं था कि उस रात ट्रक में केवल अनुष्ठान की सामग्री ही नहीं, बल्कि 13 मासूम बच्चियां थीं, जिनकी बलि लाल माई 31 अक्टूबर की रात को पेटवा दानव को चढ़ने वाली थी।

यह डी.वी.टी.एफ के लिए एक बहुत बड़ी चूक थी। दुष्ट और चतुर लाल माई उन्हें बेवकूफ़ बनाने में कामयाब हो चुकी थी। काम पूरा होते ही जाम्ब बाबा ने अपनी योजना के अनुसार आनंद पर चोरी का झूठा आरोप लगा दिया। किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने से बचने के लिए उसने आनंद को तुरंत पकड़वाकर आश्रम के गुप्त तहखाने में कैद करवा दिया। लाल माई ने जाम्ब बाबा को अनुष्ठान पूरा होते ही आनंद को ख़त्म करने के निर्देश दे दिए थे। फ़िलहाल आनंद को ज़िंदा रखकर डी.वी.टी.एफ के कार्यकर्ताओं को बहकाना लाल माई की एक चाल थी।

एमिली चाहकर भी आनंद को छुड़ा नहीं पा रही थी, क्योंकि उसके हाव-भाव और बातों से एमिली को पता चल चुका था कि आनंद, कल्कुलता और महारांध्वी द्वारा रचे गए मायाजाल में फँस चुका है। उसे आज़ाद करने से जाम्ब बाबा को डी.वी.टी.एफ की गतिविधियों का पता चल सकता था और एमिली की अपनी जान भी ख़तरे में पड़ सकती थी।

अतः, **13 अक्टूबर 2020** को हुई डी.वी.टी.एफ की एक गुप्त बैठक में उसके मुख्य कार्यकर्ताओं ने यह निर्णय लिया कि अब जाम्ब बाबा का अंत करने और देहरी को मुक्त कराने के अभियान के दौरान ही आनंद को उसकी कैद से बाहर निकाला जाएगा।

डी.वी.टी.एफ की सभी गुप्त बैठकें अब गौशाला के बजाय जाम्ब बाबा की ऐशगाह में ही होने लगी थीं। हारिणी जाम्ब बाबा को अपने हुस्न और जाम्बु रस के नशे में बेसुध करने के बाद लाइब्रेरी वाले गुप्त रास्ते से ईवा, सुजल, श्रावणी और सुकेशिनी को ऐशगाह में बुलाती थी। इसके बाद डी.वी.टी.एफ की गुप्त चर्चाएँ होतीं और महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते थे।

चारुलता धीरे-धीरे डी.वी.टी.एफ के लिए एक बड़ा खतरा बनती जा रही थी। जाम्ब बाबा से उसकी नज़दीकियाँ भी लगातार बढ़ रही थीं। इस खतरे को भाँपते हुए, **16 सितंबर की अमावस्या की रात**, एमिली ने जाम्बु रस की अत्यधिक मात्रा देकर चारुलता को मार डाला। अगली सुबह डॉ. ईवा ने जाम्ब बाबा और गश्त-पो के सदस्यों को चारुलता की मृत्यु का कारण कोरोना बताया।

इस प्रकार कोरोना महामारी से उपजी परिस्थितियाँ डी.वी.टी.एफ के उद्देश्यों को पूरा करने में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुईं। गश्त-पो के कई सदस्य वास्तव में कोरोना का शिकार हुए थे, लेकिन उनमें से कितनों की मौत वास्तव में बीमारी से हुई और कितनों के पीछे डी.वी.टी.एफ का हाथ था, यह रहस्य **डॉ. ईवा और एमिली के अलावा किसी और को पता नहीं चल पाया।**

अध्याय 15
आधी रात के बाद

12 अक्टूबर 2020, दण्डकारण्य के घने जंगलों के बीच अंग्रेज़ों के समय की एक विशाल पत्थर की इमारत खड़ी थी। कभी यह ब्रिटिश शासन की उच्च सुरक्षा वाली जेल थी, पर अब उसके टूटे हुए बरामदों, लोहे की सलाखों और काई जमी दीवारों पर समय की धूल पसरी थी। बाहर से यह खंडहर प्रतीत होती थी, लेकिन भीतर लाल माई के लोगों का कड़ा पहरा रहता था।

उसी जेल की एक एकांत कोठरी में पिछले कई महिनों से समीर कैद था। उसके भागने का कोई मार्ग नहीं था। मोटी दीवारें, लोहे के दरवाज़े और चौबीसों घंटे पहरा। फिर भी उसके साथ अमानवीय व्यवहार नहीं किया जाता था। समय पर भोजन, साफ़ पानी, दवाइयाँ और पट्टियाँ दी जाती थीं। उसका बुखार पूरी तरह उतर चुका था। शरीर पर लगे घाव अब भरने लगे थे और कई सप्ताह के उपचार, पौष्टिक भोजन तथा नियमित दवाइयों ने उसकी खोई हुई शक्ति लौटा दी थी।

समीर को अच्छी तरह याद था कि लाल माई ने उसे पेटवा दानव का माध्यम (Host) चुना था। यही कारण था कि इस वीरान औपनिवेशिक जेल में कैद होने के बावजूद उसके साथ किसी साधारण कैदी जैसा व्यवहार नहीं किया जा रहा था। समीर समझ गया था कि उसे जीवित रखना ही लाल माई की योजना का हिस्सा है।

वह हर सुबह उठकर पुश-अप्स, स्क्वैट्स, दौड़ की जगह तेज़ कदमों से चलना और दीवार के सहारे अभ्यास करता। उसने अपनी साँसों को नियंत्रित करना सीख लिया। उसका शरीर फिर सैनिक जैसी फुर्ती पाने लगा। पर उसके मन में हर समय एक ही चिंता रहती- "सुनिधि... सलोनी... श्रेया... कहीं लाल माई..."

अब उसे पूरा विश्वास हो चुका था कि आश्रम की तथाकथित संत लाल माई, वास्तव में भयानक लाल डायन है। हर बीतता दिन उसे बेचैन कर देता। उस दिन **आधी रात के बाद** उसकी नींद हल्की सी आहट से टूटी। लोहे के दरवाज़े का भारी कुंडा धीरे-धीरे खुला। समीर बिजली की गति से उठ बैठा। अँधेरे में एक लंबा, गठीला गोरा आदमी भीतर घुसा। उस आदमी ने कमरे की लाइट जलाई।

समीर ने बिना एक क्षण गँवाए हमला कर दिया। उसका मुक्का सीधे उस व्यक्ति के चेहरे की ओर बढ़ा। लेकिन सामने वाला भी प्रशिक्षित था। उसने समीर की कलाई पकड़कर पूरा वार मोड़ दिया। दोनों ज़मीन पर गिर पड़े। कुछ पल तक दोनों एक-दूसरे को दबाने की कोशिश करते रहे। अचानक उस व्यक्ति ने धीमी आवाज़ में कहा, "रुको... मैं दुश्मन नहीं हूँ।" समीर ने उसकी गर्दन पकड़ रखी थी- "झूठ बोल रहे हो!"

"Bloody damn it! अगर दुश्मन होता... तो अभी तक तुम्हें मार चुका होता, लाइट नहीं जलाता। कुछ क्षण बाद समीर ने पकड़ ढीली की। दोनों अलग होकर दीवार से टिक गए। उस व्यक्ति ने हल्की मुस्कान के साथ हाथ बढ़ाया-"कैप्टन रस्किन क्लाइव, दोस्त मुझे रस्टी कहते हैं।"

रस्टी ने आगे बोला, "मैं तुम्हारे बारे में सब जानता हूँ, समीर। मैं यहाँ से दो दिन बाद भागने वाला हूँ और चाहता हूँ कि तुम भी मेरे साथ भाग चलो।"

उसने टूटी-फूटी हिन्दी में अपनी कहानी सुनानी शुरू की- "मैं यूनाइटेड किंगडम की सेना में कैप्टन था। कई वर्षों तक महारानी की सुरक्षा टुकड़ी में नियुक्त रहा। "दो वर्ष पहले मेरी छोटी बहन **एमिली क्लाइव** और उसके पति जोनाथन मॉन्टगोमेरी भारत आए थे। जोनाथन मैनचेस्टर की एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर थे। उन्हें दण्डकारण्य की प्राचीन जनजातीय परंपराओं और कथित छिपे खज़ानों पर शोध करना था।

शादी के तुरंत बाद दोनों भारत आ गए। शुरुआत में वे नियमित रूप से परिवार से संपर्क करते रहे फिर अचानक डेढ़ वर्ष पहले उनका संपर्क टूट गया। रस्टी की आँखें नम हो गईं-"मैं उन्हें खोजने लॉकडाउन शुरू होने से पहले भारत आया था ।

रस्टी ने आगे बताया -उसने स्वयंसेवक बनकर सुकिंचक नाथ कृपा आश्रम में रहना स्वीकार किया ताकि जंगल के भीतर स्वतंत्र रूप से खोज कर सके। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। जाम्ब बाबा हर समय उस पर नज़र रखते। उसे केवल आश्रम के कामों में लगाया जाता। धीरे-धीरे रस्टी को आश्रम की गतिविधियाँ संदिग्ध लगने लगीं। एक रात उसने तहखाने का गुप्त द्वार खोज लिया। जो उसने वहाँ देखा, उससे उसके होश उड़ गए।

लकड़ी के बक्सों में आधुनिक राइफलें...हज़ारों कारतूस... विस्फोटक... नशीले पदार्थों के पैकेट... विदेशी संचार उपकरण... यह कोई साधारण आश्रम नहीं था, बल्कि एक बहुत बड़ा काला और इलिगल बाजार था ।

जांब बाबा हथियारों और ड्रग्स को भारत के विरोधी देशों से खरीदता था। और देश में छिपे हुए आतंकवादी संगठनों को बेचता था। ये दुश्ट संगठन हथियारों का इस्तेमाल देश में दंगे करने के लिए करते थे। इसके अलावा देश के भोले-भाले जवान लड़के-लड़कियों और बच्चों को ड्रग्स बेचकर खूब मुनाफा कमाते थे। जांब बाबा उनसे रॉयल्टी की मोटी रकम भी लेता था, जिसका इस्तेमाल वह लाल माई के साथ आश्रम चलाने के लिए करता था। साथ ही, उसी काले पैसे से अपने हरम में लड़कियों की भर्ती और रखरखाव पर भी खर्च करता था।

रस्टी ने धीमे स्वर में कहा - " मैंने भागने की कोशिश की, लेकिन पकड़ लिया गया। दो महीने से यहीं कैद हूँ।" फिर वह हल्का मुस्कुराया और बोला "लेकिन कैद में भी उम्मीद मिल सकती है।" समीर ने प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। "मुख्य महिला प्रहरी... श्रावणी। वह मेरी मदद कर रही है और उसी ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया है।"

रस्टी ने आगे कहा- "हम एक-दूसरे के करीब आ गए। मैंने उससे वादा किया है कि अगर मैं बच गया तो उससे शादी करके उसे अपने साथ इंग्लैंड ले जाऊँग।" समीर चुपचाप सुनता रहा।

रस्टी ने अपने बैग से दो डायरियाँ निकाली, और समीर को पकड़वाकर बोला: "एमिली और जोनाथन की डायरियाँ हैं। इन्हें देखकर मैं भी हैरान

रह गया था। श्रावणी को आश्रम के एक पुराने गोदाम की सफाई के दौरान ये मिली थीं। उसने बिना कुछ पढ़े इन्हें मुझे लौटा दिया।"

"ये मेरे निजी नोट्स हैं। जब मुझे पकड़कर इस जेल में लाया गया था, तब तलाशी के दौरान मैंने इन्हें बड़ी चतुराई से छिपा दिया था। इसलिए ये उनके हाथ नहीं लग सके। इनमें आश्रम, जेल, जंगल के रास्तों और मेरी अब तक की पूरी जाँच का विवरण है।

रस्टी ने समीर की आँखों में देखते हुए धीमे लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, "दो दिन बाद आधी रात को मैं इस जेल से भागने वाला हूँ। श्रावणी ने सारी तैयारी कर ली है। हथियार, रस्सियाँ, सूखा राशन, नक्शे और जंगल तक सुरक्षित पहुँचने का रास्ता... सब कुछ तय है।"

उसने डायरियों की ओर इशारा किया, "एमिली और जोनाथन की इन डायरियों को ध्यान से पढ़ना। साथ ही मेरे नोट्स भी। इनमें इस जेल का नक्शा, पहरेदारों की ड्यूटी, जंगल के गुप्त रास्ते और हमारी पूरी योजना दर्ज है। अगले दो दिनों में इन्हें अच्छी तरह समझ लो और भागने के लिए खुद को तैयार कर लो।"

रस्टी कुछ पल के लिए चुप हो गया। उसकी आँखों में पीड़ा साफ़ दिखाई दे रही थी- "श्रावणी को एमिली और जोनाथन के बारे में कुछ भी नहीं पता। उसने कभी उन्हें देखा तक नहीं। आश्रम में कोई भी उनके बारे में बात नहीं करता। जैसे वे कभी अस्तित्व में ही नहीं थे।"

उसने धीमे स्वर में कहा, "कई बार मुझे लगता है, एमिली और जोनाथन... शायद वे दोनों अब इस दुनिया में नहीं हैं। संभव है कि लाल माई और जाम्ब बाबा ने उन्हें मार डाला हो।"

कुछ क्षण तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। फिर रस्टी ने दृढ़ स्वर में कहा, "लेकिन जब तक मुझे उनकी मौत का कोई प्रमाण नहीं मिल जाता, मैं हार नहीं मानूँगा। जेल से निकलने के बाद मेरी पहली और आख़िरी कोशिश उन्हें ढूँढ़ने की होगी। अगर वे जीवित हैं, तो मैं उन्हें वापस लेकर जाऊँगा। और अगर वे नहीं रहे..." उसकी आवाज़ भर्रा गई, "...तो कम से कम मैं उनके साथ क्या हुआ, यह सच दुनिया के सामने लेकर आऊँगा।"

उसने समीर के कंधे पर हाथ रखा-"तुम अपने परिवार के लिए लड़ रहे हो... और मैं अपनी बहन के लिए। शायद हमारी मंज़िलें अलग हैं, लेकिन दुश्मन एक ही है। इसलिए अब से हम दोनों साथ लड़ेंगे।"

समीर कुछ क्षण तक चुपचाप उसे देखता रहा। फिर उसने आगे बढ़कर रस्टी का हाथ थाम लिया- "धन्यवाद, रस्टी । शायद भगवान ने तुम्हें मेरी मदद के लिए ही भेजा है। कुछ सोचकर समीर ने पूछा, "लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई। तुम मेरी कोठरी तक पहुँचे कैसे?

रस्टी के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान फैल गई। उसने चारों ओर एक नज़र दौड़ाई, जैसे यह सुनिश्चित कर रहा हो कि कोई उनकी बातें नहीं सुन रहा। फिर उसने केवल एक शब्द कहा- "श्रावणी। "अब मुझे चलना होगा। दो दिन बाद... ठीक आधी रात के बाद। तैयार रहना। उस रात हमारी ज़िंदगी या तो हमेशा के लिए बदल जाएगी... या यहीं खत्म हो जाएगी।"

इतना कहकर वह अँधेरे गलियारे में उसी खामोशी से गायब हो गया, जैसे आया था। भारी लोहे का दरवाज़ा फिर से बंद हुआ और कोठरी में एक बार फिर सन्नाटा छा गया। लेकिन इस बार उस सन्नाटे में निराशा नहीं, बल्कि उम्मीद की एक हल्की-सी किरण जन्म ले चुकी थी।

अगले दो दिनों तक समीर डायरियों में लिखा हर शब्द पढ़ता रहा। दण्डकारण्य के भूले हुए मंदिरों, गुप्त सुरंगों, प्राचीन जनजातीय मान्यताओं, रहस्यमयी प्रतीकों और लाल माई के नेटवर्क का विस्तृत विवरण था। जोनाथन ने कई स्थानों का नक्शा बनाया था।

एमिली ने आश्रम के भीतर होने वाले अजीब अनुष्ठानों,और लाल माई के नेटवर्क के व्यक्तियों का विस्तार से उल्लेख किया था। रस्टी की नोटबुक में जेल का नक्शा, पहरेदारों की ड्यूटी, जंगल के रास्ते और भागने की पूरी योजना दर्ज थी। समीर को पहली बार लगा कि शायद ईश्वर ने उसे अभी हारने के लिए नहीं छोड़ा है।

14 अक्टूबर 2020, लाल माई, पेटवा नामक दुष्ट दानव की सलाह पर महाश्मशान में भयानक राक्षस अनुष्ठान करने **में व्यस्त थी**। देहरी की पूरी ज़िम्मेदारी जाम्ब बाबा के हाथों में थी।

उधर जंगल में स्थित औपनिवेशिक काली जेल में, शाम के समय, श्रावणी ने दो बैग तैयार करके चोरी चुपके रस्टी को पकड़ा दिए थे। फिर उसे चाबी और चुम्मा देकर **" आई लव यू। ऑल द बेस्ट। "** बोलकर अपनी ड्यूटी की अवधि पूरी करके सुरक्षित जेल से निकलकर अपने घर चली गई थी, ताकि जाम्ब बाबा को उस पर कोई शक न हो।

उन बैगों में जेल से भागने के बाद घने जंगल में सर्वाइवाइव करने के लिए सूखा राशन, पानी की बोतलें, दवाइयाँ, दो बड़े चाकू और दो पिस्तौलें रखी हुई थीं। इसके अलावा, श्रावणी ने चुपके से उसी दिन काली जेल के गोदाम में स्थित शस्त्रागार से चुराई हुई दो सबमशीन गन भी रस्टी के कमरे में रखवा दी थीं।

रस्टी ने उसे बताया था कि भागने के लिए ऐसी बंदूकें चाहिए थीं जो कम रिकॉइल, हाई एक्यूरेसी और कमरों व हॉलवे में आसानी से संभालने और फायर करने में आसान हों। ऐसी स्थितियों के लिए उस जेल में सबमशीन गन **से अच्छी और कोई** बंदूकें **नहीं थी।**

इस काली जेल में हथियारो की कोई कमी नहीं थी, क्योंकि यहीं से जाम्ब बाबा देश के दुश्मनों का साथ मिल कर देशी और विदेशी हथियारो की तस्करी करता था। लेकिन सुरक्षाकर्मियों की संख्या कम हो गई थी, क्योंकि उनमें से ज़्यादातर को लाल माई की रस्मों की सुरक्षा के लिए महाश्मशान परिसर में भेज दिया गया था।

निर्धारित रात आ गई। रस्टी ने श्रावणी द्वारा पहुँचाई गई चाबी से ताला खोला और समीर को भी उसकी कैद से आज़ाद कर दिया। । दोनों बिना आवाज़ किए गलियारों से निकलते गए- एक प्रहरी को बेहोश किया, दूसरे बंदूक छीन ली।

रस्टी , जो ब्रिटिश सेना का प्रशिक्षित अधिकारी रह चुका था, और समीर, जिसने पिछले कई सप्ताहों से कैद में रहते हुए अपने शरीर को फिर से पूरी तरह चुस्त और शक्तिशाली बना लिया था, अब किसी भी कीमत पर रुकने वाले नहीं थे। अब उनके सामने केवल एक लक्ष्य था... इस

औपनिवेशिक जेल की ऊँची दीवारों को पार कर दण्डकारण्य के घने जंगल में पहुँच जाना।

जैसे ही वे जेल के मुख्य गलियारे में पहुँचे, दो सशस्त्र प्रहरी उनके सामने आ खड़े हुए- "रुको!" उनमें से एक गरजा। उत्तर में रस्टी बिजली की गति से आगे बढ़ा। उसने पहले प्रहरी की राइफल की नली एक ओर धकेली, उसकी कलाई मरोड़ी और कोहनी का सटीक प्रहार उसकी गर्दन पर किया। प्रहरी लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

उसी क्षण दूसरा प्रहरी समीर पर झपटा। समीर ने उसका वार बचाते हुए उसके पेट पर घुटने से प्रहार किया। जैसे ही प्रहरी पीछे हटा, समीर ने उसकी राइफल छीन ली और उसकी बट से उसके कंधे पर ज़ोरदार वार किया। प्रहरी दर्द से कराहता हुआ फर्श पर गिर पड़ा।



अलार्म बजने से पहले ही समीर और रस्टी तेज़ी से जंगल में स्थित औपनिवेशिक काली जेल में आगे बढ़े और गश्त:पो के उन सभी सुरक्षा गार्डों को मार गिराया, जो लाल माई और उसके गिरोह के प्रति वफ़ादार थे। आगे चलकर उनकी मुलाकात सुरक्षा गार्डों के एक ऐसे गुट से हुई, जो श्रावणी और डी.वी.टी.एफ के प्रति वफ़ादार था।

डी.वी.टी.एफ समर्थकों की सहायता से रस्टी और समीर जेल में बंद सभी कैदियों को मुक्त कराने में सफल रहे। उनकी संख्या लगभग **150 थी, जिनमें बच्चे, महिलाएँ और पुरुष शामिल थे।** कई कैदियों की बीमारी और खराब स्वास्थ्य के कारण जेल में पहले ही मृत्यु हो चुकी थी।

रस्टी ने जेल के सैटेलाइट फोन का इस्तेमाल करके श्रावणी से संपर्क किया। श्रावणी ने सैटेलाइट फोन नेटवर्क के माध्यम से स्वामी रंगनाथ आश्रम की प्रमुख साध्वी **हिमनदा देवी** से संपर्क किया और उन्हें काली जेल में बंद लाल माई के निर्दोष पीड़ितों को मुक्त कराए जाने की सूचना दी।

हिमनदा देवी ने तुरंत जंगल के दूसरे हिस्से में स्थित स्वामी रंगनाथ आश्रम से कुछ साधकों को मुक्त कैदियों को बचाकर वहाँ से निकालने के लिए भेजा। साधकों को निर्देश दिया गया कि वे एक लंबे, लेकिन तुलनात्मक रूप से सुरक्षित और कम प्रचलित रास्ते से सभी मुक्त कैदियों को सुरक्षित रूप से **स्वामी रंगनाथ आश्रम** तक पहुँचाएँ।

वहीं, समीर और रस्टी ने जानबूझकर छोटा लेकिन सबसे स्पष्ट और संभावित रास्ता चुना, ताकि उनका पीछा करने आने वाले जाम्ब बाबा और गश्त-पो के सुरक्षा गार्डों का ध्यान उनकी ओर खींचा जा सके और मुक्त कैदियों को सुरक्षित निकलने का पर्याप्त समय मिल जाए।

समीर और रस्टी को भी सलाह दी गई थी कि अंततः वे सुरक्षा के लिए स्वामी रंगनाथ आश्रम पहुँच जाएँ और तब तक वहीं रहें, **जब तक डी.वी.टी.एफ देहरी पर अपना नियंत्रण स्थापित नहीं कर लेता।**

अपना काम पूरा होने पर, समीर और रस्टी... दोनों बारिश और अँधेरे का लाभ उठाकर जेल की बाहरी दीवार पार कर गए। कुछ ही मिनटों बाद वे जंगल की काली छाया में विलीन हो चुके थे। उस रात समीर और रस्टी ने गश्त-पो के करीब 56 गुर्गों को मार गिराया। लाल माई की देहरी पर अब तक का यह सबसे बड़ा हमला था।

अगली सुबह , जब जाम्ब बाबा को समीर और रस्टी के भागने का समाचार मिला, उसका चेहरा क्रोध से विकृत हो उठा। वह गुस्से से फटता हुआ बोला, "समीर और रस्टी, मैं तुम दोनों को तड़पा-तड़पाकर मार डालूँगा!"

फिर उसने अपने साथ गश्त-पो के 40 गुर्गों को लिया और उन्हें संबोधित करते हुए बोला, "उन्हें ज़िंदा पकड़ो! उसकी गर्जना पूरे आश्रम में गूँज उठी।" जाम्ब बाबा का आदेश मिलते ही पूरा आश्रम मानो युद्ध की तैयारी में जुट गया।

कुछ ही देर में उसके हथियारबंद गुर्गे रात के लिए मशालों, बंदूकों और प्रशिक्षित शिकारी कुत्तों के साथ दण्डकारण्य के घने जंगल में फैल गए। हर पगडंडी, हर घाटी और हर झाड़ी की तलाशी ली जाने लगी। कुत्ते ज़मीन सूँघते हुए समीर और रस्टी की गंध तलाश रहे थे, जबकि शाम होते ही मशालों की टिमटिमाती लौ अंधेरे जंगल को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी।

जाम्ब बाबा स्वयं खोज दल का नेतृत्व कर रहा था। उसकी आँखों में क्रोध धधक रहा था। वह दहाड़कर बोला, "दोनों ज़्यादा दूर नहीं गए होंगे। ज़िंदा पकड़ो उन्हें! अगर विरोध करें, तो हाथ-पैर तोड़ देना, लेकिन किसी भी हाल में वे जंगल से बाहर नहीं निकलने चाहिए।"

पूरा जंगल शोर, भौंकते शिकारी कुत्तों और हथियारबंद आदमियों के कदमों से गूँज उठा। समीर और रस्टी के लिए अब हर क्षण जीवन और मृत्यु के बीच की दौड़ बन चुका था।

उधर जंगल के भीतर समीर और रस्टी कई घंटे तक लगातार चलते रहे। भोर से ठीक पहले झाड़ियों के पीछे से एक धीमी आवाज़ आई- "रस्टी ..." वह श्रावणी थी।

उसने दोनों को तुरंत अपने साथ चलने का संकेत दिया, कई घुमावदार पगडंडियों और चट्टानों के बीच से गुजरते हुए वे एक प्राचीन आश्रम तक पहुँचे। श्रावणी ने फुसफुसाकर कहा, यह रंगनाथ बाबा का आश्रम है। लाल माई और जाम्ब बाबा के लोग यहाँ आने से डरते हैं। कुछ समय के लिए तुम दोनों यहीं सुरक्षित रहोगे।" समीर ने श्रावणी की ओर देखा। उसके मन में कई प्रश्न उमड़ रहे थे। आखिर उसने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा, "श्रावणी...

तुम हमारी मदद क्यों कर रही हो? तुम्हें इससे क्या मिलेगा? अगर जाम्ब बाबा या लाल माई को इसका पता चल गया, तो वे तुम्हें ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे।"

श्रावणी कुछ क्षण तक मौन रही। उसकी आँखें नम हो गईं। उसने धीमी आवाज़ में कहा- "मुझे कुछ नहीं चाहिए, समीर जी... सिवाय न्याय के। वह कुछ पल रुकी, फिर बोली- मेरे पिता, गुरु भाई कुंदन, कभी लाल माई की आश्रम के सबसे सम्मानित साधकों में से एक थे। लेकिन एक दिन उन्होंने लाल माई की असली सच्चाई जान ली। उन्होंने आश्रम के कुछ मासूम बच्चों को नरबलि चढ़ाए जाने से बचा लिया।"

श्रावणी की आवाज़ काँप उठी-"उस अपराध की सज़ा उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। ज़ाम्ब बाबा ने अपने गुर्गों के साथ मिलकर मेरे पिता की बड़ी बेरहमी से हत्या कर दी और फिर पूरे आश्रम में यह झूठ फैला दिया कि- उन्हें, नीलांजन जी अपने साथ नेपाल ले गए हैं ।"

"मुझे इस सच्चाई का पता ही नहीं था। आश्रम की मुख्य मानव संसाधन कर्मचारी, हरिणी ने मुझे पूरी सच्चाई बताई। उन्होंने ही मुझे लाल माई के अपराधों और आपके परिवार के बारे में भी बताया।

उसी दिन मैंने निर्णय लिया कि मैं केवल रस्टी की ही नहीं, बल्कि आप को और आपके पूरे परिवार की भी हर हाल में रक्षा करूँगी।" उसकी आँखों में अब आँसू नहीं, बल्कि प्रतिशोध की ज्वाला थी-"मेरे पिता की हत्या का हिसाब अभी बाकी है। जब तक लाल माई और जाम्ब बाबा अपने अपराधों की सज़ा नहीं पा लेते, मैं चैन से नहीं बैठूँगी।"

अध्याय 17

काले साम्राज्य पर आघात

16 अक्टूबर 2020, शाम 7-8 बजे का समय, दण्डकारण्य का घना जंगल अंधकार की चादर में डूबा हुआ था। कहीं दूर उल्लुओं की आवाज़ और झींगुरों की झंकार के अलावा चारों ओर भयावह सन्नाटा पसरा था।

तभी उस नीरवता को मशालों की टिमटिमाती लौ, घोड़ों की टापों और भौंकते शिकारी कुत्तों की आवाज़ ने चीर दिया। जाम्ब बाबा अपने दर्जनों हथियारबंद अनुयायियों के साथ रंगनाथ स्वामी के आश्रम के मुख्य द्वार पर आ पहुँचा। उसके हाथ में बंदूक थी और चेहरे पर क्रूर मुस्कान फैल गई थी, उसने ऊँचे स्वर में गर्जना की, "साथियो! आगे बढ़ो! आश्रम की एक-एक कुटिया की तलाशी लो। समीर, रस्टी और श्रावणी को ज़िंदा पकड़कर मेरे सामने लाओ। कोई भी कोना छूटना नहीं चाहिए। फौरन जाओ!"

उसके आदेश मिलते ही हथियारबंद गुर्गे मशालें लेकर आश्रम की ओर दौड़ पड़े। प्रशिक्षित शिकारी कुत्ते ज़मीन सूँघते हुए हर दिशा में फैल गए। जाम्ब बाबा ने एक विकृत, भयावह हँसी हँसते हुए फिर कहा, "अगर वे न मिलें... तो इस पूरे आश्रम को आग के हवाले कर दो। कोई कुटिया सलामत नहीं रहनी चाहिए। जो भी रास्ते में आए, उसे पकड़ लो। आज रात यहाँ ऐसा सबक सिखाओ कि फिर कोई लाल माई के विरुद्ध खड़े होने का साहस न कर सके।"

उसके शब्दों के साथ ही आश्रम की शांति पर संकट के बादल मंडराने लगे। चारों ओर मशालों की रोशनी फैलने लगी और ऐसा प्रतीत होने लगा मानो अंधकार स्वयं युद्ध का उद्घोष कर रहा हो।

जैसे ही जाम्ब के गुंडे आश्रम की सीमा लांघकर भीतर घुसे, उसी क्षण आश्रम का दिव्य अग्नि सुरक्षा कवच प्रज्वलित हो उठा। चारों ओर अग्नि की स्वर्णिम लपटें दीवार बनकर खड़ी हो गईं। जो भी दुष्ट उस सीमा के भीतर

था, वह उन दिव्य ज्वालाओं में बुरी तरह झुलस उठा। कई नराधम वहीं तड़पकर मर गए। जाम्ब के साथ आए खूंखार शिकारी कुत्ते भी दर्दनाक चीखें मारते हुए राख हो गए। कुछ ही क्षण बाद अग्नि शांत हो गई और सुरक्षा कवच स्वतः निष्क्रिय हो गया।

उसी समय हिमनदा देवी धनुष और बाण हाथ में लिए आश्रम के मुख्य द्वार पर आ खड़ी हुईं। उनके तेज से मानो पूरा वन आलोकित हो उठा। उन्होंने गर्जना की, "रे दुष्ट जाम्ब! यह स्थान स्वयं श्री महाकाल भगवान शिव की कृपा और रक्षा में है। यदि अपना और अपने बचे हुए साथियों का कल्याण चाहता है, तो अभी इसी क्षण यहां से लौट जा।"

जाम्ब ठहाका मारकर हंसा, "रुक जा दीदी... अभी तुझे मजा चखाता हूं।" इतना कहकर उसने अपने थैले से नरमुंड से बना एक भयावह पिशाचिनी शंख निकाला। उसने पूरी शक्ति से उसे फूंका- "हम्म्म्म्म्म्म..."

उस शंख से निकली भयानक ध्वनि पूरे जंगल में गूंज उठी। पेड़ों पर बैठे पक्षी घबराकर उड़ गए और वन का वातावरण भय से कांप उठा। उस आवाज को सुनकर समीर, रस्टी और श्रावणी अपनी कुटिया से बाहर निकल आए। रस्टी की आंखें फैल गईं।

"अरे! यही वह शंख है। जब मैं नील कोठी से भागकर जंगल की ओर गया था, तब जाम्ब ने यही शंख बजाया था। इसकी आवाज सुनते ही शुकासुर मेरे सामने आ गया था। मैं उससे इतना डर गया कि मुझे जाम्ब के आदमियों के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा। वरना किसी ब्रिटिश आर्मी कमांडो को जंगल में पकड़ना लगभग असंभव था।" रस्टी की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि धरती कांपने लगी- धप... धप... धप...

विशाल वृक्ष हिलने लगे। अगले ही क्षण वह विकराल दैत्याकार सूअर, शुकासुर, आश्रम के मुख्य द्वार पर आ पहुंचा। उसकी लाल आंखों में रक्त की प्यास थी। उसने भयंकर गर्जना की और पूरी शक्ति से आश्रम के भीतर घुसने का प्रयास किया। किन्तु जैसे ही वह अदृश्य सीमा से टकराया, कोई दिव्य शक्ति उसे भीतर प्रवेश करने से रोकने लगी। वह बार बार पूरी

ताकत से हमला करता, पर हर बार किसी अदृश्य दीवार से टकराकर पीछे फेंक दिया जाता। हिमनदा देवी ने शांत भाव से अपना धनुष उठाया।

उन्होंने तरकश से एक दिव्य बाण निकाला, आंखें बंद कर भगवान महाकाल का स्मरण किया और बिजली की गति से बाण छोड़ दिया- "स्वाऽऽऽऽय! बाण वायु को चीरता हुआ सीधा शुकासुर की खोपड़ी में जा धंसा। भयानक गर्जना के साथ शुकासुर जमीन पर गिर पड़ा। वह खीं... खीं... की दर्दनाक आवाजें निकालते हुए कुछ क्षण तड़पता रहा और फिर उसका विशाल शरीर निश्चल हो गया। जंगल में एकाएक सन्नाटा छा गया। हिमनदा देवी ने जाम्ब की ओर देखकर फिर गर्जना की, "भाग जा जाम्ब! तेरी मृत्यु मेरे हाथों नहीं लिखी है। अभी भी समय है, लौट जा। अन्यथा ऐसा दंड दूंगी कि मृत्यु भी तुझ पर दया नहीं करेगी।"

जाम्ब की आंखों में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। उसने दांत पीसते हुए कहा, "यहीं ठहर, दीदी। अब मेरी मां स्वयं तेरी अक्ल ठिकाने लगाएगी। आज तुझे पता चल जाएगा कि लाल माई के क्रोध का अर्थ क्या होता है।"

16 अक्टूबर 2020, रात 10:30 बजे, जाम्ब अपनी हार स्वीकार कर बचे हुए साथियों के साथ लाचार अवस्था में **लाल माई की देहरी** लौट आया। उसके चेहरे पर पहली बार भय, थकान और निराशा एक साथ दिखाई दे रहे थे। जैसे ही उसने देहरी में प्रवेश किया, नील कोठी के द्वार से एमिली (हरिणी देवी) बाहर आई। उसने आगे बढ़कर जाम्ब का हाथ थाम लिया।

"आओ जाम्ब, मेरे साथ चलो। तुम बहुत थके हुए लग रहे हो। पहले विश्राम करो, फिर भोजन कर लेना।" एमिली उसे नील कोठी के पीछे बने गुप्त मार्ग से नीचे स्थित ऐशगाह में ले गई। वही स्थान, जहाँ लाल माई और जाम्ब ने अनेक निर्दोष लोगों को बंदी बनाकर रखा था, और जहाँ आनंद को अपना बैग और पिस्तौल मिली थी।

जाम्ब ने ऐशगाह के स्नानागार में मुंह-हाथ धोया, नहाया और नंगा ही स्नानागार से बाहर आ गया। वह थका हुआ और मानसिक रूप से पूरी तरह टूट चुका था। उसने हरिणी की ओर देखते हुए धीमे स्वर में कहा, "हरिणी... आज मैं तुम्हारा चेहरा देखना चाहता हूं। तुम्हारी मुस्कान में जो

सुकून है, शायद वही आज मेरी सारी चिंताओं को कुछ देर के लिए भुला दे। आज अपने चेहरे से यह मुखौटा हटा दो... और कुछ पल मेरे साथ बिना वस्त्रों के बैठो... मुझे प्यार करो |



एमिली ने अपना मुखौटा उतार दिया। वह सोफे पर बैठी, हल्के से अपनी गर्दन एक ओर झुकाई, मुस्कुराई और बोली, "क्या बात है जाम्ब? तुम इतने टूटे हुए पहले कभी नहीं लगे।"

ऐसा कहते हुए उसने जाम्ब बाबा की नज़र बचाकर तुरंत शराब का एक विशेष पटियाला पेग बनाया, उसमें बर्फ डाली और जाम्ब बाबा को पकड़ा दिया। इस विशेष ड्रिंक में शराब, कोल्ड ड्रिंक और बर्फ के अलावा जाम्बु रस की बहुत ही खतरनाक और गाढ़ी मात्रा मिली हुई थी।

जाम्ब ने एक ही घूंट में गिलास खाली कर दिया। "मां मुझे देहरी की जिम्मेदारी देकर अपनी तांत्रिक साधना के लिए महाश्मशान चली गई। वह मुझसे प्रेम तो करती है, पर कभी मुझ पर विश्वास नहीं करती। उसे हमेशा मेरी दोनों बहनें मुझसे अधिक योग्य लगीं। इसीलिए आज भी मैं केवल 'जाम्ब बाबा' हूं, 'जाम्ब देव' नहीं बन सका, जबकि वे दोनों 'जंबा देवी' कहलाती हैं।"

आज मैं अपनी बड़ी बहन से लड़ाई में हार गया। शहर में भी पुलिस और प्रशासन की कार्रवाई के कारण देहरी के बहुत से अड्डे और बिज़नेस यूनिट बंद हो गए हैं। कई लोगों को, जिन्हें हमने कैद करके रखा था, पुलिस ने ढूँढ़ निकाला है। अब मुझे और लाल माई को कोर्ट के समन आने लगे हैं। मैंने पैसे खिलाकर कई केस बंद तो करवा दिए हैं, लेकिन अभी भी बहुत से केस खुले हैं। देहरी और उसके बिज़नेस को बहुत नुकसान पहुँचा है।

कोई गुप्त संगठन है, **डी.वी.टी.एफ**, जिसके लोग हमसे बदला लेने के लिए ये सब उत्पात मचा रहे हैं। मैं बहुत परेशान हूँ और थक चुका हूँ। लाल माई वापस आ जाएगी तो मैं उसे अपना इस्तीफ़ा दे दूँगा और जो सज़ा मिलेगी, वह सह लूँगा।"

हरिणी हल्का मुस्कुराई। "इससे क्या फर्क पड़ता है? देहरी के उत्तराधिकारी तो तुम ही हो। तुम्हारी एक बहन जंगल भाग चुकी है और दूसरी लाल माई के सम्मोहन में अपना सब कुछ खो रही है। अंत में यह साम्राज्य तुम्हारा ही होगा।"

हरिणी ने फिर शराब की पूरी बोतल जाम्ब के सामने रख दी। "आज सारी चिंताएं भूल जाओ जाम्ब - आज मैं तुम्हें परम सुख दूँगी | " यह कहकर वह पूर्णतः नग्न होकर कर जाम्ब के सामने खड़ी हो गई और जाम्ब के ऐशगाह में रखे म्यूज़िक सिस्टम पर एक मादक पश्चिमी धुन चला कर मनमोहक अंदाज़ में लय के साथ झूमते हुए मोहक नृत्य करने लगी।

जाम्ब लगातार शराब पीता गया। कुछ ही देर में उसकी आंखें बोझिल होने लगीं। वह नशे में चूर होकर उसी सोफे पर बेसुध होकर गिर पड़ा। जाम्बबाबा शराब के नशे में बुड़बुड़ा रहा था, "हरिणी मुझे अकेला मत छोड़ना। मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा सालुक किया है, अत्याचार किया है। लेकिन आज मैं तुमसे बहुत-बहुत प्यार करता हूं। मेरे साथ हमेशा रहना, मुझे प्यार करना।"

हरिणी कुछ क्षण उसे देखती रही। जाम्ब बाबा को नशे में प्यार की भीख माँगते देख कर उसकी आंखों में दया की एक क्षीण लहर उठी, लेकिन अगले ही पल उसके मन में अतीत की ज्वाला भड़क उठी-उसे अपने पति जोनाथन का रक्तरंजित चेहरा याद आया, जिसे जाम्ब ने निर्ममता से मार डाला था।

हरिणी वास्तव में जोनाथन की पत्नी और रस्टी की छोटी बहन **एमिली क्लाइव** थी। उसे वे दिन भी याद आए जब उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध कैद करके रखा गया, उसके साथ कई रातों तक... जाम्ब ने जबरन संभोग

किया। उसे यौन सेवाओं के लिये गुलाम बनाकर रखा गया। उसकी पूरी जिंदगी नरक बना दी गई।

एमिली ने पूरे एक वर्ष तक अत्यंत धैर्य और चतुराई से जाम्ब और लाल माई का विश्वास जीता। उसने जाम्ब को अपने मोहजाल में उलझाकर आश्रम की एचआर (मानव संसाधन प्रमुख) का पद प्राप्त कर लिया। उसका उद्देश्य केवल एक था, उचित अवसर मिलते ही अपने साथ हुए अन्याय का प्रतिशोध स्वयं लेना।

उसका चेहरा क्रोध से लाल हो उठा। धीरे से वह कमरे के एक कोने में गई। शराब की बोतलों के पीछे छिपी एक भारी कुल्हाड़ी उसने बाहर निकाली। फिर वो दबे पांव जाम्ब के पास पहुंची। कुछ क्षण तक उसने उसकी ओर देखा। फिर उसकी आंखों में प्रतिशोध की ज्वाला धधक उठी। "यह मेरे जोनाथन... और उन सभी निर्दोषों के लिए है... अगले ही क्षण पूरी शक्ति से कुल्हाड़ी चली-**"गच्छ!"** एक ही वार में जाम्ब का सिर धड़ से अलग होकर फर्श पर लुढ़क गया और विशाल बेड के नीचे चला गया।

उसका सिर काटते ही, शरीर सोफे पर छटपटाने लगा, खून की धारियां पिचकारि की तरह चली, और एमिली का शरीर जाम्ब के खून से नहा गया। उसे ऐसा एहसास हुआ कि वासना से आपवित्र हुआ उसका शरीर और उसकी आत्मा जाम्ब के खून में नहा कर अब पवित्र हो चुके हैं।

कमरे में कुछ क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। एमिली की तेज सांसों के अतिरिक्त वहां कोई आवाज नहीं थी। उसने खून से सनी कुल्हाड़ी नीचे रखी और शांत स्वर में कहा, "आज न्याय ने अपना पहला ऋण चुका दिया- यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

इतने में ईवा ने सुजल और अन्य वफादार सहयोगियों के साथ मिलकर देहरी के शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। खुला विद्रोह आरंभ हो चुका था।

जब जाम्ब बाबा अपने अनुयायियों को लेकर रस्टी और समीर की तलाश में निकल चुका था, तब एमिली ने उसकी अनुपस्थिति का फायदा उठाते

हुए सुकेशिनी, ईवा और सुजल की मदद से डी.वी.टी.एफ के सभी साथियों को 16 अक्टूबर 2020 की रात विद्रोह करने के लिए कह दिया था।

अमावस्या की रात होने के कारण विद्रोहियों का अनुमान था कि 16-17 अक्टूबर की दरमियानी रात लाल माई, उसकी सहयोगिनियाँ और रक्षक चुड़ैलें भी राक्षस अनुष्ठान में व्यस्त होंगी। वे लोग पेटवा दानव को प्रसन्न करने के लिए चल रहे अनुष्ठान के कारण लाल माई की देहरी में होने वाले विद्रोह को कुचलने नहीं आ पाएँगी।

साथ ही, उस दिन देहरी में सुरक्षा भी बहुत कम होगी, क्योंकि अधिकांश सुरक्षा गार्ड और लाल माई के विश्वस्त अनुचर तथा अनुचरियाँ महाश्मशान में होने वाले अनुष्ठान की सुरक्षा के लिए वहाँ चले जाएँगे। इसलिए 16-17 अक्टूबर की रात ही विद्रोह के लिए एकदम उपयुक्त होगी।

एमिली ने यह भी तय कर लिया था कि उसी रात वह जाम्ब बाबा से अपना बदला लेगी। सुजल की मदद से कुल्हाड़ी का इंतेजाम करके, उसने15 अक्टूबर को जाम्बबाबा की ऐशगाह में कुल्हाड़ी छुपाकर रखी थी।

ईवा जाम्ब के ऐशगाह पहुंची। उसने तुरंत एमिली को वस्त्र पहनाए और उसके हाथ में एक बंदूक थमा दी। इसके बाद दोनों जाम्ब के ऐशगाह से बाहर निकलकर ऊपर की ओर बढ़ीं, नील कोठी के पीछे खुलने वाले तहखाने का दरवाज़े से निकलकर, गौशाला के पास से होते हुए वे आश्रम में पहुँच गए। । पूरी देहरी गोलियों की गड़गड़ाहट से गूंज रही थी ।

ईवा, एमिली और उनके वफादार साथियों ने लाल माई के बचे-खुचे हथियारबंद सेवकों और उसके प्रति निष्ठावान पहरेदारों को कुछ ही समय में जान से मारकर देहरी पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। विद्रोहियों ने देहरी में कैद सभी बंदियों और गुलामों को मुक्त कर दिया। सुजल ने भूमिगत बंदीगृह का ताला तोड़कर आनंद को भी आज़ाद कराया।

योजना के अनुसार यह तय किया गया था कि, लाल माई की देहरी के विद्रोही कार्यकर्ता... शिष्य, आश्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं और रेस्क्यू किए

गए लोगों को सुरक्षित छत्तीसगढ़ की राजधानी **रायपुर शहर** लेकर चले जाएंगे। वहाँ पुलिस, प्रशासन एवं सरकारी मेडिकल स्टाफ की देखरेख में सभी की देखभाल की जाएगी। उसके बाद सभी को उनके घर और अन्य गंतव्यों तक सुरक्षित पहुँचाने का काम पुलिस और प्रशासन का होगा।

ईवा ने हिमनदा देवी और सुजल की मदद से पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों और प्रशासन में मौजूद विश्वस्त सूत्रों के साथ संपर्क साध लिया था। इस काम में सुकेशिनी ने भी काफी मदद की थी। हालाँकि, विद्रोह की सूचना पुलिस और प्रशासन को नहीं दी गई थी। हरिणी, सुजल और ईवा को यह डर था कि यदि पुलिस तथा प्रशासन में लाल माई से मिले हुए कुछ लोगों को विद्रोह की भनक लग गई, तो उनका पूरा ऑपरेशन मिट्टी में मिल जाएगा।

उधर कुछ ही देर बाद श्रावणी, रस्टी , समीर और हिमनदा देवी भी देहरी पहुंच गए। हिमनदा देवी के साथ स्वामी रंगनाथ जी के आश्रम के कुछ साधक और साध्वी अनुसूया भी सहायता के लिए आ गए थे।

एमिली अपने भाई रस्टी को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई। दोनों भाई-बहन एक-दूसरे के गले लगकर फूट-फूटकर रोने लगे। एमिली ने रस्टी को अपनी आपबीती सुनाई और बताया कि जोनाथन मर चुका है या उसे ज़ॉम्बी बनाकर दूसरी मंज़िल के किसी कमरे में बंद रखा गया होगा।

एमिली ने रस्टी को बताया कि वही आश्रम की मुखौटा पहने हुई एचआर प्रमुख, हरिणी थीं। जब रस्टी उसकी तलाश में आश्रम आया था, तब वह कई बार हरिणी से मिला था, लेकिन चाहकर भी एमिली उसे अपना राज़ नहीं बता सकी। एमिली को डर था कि यदि जाम्ब बाबा को इस बात का पता चल गया, कि एमिली और रस्टी भाई-बहन हैं। तो वह अपना गुप्त विद्रोह आगे नहीं चला पाएगी।

इसके बाद दोनों भाई-बहन ने एक-दूसरे को संभाला और ईवा के साथ मिलकर टीम की आगे की योजना बनाने में उसकी सहायता करने लगे। उन लोगों ने तुरंत तय किया कि नील कोठी की दूसरी और तीसरी मंज़िल की तलाशी लेंगे। वहाँ जोनाथन को ढूँढ़ेंगे।

एमिली अपने भैया को बंदूक देती है और कुछ अन्य विद्रोही साथियों के साथ दूसरी और तीसरी मंज़िल की तलाशी लेने के लिए नील कोठी की ओर चली जाती है। दूसरी मंज़िल पर पहुँचकर वहाँ के सुरक्षा कर्मियों को गोलियों से भूनकर वे लोग लाल माई और पेटवा के कमरे का दरवाज़ा तोड़कर अंदर घुस जाते हैं।

वहाँ सभी को जोनाथन का शव मिल जाता है, जो बुरी तरह सड़ चुका होता है। लगातार पेटवा को अपने शरीर में धारण करने के दुष्प्रभावों के कारण आखिरकार जोनाथन अब इस दुनिया में नहीं रहा।

जोनाथन को इस हालत में देखकर एमिली बुरी तरह रोती है, लेकिन समयाभाव के चलते वह खुद को संभालती है और साथियों के साथ अन्य कमरों की तलाशी लेने लगती है। फिर वे लोग तीसरी मंज़िल पर पहुँच जाते हैं। वहाँ कोई सुरक्षा कर्मचारी नहीं था। शायद वे लोग भाग चुके थे या नीचे दूसरी मंज़िल पर हुई लड़ाई में मारे गए थे।

रस्टी , एमिली और बाकी साथी हर कमरे का दरवाज़ा तोड़-तोड़कर अंदर जाते और तलाशी लेते है । नीलकोठी की तीसरी मंजिल के कमरों में बहुत सी लड़कियाँ और बच्चे उन्हें कैद मिलते हैं। उनकी हालत देख कर बताया जा सकता है कि वो बेचारे किस काले जादू के सम्मोहन में फंस गए थे। वो लोग खाने- पानी के अभाव में बेहद कमजोर और बीमार लग रहे । वहीं ईवा को भी अपने बच्चे मिल जाते हैं। वह उन दोनों से मिलकर बहुत खुश होती है। उन्हें गले से लगाकर वह फूट-फूटकर रोने लगती है। सबको बचाव के लिए नीचे लाया जाता है ।

उधर हिमनदा देवी को जामुनी कक्ष तक जाने वाला गुप्त मार्ग ज्ञात था। वह तुरंत समीर को अपने साथ लेकर उस ओर बढ़ीं। जामुनी कक्ष में पहुंचते ही उन्होंने देखा कि श्रेया तंत्र-मंत्र के प्रभाव में अर्धचेतन, भूखी-प्यासी और नग्न अवस्था में पड़ी थी। उसने बिस्तर पर ही मल-मूत्र कर दिया था।

उसकी आंखें बंद थीं और चेहरा निस्तेज दिखाई दे रहा था। हिमनदा देवी ने आंखें मूंदकर भगवान **राम** का ध्यान किया। फिर उन्होंने श्रद्धापूर्वक **राम रक्षा स्तोत्र** का पाठ किया और पवित्र जल की बूंदें श्रेया पर छिड़क दीं।

जैसे ही पवित्र जल उसके शरीर को स्पर्श किया, काले जादू का प्रभाव टूटने लगा। श्रेया ने धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलीं और अगले ही क्षण फूट-फूटकर रो पड़ी। वह अपनी बड़ी बहन हिमनदा देवी से लिपट गई और कांपती आवाज़ में बोली, "दीदी... मम्मी अब लाल डायन बन चुकी हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि जैसे ही उन्हें पेटवा सिद्धियां प्राप्त हो जाएंगी और पेटवा दानव को समीर का शरीर मिल जाएगा, तब वे दोनों मुझे ज़िंदा ही खा जाएंगे..."

इसी बीच श्रेया को प्रसव पीड़ा आरंभ हो गई। उसके गर्भ के नौ महीने पूरे हो चुके थे। सभी ने तत्काल निर्णय लिया कि आश्रम में उपलब्ध गाड़ियों से शहर की ओर रवाना हुआ जाए। योजना के अनुसार, ईवा और उसकी टीम सभी घायलों और पीड़ितों को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाएगी। आनंद और कुछ साथी गाड़ियां चलाएंगे, जबकि शेष लोग पूरे काफिले की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालेंगे।

उधर एमिली ने ईवा, श्रावणी और सुजल के साथ मिलकर वर्षों से लाल माई की देहरी के विरुद्ध एकत्र किए गए सभी प्रमाणों की तीन प्रतियां तैयार कर स्वामी रंगनाथ बाबा के आश्रम में सुरक्षित रख दी थीं।

हिमनदा देवी और उनकी शिष्या अनुसूया अभी प्रमाणों को सुरक्षित देहरी तक ले आई थीं। अब समय आ गया था कि उन प्रतियों में से एक पुलिस को और दूसरी मीडिया को सौंपकर लाल माई, जाम्ब बाबा और उनकी देहरी का काला सच पूरे देश के सामने लाया जाए। इस महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी एमिली और श्रावणी ने अपने ऊपर ली। हरिणी ने प्रमाणों की एक प्रति अपने साथ बैकअप की तरह सुरक्षित रख ली।

उधर हिमनदा देवी ने ध्यान लगाकर अपनी दिव्य शक्तियों की मदद से महाशमशन और खोई हुई छोटी लड़कियों का पता लगा लिया था । हिमनदा देवी ने समीर को यह भी बताया कि उन तेरह बच्चों में सुनिधि और सलोनी भी शामिल हैं। यह सुनते ही समीर के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। वह बिलख-बिलख कर रोने लगा। रस्टि, आनंदा और हिमनादा देवी ने उसे संभाला और समझाया कि यह समय रोने-पीटने का नहीं बल्कि संयम से युद्ध करने का है।

उन्होंने समीर और रस्टी को काली शक्तियों की पूजा और प्रचार करने वाली शापित लाल माई की देहरी का संपूर्ण विनाश करने को कहा। फिर उन तेरह बच्चियों की रक्षा करने के लिए उन दोनों को जंगल जाने का आदेश दिया। उसके पश्चात, वह आनंद की गाड़ी में अपनी शिष्या अनुसूया के साथ श्रेया को मातृत्व अस्पताल ले जाने की तैयारी करने लगीं, ताकि उसकी सुरक्षित प्रसूति कराई जा सके। आनंद स्वयं उनकी गाड़ी चलाने वाला था।

सुजल ने आनंद की एसयूवी गाड़ी पूरी तरह मरम्मत करवा दी थी और आज श्रेया एक बार फिर उसी गाड़ी में सफर करेगी। आनंद के चेहरे पर लंबे समय बाद संतोष और प्रसन्नता की मुस्कान लौट आई।

अध्याय 16

रंगनाथ स्वामी आश्रम

16 अक्टूबर 2020, सुबह के 6-7 बजे का समय**,** घने दण्डकारण्य के अथाह जंगलों के बीच, विशाल साल और सागौन के वृक्षों से घिरा हुआ, रंगनाथ बाबा जी का छोटा-सा आश्रम स्थित था। चारों ओर प्रकृति की नीरवता थी, जिसे केवल पक्षियों की मधुर चहचहाहट, बहती जलधारा की कलकल और पत्तों से टकराती ठंडी हवा की सरसराहट ही भंग करती थी। यह आश्रम संसार की चहल-पहल से कोसों दूर स्थित था।

लाल माई की देहरी की भव्यता और वैभव की तुलना में रंगनाथ बाबा जी का आश्रम अत्यंत साधारण था। न ऊँची-ऊँची इमारतें थीं, न आलीशान कक्ष और न ही बाहरी आडंबर। मिट्टी और पत्थर से बनी छोटी-छोटी कुटियाएँ, एक प्राचीन मंदिर, गौशाला, औषधीय पौधों से भरा उपवन और बीचों-बीच जलती हुई धूनी ही उसकी पहचान थे।

यहाँ केवल साधु और साध्वियाँ निवास करते थे, जिन्होंने सांसारिक मोह-माया का त्याग कर अपना जीवन ईश्वर की भक्ति, मानव सेवा और आत्ममुक्ति के मार्ग को समर्पित कर दिया था। आश्रम में दिखावा नहीं, बल्कि सादगी, अनुशासन, करुणा और आध्यात्मिक शांति का वास था। जहाँ लाल माई की देहरी भय, शक्ति और रहस्यमय तांत्रिक अनुष्ठानों का केंद्र थी, वहीं रंगनाथ बाबा जी का आश्रम तप, सेवा और धर्म का जीवंत प्रतीक प्रतीत होता था।

समीर ने पहली बार कई सप्ताह बाद खुली हवा में गहरी साँस ली। लेकिन उसे पता था कि यह केवल आज़ादी नहीं थी। यह उस युद्ध की शुरुआत थी जिसमें उसे अपने परिवार को बचाना था, रस्टी को उसकी बहन तक पहुँचाना था। आश्रम पहुँचते ही रस्टी ने चारों ओर नज़र दौड़ाई और श्रावणी से पूछा, "अब हमें यहाँ कितने दिन रुकना होगा?"

श्रावणी मुस्कुराई- "सिर्फ़ एक या दो दिन। तुम्हें यहाँ कुछ लोगों से मिलवाना था। लेकिन उससे पहले तुम दोनों रंगनाथ बाबा के दर्शन कर लो।" इतने में भगवा वस्त्रों में एक तेजस्वी महिला उनकी ओर बढ़ती हुई दिखाई दी- "मेरा नाम **हिमनदा देवी** है। मैं इस आश्रम की संचालिका हूँ। आइए, मैं आपको स्वामी जी के पास ले चलती हूँ।"

तीनों उनके पीछे-पीछे चल पड़े। कुछ दूर चलने के बाद समीर ने संकोच से पूछा, "बहन जी... एक बात पूछूँ? ऐसा लगता है जैसे हम पहले भी कहीं मिले हैं।" हिमनदा देवी मुस्कुराईं। "हाँ भैया... मिले हैं। इस आश्रम में आने से पहले मैं आपकी पत्नी श्रेया की बड़ी बहन थी।" समीर एकदम रुक गया- "क्या?" हिमनदा देवी ने शांत स्वर में आगे कहा, "लाल माई की देहरी में मुझे 'जम्बा देवी' बनाया गया था। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर समीर ने माहौल हल्का करने की कोशिश की-

"लगता है बाबागिरी तो आप लोगों के खानदान में कूट-कूटकर भरी है। उसकी बात सुनकर श्रावणी और रस्टी अपनी हँसी रोक न सके। हिमनदा देवी भी हल्के से मुस्कुराईं- "कोई बात नहीं, भैया। मुझे बुरा नहीं लगा, जब अपने ही लोग जान के दुश्मन बन जाएँ, तब मन में वैराग्य अपने आप जन्म ले लेता है।"

उनकी आँखों में वर्षों पुराना दर्द उतर आया, "जाम्ब बाबा को मेरा जम्बा देवी बनना कभी स्वीकार नहीं था। सत्ता की लालसा में उसने एक रात मेरे पूरे परिवार की हत्या करवा दी। मैं किसी तरह अपनी जान बचाकर इस जंगल में भाग निकली।" उन्होंने दोनों हाथ जोड़ लिए-"तभी... रंगनाथ स्वामी ने मुझे शरण दी। उन्होंने मेरी रक्षा की। उसी दिन से यह आश्रम ही मेरा घर है।"

समीर की आँखें नम हो गईं- "मुझे क्षमा कीजिए, दीदी। मैंने अनजाने में मज़ाक कर दिया। मुझे बेहद दुःख है कि आपके साथ इतना बड़ा अन्याय हुआ।" हिमनदा देवी ने स्नेहपूर्वक बोली-"बीती हुई बातों का बोझ लेकर कोई आगे नहीं बढ़ सकता, भैया।"

चलते-चलते उन्होंने आगे कहना शुरू किया, "जब मैं लाल माई की देहरी में थी, उस समय हरिणी देवी मेरी शिष्या थीं। आज भी हमारा संपर्क है। वह भीतर से बहुत अच्छी स्त्री हैं। उन्होंने धीमे स्वर में कहा, "डॉ. ईवा की सहायता से उन्होंने कई बंधक बच्चों को लाल माई की देहरी से बीमार या मृत घोषित कराकर गुप्त रूप से इस आश्रम में भेजा है। आज वे सभी बच्चे यहीं सुरक्षित जीवन जी रहे हैं। लॉकडाउन के पूरी तरह से खुल जाने पर इन बच्चों को पुलिस एवं प्रशासन की देखरेख में सुरक्षित उनके घर भिजवा दिया जाएगा।"

इसी बीच वे एक विशाल पीपल के वृक्ष के समीप पहुँच गए। हिमनदा देवी ने सामने संकेत करते हुए कहा, "लीजिए... स्वामी जी आपका इंतज़ार कर रहे हैं।"

इतना कहकर वह अपने अन्य कार्यों के लिए दूसरी दिशा में चली गईं। समीर और रस्टी ने सामने दृष्टि उठाई। वहाँ एक ऊँचे चबूतरे पर श्वेत वस्त्र धारण किए एक दिव्य पुरुष गहन ध्यान में लीन बैठे थे। उनके ललाट पर चंदन का तिलक सुशोभित था। गले में रुद्राक्ष की माला थी। उनके समीप एक त्रिशूल और डमरू विराजमान थे। उनका व्यक्तित्व अद्भुत तेज से प्रकाशित था। उनकी आँखें अभी बंद थीं, फिर भी ऐसा प्रतीत होता था मानो वे सब कुछ देख रही हों। उनके मुखमंडल से ऐसी शांति और ऐसी दिव्यता प्रस्फुटित हो रही थी कि कोई सहज ही उनके सामने सिर झुका देता।

उनकी लंबी, सुदृढ़ काया छह फुट से भी अधिक प्रतीत होती थी। वे कोई साधारण तपस्वी नहीं, लगते थे। ऐसा लगता था मानो समय का उन पर कोई प्रभाव ही न पड़ा हो। उनके व्यक्तित्व में एक ऐसी प्राचीनता थी, जैसे वे केवल कलियुग के ही नहीं, बल्कि अनेक युगों के साक्षी रहे हों। उनके चारों ओर फैली नीरवता स्वयं उनकी तपशक्ति का परिचय दे रही थी।

उनके आने की आहट सुनकर रंगनाथ स्वामी ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। उनकी दृष्टि शांत, गंभीर और करुणा से भरी हुई थी। उन्होंने तीनों की ओर स्नेह से देखते हुए गंभीर किंतु मधुर स्वर में कहा, "आओ बच्चों... तुम्हारा इस आश्रम में स्वागत है। मेरे सामने बैठ जाओ।"

समीर, रस्टी और श्रावणी ने दोनों हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और उनके सामने भूमि पर आलथी-पालथी मारकर बैठ गए। कुछ क्षण तक वहाँ पूर्ण मौन छाया रहा। केवल पक्षियों का मधुर कलरव और मंदिर की घंटियों की ध्वनि वातावरण में गूँज रही थी।

इसी बीच रस्टी ने अनायास अपनी कलाई घड़ी की ओर देखा। सुबह के ठीक आठ बज रहे थे। उसके मन में एक ही विचार बार-बार उठ रहा था। वह जितनी जल्दी हो सके आश्रम से निकलकर अपनी बहन एमिली और बहनोई जोनाथन की तलाश शुरू करना चाहता था। हर बीतता क्षण उसे भारी लग रहा था।

रंगनाथ स्वामी ने बिना उसकी ओर देखे ही कहा, "चिंता मत करो, पुत्र रस्टी, तुम्हारी अपनी बहन से भेंट अवश्य होगी... किंतु उसके लिए थोड़ा धैर्य रखना होगा। रस्टी विस्मित रह गया। उसने अपने मन की बात किसी से नहीं कही थी।

समीर भी आश्चर्यचकित होकर स्वामी जी की ओर देखने लगा- "स्वामी जी," उसने विनम्रता से पूछा, "क्या आप भविष्य देख सकते हैं?" रंगनाथ स्वामी के होंठों पर हल्की मुस्कान उभर आई- "भविष्य..." उन्होंने शांत स्वर में कहा, "वह कोई पत्थर पर लिखी हुई रेखा नहीं है, पुत्र। वह तो मनुष्य के आज के कर्मों से हर क्षण आकार लेता है। "लोग सदैव पूछते हैं, 'मेरे भविष्य में क्या होगा?' जबकि सही प्रश्न यह होना चाहिए, 'मैं आज ऐसा क्या करूँ कि मेरा आने वाला कल श्रेष्ठ बन सके?'"

कुछ क्षण रुककर उन्होंने तीनों की ओर देखा। "यदि वर्तमान में तुम्हारे विचार शुद्ध हैं, कर्म धर्मसंगत हैं और उद्देश्य लोककल्याण का है, तो भविष्य स्वयं तुम्हारे पक्ष में खड़ा हो जाएगा। इसलिए यह मत पूछो कि कल क्या होगा... यह सोचो कि आज तुम्हें क्या करना है।" समीर ने दोनों हाथ जोड़कर रंगनाथ स्वामी की ओर देखा। उसकी आँखों में अपने परिवार की चिंता और हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला स्पष्ट दिखाई दे रही थी- "स्वामी जी," वह बोला, "मैं अपने परिवार को बचाना चाहता हूँ। मैं अपने मित्रों की भी सहायता करना चाहता हूँ। क्या मैं अपने उद्देश्य में सफल हो पाऊँगा?"

रंगनाथ स्वामी कुछ क्षण तक मौन रहे। उनकी आँखें बंद हो गईं, मानो वे किसी गहन ध्यान में डूब गए हों। फिर उन्होंने धीरे-धीरे नेत्र खोले और गंभीर स्वर में कहा, "पुत्र, मुझे दो संभावनाएँ दिखाई दे रही हैं।" समीर, रस्टी और श्रावणी एकाग्र होकर उनकी बात सुनने लगे।

"पहली संभावना यह है कि तुम अपने परिवार को सुरक्षित लेकर इस जंगल से दूर चले जाओगे।" उन्होंने कुछ क्षण रुककर आगे कहा, "दूसरी संभावना... उससे कहीं कठिन है। तुम उस दुष्ट डायन का अंत करोगे और उसके अत्याचारों से अनगिनत निर्दोषों को मुक्त करोगे।"

समीर की धड़कन तेज़ हो गई। स्वामी जी शांत स्वर में बोले- "दोनों ही स्थितियों में तुम्हारा परिवार सुरक्षित रहेगा। लेकिन यह मत भूलो कि इस संसार में वास्तविक कर्ता केवल परमेश्वर हैं। मनुष्य तो उनके हाथों का एक माध्यम मात्र है।"

उन्होंने समीर की आँखों में देखते हुए पूछा, "अब तुम बताओ, पुत्र... तुम किस मार्ग का संकल्प लेते हो?" समीर की मुट्ठियाँ अपने आप भींच गईं। उसकी आँखों में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी।

"मैं उस दुष्ट डायन का अंत कर दूँगा। उसके हर अपराध का हिसाब होगा। मैं उसे उसके पापों की सज़ा दिलाकर रहूँगा और हर पीड़ित को न्याय दिलाऊँगा।" रंगनाथ स्वामी मुस्कुरा दिए, किंतु उनकी मुस्कान में गहरी करुणा थी। "यही तुम्हारी पहली परीक्षा है, पुत्र। समीर ने विस्मय से उनकी ओर देखा। स्वामी जी बोले, "मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बाहर नहीं, उसके भीतर रहता है। उसका नाम है... **'मैं'**।" उन्होंने अपनी छाती पर हाथ रखा- "'मैं करूँगा'... 'मैं जीतूँगा'... 'मैं समाप्त कर दूँगा'। यही अहंकार है। जिस दिन तुम इस 'मैं' को जीत लोगे, उसी दिन तुम्हारे भीतर ईश्वर की शक्ति प्रकट होने लगेगी।"

आश्रम के वातावरण में गहरा मौन छा गया। स्वामी जी आगे बोले, "लाल माई कोई साधारण स्त्री नहीं रही। वर्षों की घोर तांत्रिक साधनाओं ने उसे ऐसी शक्तियाँ प्रदान कर दी हैं जो सामान्य मनुष्य की समझ से परे हैं। उसका सामना केवल शारीरिक बल या क्रोध से नहीं किया जा सकता।"

"यदि वास्तव में तुम उसके अत्याचारों का अंत करना चाहते हो, तो पहले स्वयं को जीतना होगा। शरीर को नहीं, मन को तपाना होगा। क्रोध को नहीं, चेतना को जागृत करना होगा।"

उन्होंने अंत में कहा, "याद रखो, पुत्र... दुष्ट शक्तियों को परास्त करने से पहले मनुष्य को अपने भीतर के अहंकार पर विजय प्राप्त करनी पड़ती है। जब तुम्हारा 'मैं' समाप्त होगा, तभी ईश्वर तुम्हें अपना माध्यम बनाएँगे। और तब वह कार्य होगा, जिसे आज तुम असंभव समझते हो।"

“पुत्र, आसुरी शक्तियों का सामना केवल शारीरिक बल से नहीं किया जा सकता। उन्हें परास्त करने के लिए मन, बुद्धि और आत्मा को भी उतना ही शक्तिशाली बनाना पड़ता है।"

रंगनाथ स्वामी ने तीनों की ओर शांत दृष्टि से देखा और गंभीर स्वर में कहा, "पुत्र, यदि तुम्हें आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करनी है, तो केवल शस्त्रों का अभ्यास पर्याप्त नहीं होगा। तुम्हें अपने मन, इन्द्रियों और आत्मा को भी तप की अग्नि में तपाना होगा। कठोर तपस्या ही तुम्हें उस युद्ध के योग्य बनाएगी, जो तुम्हारे सामने आने वाला है।"

इतना कहकर स्वामी जी पुनः पद्मासन में बैठ गए। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी आँखें बंद कर लीं और गहन ध्यान में लीन हो गए। उनके मुख पर ऐसी अद्भुत शांति थी कि किसी में भी उन्हें पुनः प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ। आश्रम में एक बार फिर मौन छा गया। केवल हवा की मंद सरसराहट और मंदिर की घंटियों की ध्वनि वातावरण में गूँज रही थी।

उसी समय हिमनदा देवी वहाँ पहुँचीं। उनके हाथों में बाँस की टोकरियाँ थीं, जिनमें जंगल से प्राप्त ताज़े फल, कंद और मूल रखे हुए थे। उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "आइए, आप सब पहले कुछ ग्रहण कर लीजिए। हमारे आश्रम में अतिथियों का स्वागत वन के इन्हीं सरल उपहारों से किया जाता है।"

रस्टी , समीर और श्रावणी ने आदरपूर्वक भोजन ग्रहण किया। कई दिनों बाद उन्हें बिना भय और जल्दबाज़ी के शांत वातावरण में भोजन करने का अवसर मिला। भोजन समाप्त होने पर हिमनदा देवी बोलीं, "अब आप लोग

कुछ देर विश्राम कर लीजिए। आगे की यात्रा सरल नहीं है। आपके सामने केवल जंगल की कठिनाइयाँ ही नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म के बीच एक बड़ा युद्ध भी प्रतीक्षा कर रहा है। शरीर और मन दोनों को उसके लिए तैयार रखना आवश्यक है।"

उन्होंने आश्रम के पीछे बनी एक छोटी-सी कुटिया की ओर संकेत किया- "आप लोगों के विश्राम की व्यवस्था वहीं की गई है।" तीनों उनके पीछे-पीछे कुटिया तक पहुँचे। मिट्टी और बाँस से बनी वह कुटिया अत्यंत साधारण थी, किंतु उसके भीतर एक अजीब-सी शांति और सुरक्षा का अनुभव हो रहा था। बाहर वृक्षों पर पक्षी चहचहा रहे थे और दूर बहती जलधारा की कलकल ध्वनि वातावरण को और भी शांत बना रही थी।

पिछले कई दिनों से भय, संघर्ष और भाग-दौड़ में बीते जीवन के बाद, समीर, रस्टी और श्रावणी ने पहली बार निश्चिंत होकर आँखें मूँदीं। उन्हें ज्ञात था कि यह विश्राम केवल कुछ घंटों का है। इसके बाद उनका सामना उस युद्ध से होना था, जो केवल उनके जीवन का ही नहीं, बल्कि अनेक निर्दोषों के भविष्य का भी निर्णय करने वाला था।

अध्याय 18
अग्नि मंत्र सिद्धि

लाल माई और उसकी चुड़ैलों के आक्रमण के डर से सभी लोग जल्द से जल्द **रायपुर शहर** के जिला प्रशासनिक केंद्र में सुरक्षित पहुँच जाना चाहते थे। वहाँ पुलिस और प्रशासन की मदद से लोग अपने-अपने गंतव्यों की ओर जाने वाले थे। पूरी यात्रा 8-10 घंटे के भीतर पूरी होने का अनुमान था।

DVTF के मेंबर्स, आश्रम में फंसे श्रद्धालु, और वहां पीड़ित कैदी- बच्चे, लड़के-लड़कियां, महिलाएं और पुरुष। सब देहरी में मौजूद ट्रक्स और गाड़ियों में सुरक्षित बैठ गए।

एक-एक करके सभी गाड़ियां लाल माई की देहरी के बाहर प्रस्थान करने लगीं। प्रत्येक वाहन में देहरी के गोदाम से उठाई गई रास्ते में खाने-पीने की चीज़ें, और घायलों के लिए दवा, पट्टियां, अतिरिक्त पेट्रोल की व्यवस्था की गई थी । ताकि **रायपुर शहर** तक जाने वाली यात्रा के दौरान किसी भी गाड़ी को बीच रास्ते रुकना न पड़े। पूरा काफिला पूरी सतर्कता के साथ अपने-अपने निर्धारित मार्ग पर निकल पड़ा।

हिमनदा देवी ने आनंद की गाड़ी में श्रेया को शासकीय जिला चिकित्सालय, नारायणपुर ले जाना ठीक समझा, क्योंकि वह प्रसव पीड़ा के चलते रायपुर तक की यात्रा करने में सक्षम नहीं थी। उनकी शिष्या अनुसूया ने सामने वाली सीट पर जगह ले ली। वहीं सुकेशिनी सबसे पीछे वाली जंप सीट पर, तथा हिमनदा देवी श्रेया को लेकर बीच वाली सीट पर बैठ गईं। आनंद की गाड़ी 7-सीटर होने के कारण किसी को बैठने में कोई समस्या नहीं हुई।

सभी के रवाना हो जाने के बाद रस्टी और समीर आश्रम के शस्त्रागार में पहुंचे। वहां रखे विस्फोटकों की सहायता से उन्होंने सुकिंचक नाथ उर्फ पेटवा दानव के मंदिर को शक्तिशाली विस्फोट से ध्वस्त कर दिया। इसके पश्चात उन्होंने आश्रम में बचा हुआ पेट्रोल पूरे परिसर में फैला दिया और

अंततः लाल माई की देहरी को आग के हवाले कर दिया। देखते ही देखते पूरा परिसर धधकती लपटों में घिर गया। वर्षों से अत्याचार और भय का प्रतीक रही वह देहरी अग्नि में समाती चली गई।

जब तक उनका कार्य पूरा हुआ, पूर्व दिशा में सूर्य की पहली किरणें फैल चुकी थीं। भोर हो चुकी थी। समीर और रस्टी बिना समय गंवाए महाश्मशान की ओर निकल पड़े, जहां उन्हें सलोनी, सुनिधि और अन्य मासूम बच्चियों को बचाने का सबसे कठिन अभियान पूरा करना था।

उधर बाकी सभी लोग सुरक्षित शहर पहुंच गए और पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार अपने-अपने दायित्व निभाने में लग गए। एमिली और श्रावणी पुलिस तथा मीडिया तक प्रमाण पहुंचाने की तैयारी में जुट गईं, जबकि ईवा अपनी टीम के साथ घायलों के उपचार की व्यवस्था कराने लगी।

हिमनदा देवी और उनकी शिष्या अनुसूया ने पूरे धैर्य और कुशलता के साथ प्रसव के दौरान श्रेया का साथ दिया। लंबी पीड़ा के बाद अगले दिन **17 अक्टूबर, 2020, दोपहर तीन बजे**, श्रेया ने अस्पताल में एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया। नवजात के प्रथम रुदन ने मानो उस लंबे अंधकार के बीच आशा की एक नई किरण जगा दी।



महाश्मशान, किंवदंतियों के अनुसार, अबूझमाड़ की पहाड़ियों के बीच कहीं छिपा हुआ था। दंडकारण्य का यह सबसे घना, रहस्यमय और दुर्गम क्षेत्र माना जाता था। लाल माई के आश्रम से लगभग दो किलोमीटर दूर पहाड़ियाँ आरंभ हो जाती थीं और पहाड़ियाँ से तीन किलोमीटर दक्षिण दिशा में रंगनाथ बाबा का आश्रम स्थित था।

अबूझमाड़ की पहाड़ियों का सबसे निचला और एकांत भाग इन दोनों आश्रमों के ठीक बीच पड़ता था। दोनों आश्रमों के बीच 7-8 किलोमीटर की दूरी थी, और उसी निर्जन क्षेत्र के भीतर महाश्मशान के होने की संभावना सबसे अधिक मानी जाती थी। रस्टी और समीर एक विशाल साल के वृक्ष पर चढ़कर पूरे इलाके का बारीकी से निरीक्षण कर रहे थे। चारों ओर घना जंगल, ऊँची चट्टानें और भयावह सन्नाटा पसरा था।

समीर ने धीमे स्वर में कहा, "हमें अब तक महाश्मशान का कोई निशान नहीं मिला। हिमनदा दीदी और आदिवासियों के नक्शों के अनुसार हम सही रास्ते पर हैं, फिर भी न लाल माई दिख रही है और न उसकी टोली का कोई सदस्य।" रस्टी ने दूरबीन से जंगल को देखते हुए उत्तर दिया, "संभव है वे लोग कहीं छिपकर हमारी गतिविधियों पर नज़र रख रहे हों। ऐसे दुश्मन सामने कम और परछाइयों में अधिक मिलते हैं।" समीर ने पूछा, "तो फिर हम हमला कहाँ से करेंगे? महाश्मशान का सही स्थान कैसे पता चलेगा?"

रस्टी ने अपने वर्षों के सैन्य अनुभव का सहारा लेते हुए कहा, "मेरा अनुमान है कि महाश्मशान इन्हीं पहाड़ियों के भीतर छिपा है। लेकिन हमें लाल माई की देहरी की ओर से नहीं, बल्कि रंगनाथ बाबा के आश्रम की दिशा से आगे बढ़ना चाहिए।" समीर चौंका। "क्यों? लाल माई तो अपने गढ़ से ही वहाँ आती-जाती होगी। फिर उसी रास्ते से जाना अधिक उचित नहीं होगा, वे लोग आते-जाते हमें दिख जाएँगे ?"

रस्टी ने सिर हिलाया। "नहीं, यही सबसे बड़ा जाल हो सकता है। हम केवल दो लोग हैं। यदि दुश्मन संख्या में भारी पड़ा तो हमारे पास पीछे हटने का रास्ता खुला रहना चाहिए। रंगनाथ बाबा का आश्रम हमारी सुरक्षित शरण बन सकता है। यदि सहायता की आवश्यकता पड़ी तो हम तुरंत वहाँ पहुँच सकेंगे।

डॉ. ईवा भी पुलिस और हमारे साथियों के साथ इसी दिशा से आने वाली है। मैंने उसे भी यही रणनीति बताई थी।" समीर ने सहमति में सिर हिलाया, पर उसकी उँगलियाँ अनायास ही राइफल की पकड़ कसने लगीं। देखते-देखते शाम हो जाती है। अचानक जंगल की निस्तब्धता को दर्जनों जंगली

सूअरों की भयावह गुर्राहट ने चीर दिया। घने झुरमुटों से दो स्त्रियाँ प्रकट हुईं। वे थीं कलकुलता और महारंध्वी।

कभी सुकिंचक नाथ कृपा आश्रम की साध्वियाँ रही वे दोनों अब पूर्ण रूप से भयानक चुड़ैलों में बदल चुकी थीं। उनके उलझे हुए केश ज़मीन तक लटक रहे थे, आँखें अंगारों की तरह धधक रही थीं और उनके लंबे नुकीले नाखून चाँदनी में चमक रहे थे। उनके चारों ओर लाल माई की वशीकरण विद्या से नियंत्रित जंगली सूअर खड़े थे।

महारंध्वी ने विकृत हँसी हँसते हुए कहा, "समीर... रस्टी ... बहुत खोज रहे थे न महाश्मशान? पहले अपनी ही चिता की तैयारी कर लो!"अगले ही पल दोनों राक्षसियों ने हाथ उठाए और सैकड़ों सूअर एक साथ दोनों मित्रों की ओर टूट पड़े। रस्टी और समीर पहले से तैयार थे। पेड़ की ऊँचाई से दोनों ने लगातार गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। गोलियों की गड़गड़ाहट से जंगल काँप उठा। एक-एक कर काले जादू से वशीभूत सारे सूअर धराशायी होने लगे। कुछ ही क्षणों में भूमि उनके शवों से भर गई।

किन्तु कलकुलता और महारंध्वी पर गोलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। दोनों चुड़ैलों ने अपने जबड़ों को अस्वाभाविक रूप से इतना फैला दिया कि उनका पूरा चेहरा विकृत हो गया। फिर वे बंदरों जैसी अविश्वसनीय गति से वृक्ष पर चढ़ने लगीं।"नीचे कूदो!" रस्टी चिल्लाया। दोनों मित्र तुरंत पेड़ से नीचे कूद पड़े। पीछे मुड़कर देखा तो वे दोनों राक्षसियाँ कुछ ही क्षणों में शाखाओं को पार करती हुई उनके सिर के ऊपर पहुँच चुकी थीं।

दोनों के मन में केवल एक ही विचार कौंधा- रंगनाथ बाबा का आश्रम। उन्हें विश्वास था कि आश्रम का पवित्र सुरक्षा चक्र उन दुष्ट शक्तियों को भीतर प्रवेश नहीं करने देगा।दोनों पूरी शक्ति से आश्रम की ओर दौड़ पड़े। लेकिन चुड़ैलें उनसे कहीं अधिक तेज थीं।

कुछ ही क्षणों में कलकुलता ने समीर को पीछे से जकड़ लिया और महारंध्वी ने रस्टी के कंधों पर अपने नुकीले पंजे गड़ा दिए। दोनों राक्षसियाँ विजय के उन्माद में अट्टहास करने ही वाली थीं कि...साँय...! हवा को चीरती

हुई एक तीर की तीखी आवाज़ गूँजी। साँय...! दूसरा तीर भी बिजली की गति से निकला। अगले ही पल दोनों तीर अपने लक्ष्य पर जा धँसे।

कलकुलता और महारंध्वी के सिर उनके धड़ों से अलग होकर हवा में उछल गए। उनके धड़ कुछ कदम डगमगाए, फिर धरती पर गिर पड़े। काले धुएँ की लपटें उठीं और देखते ही देखते दोनों राक्षसियों के शरीर राख में बदलने लगे। समीर और रस्टी ने विस्मय से उस दिशा में देखा, जहाँ से वे अद्भुत तीर आए थे। घने जंगल की छाया में कोई अदृश्य धनुर्धर खड़ा था- स्वामी रंगनाथ बाबा स्वयं उन्हें लेने आए थे। दोनों उनके साथ आश्रम पहुंचे। आश्रम में प्रवेश करते ही समीर और रस्टी ने श्रद्धापूर्वक स्वामी रंगनाथ के चरण स्पर्श किए।

दोनों के चेहरे पर थकान, निराशा और आत्मग्लानि स्पष्ट दिखाई दे रही थी। समीर ने पराजित स्वर में कहा, "हे गुरुदेव! हम तो लाल माई की अनुचरियों का ही सामना नहीं कर पाए। फिर स्वयं लाल माई का क्या बिगाड़ पाएंगे? यदि हम अभी तक इतने असहाय हैं, तो सलोनी, सुनिधि और बाकी मासूम बच्चियों को उस राक्षसी बलि से कैसे बचा पाएंगे?" रस्टी ने भी सिर झुकाते हुए कहा, "गुरुदेव, हमारे साहस का अभिमान आज चूर-चूर हो गया है। अब आगे का मार्ग हमें दिखाई नहीं दे रहा। कृपया हमारा मार्गदर्शन कीजिए।

तभी स्वामी रंगनाथ बाबा के दो शिष्य औषधियां लेकर आए और समीर तथा रस्टी के घावों पर मरहम-पट्टी करने लगे। दोनों को औषधीय लेप लगाया गया और पीने के लिए काढ़ा दिया गया।

स्वामी रंगनाथ शांत भाव से उनकी ओर देखने लगे। कुछ क्षण मौन रहने के बाद उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, "प्रिय बच्चों, निराश मत हो। तुम्हें एक कथा सुनाता हूं। उसे ध्यान से सुनो, क्योंकि उसी में तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर छिपा है।" दोनों ने आदरपूर्वक सिर झुका दिया। स्वामी बोले, "लगभग एक हजार वर्ष पूर्व इस वन में बराहमल्ली नामक एक आदिवासी राजा ने अपना विशाल साम्राज्य स्थापित करने और अथाह संपत्ति प्राप्त करने की लालसा में एक प्राचीन दानव, पेटवा, की तांत्रिक साधना आरंभ की। उसने अनेक रक्तबलियां देकर उस दानव को प्रसन्न किया।

पेटवा वही दानव था जो त्रेतायुग में प्रकट हुआ था। भगवान श्रीराम के भय से वह महाश्मशान की गहन भूमि में सुप्त अवस्था में छिपा रहता था। जब बराहमल्ली की साधना पूर्ण हुई तो पेटवा प्रसन्न अवश्य हुआ, किंतु उसने छल से बराहमल्ली के शरीर में प्रवेश कर लिया और उसकी पत्नी क्रांजपुष्पा को अपनी अपनी काली शक्ति से एक दासी और भयानक डायन बना दिया।

स्वामी रंगनाथ आगे बोले, "पेटवा दानव का अंतिम उद्देश्य केवल शक्ति प्राप्त करना नहीं था। वह अपने समान दानवों की संख्या बढ़ाकर पूरे संसार में दानव सभ्यता स्थापित करना चाहता था। उसका लक्ष्य धर्म, करुणा और मर्यादा के मार्ग पर चलने वाले लोगों का विनाश कर भय और अधर्म का साम्राज्य फैलाना था।"

क्रांजपुष्पा ने ही पर्वत पर स्थित गुप्त "नास्ति" मंदिर का निर्माण कराया, जहां पेटवा दानव की प्रतिमा स्थापित की गई तथा सुकिंचक नाथ नाम से पेटवा दानव की पूजा की परंपरा प्रारंभ हुई । प्रत्येक कृष्ण पक्ष की अमावस्या को वह पेटवा की आराधना करती, उससे संभोग करती थी। उसे रक्त अर्पित करती और स्वयं भी रक्तपान करती थी। इसी कारण लोग उसे 'लाल डायन' कहने लगे।

समय बीतने के साथ पेटवा के प्रभाव से क्रांजपुष्पा ने एक विकराल राक्षसी संतान उत्पन्न किया, जिसका स्वरूप एक विशाल जंगली सूअर जैसा था। उसी का नाम शूकरासुर था, जिसे बाद में लोग शुकासुर के नाम से भी जानने लगे। शुकासुर ने पूरे वन प्रदेश में भयंकर आतंक मचा दिया। तब मेरे पूर्वज, स्वामी सोनभद्रनाथ जी, ने भगवान शिव के उग्र स्वरूप भगवान काल भैरव की घोर तपस्या की और दिव्य अग्निमंत्र सिद्ध किया।

अग्निमंत्र की सिद्धि प्राप्त होते ही उनका तेज असाधारण हो गया। वे काल भैरव के समान पराक्रमी प्रतीत होने लगे। उन्होंने भीषण युद्ध में शुकासुर के दांत उखाड़कर उन्हीं दांतों से उसका वध किया। तत्पश्चात उन्होंने शुक्रसुर के दांत और हड्डियों से वराहदंती खडग, वराहचाप धनुष और ग्यारह दिव्य बाण बनाए। फिर अपनी दिव्य तलवार **वराहदंती** से क्रांजपुष्पा का सिर काटकर उसका भी अंत कर दिया।

इसके बाद महाश्मशान में पेटवा दानव से उनका भयंकर युद्ध हुआ। उस युद्ध में उन्होंने पेटवा की अनेक आसुरी शक्तियां नष्ट कर दीं। किंतु वह धूर्त दानव किसी प्रकार प्राण बचाकर भाग निकला। उस दिन के बाद से पेटवा अत्यंत दुर्बल हो गया। वह किसी स्त्री को डायन तो बना सकता था, पर उससे राक्षसी संतान उत्पन्न नहीं कर सकता था। लाल डायन द्वारा काले दानवी अनुष्ठानों और रक्त बलि के बिना वो दानव, पहले की तरह किसी के शरीर पर पूर्ण अधिकार नहीं कर पाता था।

अपनी खोई हुई शक्तियां पुनः प्राप्त करने के लिए उसे **चैत्र पूर्णिमा में जन्मे** अच्छे कर्मों वाले एक मानव पुरुष का शरीर **तथा** तेरह मासूम कन्याओं की बलि की आवश्यकता थी। सदियों तक उसने अनेक स्त्रियों को अपने प्रभाव में लेकर लाल डायन बनाने का प्रयास किया, किंतु उनमें से कोई भी तेरह बलियां पूर्ण नहीं कर सकी।

हर बार उसके अनुष्ठान पूर्ण होने से पहले कोई न कोई सात्विक, धर्मनिष्ठ अथवा ईश्वरभक्त वीर उठ खड़ा होता और उस डायन का अंत कर देता। अब इतिहास स्वयं को दोहरा रहा है- सुरेखा दत्ता, जो समीर की सास है, वास्तव में क्रांजपुष्पा का पुनर्जन्म हैं। यही कारण है कि उसका पेटवा दानव से संबंध असाधारण रूप से गहरा है और लाल माई की शक्तियां सामान्य डायन तांत्रिकों से कहीं अधिक प्रबल हैं।"

तुम, मेरे बच्चे समीर और तुम्हारा मित्र रस्टी , मेरे पूर्वज स्वामी सोनभद्रनाथ तथा उनके छोटे भाई वज्रदेह का अधूरा काम पूरा करोगे । इस बार पेटवा दानव और उसकी आसुरी शक्ति का समूल नाश होना चाहिए। । स्वामी रंगनाथ गंभीर स्वर में बोले, "इसलिए, समीर, तुम्हें एक बार फिर अग्निमंत्र सिद्ध करना होगा और रस्टी , तुम्हें राम रक्षा स्तोत्र सिद्ध करना होगा। तभी तुम दोनों, हज़ार साल पुराना यह कार्य पूर्ण कर सकोगे।

जब अग्निमंत्र की दिव्य शक्ति और राम रक्षा स्तोत्र का आध्यात्मिक तेज एक साथ प्रकट होगा, तभी पेटवा दानव और लाल डायन का अंत संभव होगा। "लाल माई इस समय अपनी तैंतीस दिनों की राक्षसी साधना में पूर्णतः लीन है। वह तामसिक आहार ग्रहण कर रही है, प्रतिदिन पेटवा के साथ

संभोग करती है, और अपने प्रत्येक दानवीय अनुष्ठान को विधिपूर्वक संपन्न कर रही है।

स्वामी रंगनाथ बाबा ने आगे कहा,"एक और बात ध्यान से सुनो। **लाल माई गर्भ धारण कर चुकी है।** यदि वह अपनी तैंतीस दिनों की राक्षसी साधना और अंतिम अनुष्ठान में सफल हो गई, तो वह और पेटवा दोनों पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो जाएंगे।लाल माई के गर्भ में पल रहा उसका पुत्र, पूर्णिमासुर के नाम से जन्म लेगा। बड़े होते ही वह संसार पर अपना अधिकार जमा लेगा, क्योंकि वह एक पुण्यात्मा पुरुष और डायन की संतान है।"

ऐसा कहकर रंगनाथ बाबा समीर की ओर देखते हैं, लेकिन पूर्णिमासुर के जन्म की कथा को रहस्य ही रहने देते हैं, ताकि समीर को लज्जित न होना पड़े। तभी समीर झेंपकर अपना सिर झुका लेता है।

स्वामी रंगनाथ बाबा फिर अपनी कथा को जारी रखते हुए बोलते हैं, "पेटवा भी शरीर धारण करने के बाद लाल माई से निरंतर अनेक शुकासुर जैसे संताने उत्पन्न , जो सम्पूर्ण संसार में प्रलय की तरह छा जाएंगे। यदि ऐसा हुआ, तो यह केवल इस वन प्रदेश के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति के लिए विनाश का कारण बनेगा। अधर्म, भय और रक्तपात का ऐसा युग आरंभ होगा, जिसकी कल्पना भी कठिन है। इसलिए यह युद्ध केवल उन तेरह मासूम बालिकाओं को बचाने का नहीं, बल्कि संपूर्ण जगत की रक्षा का धर्मयुद्ध है।"

जब तक उसकी साधना के सभी विधान पूर्ण नहीं हो जाते, वह तेरह बालिकाओं की बलि नहीं दे सकती। इसी प्रकार, वह और उसकी चुड़ैल अनुचरियां भी इस अवधि में तुम दोनों पर सीधे आक्रमण नहीं करेंगी। मैं और मेरे शिष्य निरंतर तुम्हारी रक्षा करते रहेंगे। इसलिए साधना के समय किसी भी प्रकार का भय अपने मन में मत आने देना।

आज **18 अक्टूबर, 2020** लाल माई अपनी साधना के बीस दिन पूर्ण कर लेगी । इसका अर्थ है कि तुम्हारे पास अपनी मंत्रसाधना पूर्ण करने के लिए केवल तेरह दिन शेष हैं। यदि उन मासूम बच्चियों का जीवन बचाना है, यदि

पेटवा दानव और लाल माई जैसे दुष्टों का अंत करना है, तो तुम्हें पूरे मन, पूर्ण श्रद्धा और अटूट संकल्प के साथ अपनी साधना समय रहते पूर्ण करनी होगी। यही तुम्हारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण धर्मयुद्ध है।"

जाओ, अपने तप, साहस और श्रद्धा से स्वयं को सिद्ध करो, ताकि इस वन प्रदेश को सदा के लिए पेटवा और लाल डायन के आतंक से मुक्त कर सको।" ऐसा कहकर स्वामी रंगनाथ बाबा ने दोनों को मंत्र सिद्धि के नियम, विधि-विधान और आवश्यक अनुष्ठानों का विस्तार से ज्ञान दिया।

इसके पश्चात वे समीर के कानों में भगवान काल भैरव के पवित्र अग्नि-मंत्र तथा रस्टी के कानों में भगवान श्रीराम के पवित्र रामरक्षा स्तोत्र का उच्चारण करके उन्हें मंत्र-दीक्षा देते हैं। फिर वे दोनों को उन मंत्रों की लिखित प्रतिलिपियाँ भी प्रदान करते हैं।

दोनों को स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करने के बाद आश्रम के पवित्र अमृत उद्यान में बैठकर ग्यारह दिनों तक कठोर तपस्या करनी थी। इस अवधि में उन्हें पूर्ण सात्त्विक जीवन, ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम का पालन करना अनिवार्य था। पूरे तप के दौरान वे दिन में केवल एक बार जल ग्रहण कर सकते थे तथा भोजन के रूप में केवल कंद, मूल और फल ही स्वीकार कर सकते थे। तीन से चार घंटे से अधिक सोना भी उनके व्रत के विरुद्ध था।

तपस्या आरंभ करने से पहले दोनों ने श्रीगणेश और सीता-राम की पूजा की। इसके पश्चात उन्होंने एक हजार बार विष्णु सहस्रनाम का पाठ कर अपने मन, वचन और कर्म को पवित्र किया। फिर गुरु पूजा तथा भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना कर अपने-अपने मंत्रों की सिद्धि के लिए गहन तप में लीन हो गए।

स्वामी रंगनाथ बाबा के सतत मार्गदर्शन, कठोर अनुशासन और अपनी अटूट श्रद्धा के बल पर समीर और रस्टी ने ग्यारह दिनों की कठिन साधना सफलतापूर्वक पूर्ण की। उनकी तपस्या के अंतिम क्षणों में दोनों ने अपने भीतर एक अद्‌भुत आध्यात्मिक ऊर्जा और दिव्य तेज का अनुभव किया, मानो उनके मंत्र अब सिद्ध होकर उनके अस्तित्व का अभिन्न अंग बन चुके हों।

अध्याय 19
नीले चाँद की रात

जैसे ही रस्टी की सात्त्विक साधना पूर्ण हुई, उसके सामने दिव्य प्रकाश का एक तेजस्वी पुंज प्रकट हुआ। उस प्रकाश से एक-एक करके ग्यारह दिव्य बाण, एक स्वर्णिम तरकश और अद्भुत **वराहचाप** धनुष प्रकट हुए। प्रत्येक बाण का अग्रभाग शुकासुर के दांतों से निर्मित था, जो अत्यंत तीक्ष्ण और दिव्य तेज से प्रकाशित था। स्वर्णिम तरकश उन ग्यारह बाणों से स्वयं भर गया। धनुष की प्रत्यंचा केसरिया रंग की थी, जो असाधारण रूप से दृढ़ और शक्तिशाली प्रतीत होती थी। उसे देखते ही रस्टी के भीतर एक अद्भुत ऊर्जा का संचार होने लगा।



उधर जैसे ही समीर की साधना पूर्ण हुई, उसके समक्ष भी दिव्य ज्योति का एक स्तंभ प्रकट हुआ। उस प्रकाश के मध्य से भव्य श्वेत **वराहदंती** तलवार प्रकट हुई। उसका फल हाथी-दांत (आइवरी) के समान उज्ज्वल श्वेत था, जबकि उसकी मूठ शुद्ध स्वर्ण से निर्मित प्रतीत होती थी। पूरी तलवार दिव्य आभा से आलोकित थी और उसके चारों ओर अग्नि के सूक्ष्म कण नृत्य कर रहे थे।



दोनों दिव्य अस्त्र मानो अपने वास्तविक स्वामियों की प्रतीक्षा में सदियों से सुरक्षित रखे गए थे। जैसे ही समीर ने तलवार और रस्टी ने धनुष उठाया, दोनों के शरीर से दिव्य तेज प्रस्फुटित होने लगा। उस क्षण स्वामी रंगनाथ बाबा समझ गए कि दोनों की मंत्रसिद्धि पूर्ण हो चुकी है और धर्मयुद्ध का समय अब निकट आ गया है।

रंगनाथ स्वामी ने अपने दोनों शिष्यों को उन दिव्यास्त्रों के संचालन की गूढ़ विधि सिखाई। उन्होंने समझाया कि दिव्यास्त्र केवल बल या क्रोध से नहीं चलते, बल्कि साधक के मन की पवित्रता, एकाग्रता और अटूट संकल्प से जागृत होते हैं।

स्वामी ने दोनों को आसन पर बैठाकर पहले ध्यान कराया। फिर उन्होंने प्रत्येक दिव्यास्त्र का बीज मंत्र, उसके आवाहन की विधि, लक्ष्य पर एकाग्र होने का अभ्यास तथा युद्ध के समय उसके प्रयोग की मर्यादा बताई। उन्होंने चेतावनी दी, "दिव्यास्त्र केवल धर्म की रक्षा के लिए उठाया जाता है। यदि कोई इसे अहंकार, प्रतिशोध या स्वार्थ के लिए चलाएगा, तो वही अस्त्र उसके लिए विनाश का कारण बन जाएगा।"

कई घंटों तक दोनों शिष्य मंत्रों का उच्चारण करते रहे। धीरे धीरे उनके हाथों में धारण किए हुए दिव्यास्त्रों से मंद स्वर्णिम आभा निकलने लगी। यह संकेत था कि अस्त्र अपने नए धारकों को स्वीकार कर रहे हैं। रंगनाथ स्वामी ने प्रसन्न होकर कहा, "आज तुमने केवल दिव्य अस्त्र चलाना नहीं सीखा, बल्कि उन्हें नियंत्रित करना भी सीख लिया है। याद रखना, दिव्यास्त्र का सबसे बड़ा रहस्य उसकी शक्ति नहीं, बल्कि उसे उचित समय पर संयम के साथ प्रयोग करना है।"

दोनों शिष्यों ने गुरु के चरणों में प्रणाम किया और संकल्प लिया कि वे इन दिव्यास्त्रों का प्रयोग केवल धर्म, निर्दोषों की रक्षा और अधर्म के विनाश के लिए ही करेंगे।

स्वामी रंगनाथ ने समीर को एक दिव्य श्वेत माणिक्य प्रदान करते हुए कहा, "वत्स, यह साधारण रत्न नहीं है। यह तुम्हें महाश्मशान का मार्ग दिखाएगा। जब-जब तुम सही दिशा में आगे बढ़ोगे, यह दिव्य प्रकाश से चमक उठेगा। यदि तुम मार्ग से भटक गए, तो इसका प्रकाश मंद होकर बुझ जाएगा। और जब तुम अपने वास्तविक लक्ष्य तक पहुंच जाओगे, तब यह रक्तवर्ण आभा से प्रकाशित होगा। यह माणिक्य मुझे वर्षों की कठोर साधना के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था। आज से यह तुम्हारी यात्रा का पथप्रदर्शक है।"

समीर ने दोनों हाथों से वह दिव्य माणिक्य ग्रहण किया। फिर उसने और रस्टी ने श्रद्धापूर्वक गुरु के चरण स्पर्श किए। स्वामी रंगनाथ का आशीर्वाद लेकर दोनों बिना एक क्षण गंवाए अपने अंतिम अभियान पर निकल पड़े। उनके पीछे-पीछे रंगनाथ आश्रम के अनेक साधक, शिष्य तथा सुकिंचक नाथ आश्रम के विद्रोही भी अपने अस्त्र-शस्त्रों के साथ चल पड़े।

श्रावणी और स्वामी रंगनाथ आश्रम की साध्वियाँ रंगनाथ आश्रम में ही रुककर औपनिवेशिक काली जेल से मुक्त कराए गए 150 लोगों की देखभाल, उनके उद्धार तथा उनकी सुरक्षित घर-वापसी की तैयारियों में जुट गईं।

उधर ईवा, एमिली, श्रावणी और सुजल शहर में ही रुक गए, ताकि श्रेया और उसके नवजात पुत्र की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।हिमनदा दीदी, जिन्हें महाश्मशान का गुप्त मार्ग ज्ञात था, आनंद तथा पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार के नेतृत्व में पुलिस बल के साथ शहर से प्रस्थान कर गईं।

संध्या ढलने और सूर्यास्त के बाद, स्वामी रंगनाथ द्वारा दिए गए दिव्य माणिक्य के मार्गदर्शन में समीर, रस्टी और उनका दल अंततः महाश्मशान पहुंच गया। वहां का दृश्य देखकर सभी के शरीर में सिहरन दौड़ गई।महाश्मशान के मध्य स्थित नास्ति मंदिर में लाल माई पेटवा दानव की विशाल प्रतिमा के सामने धधकती अग्नि में तामसिक सामग्री, मांस, अस्थियां और रक्त अर्पित कर अपनी अंतिम राक्षसी साधना कर रही थी।



उसकी साध्वियां और सेविकाएं अब पूर्णतः चुड़ैलों में परिवर्तित हो चुकी थीं। कुछ लाल माई के चारों ओर घेरा बनाकर उसकी सेवा में

लगी थीं, कुछ विकृत अट्टहास करते हुए पेटवा की प्रतिमा के सामने उन्मत्त राक्षसी नृत्य कर रही थीं, जबकि अन्य तांत्रिक अनुष्ठानों की तैयारी में व्यस्त थीं। पूरा क्षेत्र भूतों, प्रेतों और दुष्ट आत्माओं के पहरे में था। लाल माई के बचे हुए हथियारबंद अनुचर चारों ओर गश्त लगा रहे थे। वहाँ महाश्मशान में लगभग **दस हज़ार दानवों की सेना** भी युद्ध के लिए तैयार बैठी थी। अपने राजा पेटवा को शरीर प्राप्त होते ही वे भी **मानव शरीर धारण करके विश्व-विजय के लिए तत्पर थे।**

राक्षसी अनुष्ठान पूर्ण होने और तेरह मासूम बालिकाओं की बलि चढ़ाए जाने में अब केवल एक दिन शेष था।चारों ओर मनुष्यों और जंगली पशुओं के सड़े-गले शव बिखरे पड़े थे। पूरे महाश्मशान में मृत्यु, धुएं और सड़ांध की भयावह गंध फैली हुई थी। उसी समय दो शक्तिशाली चुड़ैल सेविकाएं एक विशाल काला मटका उठाकर लाईं। उन्होंने उसे पेटवा दानव की प्रतिमा के सामने रख दिया। वह ताजा रक्त से लबालब भरा हुआ था। अचानक प्रतिमा के भीतर से धुएं जैसा एक काला साया निकला। वह धीरे-धीरे मटके के ऊपर झुक गया। देखते ही देखते मटके का सारा रक्त गायब हो गया।



महाश्मशान में एक भयावह गर्जना गूंजी-"मुझे और रक्त चाहिए...!" पेटवा की वह विकृत आवाज चारों दिशाओं में फैल गई। आदेश मिलते ही दो चुड़ैलें, **सोना-चाँदी** दौड़ पड़ीं। वे दो बंदी स्त्रियों को घसीटते हुए बलिवेदी की ओर लाने लगीं।

इससे पहले कि उनका वध किया जाता, रस्टी ने अपना दिव्य धनुष उठाया। उसने तरकश से एक स्वर्णिम

बाण **दिशाभेदी दिव्यास्त्र** निकालकर धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाकर, भगवान श्रीराम का स्मरण किया और आकाश की ओर लक्ष्य साधकर, प्रत्यंचा छोड़ दी-"स्वाऽऽऽय!" बाण बिजली की गति से बादलों के बीच जा पहुंचा। अगले ही क्षण आकाश भयंकर गर्जना से कांप उठा। वह एक बाण असंख्य दिव्य बाणों में विभाजित हो गया। क्षणभर में महाश्मशान पर बाणों की वर्षा होने लगी।

वे दिव्य बाण भूतों, प्रेतों, चुड़ैलों, दानवों और लाल माई के दुष्ट अनुचरों पर वज्र की तरह टूट पड़े और वह दुष्ट जीव, आसुरी शक्तियाँ और प्रेत आत्माएं पीड़ादायक चीखों के साथ भस्म होने लगीं।

दिशाभेदी दिव्यास्त्र के प्रभाव से लगभग पूरी दानव सेना और बहुत-सी आसुरी शक्तियाँ समाप्त हो गईं। कुछेक बेहद शक्तिशाली और खतरनाक चुड़ैलें तथा दुष्ट मानव ही बच गए थे।

अचानक एक विशालकाय चुड़ैल ने अपनी कमर से नरमुंडों से निर्मित पिशाचिनी शंख निकाला और पूरी शक्ति से उसे फूंक दिया। उस शंख की भयावह ध्वनि के साथ ही जंगल कांप उठा।

अगले ही पल महाश्मशान की अंधेरी दिशाओं से विशाल जंगली सूअरों का झुंड प्रकट हुआ और समीर के दल पर उन्मत्त होकर टूट पड़ा। धर्म और अधर्म के बीच अंतिम युद्ध शुरू हो गया...!

अध्याय 20

मानव-दानव युद्ध

रस्टी के नेतृत्व में रंगनाथ स्वामी के साधक, शिष्य, एवं देहरी के डी.वी.टी.एफ के सदस्यों (**मित्र सेना**) की सेना चुड़ैलों, जंगली सूअरों और लाल माई के स्पेशल गार्ड्स टीम से भीषण युद्ध करने लगती है।।

तलवारों की टकराहट, दानव तथा दिव्यास्त्र की वर्षा और मशीनगनों की गर्जना से पूरा महाशमशान काँप उठता है। दोनों पक्षों के योद्धा एक के बाद एक धराशायी होने लगे। **दिशाभेदी** एक ऐसा दिव्यास्त्र था, जिसके प्रयोग से उसे चलाने वाले योद्धा के चारों ओर, दसों दिशाओं में पाँच कोस की परिधि के भीतर उपस्थित समस्त आसुरी शक्तियाँ, भूत और प्रेत नष्ट हो जाते थे। केवल दानवीय कवच अथवा शुक्र-कवच से सुरक्षित डायनें और असुर ही इसके प्रहार से बच पाते थे।

शेष बचे दानवों और असुरों का नेतृत्व कर रहे दानव अमित प्रमाण '**जघन्य-गंध**' नामक दानवीय अस्त्र से **मित्र सेना** पर हमला कर देता है। जबकि उसके उपसेनापति दानवदूत ने '**कालुका-भँवर**' चला दिया।

अपने गुरु से प्राप्त ज्ञान के अनुसार रस्टी ने एक के बाद एक **दामिनी, प्रकाशमान और स्वस्ति** बाण चलाए। दामिनी ने कालुका-भँवर द्वारा फैलाए गए घोर अंधकार को चीर दिया। प्रकाशमान ने रात को कुछ समय के लिए प्रातःकाल की भाँति आलोकित कर दिया। वहीं स्वस्ति बाण ने सभी **मित्र सेना** के योद्धाओं की जघन्य-गंध अस्त्र से रक्षा की, जिसकी विषैली दुर्गंध किसी को भी गंभीर रूप से बीमार कर सकती थी।

इसके बाद रस्टी ने **रामप्रिय** और **हनुमत** बाण चलाए। इन दिव्य बाणों ने दानव-कवच और शुक्र-कवच से सुरक्षित अमित प्रमाण, दानवदूत तथा उनके समान अत्यंत शक्तिशाली दानव-नायकों और सहयोगियों का एक ही प्रहार में अंत कर दिया।

उधर समीर नास्ति मंदिर की सीढ़ियाँ दौड़ता हुआ चढ़ गया। उसने ऊँचे स्वर में लाल माई को ललकारा और उसके अहंकार पर तीखे प्रहार करते हुए उसे कायर, पाखंडी और निर्दोषों की हत्यारिन कहा। अपमान से तिलमिलाकर लाल माई अपनी साधना बीच में ही छोड़कर बाहर आ गई।

उसने शायद कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कोई साधारण मनुष्य उसके ही साम्राज्य में खड़ा होकर उसे युद्ध के लिए ललकारने का साहस कर सकता है। यह चुनौती उसके अहंकार पर ऐसा प्रहार थी, जिसे वह सहन नहीं कर सकती थी।

क्रोध से उन्मत्त होकर उसने अपने भीतर संचित समस्त दानवीय शक्तियों का आह्वान किया। साथ ही, उसने पेटवा को भी अपने शरीर में समाहित कर लिया, ताकि उसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाए और संसार की कोई भी ताकत उसे पराजित न कर सके।

कुछ ही क्षणों में लाल माई का मानवीय रूप बदलने लगा। उसका शरीर अस्वाभाविक रूप से लंबा और विशाल हो गया। उसकी आँखें दहकते अंगारों की भाँति लाल हो उठीं। उसकी उँगलियाँ विकराल पंजों में बदल गईं, जिनके सिरों पर लंबे, तीक्ष्ण नख उग आए थे। उन नखों से एक विषैला, गहरे लाल रंग का द्रव टपक रहा था। वह साधारण विष नहीं, बल्कि भयानक डाकिनी-विष था, जिसकी मात्र एक बूँद किसी मनुष्य के रक्त में प्रवेश करके कुछ ही क्षणों में उसके प्राण हर सकती थी।

अब वह लाल माई नहीं, अपने वास्तविक दानवीय स्वरूप में खड़ी लाल डायन थी।अपने सामने उस विशाल और विकराल रूप को देखकर समीर एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। लाल डायन उससे लगभग डेढ़ फुट ऊँची थी। उसकी भयानक छाया नास्ति दानव मंदिर की दीवारों पर किसी विकृत राक्षसी आकृति की तरह फैल रही थी।

फिर भी समीर ने अपने भय को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया। उसने अपने पाँव दृढ़ता से भूमि पर जमाए और वराहदंती तलवार को दोनों हाथों से थामकर आक्रमण तथा रक्षा की संयुक्त मुद्रा धारण कर ली। लाल डायन ने अपना हाथ आकाश की ओर उठाया और किसी अज्ञात दानवीय भाषा

में मंत्रोच्चारण किया। देखते ही देखते उसके हाथ में एक विशाल धात्विक तलवार प्रकट हो गई। वह था—दानव-कंटक।

दानव-कंटक की काली धातु पर रक्त जैसी लाल आभा दौड़ रही थी। उसके लंबे और असमान धारदार किनारों से दानवीय ऊर्जा की चिंगारियाँ निकल रही थीं। लाल डायन ने विकराल गर्जना करते हुए तलवार को अपने सिर के ऊपर उठाया और पूरी शक्ति से समीर पर झपटी। उसका पहला ही प्रहार इतना प्रचंड था कि यदि वह समीर के शरीर से टकरा जाता, तो संभवतः उसे दो भागों में काट देता।

लेकिन समीर अब पहले वाला साधारण युवक नहीं था। तपस्या से प्राप्त शक्ति और वराहदंती के दिव्य प्रभाव ने उसकी गति तथा शारीरिक सामर्थ्य को कई गुना बढ़ा दिया था। वह बिजली जैसी तेजी से एक ओर हटा और दानव-कंटक का प्रहार खाली चला गया। तलवार पत्थर के फर्श से टकराई और चिंगारियों का विस्फोट हुआ।

लाल डायन ने बिना रुके दूसरा, फिर तीसरा प्रहार किया। समीर कभी वराहदंती से उसके वार रोकता, तो कभी झुककर अथवा पीछे हटकर उनसे बच निकलता। दोनों तलवारों के टकराने से नास्ति मंदिर में धातु की भीषण गूँज फैल रही थी। अवसर मिलते ही समीर भी प्रत्याक्रमण करता और वराहदंती की चमकती धार से डायन के शरीर पर तेज प्रहार करता।

लाल डायन शक्तिशाली अवश्य थी, किंतु लगातार तैंतीस दिनों से किए जा रहे अनुष्ठानों ने उसकी ऊर्जा का एक बड़ा भाग पहले ही सोख लिया था। इसके अतिरिक्त उसने हाल ही में अपने अनुष्ठान से **पूर्णिमासुर** नामक एक मायावी संतान को जन्म दिया था ।

दानवीय शक्तियों, डायन-शक्ति और एक सत् मनुष्य के गुणों से परिपूर्ण उस मायावी बालक ने नौ महीने में नहीं, बल्कि मात्र पाँच महीने में ही अपना गर्भकाल पूर्ण कर जन्म ले लिया था। उस दानवीय सृजन ने भी लाल डायन को भीतर से कुछ क्षीण कर दिया था।

समीर के लगातार प्रत्याक्रमण से विवश होकर उसने कुछ कदम पीछे हटाए। इसके बाद उसने अपने दोनों हाथ फैलाकर एक साथ अनेक

दानवीय अस्त्रों का आह्वान किया। लाल और काले प्रकाश से निर्मित असंख्य भाले, चक्र, बाण और अग्निगोलक उसके चारों ओर प्रकट हो गए। उसने हाथ आगे किया और वे सभी अस्त्र एक साथ समीर की ओर दौड़ पड़े।

संकट को पहचानते हुए समीर ने भगवान काल भैरव का स्मरण किया और तीव्र स्वर में पवित्र रक्षा-मंत्रों का उच्चारण करने लगा। उसी क्षण वराहदंती से प्रचंड दिव्य प्रकाश फूट पड़ा। तलवार ने उन दानवीय अस्त्रों के प्रतिकार में स्वयं अनेक दिव्य आयुध उत्पन्न कर दिए। आकाश में दोनों ओर के अस्त्र टकराए और एक के बाद एक नष्ट होने लगे। उनके विस्फोट से पूरा मंदिर लाल, स्वर्णिम और नीले प्रकाश से भर गया।

इसी बीच लाल डायन और उसके भीतर उपस्थित पेटवा की शक्तियों में पूर्ण सामंजस्य स्थापित होने लगा। उसकी थकान मानो अचानक समाप्त हो गई। उसने पहले से कहीं अधिक वेग और शक्ति के साथ समीर पर धावा बोल दिया।

उसका आकस्मिक आक्रमण इतना प्रबल था कि समीर उसे रोक नहीं पाया। दानव-कंटक और वराहदंती की भीषण टक्कर से वह कई कदम पीछे उछलकर भूमि पर जा गिरा। लाल डायन ने अवसर देखकर तलवार उठाई और उसके ऊपर निर्णायक प्रहार कर दिया।

समीर तत्काल लुढ़ककर एक ओर हट गया। दानव-कंटक पूरी शक्ति के साथ मंदिर के फर्श से टकराया। पत्थर का फर्श एक प्रचंड धमाके के साथ फट गया और उसमें चौड़ी दरार बन गई। पूरे मंदिर में भूकंप जैसे कंपन उठे। जर्जर दीवारों और छत से पत्थर तथा धूल झड़ने लगी।

समीर तुरंत खड़ा हुआ। लाल डायन ने फिर तलवार उठाई, किंतु इस बार वह उसके प्रहार की पहुँच में आने से पहले ही हवा में उछल गया। उसने घूमते हुए वराहदंती चलाई और उसकी धार लाल डायन के चेहरे को चीरती हुई निकल गई।

लाल डायन पीड़ा तथा अपमान से चीख उठी। “तेरे शरीर का सारा रक्त चूस जाऊँगी, दुष्ट छोकरा! तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगी!”

समीर ने वराहदंती को सामने तानकर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा, "अरी बुढ़िया, पहले अपनी गर्दन बचा ले! मेरा रक्त पीना तो बहुत दूर की बात है—मैं तेरा सिर काटकर इसी मंदिर के फर्श पर गिरा दूँगा!"

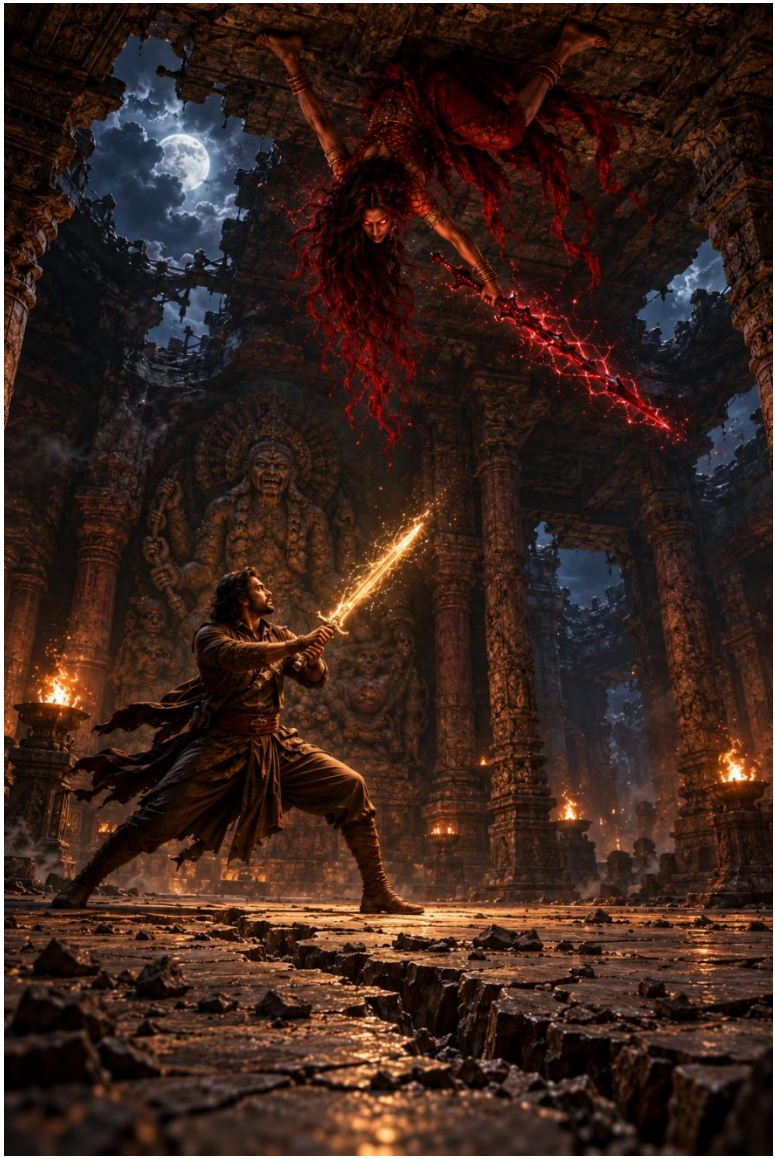
उसके शब्दों ने लाल डायन के क्रोध को और भड़का दिया। उसने अपने विषैले पंजे फैलाए और समीर को पकड़ने के लिए झपटी। वह अपने नाखून उसके शरीर में गड़ाकर डाकिनी-विष प्रवाहित करना चाहती थी। समीर ने पूरी शक्ति से वराहदंती चलाई, किंतु लाल डायन ने **दानव-कंटक** को सामने लाकर उसका प्रहार रोक दिया। दोनों तलवारें टकराईं और अग्नि की चिंगारियाँ चारों ओर बिखर गईं।

उसी क्षण लाल डायन ने अपनी लंबी टाँग से समीर को ठोकर मारने का प्रयास किया। समीर ने उसकी टाँग काटने के उद्देश्य से तलवार घुमाई, परंतु वह अत्यंत फुर्ती से पीछे हट गई। अगले ही पल उसने सिर झुकाकर पूरी गति से समीर की ओर आक्रमण किया।

समीर ने अंतिम क्षण में तेजी से एक ओर हटकर उसके वार को विफल कर दिया। जैसे ही लाल डायन उसके पास से आगे निकली, उसने घूमकर वराहदंती से उसकी पीठ पर एक शक्तिशाली प्रहार कर दिया। लाल डायन की पीठ पर एक गहरा घाव बन गया और उसमें से खून की धारा बहने लगी।

क्रोधित लाल डायन हवा में उछली और छिपकली की तरह मंदिर की प्राचीन, टूटी हुई छत से जा चिपकी। उसके बाल नीचे की ओर लटक रहे थे और उसकी लाल आँखें अंधकार में दहक रही थीं। वह ऊपर से समीर को भयभीत करने का प्रयास कर रही थी।

लेकिन समीर अब उसके इस रूप को कई बार देख चुका था। उसने ऊपर देखते हुए उपहासपूर्ण मुस्कान के साथ कहा, "अरी डायन, नीचे उतर! तेरे इस तमाशे से अब मुझे डर नहीं लगता। यह सर्कस किसी और को दिखाना!"



लाल डायन ने क्रोध से चीखते हुए छत से छलाँग लगा दी। वह समीर को अपने पंजों में जकड़ने के उद्देश्य से ठीक उसके निकट उतरी, किंतु दुर्भाग्यवश उसका एक पैर उसी गहरी दरार पर पड़ गया, जिसे उसने कुछ क्षण पहले अपने प्रहार से फर्श पर बनाया था। उसका संतुलन बिगड़ गया।

समीर ने इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। उसने अपने शरीर की समस्त शक्ति एकत्र की, आगे बढ़कर वराहदंती को पूरी गति और सटीकता से घुमाया। दिव्य तलवार की चमकती धार लाल डायन की कलाई पर पड़ी और उसके दानव-कंटक थामे हाथ को शरीर से अलग कर गई।

दानव-कंटक के साथ उसका कटा हुआ हाथ दूर जाकर पत्थर के फर्श पर गिरा। लाल डायन की हृदयविदारक चीख से पूरा नास्ति दानव मंदिर काँप उठा- "हाय माँ...! मैं मर गई...!"

वह पीड़ा से कराहती हुई पीछे हटी। उसकी आँखों में पहली बार क्रोध के साथ भय भी दिखाई दे रहा था। सामने वराहदंती थामे समीर दृढ़ता से खड़ा था। उसकी तलवार से निकलती दिव्य आभा ने मंदिर के अंधकार को चीर दिया था।

युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था—लेकिन पहली बार लाल डायन को यह अनुभव हो चुका था कि समीर को चुनौती देना उसकी सबसे बड़ी भूल हो सकती है।



तभी पेटवा की प्रेरणा से लाल माई ने अंतिम छल रचा। उसने समीर की दिवंगत पत्नी नंदिता का रूप धारण कर लिया। अपनी प्रिय पत्नी को सामने देखकर समीर का मन डगमगा गया। उसी क्षण पीछे से दो चुड़ैलों, सोना-चाँदी ने उसके सिर पर प्रहार कर उसे मूर्छित कर दिया। लाल माई अट्टहास करते हुए बोली, "बली की तैयारी करो। सबसे पहले इसी समीर की बलि चढ़ेगी। इसका शरीर प्राप्त करते ही पेटवा पूर्ण शक्ति के साथ पुनर्जन्म ले लेगा।"

इधर महाश्मशान की युद्धभूमि में बची हुई चुड़ैलों ने अद्‌भुत रूप धारण कर लिया। वे अनुपम रूपवती स्त्रियों के रूप में रस्टी और उसके साथियों के सामने प्रकट हुईं। उनके सौंदर्य और आकर्षण के जाल में जो भी फँसा, वह क्षणभर में मृत्यु को प्राप्त हुआ। अब केवल रस्टी और रंगनाथ स्वामी के कुछ गिने-चुने शिष्य ही जीवित बचे थे।

रस्टी ने अपनी दिव्य धनुष पर एक के बाद एक **मायाभेदी और दानवनाशक** अस्त्र चढ़ाया। तीर बिजली की गति से निकले और एक-एक करके सभी चुड़ैलों का अंत कर दिया। इसके बाद वह बिना समय गँवाए समीर की सहायता के लिए नास्ति मंदिर की ओर दौड़ा। उसे रोकने के लिए लाल माई ने एक दानवीय मंत्र का उच्चारण किया। मंत्र के प्रभाव से नास्ति मंदिर के नीचे से हजारों साँप, बिच्छू, कीड़े-मकोड़े और छिपकलियाँ निकलकर रस्टी तथा उसके साथियों पर टूट पड़ीं।

रस्टी ने **दिव्यकवच बाण** चलाकर अपने सभी साथियों को सुरक्षित कर लिया। इसके बाद उसने **भैरव** बाण का प्रयोग करके उन समस्त विषैले जीवों का अंत कर दिया।

मंदिर के भीतर समीर एक विशाल पत्थर के चबूतरे पर मोटी रस्सियों से बँधा पड़ा था। उसके सिर पर गहरा घाव था और रक्त बह रहा था। कुछ समय बाद उसे होश आया। उसने स्वयं को असहाय बंधनों में जकड़ा देखा। उसे अपनी हार, अपने मोह और अपने अहंकार का गहरा पश्चाताप हुआ। उसकी आँखों से आँसू बह निकले।

उसी क्षण उसे रंगनाथ स्वामी के शब्द स्मरण हुए- "मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका 'मैं' होता है।" समीर ने अपने भीतर के अहंकार का पूर्ण त्याग कर दिया। उसने मन ही मन भगवान काल भैरव का स्मरण किया और प्रार्थना की, "प्रभु! यदि मेरे जीवन का कोई उद्देश्य है, तो मुझे धर्म की रक्षा करने की शक्ति दीजिए। मेरे माध्यम से अधर्म का अंत कीजिए।"

क्षणभर में मंदिर दिव्य प्रकाश से भर उठा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो स्वयं काल भैरव की शक्ति समीर के शरीर में प्रविष्ट हो गई हो। उसकी आँखों में तेज चमक उठा। उसने एक ही झटके में अपने बंधन तोड़ दिए। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। दूर भूमि पर पड़ी दिव्य तलवार आकाश में उठी और घूमती हुई स्वयं उसके हाथ में आ पहुँची।

उसी समय लाल माई अंतिम बलि का मंत्र पढ़ रही थी। समीर सिंह की गर्जना के साथ आगे बढ़ा। उसके एक ही प्रचंड वार से दिव्य तलवार ने "भचाक!" की भीषण ध्वनि के साथ लाल माई का सिर धड़ से अलग कर दिया।

जैसे ही लाल माई का अंत हुआ, उसके भीतर छिपा पेटवा दानव भयंकर चीख के साथ बाहर निकला, लाल माई का शरीर धम्म से भूमि पर गिरा और देखते ही देखते अग्नि में जलकर राख बन गया।

लेकिन लाल माई अपना अनुष्ठान लगभग पूर्ण करने में सफल हो गई थी, सिर्फ़ बली ही बची थी जिससे पेटवा की शक्तियाँ अनंत काल के लिए पक्की हो जातीं , पेटवा को एक ताकतवर शरीर मिल जाता, और वह संतान उत्पन्न करने में समर्थ हो जाता। पेटवा की खोई हुई शक्तियाँ वापस आने लगीं, अब वह किसी चुड़ैल/लाल माई के बिना ही मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के शरीरों पर अधिकार कर सकता था।

पेटवा लाल माई की एक दानवीय साध्वी में प्रविष्ट हो जाता है और युद्ध के लिए समीर पर लपकता है। कभी पेटवा छल करता है, तो कभी बल का प्रयोग करता है। कभी वह दानवीय साध्वी को निर्वस्त्र करके स्त्री के सुंदर नग्न शरीर के आकर्षण का लोभ दिखाकर समीर को युद्ध में हराने की कोशिश करता है।

समीर जैसे ही उस पेटवा द्वार। गिरफ़्त में ली गई किसी दानवीय साध्वी को अपनी तलवार से मार गिराता, उसके शरीर से एक काली छाया बाहर निकलती और देखते ही देखते पेटवा दूसरी साध्वी के भीतर समा जाता। “तुम मुझे मार नहीं सकते, समीर!” पेटवा की आवाज़ उस साध्वी के मुँह से निकली। समीर ने बिना विचलित हुए फिर वार किया। साध्वी का शरीर गिरा, लेकिन पेटवा फिर निकल चुका था।

वह एक के बाद एक शरीर बदलता गया। समीर जितनी बार किसी साध्वी को मारकर उस दानव को समाप्त करने का प्रयास करता, पेटवा उतनी ही तेजी से किसी दूसरे जीवित शरीर में प्रवेश कर जाता। समीर और पेटवा दानव के बीच युद्ध अपने चरम पर पहुँच चुका था। दोनों एक-दूसरे पर लगातार प्रहार कर रहे थे।

पेटवा की शक्ति भयानक थी, लेकिन समीर के पास भी दिव्य वराहदंती तलवार थी, जो किसी भी दानवीय माया, अस्त्र-शस्त्र और उनके प्रहारों को एक ही झटके में काट देती थी। पेटवा अपनी पूरी शक्ति बटोरकर अपने दानव रूप में प्रकट होता है। फिर अपने सबसे शक्तिशाली शस्त्र दानव काल दंड से समीर पर भयंकर प्रहार करता है। दोनों में भयंकर युद्ध छिड़ जाता है।



पेटवा ने समीर को भी अपनी गिरफ्त में लेने का प्रयास किया, किंतु समीर भगवान काल भैरव के दिव्य कवच से सुरक्षित था। वराहदंती की भीषण आभा के कारण पेटवा उसके निकट तक नहीं पहुँच पा रहा था। उसने अनेक मायाएँ रचीं और बार-बार भिन्न-भिन्न रूप धारण किए, परंतु समीर ने वराहदंती की दिव्य ज्योति से उसकी प्रत्येक माया को काटकर नष्ट कर दिया।

हर एक वार के साथ समीर जोर से उद्घोष करता—"ॐ नमः शिवाय! ॐ कालभैरवाय नमः! जय श्री राम !" इन पवित्र मंत्रों के प्रभाव से दानव का प्रत्येक प्रहार दुर्बल पड़ जाता।

अंततः समीर ने पूरी शक्ति से तलवार घुमाई और पेटवा के गिरफ़्त में आई आखिरी दानवीय साधवी को दिव्य वराहदंती तलवार तलवार से भेद देता है। उस चुड़ैल बन चुकी साध्वी के शरीर के साथ-साथ पेटवा भी धरती पर गिर जाता है।उसका निर्जीव पड़ा शरीर अचानक काँपा। उसकी आँखों में फिर से लाल चमक उभरी।

अब वह किसी एक शरीर तक सीमित नहीं था, उसने साध्वी का शरीर छोड़ा और साया बनकर जंगल में गायब हो गया, समीर की दृष्टि जंगल की ओर गई।



फिर अचानक झाड़ियों को चीरता हुआ एक विशाल जंगली सूअर उसकी ओर दौड़ता चला आया। उसका शरीर असामान्य रूप से विशाल था और उसकी आँखों में वही भयावह लाल चमक थी। पेटवा अब उस विशाल वराह के भीतर प्रवेश कर चुका था। वह गरजता हुआ समीर पर झपटा। समीर ने आखिरी क्षण में स्वयं को बचाया और अपनी जादुई तलवार पूरी ताकत से उसके शरीर में घोंप दी।

तलवार उसके विशाल शरीर को चीरती हुई भीतर तक चली गई। लेकिन वह नहीं गिरा। इसके बजाय, वह दानवीय सूअर, जो कि स्वयं पेटवा ही था, खून से सना सिर उठाकर समीर को घूरने लगा। फिर उसके मुँह से एक भयानक ठहाका निकला-"समीर..." पेटवा की आवाज़ अब उस वराह के गले से निकल रही थी, "तुमने मेरा शरीर तो भेद दिया, लेकिन मुझे नहीं मार पाए। अगला शरीर तुम्हारा होगा। फिर मैं तुम्हारे भीतर रहूँगा... और तुम्हीं मेरे अस्तित्व बनोगे!"

समीर ने तलवार खींचने का प्रयास किया, लेकिन विशाल वराह ने उसे झटक दिया। तभी दूर से किसी के मंत्रोच्चार की आवाज़ सुनाई दी-"ॐ श्री राम रामेति..." रस्टी वहाँ पहुँच चुका था।

उसके हाथ में उसका अंतिम बाण था, **वैष्णवी**। जिसे उसने अब तक सुरक्षित रखा था। शक्तिस्वरूपिणी देवी माता सीता का अभय प्रदान करने वाला यह बाण आसुरी शक्तियों से युक्त जीवों को एक ही स्थान पर बाँध देता है। रस्टी ने आँखें बंद कीं और पूरी श्रद्धा से रामरक्षा स्तोत्र का पाठ आरंभ कर दिया। मंत्रों की ध्वनि वातावरण में फैलते ही पेटवा की शक्ति डगमगाने लगी- "नहीं!" दानव पहली बार भयभीत दिखाई दिया। रस्टी **वैष्णवी** बाण को वराहचाप धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाता है, फिर श्री सीताराम का नाम लेकर पेटवा की गिरफ्त में आए उस जंगली जीव पर छोड़ देता है। बाण छूटता है .... स्वाऽऽऽय!।

वराह-दंत से युक्त वह अंतिम बाण सीधा जाकर सूअर की दोनों आँखों के बीच, उसकी खोपड़ी में गहराई तक धँस गया, उस बाण के भीषण प्रहार से वराह की खोपड़ी जमीन पर धँसकर वहीं जड़ हो गई।

पेटवा की गर्जना एक चीख में बदल जाती है। उसका विशाल शरीर अचानक कमजोर पड़ गया और उसके पैरों की शक्ति जाती रही। वह दानवीय प्राणी चित्त होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। पेटवा उस आसुरी जीव का पेट फाड़कर उसके शरीर से बाहर भागने का प्रयास करता है, परंतु वैष्णवी बाण के प्रभाव के कारण वह अपने प्रयास में असफल हो जाता है।

समीर अवसर पहचान कर, दोनों हाथों से तलवार खींच के वराह के शरीर से बाहर निकलता है। **तभी समीर को अपने गुरुदेव की वाणी स्मरण हो उठी**-

"युद्ध के समय पेटवा दानव किसी मनुष्य अथवा जंगली जीव के शरीर में प्रवेश कर जाता है। इसके बाद वह उस शरीर के माध्यम से दिव्य शक्तियों से सिद्ध अपने शत्रु योद्धा का सामना करता है। पेटवा की गिरफ्त में आया हुआ जीव अत्यंत शक्तिशाली हो जाता है।"

"विजय प्राप्त करने के लिए पेटवा को अपने अधिकार में लिए हुए जीवित शरीर से प्रवाहित होने वाले गर्म रक्त और उसी जीव के मस्तिष्क से प्राप्त चिंतन-शक्ति की आवश्यकता होती है। अतः उस दानव का वध करने के लिए दो योद्धाओं को मिलकर युद्ध करना होगा।"

पहला योद्धा को पेटवा के अधिकार में आए जीव के मस्तिष्क को भेदना होगा। इसके पश्चात दूसरे योद्धा को उसके दानवीय सुरक्षा-कवचों को काटते हुए अपनी संपूर्ण शक्ति से उसकी छाती चीरकर हृदय को भेदना होगा। तभी पेटवा का अंत संभव होगा।"

"मेरे पूर्वज स्वामी सोनभद्र अपने अहंकार के कारण अकेले ही पेटवा से युद्ध करने चले गए थे। उनके बाद कई वीर और सात्विक योद्धा, और **मैंने भी खुद पेटवा** का सामना अकेले करने की गलती की थी। इसीलिए उसका समूल विनाश नहीं कर सके।"

दुष्ट दानव का दिमाग, दिल और रीढ़ की हड्डी एक क्रम में नष्ट करनी होगी। सही समय पर, सही अस्त्र और हथियार का इस्तेमाल होना चाहिए। इसलिए एक से ज्यादा योद्धाओं का तालमेल जरूरी है। याद रहे सिर्फ एक

ही मौका मिलेगा॥ एक गलती और सब खेल खत्म, पेटवा फिर से भाग जाएगा, तुम उसका विनाश करने से चूक जाओगे।"

"बच्चो, रस्टी और समीर! तुम दोनों को भाइयों की भाँति एकजुट होकर युद्ध करना होगा। अपने अहंकार का त्याग करके उस दुष्ट का संहार मिलकर करना होगा। पेटवा पर विजय तुममें से कोई एक नहीं—तुम दोनों की एकता ही प्राप्त कर सकती है।"

फिर भक्तिभाव से मंत्रोच्चारण करते हुए समीर वराहदंती की दिव्य आभा और मंत्रबल द्वारा पेटवा की समस्त दानवीय शक्तियों तथा उसके दानव-सुरक्षा कवचों को नष्ट करने लगा। (काल भैरव अग्नि मंत्र स्वामी रंगनाथ जी के पूर्वज, स्वामी सोनभद्रनाथ ने भगवान की प्रेरणा से स्वयं रचा था।)

ॐ कालभैरवाय नमः॥

ॐ नमः कालरूपाय महाकालाय धीमते, ॐ नमः देवाय रुद्राय परमात्मने। दिगम्बराय वीराय घोररूपाय ते नमः। धर्मपालाय देवाय भक्तानां भयहारिणे॥

त्वं कालः सर्वभूतानां, त्वं रक्षः सर्वदेहिनाम्। त्वमेव शरणं नाथ, त्वमेव परमं बलम्। मां रक्ष रक्ष हे नाथ, मम बन्धून् सुतान् तथा, मम गेहं च सर्वस्वं, रक्ष त्वं करुणानिधे॥

रक्ष मां सर्वतो नाथ, रक्ष मे कुलमेव च, रक्ष विश्वं च भूतानि, दुःखशोकभयापहम्। यत्र यत्र च दुष्टानि, यत्र यत्र च राक्षसाः। अधर्मिणश्च ये सर्वे, तेषां नाशं कुरु प्रभो॥

तव दिव्याग्निज्वालाभिः सर्वदुष्टं विनश्यतु। अधर्मस्य च संहारः, धर्मस्य विजयः भवेत्। तेजसा तव घोरेण तमः सर्वं विनश्यतु। पावकेन पवित्रेण दुष्टशक्तिर्विलीयताम्॥

न मे भयम्, न मे शोकः, न मे दैन्यं कदाचन। त्वत्पादस्मरणं नाथ, मम शक्तिर्भवेत् सदा। सत्ये मे मनसः स्थितिः, धर्मे मे हृदयं भवेत्। करुणा सर्वभूतेषु, भक्तिश्च त्वयि शाश्वती॥

हे महाकाल भैरव, हे रुद्र, हे भयापह। अज्ञानान्धतमो नाशं कृत्वा मार्गं प्रदर्शय। मम रक्षां कुरु नित्यं, मम कुटुम्बस्य रक्ष तु। लोकानां मंगलं कुरु, सर्वभूतहितं भवेत्॥

दुष्टानां नाशमस्तु, धर्मस्य जयमस्तु च। सत्यस्य विजयः नित्यं, शान्तिः सर्वत्र वर्धताम्। कालभैरवाय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो भैरवः प्रचोदयात्॥

ॐ कालभैरवाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ भूतनाथाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ कालभैरवाय नमः॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



मंत्रोच्चारण की समाप्ति के बाद भगवान काल भैरव का स्मरण करके समीर ने ... पूरी शक्ति से वराहदंती तलवार को पेटवा की छाती में भोंक दी। प्रहार इतना भयंकर और शक्तिशाली था कि वराहदंती उस दानवीय सूअर-रूपी पेटवा दैत्य का हृदय चीरती हुई उसकी गर्दन की हड्डी तक तोड़कर शरीर के दूसरी ओर निकल गई। विशाल जंगली सूअर का शरीर कुछ क्षणों तक काँपता रहा- उसकी आँखों की लाल चमक बुझने लगी।

देखते ही देखते भयंकर दिव्य अग्नि में पेटवा दानव और उसका दानवीय वराह शरीर जलकर राख में बदल गया। इस बार पेटवा वापस नहीं उठा।

समीर कुछ क्षण तक तलवार हाथ में लिए उसी स्थान पर खड़ा रहा। रस्टी ने रामरक्षा स्तोत्र का अंतिम मंत्र पूरा किया। पेटवा दानव का अंत हो चुका था। उसी क्षण पूरे दंडकारण्य में फैला अंधकार छँटने लगा। काली हवाएँ शांत हो गईं। वर्षों से भय में जी रहे वनवासियों ने पहली बार खुलकर साँस ली। पेटवा का आतंक सदा के लिए समाप्त हो चुका था। युद्ध समाप्त होते ही समीर और रस्टी के हाथों में धारण किए हुए दिव्यास्त्र स्वयं आकाश में उठे और दिव्य प्रकाश में विलीन हो गए, मानो अपना कार्य पूर्ण कर वे अपने लोक लौट गए हों।

1 नवंबर 2020, प्रतिपदा तिथि, भरणी नक्षत्र, सुबह 6 बजकर 40 मिनट। प्रातःकाल की पहली किरण के साथ हिमनदा देवी, आनंद तथा पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार अपनी विशेष पुलिस टीम के साथ वहाँ पहुँचे।

आनंद के ऊपर से महारंधवि और कलकुलता का जादू जा चुका था। उसे भृकुटी गुफा की पहचान थी। वह पुलिस को गुफा के अंदर छिपाई गई बच्चियों तक ले जाता है। समीर और रस्टी भी उनके साथ गुफा के अंदर चल जाते हैं | फिर वे दोनों पुलिस टीम के साथ मिलकर, **गश्त:पो** के सैनिकों को मारकर बच्चियों को रेस्क्यू कर लेते हैं । सुनीधि और सलोनी को जीवित देखकर दोनों दोस्त बहुत खुश होते हैं। वह दोनों बच्चियों को गोदी में लेकर, बच्चियों की जिंदगी बचाने के लिए भगवान का धन्यवाद करते हैं।

उन्हीं बालिकाओं में पुलिस अधिक्षक कृष्ण कुमार की अपनी खोई हुई पोती मिल जाती है। उसे जीवित देखकर उनकी आँखों से खुशी के आँसू बहाने लगते हैं । पुलिस सभी अपहृत बालिकाओं को सुरक्षित मुक्त कराकर, सबको अपने परिवार से मिला देती है ।

रस्टी , समीर और उनके जीवित बचे साथी विजय गान के साथ स्वामी रंगनाथ जी के आश्रम लौट जाते हैं । स्वामी रंगनाथ के आदेश पर दोनों दलों के मानव योद्धाओं के निर्जीव शरीरों का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार

किया गया। चुड़ैल, डायन, भूत, पिशाच और दानव आदि, जो पेटवा तथा लाल माई की सेना का हिस्सा बने थे, वे सभी दिव्यास्त्रों और पवित्र मंत्रों के प्रभाव से पहले ही जलकर पूर्णतः नष्ट हो थे। स्वामी रंगनाथ जी, महाश्मशान भूमि का शुद्धीकरण करवाकर उस स्थान को पुनः वन-क्षेत्र में सम्मिलित करवा देते हैं।

कुछ दिनों बाद पूरे देश के समाचार पत्रों और समाचार चैनलों में "लाल माई की देहरी" के काले साम्राज्य का पर्दाफाश प्रमुख समाचार बन जाता है। पुलिस और सरकारी एजेंसियों भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों तक फैले उसके पूरे नेटवर्क को ध्वस्त देती है।

'लाल माई की देहरी' आश्रमों की संपत्तियाँ जब्त कर ली गईं, सभी बैंक खाते सील कर दिए गए और संगठन के प्रधानों, महंतों तथा सहयोगियों को गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध हत्या, मानव तस्करी, अपहरण, अवैध धन-संग्रह और अनेक जघन्य अपराधों के मुकदमे दर्ज किए जाते हैं और कोर्ट कार्यवाही के बाद उनको सजा दी जाती है ।

लॉकडाउन समाप्त होने के बाद एमिली, रस्टी और ईवा अपने-अपने देश लौट गए। जाने से पहले रस्टी ने श्रावणी से विवाह किया और उसे अपने साथ इंग्लैंड ले गया। दोनों ने जीवन की नई शुरुआत की।

डी.वी.टी.एफ के कार्यकर्तागणों, समीर और रस्टी पर कोई कानूनी मुकदमा नहीं चलाया गया और न। ही उनके विरुद्ध कोई शिकायत दर्ज की गई। इसके विपरीत, उनके साहस तथा सत्कर्मों की प्रशंसा हुई, क्योंकि उन्होंने लगभग डेढ़ सौ लोगों को लाल माई के चंगुल से मुक्त करवाया था।

गश्त:पो के अधिकांश सदस्य वांछित अपराधी थे, जिनका पुलिस भी लंबे समय से खात्मा चाहती थी। हालाँकि, उनमें कुछ अच्छे लोग भी थे, जो लाल माई के प्रभाव में आकर अधर्म के मार्ग पर चल पड़े थे। ऐसे लोगों के आश्रितों, परिवारजनों और बच्चों के पुनर्वास में श्रेया ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है । अब लोग उसे 'जम्बा देवी' के नाम से ही पुकारने लगे थे।

नील कोठी में मिले लाल लाल माई के पाप से अर्जित अपार धन संपदा जम्बा देवी और समीर, धर्मार्थ उपयोग करते हुए जंगल से प्राप्त वन-उत्पाद जैसे औषधीय पौधों, शहद, लाख, बाँस और खनिज का व्यापार आरंभ करते हैं ।

उन्होंने वहीं के आदिवासी समुदाय के साथ मिलकर तुर्ग और नील कोठी से कुछ दूरी पर अलग भूमि लेकर वे लोग, कई छोटी-छोटी निर्माण, प्रसंस्करण और वितरण की इकाइयाँ बनवाते हैं। इन इकाइयों में मानव-दानव युद्ध के दौरान मारे गए डीवीटीएफ तथा गश्त:पो के सदस्यों के अनाथ बच्चों, विधवा हुई महिलाओं और बेसहारा बुजुर्गों और आदिवासी समुदाय को आश्रय, रोजगार तथा सम्मानपूर्ण जीवन मिलता है।

समीर, श्रेया और उनके बच्चे दंडकारण्य छोड़कर कभी नहीं गए। उन्हें वनांचल से बहुत लगाव हो गया थ। उनके प्रयासों से पूरे क्षेत्र में रोजगार बढ़ा और लोगों के जीवन में समृद्धि लौट आती है । आनंद और सुकेशिनी भी, समीर और श्रेया के व्यवसाय में जुड़ जाते हैं। थोड़ी बड़ी होने के बाद सुनिधि और सलोनी, जो अब सहेलियों से ज़्यादा बहनें बन चुकी थीं, रायपुर में स्थित एक अच्छे बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लेकर अपनी पढ़ाई पूरी करने लगीं।

रंगनाथ स्वामी और हिमनदा देवी का आश्रम धर्म, सेवा और साधना का महान केंद्र बन गया, जहाँ दूर-दूर से लोग आशीर्वाद और आत्मिक शांति पाने आने लगे। दंडकारण्य पर फिर कभी पेटवा या लाल माई जैसी किसी दुष्ट शक्ति की छाया नहीं पड़ी। धर्म की विजय हुई, अधर्म का अंत हुआ, और एक भयावह अध्याय इतिहास बन गया।

लेकिन इन समस्त घटनाओं को एक डायन दूर से देख रही थी। वह महारांध्वी की पंद्रह वर्षीय पुत्री वनकामिनी थी। शीघ्रता से डायन-शक्तियाँ प्राप्त करने की लालसा में उसने अपनी प्रजनन-क्षमता का बलिदान कर दिया था।

मानव-दानव युद्ध के दौरान वह **समीर से प्राप्त, लाल माई के आसुरी पुत्र पूर्णिमासुर** को लेकर महाश्मशान से भाग निकली थी। इसके बाद वह अबूझमाड़ की पहाड़ियों में स्थित भृकुटि गुफा की गहराइयों में जाकर छिप गई। पूर्णिमासुर का जन्म 31 अक्टूबर की उसी शाम हुआ था, जिस दिन समीर ने लाल माई और पेटवा—दोनों का अंत किया था।



वनकामिनी ने शिशु पूर्णिमासुर की ओर देखा और उससे बोली- "अरे बच्चे, अब तेरी माँ इस संसार में नहीं रही और तेरा पिता तुझे कभी स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि तू एक '**डामा**' है—डायन माँ और मनुष्य पिता की संतान, दोनों प्रजातियों का एक संकर।

आज से मैं ही तेरी माँ बनकर रहूँगी। मैं तुझे पूर्णिमान बुलाऊंगी, क्योंकि तू भी अपने पिता समीर की तरह पूर्णिमा के दिन ही पैदा हुआ था।

तू असुर होते हुए भी बहुत प्यारा है, तुझे देखकर असुर वाली फ़ीलिंग नहीं आ रही। लेकिन अब तू भी अनाथ और मैं भी अनाथ। चल, अब हम माता रक्तपिपासिनी की शरण में चलते हैं। अब वही हमारा एकमात्र सहारा बनेंगी।" फिर वनकामिनी पूर्णिमान को लेकर जंगल में गायब हो गई।

***** कथा समाप्त *****

अध्याय 21
लेखक के विचार

मेरे प्रिय पाठकों,

आपके लिए इस उपन्यास को लिखना मेरे लिए अत्यंत सुखद अनुभव रहा। इस साहित्यिक कृति को लिखने का उद्देश्य आपको अलौकिक शक्तियों से भयभीत करना अथवा काले जादू और शैतानी प्रथाओं का समर्थन करना नहीं है। इसके माध्यम से मैं आप सभी तक जीवन से सीखे हुए कुछ महत्त्वपूर्ण सबक पहुँचाना चाहता हूँ और कुछ ऐसे सुझाव साझा करना चाहता हूँ, जो संभवतः आपके जीवन में सहायक सिद्ध हों—

1. हर इच्छा की कोई न कोई कीमत होती है। इसलिए जीवन में कोई इच्छा करने से पहले स्वयं से पूछिए, "क्या मैं उसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार हूँ?"
2. भविष्य कभी निश्चित नहीं होता, वह हमेशा परिवर्तनशील और प्रवाहमान रहता है। यदि आप एक बेहतर भविष्य बनाना चाहते हैं, तो आपको सबसे पहले अपने वर्तमान को बेहतर बनाना होगा। इसलिए आज आप जो भी निर्णय लें, उसे भविष्य के परिणामों को ध्यान में रखकर ही लें।
3. आपको ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जो आपके हित और कल्याण के लिए उचित न हो, और न। ही स्वयं को किसी ऐसी परिस्थिति में डालना चाहिए जिसके लिए आप कभी तैयार ही नहीं थे।
4. एक बेहतर भविष्य केवल प्रतीक्षा करने से नहीं मिलता, बल्कि वर्तमान में लिए गए सही निर्णयों से उसका निर्माण होता है। साहस का अर्थ यह नहीं कि आपको भय का अनुभव ही न हो। सच्चे साहस का अर्थ है—अपने भय का सामना करना, उसे

समझना और उस पर नियंत्रण रखना सीखना। इसके बाद दृढ़तापूर्वक आगे बढ़िए और अपने भय पर विजय प्राप्त कीजिए अथवा उस पर ऐसी महारत हासिल कीजिए कि वह आपको फिर कभी विचलित न कर सके।

5. क्या आपको विश्वास है कि सहायता के लिए आपकी ओर हाथ बढ़ाने वाला व्यक्ति वास्तव में नेक और सच्चा है? यह आवश्यक नहीं कि आपके साथ खड़ा होकर सहयोग और सहायता का वचन देने वाले प्रत्येक व्यक्ति की नीयत भी अच्छी हो। वह हाथ किसी ऐसे व्यक्ति का भी हो सकता है, जो अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आपको केवल एक मोहरे के रूप में इस्तेमाल करना चाहता है।
6. यदि आप किसी अत्यंत कठिन परिस्थिति में फँस गए हैं और उससे बाहर निकलने का कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है, तो स्वयं को ईश्वर के श्रीचरणों में समर्पित कर दीजिए। उन्हें अपनी समस्याएँ बताइए और उनसे सहायता की प्रार्थना कीजिए। यदि आपके इरादे नेक हैं और आपकी प्रार्थना सच्चे हृदय से निकली है, तो ईश्वर निश्चित रूप से आपको कठिनाइयों से ऊपर उठने और अपनी समस्या का समाधान खोजने की शक्ति एवं मार्ग दिखाएँगे।
7. शांत और अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहिए। व्याकुल होकर धैर्य मत खोइए। धीरे-धीरे, सोच-समझकर परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रयास करते रहिए। विश्वास और निरंतर प्रयास के साथ आगे बढ़ेंगे, तो अंततः विजय अवश्य मिलेगी।
8. हम प्रायः यह मानते हैं कि हमारा शत्रु हमेशा अनजान लोगों या अपरिचितों के बीच से ही आएगा। यह एक ऐसी भ्रामक धारणा है, जिसे हमारी सामाजिक व्यवस्था और पारिवारिक परंपराएँ अनजाने में हमारे मन में स्थापित कर देती हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि कई बार हमारे सबसे बड़े शत्रु और हमारे अहित की भावना रखने वाले लोग रिश्तेदारों के रूप में हमारे आसपास ही छिपे होते हैं। इसलिए किसी पर विश्वास करने से पहले निष्पक्ष

होकर उसके व्यवहार और वास्तविक मंशा को समझें तथा सदैव सजग रहें।

9. प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक कहानी होती है और उसके हृदय में कोई न कोई पीड़ा छिपी होती है। हमें किसी व्यक्ति के घावों और विवशताओं का अपने स्वार्थ के लिए दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि एक बार सत्ता हमारे हाथों से फिसल गई अथवा समय ने बाज़ी पलट दी, तो यही लोग आपको अपने पैरों तले कुचल डालेंगे।
10. पीड़ितों के प्रति संवेदनशील बनकर उनकी परिस्थितियों और समस्याओं को समझना चाहिए तथा उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का साहस देना चाहिए। यदि संभव हो, तो समान उद्देश्य रखने वाले लोगों को संगठित कर एक दल बनाएँ और परस्पर सहयोग से अपने साझा लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें।
11. केवल इसलिए किसी स्थापित नागरिक और प्रशासनिक व्यवस्था को ध्वस्त करने का प्रयास करना, कि वह आपको पसंद नहीं है अथवा आपके निजी स्वार्थों और उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करती, अत्यंत स्वार्थपूर्ण और मूर्खतापूर्ण कृत्य है।
12. यदि आप किसी व्यवस्था में सुधार लाना चाहते हैं, अपनी माँगों को उसमें सम्मिलित करवाना चाहते हैं अथवा अपनी आवाज़ जन-जन तक पहुँचाना चाहते हैं, तो आपको संविधान द्वारा निर्धारित मार्गों का ही अनुसरण करना चाहिए। ऐसी प्रक्रिया का हिस्सा बनें, जिससे नागरिक जीवन और सामाजिक व्यवस्था में न्यूनतम व्यवधान उत्पन्न हो। आपकी क्रांति का उद्देश्य समाज, राष्ट्र और प्रकृति-माता का कल्याण होना चाहिए।

उम्मीद है, आपको मेरे विचार और मेरा उपन्यास **'लाल माई की देहरी'** पसंद आए होंगे। मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी आने वाली कृति **'रक्तपिपासिनी- रक्त का अनुबंध'** का भी बेसब्री से इंतज़ार करेंगे।

आपका मित्र,
सुधीर कुमार घोष

authorsudhirkg2026@gmail.com